परमपूज्य आचार्यरत्न श्री 108 बाहुबली महाराज जी के 75वें
हीरक जयंती महोत्सव पर सादर समर्पित

जिनधर्म प्रश्नमाला

संकलनकर्त्री/संग्रहिका
परमपूज्य आर्यिका श्री 105 मुक्तिलक्ष्मी माता जी

प्रकाशक :
जिनराज जैन
दरियांगज, नई दिल्ली-110002

प्राप्ति स्थल :

* आचार्य बाहुबली संघ
* श्री दिगंबर जैन मंदिर, माडल टाउन, दिल्ली
* जिनराज जैन, 2/26 अन्सारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली
* श्री कलीराम जैन, डी-8/7, माडल टाउन, दिल्ली

प्रथम संस्करण 2006

प्रकाशक :

जिनराज जैन
2/26 अन्सारी रोड,
दरियागंज, नई दिल्ली-110002

मुद्रक : एक्सप्रस ग्राफिक्स, नारायणा-28

॥ श्री त्रिलोक जिनेन्द्राय नमः ॥

आचार्य बाहुबली आध्यात्मिक अनुसंधान

ट्रस्ट (रजि०)

"सिद्धान्त तीर्थ"

जैन नगरी, देहली जयपुर मार्ग, नजदीक अपना घर, शिकोहपुर, गुड़गाव (हरि)
फोन . 95-124-3090828, 9313101106

क्रमांक

दिनांक

" जिनधर्म प्रश्नमाला "

इस पुस्तक को - आर्यिका —
(मुक्तिलक्ष्मी माताजी ने संग्रह किया है)

इस पुस्तक में - 3000 से अधिक प्रश्न है।

इस प्रश्नमाला पुस्तक को - (प्रश्नोत्तर माला को)
श्री जिनराज जैन दरियागंज वालों ने
प्रकाशन किया है / इनके परिवार को भी आशीर्वाद!
इनको हमारा -

प्राक्कथन

परमपूज्य आचार्यरत्न श्री 108 बाहुबली महाराज जी की सुयोग्य शिष्या आर्यिका श्री 105 मुक्तिलक्ष्मी माता जी एवं आर्यिका श्री 105 निर्वाण लक्ष्मी माता जी के माडल टाउन में द्वितीय वर्षायोग प्रवास के अन्तर्गत अनेक उपलब्धियां हुई हैं। पूज्य माता जी की प्रेरणा से अनेक श्रावक/श्राविका स्वाध्याय हेतु शास्त्राभ्यास से जुड़े हैं। लेकिन आज की नयी पीढ़ी णमोकार मंत्र तथा 24 तीर्थंकरों से संबंधित सामान्य ज्ञान से भी अनभिज्ञ है। उनके प्रारंभिक ज्ञान हेतु पूज्य माता जी ने लगभग 3000 प्रश्नों का संकलन किया, जिनके उत्तर एक स्थान पर सुलभ कराने में माडल टाउन समाज के अनेक व्यक्तियों ने सहयोग दिया। इस प्रश्नमाला के प्रकाशन का दायित्व श्री जिनराज जैन दरियांगज निवासी ने सहर्ष स्वीकार किया। सबके परस्पर सहयोग का यह सुंदर प्रातेफल 'जिनधर्म प्रश्नमाला' के रूप में आचार्य श्री के जन्म महोत्सव पर सादर समर्पित है।

विषय-सूची

1

णमोकार मंत्र एवं पंच परमेष्ठी

प्रश्न 1. णमोकार मंत्र का शुद्ध उच्चारण व अर्थ क्या है ?

उत्तर– णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं। अरिहंतों को नमस्कार हो, सिद्धों को नमस्कार हो, आचार्यो को नमस्कार हो, उपाध्यायों को नमस्कार हो, लोक के सर्व साधुओं को नमस्कार हो।

प्रश्न 2. णमोकार मंत्र के अन्य नाम कौन से हैं ?

उत्तर– 1. णमोकार मंत्र, 2. पंच नमस्कार मंत्र, 3. अनादि निधन मंत्र, 4. मूल मंत्र, 5. महा मंत्र, 6. परमेष्ठी मंत्र।

प्रश्न 3. णमोकार मंत्र में किसको नमस्कार किया है ?

उत्तर– णमोकार मंत्र में पांच परमेष्ठियों को नमस्कार किया गया है।

प्रश्न 4. परमेष्ठी किसे कहते हैं ?

उत्तर– जो परम पद में स्थित हैं तथा जो इन्द्रों, चक्रवर्तियों, राजा महाराजाओं के द्वारा पूजे जाते हैं उन्हें परमेष्ठी कहते हैं।

प्रश्न 5. परमेष्ठी कितने हैं और कौन से हैं ?

उत्तर– परमेष्ठी पांच हैं– 1. अरिहंत, 2. सिद्ध, 3. आचार्य, 4. उपाध्याय और 5. सर्व साधु।

प्रश्न 6. पांचों परमेष्ठियों में सबसे बड़े व सबसे छोटे परमेष्ठी का नाम क्या है ?

उत्तर– सबसे बड़े परमेष्ठी सिद्ध तथा सबसे छोटे परमेष्ठी साधु हैं।

प्रश्न 7. जब सबसे बड़े परमेष्ठी सिद्ध हैं तो णमोकार मंत्र में अरिहंत परमेष्ठी को सर्वप्रथम नमस्कार क्यों किया गया है ?

उत्तर– बिना अरिहंत बने कोई सिद्ध परमेष्ठी से साक्षात्कार नहीं कर सकता है। जीव को मोक्ष एवं परमात्मा बनने का मार्ग समवशरण में अरिहंत से ही प्राप्त होता है। वे ही दिव्य ध्वनि में सभी को कल्याण का मार्ग बताते हैं, अतः अरिहंत हमारे परमोपकारी हैं इसलिए सिद्ध से पहले अरिहंत को नमस्कार किया गया है।

प्रश्न 8. णमोकार मंत्र में कितने पद, कितने अक्षर व कितनी मात्राएँ हैं ?

उत्तर– णमोकार मंत्र में पांच पद, पैंतीस अक्षर व 58 मात्रायें होती हैं।

प्रश्न 9. णमोकार मंत्र कौन सी भाषा व कौन से छंद में लिपिबद्ध है ?

उत्तर– णमोकार मंत्र को प्राकृत भाषा व आर्या छंद में लिपिबद्ध किया गया है।

प्रश्न 10. णमोकार मंत्र को लिपि बद्ध करने का महान कार्य किसने किया था ?

उत्तर– णमोकार मंत्र को लिपिबद्ध करने का कार्य श्री धरसेनाचार्य के शिष्य आचार्य भूतबली तथा पुष्पदंत आचार्य ने किया था।

प्रश्न 11. णमोकार मंत्र अनादिनिधन कैसे है ?

उत्तर– क्योंकि णमोकार मंत्र को न किसी ने बनाया है और यह नष्ट भी नहीं होगा। पंच परमेष्ठी अनादि काल से होते आये हैं और अनंतकाल तक होते रहेंगे। णमोकार मंत्र इनका वाचक है अतः णमोकार मंत्र अनादि निधन है।

प्रश्न 12. णमोकार मंत्र को मूलमंत्र क्यों कहा जाता है ?

उत्तर– सभी मंत्रों में णमोकार मंत्र सार भूत रहता है। प्रायः सभी मंत्र इसी से निकले हैं इसलिये इसे मूल मंत्र कहा जाता है।

प्रश्न 13. णमोकार मंत्र से कितने मंत्रों की रचना मानी जाती है ?

उत्तर– णमोकार मंत्र से 84 लाख मंत्रों की रचना मानी जाती है।

प्रश्न 14. णमोकार मंत्र का माहात्म्य क्या है ?

उत्तर– ऐसो पंच णमोयारो, सव्वपावप्पणासणो। मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलम्।।

यह पंच नमस्कार मंत्र सब पापों का नाश करने वाला है और सब मंगलों में पहला मंगल है।

प्रश्न 15. सबसे बड़े परमेष्ठी सिद्ध भगवान क्यों हैं ?

उत्तर– पूर्ण कर्मो के नष्ट हो जाने से अशरीरी पूर्ण शुद्ध आत्म स्वरूप होने से सिद्ध भगवान सबसे बड़े हैं।

प्रश्न 16. णमोकार मंत्र का शुद्ध स्वरूप किस ग्रंथ में मिलता है।

उत्तर– णमोकार मंत्र का शुद्ध स्वरूप षट्खंडागम ग्रंथ में मिलता है।

प्रश्न 17. णमोकार मंत्र का छोटा रूप कोई पंच अक्षरी मंत्र क्या है ?

उत्तर– णमोकार मंत्र का छोटा रूप, पंच अक्षरी मंत्र अ सि आ उ सा है।

प्रश्न 18. णमोकार मंत्र का सबसे छोटा रूप क्या है ?

उत्तर– णमोकार मंत्र का सबसे छोटा रूप ॐ है।

प्रश्न 19. णमोकार मंत्र से ॐ किस प्रकार बनता है ?

उत्तर– अरिहंत जी का अ, सिद्ध का दूसरा नाम अशरीरी है, दोनों के अ+अ को मिलाने पर आ हो जाता है। आचार्य का आ मिलाने से आ+आ=आ ही रहता है। उपाध्याय का उ मिलाने से आ+उ=ओ हो जाता है। मुनि का म मिलाने से ओ+म=ॐ बन जाता है।

प्रश्न 20. वर्तमान में कितने परमेष्ठियों के साक्षात् दर्शन होते हैं ?

उत्तर– वर्तमान में आचार्य, उपाध्याय और साधु इन परमेष्ठियों के दर्शन होते हैं।

प्रश्न 21. आचार्य, उपाध्याय और साधु इन तीन परमेष्ठियों के लिए कौन सा एक शब्द प्रयुक्त किया गया है ?

उत्तर– आचार्य, उपाध्याय और साधु के लिए साहू शब्द का प्रयोग होता है।

प्रश्न 22. पंच परमेष्ठियों में देव और गुरू कौन-कौन हैं ?

उत्तर– पंच परमेष्ठियों में अरिहंत तथा सिद्ध ये दो देव हैं तथा आचार्य, उपाध्याय और साधु ये तीन गुरू हैं।

प्रश्न 23. णमोकार मन्त्र का जाप 9 बार कितने श्वासोच्छवास में करना चाहिए ?

उत्तर– णमोकार मन्त्र का जाप 9 बार 27 श्वासोच्छ्वास में करना चाहिए।
जैसे : पहला पद "णमो अरिहंताणं" श्वास ऊपर लेते समय बोलें।
"णमो सिद्धाणं" श्वांस नीचे छोड़ते समय बोलें।
"णमो आयरियाणं" श्वांस ऊपर लेते समय बोलें।
"णमो उवज्झायाणं" श्वांस छोड़ते समय बोलें। "णमो लोए" श्वांस लेते समय तथा "सव्व साहूणं" नीचे श्वांस छोड़ते समय बोलें। इस तरह मन्त्र को 9 बार पढ़ने से 27 श्वासोच्छवास होते हैं।

प्रश्न 24. मन्त्र किसे कहते हैं ?

उत्तर– ऐसे बीजाक्षर या बीजाक्षरों का समूह जो मन की शुद्धि करे, श्रद्धा शक्ति को जागृत करे, एवं मन वश करे, उन्हें मन्त्र कहते हैं।

प्रश्न 25. ऐसा कौन सा मन्त्र है जिसके आदि अन्त में "ण" हो?

उत्तर– ऐसा महामन्त्र णमोकार ही है।

प्रश्न 26. णमोकार मंत्र को महामंत्र क्यों कहा जाता है ?

उत्तर– णमोकार मंत्र जैसा तीनों लोकों में कोई मंत्र नहीं है। एक तराजू के एक पलड़े पर तीनों लोकों को रख दें तथा दूसरे पलड़े पर णमोकार मंत्र को रख

दें तो भी णमोकार मंत्र वाला पलड़ा भारी रहेगा। इस लिए इसे महामंत्र कहते हैं।

प्रश्न 27. णमोकार मंत्र को जपने में क्या विशेषता है ? णमोकार मंत्र तथा अन्य मंत्रों को जपने में क्या अन्तर है ?

उत्तर– अन्य मंत्रों का उच्चारण अशुद्ध हो या अशुद्ध अवस्था में जपें तो हानिकारक हो सकते हैं, जबकि णमोकार मंत्र किसी भी अवस्था में किसी भी प्रकार से जपने में हानि नहीं है। यथा–

अपवित्रः पवित्रोऽवा सुस्थितो दुःस्थितोऽपिवा।
ध्यायेत् पंच नमस्कारं, सर्व पापैः प्रमुच्यते।।

प्रश्न 28. क्या णमोकार मंत्र के अंतिम पद में जैन साधुओं के अलावा अन्य साधुओं को भी नमस्कार किया गया है ?

उत्तर– कदापि नहीं। जैन आगम के अनुसार साधु उन्हें कहते हैं जो विषय और आरम्भ से मुक्त, पंच महाव्रत धारी, नग्न, दिगम्बर, संयम व शौच के उपकरणों (पीछी कमंडलु) से युक्त होते हैं। मोक्ष की सच्ची साधना करने से वे ही साधु कहलाते हैं। णमोकार मंत्र में ऐसे ही लोक के सर्व साधुओं को नमस्कार किया गया है।

प्रश्न 29. लोक में अधिक से अधिक कितने साधु हो सकते हैं ?

उत्तर– लोक में अधिक से अधिक एक बार में तीन कम नौ करोड़ (8, 99, 99, 997) साधु हो सकते हैं।

प्रश्न 30. इतने साधु कहीं दिखाई तो देते नहीं, फिर ये कहाँ रहते हैं ?

उत्तर– ढाई द्वीपों की 170 कर्म भूमियों में इतने हो सकते हैं।

प्रश्न 31. श्वासोच्छ्वास पूर्वक मन्त्र पढ़ने से क्या लाभ होता है ?

उत्तर– श्वास को ऊपर चढ़ाने ओर नीचे उतारने के क्रम को "प्राणायाम" कहते हैं। प्राणायाम से आत्मा में शान्ति एवं शरीर को स्वास्थ्य लाभ होता है और अनेक रोग शान्त होते हैं।

प्रश्न 32. मंगल किसे कहते हैं ?

उत्तर– जो मोह राग द्वेष रूपी पापों को गलावे और सच्चा सुख उत्पन्न करे उसे मंगल कहते हैं।

प्रश्न 33. मंगल कितने होते हैं ?

उत्तर– मंगल चार होते हैं।

प्रश्न 34. मंगल कौन-कौन से होते हैं ?

उत्तर– अरिहंत मंगल हैं, सिद्ध मंगल हैं, साहू मंगल हैं, एवं केवली भगवान के द्वारा प्रणीत (प्रतिपादित) धर्म मंगल है।

प्रश्न 35. लोक में उत्तम कौन-कौन हैं ?

उत्तर– अरिहंत भगवान लोक में उत्तम हैं, सिद्ध भगवान लोक में उत्तम हैं । साहू भगवान लोक में उत्तम हैं, एवं केवली भगवान के द्वारा प्रतिपादित धर्म लोक में उत्तम है।

प्रश्न 36. संसार में शरण भूत कौन-कौन हैं ?

उत्तर– संसार में अरिहंत भगवान की शरण में जाना चाहिए, सिद्ध भगवान की शरण में जाना चाहिए, साहू भगवान की शरण में जाना चाहिए एवं केवली भगवान के द्वारा बताये गये धर्म की शरण में जाना चाहिए।

प्रश्न 37. साहू कौन हैं ?

उत्तर– आचार्य, उपाध्याय और साधुओं को साहू कहते हैं।

प्रश्न 38. कौन से परमेष्ठी कहाँ रहते हैं ?

उत्तर– अरिहंत, आचार्य, उपाध्याय और साधु ये चार परमेष्ठी ढाई द्वीप की 170 कर्म भूमियों के आर्यखंड में विचरण करते हैं। तथा सिद्ध परमेष्ठी सिद्ध शिला पर लोक के अग्रभाग में विराजमान रहते हैं।

प्रश्न 39. ये परमेष्ठी कौन से काल में जन्म लेते हैं ?

उत्तर– ये परमेष्ठी कर्म काल जो सुखमा दुखमा नाम का होता है, उसमें जन्म लेते हैं। आचार्य उपाध्याय और साधु ये पंचम दुखमा काल के अंत तक भी रहते हैं।

प्रश्न 40. क्या ढाई द्वीप के बाहर भी कोई परमेष्ठी होते हैं ?

उत्तर– नहीं, ढाई द्वीप के बाहर कोई भी परमेष्ठी नहीं होते हैं, वहाँ तेरह द्वीप तक प्रतिमायें तथा अकृत्रिम जिनालय ही होते हैं।

प्रश्न 41. अरिहंत परमेष्ठी किसे कहते हैं ?

उत्तर– जिन्होंने चार घातिया कर्मों का नाश किया है, जो समवशरण में विराजमान हैं, भव्यों को मोक्ष मार्ग का उपदेश देते हैं, जिनके 46 मूल गुण हैं। 18 दोष नहीं हैं वे अरिहंत कहलाते हैं।

प्रश्न 42. सिद्ध परमेष्ठी किसे कहते हैं?

उत्तर– जिन्होंने आठों कर्मों का नाश किया है, जो लोक के अग्रभाग पर विराजमान हैं जिनके जन्म, जरा मृत्यु नहीं है जिनके आठ मूल गुण हैं। उन्हें सिद्ध परमेष्ठी कहते हैं।

प्रश्न 43. कौन से काल में णमोकर मंत्र लिपिबद्ध नहीं था तथा कौन से काल में लिपिबद्ध नहीं रहेगा ?

उत्तर– पहले दूसरे काल में णमोकर मंत्र लिपिबद्ध नहीं था और छठे काल में णमोकार मंत्र लिपिबद्ध नहीं रहेगा।

प्रश्न 44. ॐ में किसको नमस्कार किया गया है?

उत्तर– ॐ में पंच परमेष्ठी को नमस्कार किया गया है।

प्रश्न 45. कितने परमेष्ठी मन सहित होते हैं?

उत्तर– चार परमेष्ठी मन सहित होते हैं–

(1) अरिहंत (2) आचार्य (3) उपाध्याय (4) साधु

प्रश्न 46. कितने परमेष्ठी विहार करते हैं ?

उत्तर– चार परमेष्ठी विहार करते हैं।

(1) अरिहंत (2) आचार्य (3) उपाध्याय (4) साधु।

प्रश्न 47. कितने परमेष्ठी आहार करते हैं?

उत्तर– तीन परमेष्ठी आहार करते हैं–

(1) आचार्य (2) उपाध्याय (3) साधु

प्रश्न 48. कितने परमेष्ठी इसी भव में नियम से मोक्ष जायेंगे ?

उत्तर– एक परमेष्ठी इसी भव में नियम से मोक्ष जायेंगे (1) अरिहंत

प्रश्न 49. कितने परमेष्ठी के पिच्छी कमण्डल नहीं होते हैं?

उत्तर– दो परमेष्ठी के पिच्छी कमण्डल नहीं होते–

(1) अरिहंत (2) सिद्ध।

प्रश्न 50. कितने परमेष्ठी शरीर रहित हैं?

उत्तर– एक परमेष्ठी शरीर रहित हैं – (1) सिद्ध

प्रश्न 51. कितने परमेष्ठी वस्त्र सहित हैं ?

उत्तर– वस्त्र सहित एक भी परमेष्ठी नहीं हैं।

प्रश्न 52. सबसे कम मूलगुण किस परमेष्ठी के हैं ?

उत्तर– सबसे कम मूलगुण सिद्ध परमेष्ठी के हैं।

प्रश्न 53. कितने परमेष्ठी संसारी है ?

उत्तर– चार परमेष्ठी संसारी है–

(1) अरिहंत (2) आचार्य (3) उपाध्याय (4) साधु।

प्रश्न 54. वह कौन से परमेष्ठी हैं जिनकी इन्द्रियाँ तो हैं लेकिन काम नहीं करतीं ?

उत्तर– अरिहन्त परमेष्ठी की इन्द्रियाँ तो हैं लेकिन काम नहीं करतीं।

प्रश्न 55. गणधर किस परमेष्ठी में आते हैं ?

उत्तर– गणधर आचार्य परमेष्ठी में आते हैं।

प्रश्न 56. कितने परमेष्ठी इन्द्रिय से काम लेते हैं ?

उत्तर– तीन परमेष्ठी इन्द्रिय से काम लेते हैं।

(1) आचार्य (2) उपाध्याय (3) साधु

प्रश्न 57. मन्त्र के जपने से क्या फल मिलता है ?

उत्तर– मन्त्र को जपने से, सुख, शान्ति, समताभाव, आत्मलाभ एवं योगों की शुद्धता होती है।

प्रश्न 58. अरिहन्त परमेष्ठी का शरीर कैसा होता है ?

उत्तर– अरिहन्त परमेष्ठी का शरीर परमौदारिक बादर निगोदिया जीवों से रहित होता है।

प्रश्न 59. जाप के कितने भेद व कौन-कौन से हैं ?

उत्तर– जाप के तीन भेद होते हैं। 1. वाचक 2. उपांशु 3. मानस।

प्रश्न 60. वाचक जाप किसे कहते हैं ?

उत्तर– जिन मन्त्रों का वचनों के द्वारा शुद्ध उच्चारण किया जाता है। उसे वाचक जाप कहते हैं।

प्रश्न 61. उपांशु जाप किसे कहते हैं?

उत्तर– मन्त्रों के अक्षर, मात्रा, पद का स्पष्ट व शुद्ध कंठ से उच्चारण करना उपांशु जाप कहा गया है।

प्रश्न 62. मानस जाप किसे कहते हैं ?

उत्तर– विशुद्ध मन्त्र अथवा बीजाक्षर का मन में चिन्तवन करना, उसे मानस जाप कहते हैं।

प्रश्न 63. सच्चे देव किन्हें कहते हैं?

उत्तर– जो वीतरागी, सर्वज्ञ और हितोपदेशी है तथा अरिहंत, तीर्थकर, जिनेन्द्र आदि नामों से जाने जाते हैं उन्हें सच्चे देव कहते हैं।

प्रश्न 64. वीतरागी किन्हें कहते हैं ?

उत्तर– जो राग द्वेष से रहित होते हैं उन्हें वीतरागी कहते हैं।

प्रश्न 65. सर्वज्ञ किन्हें कहते हैं?

उत्तर– जो तीनों लोकों एवं तीनों कालों के समस्त पदार्थों की समस्त पर्यायों को एक साथ जानते हैं उन्हें सर्वज्ञ कहते हैं।

प्रश्न 66. हितोपदेशी किन्हें कहते हैं ?

उत्तर– जो अपनी आत्मा का हित करते हुए भव्य जीवों को आत्मा के हित का उपदेश देते हैं उन्हें हितोपदेशी कहते हैं।

प्रश्न 67. सच्चे शास्त्र किन्हें कहते हैं ?

उत्तर– जो सच्चे देव के द्वारा कहा गया है और उन्हीं के आधार पर आचार्यों द्वारा लिखा गया है, जिसमें सच्चे सुख (मोक्ष) की प्राप्ति का कथन होता है उन्हें सच्चे शास्त्र कहते हैं।

प्रश्न 68. सच्चे गुरू किन्हें कहते हैं?

उत्तर– जो विषय आशाओं से रहित होते है, सम्पूर्ण आरम्भ और परिग्रह से रहित होते हैं वे नग्न दिगम्बर मुनि होते हैं। सदा, ज्ञान, ध्यान, तप में लीन रहते हैं वे आचार्य सद्‌गुरू तपस्वी सच्चे गुरू कहलाते हैं।

प्रश्न 69. देव-शास्त्र गुरू में कौन-कौन विद्यमान हैं ?

उत्तर– देव में अरहंत व सिद्ध भगवान की प्रतिमायें, शास्त्र में सच्चे शास्त्र एवं गुरू में आचार्य, उपाध्याय व साधु विद्यमान हैं।

प्रश्न 70. मूलगुण किन्हें कहते हैं? किस परमेष्ठि के कितने मूलगुण होते हैं ?

उत्तर– जो गुणों में मूल हो अर्थात पहचान के मुख्य लक्षणों को मूलगुण कहते हैं।

अरिहंतों के 46 मूलगुण होते हैं।

सिद्धों के 8 मूल गुण होते हैं।

आचार्यो के 36 मूलगुण होते हैं।

उपाध्यायों के 25 मूलगुण होते हैं।

साधुओं के 28 मूलगुण होते हैं।

प्रश्न 71. अरहंत परमेष्ठी के 46 मूलगुण कौन से है ?

उत्तर– अरहंत परमेष्ठी के मूलगुण निम्नलिखित हैं :–

34 अतिशय (10 जन्म के + 10 केवल ज्ञान के + 14 देवकृत) + 8 प्रातिहार्य + 4 अनंत चतुष्टय = 46।

प्रश्न 72. अरिहंत परमेष्ठी के जन्म के अतिशय कौन-कौन से हैं ?

उत्तर – (1) अत्यन्त सुन्दर शरीर (2) अति सुगंध मय शरीर
(3) पसीना रहित शरीर (4) मल मूत्र रहित शरीर
(5) अल्पभाषी, मधुर व हितकारी वचन बोलना
(6) अतुल्य बल (7) सफेद रक्त

(8) शरीर में 1008 लक्षण (9) समचतुरस्त्र संस्थान
(10) वज्र वृषभ नाराच संहनन

प्रश्न 73. *अरिहंत भगवान के केवलज्ञान के 10 अतिशय कौन से हैं ?*

उत्तर– (1) आकाश में गमन (2) चारों ओर सौ सौ योजन सुभिक्षता होना (3) चार मुख दिखना (4) हिंसा न होना (5) उपसर्ग न होना (6) ग्रास वाला आहार नहीं होना (7) समस्त विद्याओं का स्वामीपना (8) नख और केश न बढ़ना (9) आंखों की पलकें न झपकना (10) शरीर की परछाई न पड़ना।

प्रश्न 74. अरिहंत भगवान के देवकृत चौदह अतिशय कौन से हैं?

उत्तर– (1) अर्ध मागधी भाषा होना (2) जीवों में परस्पर मित्रता होना (3) दिशाओं का निर्मल होना (4) आकाश का निर्मल होना (5) छहों ऋतुओं के फल-फूल एक साथ फलना (6) दर्पण के समान पृथ्वी होना (7) भगवान के चरणों के नीचे स्वर्ण कमलो की रचना होना (8) आकाश में जय जयकार होना (9) शीतल मंद सुगंधित पवन चलना (10) सुगंधित जल की वर्षा होना (11) धरती का निष्कंटक और कंकर रहित होना (12) सब जीवों को आनंद होना (13) भगवान के आगे धर्म चक्र का चलना (14) छत्र, चंवर, ध्वजा आदि आठ मंगल द्रव्यों का साथ रहना।

प्रश्न 75. अरिहंत भगवान के अष्ट प्रतिहार्य कौन-कौन से हैं ?

उत्तर– (1) भगवान के पास अशोक वृक्ष होना (2) रत्नमय सिंहासन (3) सिर पर तीन छत्र (4) पीठ पीछे भामंडल (5) निरक्षरी दिव्य ध्वनि। (6) देवों द्वारा फूलों की वर्षा (7) यक्षों द्वारा चौसठ चंवर ढोरना (8) दुंदुभि बाजे बजना।

प्रश्न 76. अरिहंत भगवान के अनंत चतुष्टय कौन-कौन से हैं ?

उत्तर– (1) अनंत दर्शन (2) अनंत ज्ञान (3) अनंत सुख (4) अनंत बल (वीर्य)।

प्रश्न 77. अरिहंत परमेष्ठी कितने दोषों से रहित होते हैं?

उत्तर– अरिहंत परमेष्ठी 18 दोषों से रहित होते हैं।

प्रश्न 78. 18 दोष कौन से हैं ?

उत्तर– (1) जन्म (2) बुढ़ापा (3) प्यास (4) भूख (5) आश्चर्य (6) पीड़ा (7) दुख (8) शोक (9) रोग (10) घमंड (11) मोह (12) भय (13) निद्रा (14) चिंता (15) पसीना (16) राग (17) द्वेष (18) मरण – ये 18 दोष हैं।

प्रश्न 79. सिद्ध परमेष्ठी किन्हें कहते हैं ?

उत्तर– जो घातिया और अघातिया आठों कर्मो का नाश हो जाने से नित्य निरंजन अशरीरी हैं, लोक के अग्र भाग में विराजमान है वे सिद्ध परमेष्ठी हैं।

प्रश्न 80. सिद्ध परमेष्ठी के कितने मूलगुण होते हैं ?

उत्तर– सिद्ध परमेष्ठी के आठ मूलगुण होते हैं।
(1) अनंत दर्शन (2) क्षायिक सम्यक्त्व (3) अनंत ज्ञान (4) अगुरूलघुत्व (5) अवगाहनत्व (6) सूक्ष्मत्व (7) अनंत वीर्य (8) अव्यावाधत्व।

प्रश्न 81. आचार्य परमेष्ठी किन्हें कहते हैं ?

उत्तर– जो मुनि संघ के नायक होते हैं, पंचाचारों का पालन करते हैं और संघ के साधुओं से कराते हैं। आत्मार्थी शिष्यों को शिक्षा, दीक्षा, प्रायश्चित देते हैं, 36 मूलगुण के धारी होते हैं वे आचार्य परमेष्ठी हैं।

प्रश्न 82. आचार्य परमेष्ठी के कितने मूलगुण होते हैं ?

उत्तर– 12 तप, 10 धर्म, 5 आचार, 6 आवश्यक, 3 गुप्ति ये 36 मूलगुण हैं। उत्तर गुण अनेक हैं।

प्रश्न 83. 12 तप कौन से हैं ?

उत्तर– (1) अनशन (2) ऊनोदर (3) व्रत परिसंख्यान (4) रस परित्याग (5) विविक्त शय्यासन (6) काय क्लेश (7) प्रायश्चित (8) विनय (9) वैयावृत्य (10) स्वाध्याय (11) व्युत्सर्ग (12) ध्यान।

प्रश्न 84. अनशन तप किसे कहते हैं?

उत्तर– आत्म साधना के लिए विकल्प रहित उपवास को अनशन तप कहते हैं।

प्रश्न 85. उनोदर तप किसे कहते हैं?

उत्तर– भूख से कम भोजन करने को ऊनोदर तप कहते हैं।

प्रश्न 86. व्रत परिसंख्यान तप किसे कहते हैं ?

उत्तर– आहार के समय अटपटा नियम लेने को व्रत परिसंख्यान तप कहते हैं।

प्रश्न 87. रस परित्याग तप किसे कहते हैं?

उत्तर– मीठा, नमक, आदि रसों को त्याग करके आहार लेने को रस परित्याग तप कहते हैं।

प्रश्न 88. विविक्त शय्यासन तप किसे कहते हैं ?

उत्तर– एकांत स्थान में उठना, बैठना, सोना विविक्त शय्यासन तप है।

प्रश्न 89. काय क्लेश तप किसे कहते हैं ?

उत्तर– शरीर से गर्मी, सर्दी सहन करने को काय क्लेश तप कहते हैं।

प्रश्न 90. प्रायश्चित तप किसे कहते हैं ?

उत्तर– गलती हो जाने पर, मूलगुणों में दोष लग जाने पर गलती स्वीकार करना प्रायश्चित तप है।

प्रश्न 91. विनय तप किसे कहते हैं ?

उत्तर– देव-शास्त्र गुरू की भक्ति करना विनय तप है।

प्रश्न 92. वैय्यावृत्य तप किसे कहते हैं ?

उत्तर– रोगी और वृद्ध साधुओं की सेवा करना वैय्यावृत्य तप है।

प्रश्न 93. स्वाध्याय तप किसे कहते हैं ?

उत्तर– सच्चे शास्त्रों का अध्ययन करना एवं आत्मा का ध्यान करना स्वाध्याय तप कहलाता है।

प्रश्न 94. व्युत्सर्ग तप किसे कहते हैं ?

उत्तर– नश्वर शरीर एवं क्षणभंगुर सुख के मोह को छोड़ना व्युत्सर्ग तप कहलाता है।

प्रश्न 95. तप के स्थूल रूप से कितने भेद हैं ?

उत्तर– तप के दो भेद हैं।

(1) वाह्य तप (2) अभ्यंतर तप। पहले के छह बाह्य एवं बाद के छह अभ्यंतर तप है।

प्रश्न 96. दशलक्षण धर्मों के नाम कौन-कौन से हैं ?

उत्तर– (1) उत्तम क्षमा (2) उत्तम मार्दव (3) उत्तम आर्जव (4) उत्तम शौच (5) उत्तम सत्य (6) उत्तम संयम (7) उत्तम तप (8) उत्तम त्याग (9) उत्तम आकिंचन (10) उत्तम ब्रह्मचर्य।

प्रश्न 97. उत्तम क्षमा किसे कहते हैं ?

उत्तर– क्रोध के सम्पूर्ण रूप से त्याग को उत्तम क्षमा कहते हैं।

प्रश्न 98. उत्तम मार्दव किसे कहते हैं ?

उत्तर– घमण्ड का पूर्णतः अभाव कर मधुर व्यवहार करना उत्तम मार्दव कहलाता है।

प्रश्न 99. उत्तम आर्जव धर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर– छल-कपट, मायाचारी का पूर्णतः त्याग, बाहर और भीतर एक से भाव रखना उत्तम आर्जव धर्म है।

प्रश्न 100. उत्तम शौच धर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर– लोभ का त्याग करना अर्थात् हृदय को पवित्र रखना उत्तम शौच धर्म है।

प्रश्न 101. उत्तम सत्य धर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर– असत्य का त्याग कर सच्चे धर्म पर श्रद्धा करना एवं सत्य बोलना उत्तम सत्य धर्म है।

प्रश्न 102. उत्तम संयम धर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर– छह काय के जीवों पर दया करना, पांच इन्द्रियों एवं मन को वश में करना उत्तम धर्म कहलाता है।

प्रश्न 103. उत्तम तप धर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर– बारह प्रकार के तप करना अर्थात् कर्मों के आश्रव को रोकने एवं निर्जरा के साधन को उत्तम तप धर्म कहते हैं।

प्रश्न 104. उत्तम त्याग धर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर– भावनात्मक कुटिल विचारों का त्याग कर चार प्रकार के दान देना, संयम धारण करना उत्तम त्याग धर्म कहलाता है।

प्रश्न 105. उत्तम आकिंचन धर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर– वाह्य एवं अंतरंग के परिग्रह को त्यागना आकिंचन धर्म है।

प्रश्न 106. उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर– स्त्रीमात्र का त्याग करना और अपने आत्म स्वरूप में रमण करना उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म कहलाता है।

प्रश्न 107. पंचाचार कौन-कौन से हैं?

उत्तर– (1) दर्शनाचार (2) ज्ञानाचार (3) चारित्राचार (4) वीर्याचार (5) तपाचार।

प्रश्न 108. दर्शनाचार किसे कहते हैं ?

उत्तर– पच्चीस दोष रहित सम्यग्दर्शन को दर्शनाचार कहते हैं।

प्रश्न 109. ज्ञानाचार किसे कहते हैं ?

उत्तर– दोष रहित सम्यग्ज्ञान को ज्ञानाचार कहते हैं।

प्रश्न 110. चारित्राचार किसे कहते हैं ?

उत्तर– 13 प्रकार के चारित्र को निर्दोष पालना चारित्राचार है।

प्रश्न 111. वीर्याचार किसे कहते हैं ?

उत्तर– अपने आत्म बल को न छुपाकर तप करना वीर्याचार है।

प्रश्न 112. तपाचार किसे कहते हैं ?

उत्तर– बारह प्रकार के तप को दोष रहित पालन करना तपाचार है।

प्रश्न 113. छह आवश्यक कौन से हैं ?

उत्तर– (1) समता (2) वंदना (3) स्तुति (4) प्रतिक्रमण (5) स्वाध्याय (6) कायोत्सर्ग।

प्रश्न 114. समता किसे कहते हैं ?

उत्तर— अच्छे बुरे सभी प्रकार के जीवों पर समान दृष्टि रखना और त्रिकाल सामायिक करना समता है।

प्रश्न 115. वंदना किसे कहते हैं ?

उत्तर— किसी एक तीर्थंकर या परमेष्ठी को नमस्कार करना वंदना कहलाती है।

प्रश्न 116. स्तुति किसे कहते हैं ?

उत्तर— पांच परमेष्ठियों का या चौबीस तीर्थकरों का गुणगान करने को स्तुति कहते हैं।

प्रश्न 117. प्रतिक्रमण किसे कहते हैं ?

उत्तर— व्रतों में प्रमाद योग से लगे दोषों को प्रायश्चित कर दूर करना प्रतिक्रमण कहलाता है।

प्रश्न 118. स्वाध्याय किसे कहते हैं ?

उत्तर— शास्त्रों का अध्ययन एवं आत्म चिंतन करना स्वाध्याय है।

प्रश्न 119. कायोत्सर्ग किसे कहते हैं ?

उत्तर— शरीर से ममत्व छोड़कर ध्यान करना कायोत्सर्ग है।

प्रश्न 120. गुप्ति किसे कहते हैं।

उत्तर— कर्मों के आश्रव के कारण मन, वचन, काय को वश में करना गुप्ति है।

प्रश्न 121. गुप्ति कितनी हैं ?

उत्तर— गुप्ति तीन होती हैं। (1) मनोगुप्ति (2) वचन गुप्ति (3) काय गुप्ति।

प्रश्न 122. मनोगुप्ति किसे कहते हैं ?

उत्तर— मन को वश में करना मनोगुप्ति है।

प्रश्न 123. वचन गुप्ति किसे कहते हैं ?

उत्तर— वाणी को वश में करना वचन गुप्ति है।

प्रश्न 124. काय गुप्ति किसे कहते हैं ?

उत्तर— शरीर को वश में करना काय गुप्ति है।

प्रश्न 125. उपाध्याय परमेष्ठी किन्हें कहते हैं ?

उत्तर— जो मुनि 11 अंग और 14 पूर्वों के ज्ञानी होते हैं अथवा उस समय के सभी शास्त्रों के ज्ञाता होते हैं तथा जो संघ के साधुओं को पढ़ाते हैं वे उपाध्याय परमेष्ठी कहलाते हैं।

प्रश्न 126. उपाध्याय परमेष्ठी के कितने मूलगुण होते हैं ?

उत्तर— उपाध्याय परमेष्ठी के 11 अंग तथा 14 पूर्व ये 25 मूलगुण होते हैं।

प्रश्न 127. ग्यारह अंग कौन-कौन से हैं ?

उत्तर– (1) आचारांग (2) सूत्रकृतांग (3) स्थानांग (4) समवायांग (5) व्याख्या प्रज्ञप्ति (6) ज्ञातृ कथांग (7) उपासकाध्ययनांग (8) अंतःकृत दशांग (9) अनुत्तरोपपादिक दशांग (10) प्रश्न व्याकरणांग (11) विपाक सूत्रांग।

प्रश्न 128. आचारांग किसे कहते हैं ?

उत्तर– जिसमें मोक्ष मार्ग पर अग्रसर मुनियों के आचरण, पांच महाव्रत, समिति, गुप्ति आदि की विवेचना होती है उसे आचारांग कहते हैं। इसमें पद संख्या 18 हजार है।

प्रश्न 129. सूत्र कृतांग किसे कहते हैं ?

उत्तर– जिसमें ज्ञान प्राप्ति के उपायों, ज्ञान के अंगों, स्वाध्याय के भेदों आदि की विवेचना होती है उसे सूत्र कृतांग कहते हैं। इसमें पद संख्या 36 हजार हैं।

प्रश्न 130. स्थानांग किसे कहते हैं ?

उत्तर– जिसमें स्याद्वाद में द्रव्यों की अपेक्षाकृत एक से अनेक भेदों की विवेचना है उसे स्थानांग कहते हैं। इसमें पदों की संख्या 42 हजार है।

प्रश्न 131. समवायांग किसे कहते हैं ?

उत्तर– जिस अंग में द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव की अपेक्षा से द्रव्यों में परस्पर की समानता की विवेचना की गई है उसे समवायांग कहते हैं। इसकी पद संख्या एक लाख चौसठ हजार है।

प्रश्न 132. द्रव्य समानता किसे कहते हैं ?

उत्तर– धर्म द्रव्य, अधर्म द्रव्य, लोकाकाश और एक जीव के प्रदेश समान है। यह धर्म द्रव्य की अपेक्षा समानता है।

प्रश्न 133. क्षेत्र समानता किसे कहते हैं ?

उत्तर– सिद्ध शिला, जम्बूद्वीप अप्रतिष्ठान नरक, नंदीश्वर की बावड़िया और सर्वार्थसिद्धि का विमान क्षेत्र की अपेक्षा समान है। यह क्षेत्र जन्य समानता है।

प्रश्न 134. काल समानता किसे कहते हैं ?

उत्तर– उत्सर्पिणी अवसर्पिणी दोनों काल समान हैं। यह काल की अपेक्षा समानता है।

प्रश्न 135. भाव समानता किसे कहते हैं ?

उत्तर– क्षायिक दर्शन, क्षायिक ज्ञान, क्षायिक चारित्र आदि भाव समान है। यह भाव समानता हुई।

प्रश्न 136. व्याख्या प्रज्ञप्ति अंग किसे कहते हैं ?

उत्तर– जिस अंग में जीव के अस्तित्व अर्थात् जीव है कि नहीं इस प्रकार जीव

के अस्तित्व की सिद्धि के लिए व्याख्या होती है उसे व्याख्या प्रज्ञप्ति कहते हैं। इसकी पद संख्या दो लाख 28 हजार हैं

प्रश्न 137. उपासकाध्ययनांग किसे कहते हैं ?

उत्तर– जिसमें श्रावकों के समस्त आचरण, क्रिया, अनुष्ठान, विधि-विधान आदि की विवेचना होती है उसे उपासकाध्ययनांग कहते हैं। इसमें पद संख्या ग्यारह लाख सत्तर हजार है।

प्रश्न 138. ज्ञातृ कथांग किसे कहते हैं ?

उत्तर– जिसमें तीर्थकरों की देशना विधि, सन्देह दूर करने की विधि, अनेक प्रकार की कथाओं, उप कथाओं की व्याख्या होती है उसे ज्ञातृ कथांग कहते हैं। इसमें पद संख्या 5 लाख 56 हजार है।

प्रश्न 139. अंतःकृत दशांग किसे कहते हैं ?

उत्तर– जिसमें प्रत्येक तीर्थंकर के समय के संसार का अंत करने वाले दस मुनीश्वर जो भयंकर उपसर्गों को सहन कर समस्त कर्मों से रहित होकर मोक्ष सुख को प्राप्त करते हैं उनकी व्याख्या होती है उसे अंतःकृत दशांग कहते हैं। इसमें पद संख्या 23 लाख 28 हजार है।

प्रश्न 140. अनुत्तरोपपादिक दशांग किसे कहते हैं ?

उत्तर– जिसमें प्रत्येक तीर्थंकर के समय दस मुनि उपसर्ग सहन करके अनुत्तर विमानों को प्राप्त करते हैं। उनका वर्णन होता है उसे अनुत्तरोपपादिक दशांग कहते हैं। इसमें पद संख्या 92 लाख 44 हजार है।

प्रश्न 141. प्रश्न व्याकरणांग किसे कहते हैं ?

उत्तर– जिस अंग में आक्षेपणी, विक्षेपणी, समवेक्षणी और निर्वहनी इन चार प्रकार की कथाओं का वर्णन विनाश, चिंता, लाभ, हानि, सुख, दुख, जीवन, मरण, जय, पराजय के अनुसार होता है उसे प्रश्न व्याकरणांग कहते हैं उसमें पद संख्या 93 लाख 16 हजार है।

प्रश्न 142. विपाक सूत्र किसे कहते हैं ?

उत्तर– जिसमें शुभ अशुभ कर्मों के उदय एवं शुभ अशुभ कर्मों के फल की विवेचना होती है उसे विपाक सूत्रांग कहते हैं। इसकी पद संख्या एक करोड़ 84 लाख है।

प्रश्न 143. दृष्टिवाद अंग किसे कहते हैं ?

उत्तर– जिस अंग में तीन सौ तिरेसठ मतों का विवेचन करके उनका खंडन किया गया है उसे दृष्टिवाद अंग कहते हैं। इसके पांच भेद हैं (1) परिकर्म (2) सूत्र (3) प्रथमानुयोग (4) पूर्वगत (5) चूलिका।

प्रश्न 144. परिकर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर– जिसमें गणित की विशद व्याख्या रहती है उसे परिकर्म कहते हैं। इसके पांच भेद हैं। (1) चन्द्र प्रज्ञप्ति (2) सूर्य प्रज्ञप्ति (3) जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति (4) दीप सागर प्रज्ञप्ति (5) व्याख्या प्रज्ञप्ति।

प्रश्न 145. चन्द्र प्रज्ञप्ति किसे कहते हैं ?

उत्तर– जिसमे चन्द्रमा की आयु, गति, परिवार, ग्रहण आदि विभूतियों का वर्णन होता है उसे चन्द्र प्रज्ञप्ति कहते हैं।

प्रश्न 146. सूर्य प्रज्ञप्ति किसे कहते हैं ?

उत्तर– जिसमें सूर्य की आयु, गति, परिवार, ग्रहण आदि विभूतियों का वर्णन होता है उसे सूर्य प्रज्ञप्ति कहते हैं।

प्रश्न 147. द्वीप सागर प्रज्ञप्ति किसे कहते हैं ?

उत्तर– जिसमें अंख्यात द्वीप सागरों के वर्णन के साथ-साथ उन द्वीप समुद्रों में रहने वाले अकृत्रिम चैत्यालय, ज्योतिष, व्यंतर आदि सबका वर्णन होता है उसे द्वीप सागर प्रज्ञप्ति कहते हैं।

प्रश्न 148. जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति किसे कहते हैं ?

उत्तर– जिसमें जम्बूद्वीप संबंधी सात क्षेत्रों, 6 कुलाचल पर्वतों, सरोवर, नदियों आदि का वर्णन रहता है उसे जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति कहते हैं

प्रश्न 149. व्याख्या प्रज्ञप्ति किसे कहते हैं ?

उत्तर– जिसमें जीव-अजीव आदि द्रव्यों का स्वरूप उनका रूपी अरूपीपना, चेतन, अचेतन आदि का वर्णन रहता है उसे व्याख्या प्रज्ञप्ति कहते हैं।

प्रश्न 150. सूत्र किसे कहते हैं ?

उत्तर– जिसमें जीव के कर्ता, भोक्ता, शरीर, प्रमाण आदि अधिकारों का वर्णन होता है। जीव, एवं पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु से उत्पन्न हुआ हैं अणुमात्र नहीं है, सर्वगत नहीं है, इत्यादि मानने वाले मतों की भ्रांति का निराकरण किया गया हो उसे सूत्र कहते हैं।

प्रश्न 151. प्रथमानुयोग किसे कहते हैं ?

उत्तर– जिसमें तिरेसठ शलाका पुरूषों के चरित्र का निरूपण होता है उसे प्रथमानुयोग कहते हैं।

प्रश्न 152. पूर्वगत किसे कहते हैं?

उत्तर– जिसमें समस्त पदार्थों के उत्पाद, व्यय, ध्रौव्य, आदि का वर्णन होता है। उसे पूर्वगत कहते है। इसके 14 भेद है।

प्रश्न 153. चौदह पूर्व कौन से हैं?

उत्तर– (1) उत्पाद पूर्व (2) अग्रायणी पूर्व (3) वीर्यानुवाद पूर्व (4) अस्ति नास्ति प्रवाद पूर्व (5) ज्ञान प्रवाद पूर्व (6) कर्म प्रवाद पूर्व (7) सत्यप्रवाद पूर्व (8) आत्म प्रवाद पूर्व (9) प्रत्याख्यान पूर्व (10) विद्यानुवाद प्रवाद पूर्व (11) कल्याण प्रवाद पूर्व (12) प्राणानुवाद पूर्व (13) क्रिया विशाल पूर्व (14) लोक बिंदु सार पूर्व।

प्रश्न 154. उत्पाद पूर्व किसे कहते हैं ?

उत्तर– जिसमें जीवादि पदार्थों के उत्पाद, व्यय एवं ध्रौव्य का वर्णन होता है। उसे उत्पाद पूर्व कहते हैं। इसकी पद संख्या एक करोड़ है।

प्रश्न 155. अग्रायणी पूर्व किसे कहते हैं ?

उत्तर– जिसमें प्रधान व मुख्य पदार्थों का निरूपण रहता है। दुर्नय, सुनय और द्रव्यों का वर्णन रहता है उसे अग्रायणी पूर्व कहते हैं। इसमें पद संख्या छियानवे लाख है।

प्रश्न 156. वीर्यानुवाद किसे कहते हैं ?

उत्तर– जिसमें चक्रवर्ती, इन्द्र, धरणेन्द्र, केवली आदि की शक्ति का वर्णन होता है उसे वीर्यानुवाद पूर्व कहते हैं। इसकी पद संख्या सत्तर लाख है।

प्रश्न 157. अस्ति नास्ति प्रवाद पूर्व किसे कहते हैं ?

उत्तर– जिसमें अनेक प्रकार के छहों द्रव्यों के अस्तित्व एवं नास्ति धर्म का वर्णन होता हैं उसे अस्ति नास्ति प्रवाद पूर्व कहते हैं। इसमें पद संख्या 60 लाख है।

प्रश्न 158. ज्ञान प्रवाद पूर्व किसे कहते हैं?

उत्तर– जिसमें पांच सम्यक ज्ञानों एवं तीन मिथ्या ज्ञानों के वर्णन के साथ-साथ उनके प्रकट होने के कारण एवं उनके आधार पात्र आदि का वर्णन होता है। उसे ज्ञान प्रवाद पूर्व कहते हैं इसमें पद संख्या 99999 है।

प्रश्न 159. आत्म प्रवाद पूर्व किसे कहते हैं ?

उत्तर– जिसमें जीव के ज्ञान, सुख और कृतित्व आदि धर्मों का वर्णन होता है उसे आत्म प्रवाद पूर्व कहते हैं। इसमें पद संख्या 26 करोड़ है।

प्रश्न 160. सत्य प्रवाद पूर्व किसे कहते हैं ?

उत्तर– जिसमें वचन गुप्ति का वर्णन होता हैं वचनों का संस्कार, कंठ, तालु, उच्चारण स्थानों के साथ-साथ दो इन्द्रिय, तीन इन्द्रिय, चार इन्द्रिय, पंचेन्द्रिय जीवों के शुभाशुभ वचनों के प्रयोग का वर्णन रहता है उसे सत्य प्रवाद पूर्व कहते हैं। इसकी पद संख्या एक करोड़ छः है।

प्रश्न 161. कर्म प्रवाद पूर्व किसे कहते हैं ?

उत्तर– जिसमें कर्म के बंध, उदीरणा, उपशम, और निर्जरादि का वर्णन होता है उसे कर्म प्रवाद पूर्व कहते हैं। इसमें पद संख्या एक करोड़ अस्सी लाख है।

प्रश्न 162. प्रत्याख्यान पूर्व किसे कहते हैं।

उत्तर– जिसमें पर द्रव्य और पर्यायों के त्याग का, उपवास का, व्रत, समिति, गुप्ति, का पालन करने का प्रतिलेख, विराधना, विशुद्धि आदि का वर्णन होता है उसे प्रत्याख्यान पूर्व कहते हैं। उसमें पद संख्या 48 लाख है।

प्रश्न 163. विद्यानुवाद पूर्व किसे कहते हैं?

उत्तर– जिस पूर्व में 700 लघु विद्या, 500 महाविद्या एवं आठों महानिमित्तों का एवं इनके साधनों का वर्णन होता है उसे विद्यानुवाद पूर्व कहते हैं। इसकी पद संख्या एक करोड़ दस लाख है।

प्रश्न 164. कल्याण प्रवाद पूर्व किसे कहते हैं ?

उत्तर– जिस पूर्व में तीर्थंकर, कामदेव, चक्रवर्ती, बलदेव नारायण आदि के गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण कल्याणकों का वर्णन होता हैं उसे कल्याण प्रवाद पूर्व कहते हैं। इसमें पद संख्या 26 करोड़ है।

प्रश्न 165. प्राणानुवादपूर्व किसे कहते हैं ?

उत्तर– जिसमें अष्टांग चिकित्सा, श्वासोच्छवास की निश्चलता और पवनाभ्यास का साधन तथा पृथ्वी, अप, तेज, वायु, आकाश इन पाँच तत्वों के पवन के परिवार का वर्णन होता है उसे प्राणानुवादपूर्व कहते हैं। इसमें पद संख्या 13 करोड़ है।

प्रश्न 166. क्रिया विशाल पूर्व किसे कहते हैं ?

उत्तर– जिस पूर्व में पुरूष की बहत्तर कलाओं का वर्णन, छंद शास्त्र और अलंकार शास्त्र का वर्णन होता है, उसे क्रिया विशाल पूर्व कहते हैं। इसकी पद संख्या नौ करोड़ है।

प्रश्न 167. लोक विन्दुसार पूर्व किसे कहते हैं ?

उत्तर– जिसमें लोक में सबसे प्रधान और सारभूत जो मोक्ष तत्व है उसके सुख साधन और उसको प्राप्त करने के लिए कहे गये समस्त अनुष्ठानों का वर्णन रहता है उसे क्रिया विशाल पूर्व कहते हैं। इसमें पद संख्या 12 करोड़ 50 लाख हैं।

प्रश्न 168. चूलिका के कितने भेद हैं ?

उत्तर– चूलिका के पांच भेद हैं। (1) जलगता (2) स्थलगता (3) मायागता (4) रूपगता (5) आकाशगता।

प्रश्न 169. जलगता किसे कहते हैं ?

उत्तर– इसमें जल में गमन करने के लिए तथा जल का स्तंभन करने के लिए तंत्र मंत्र-यंत्र की साधना की विवेचना हैं

प्रश्न 170. स्थलगता में क्या वर्णन है ?

उत्तर– इसमें पृथ्वी पर गमन करने के कारण तंत्र-मंत्र आदि साधनाओं का वर्णन रहता हैं। पृथ्वी पर होने वाली जितनी वास्तु विद्यायें हैं उन सभी का विवेचन रहता है।

प्रश्न 171. मायागता किसे कहते हैं ?

उत्तर– इसमें इन्द्र जाल संबंधी समस्त तंत्र-मंत्र एवं यंत्रों का वर्णन रहता है।

प्रश्न 172. रूपगता किसे कहते हैं ?

उत्तर– इसमें सिंह, व्याघ्र, हिरण, तोता, आदि के रूप धारण करने के मंत्र-तंत्र-यंत्रों का वर्णन एवं अनेक प्रकार के चित्र बनाने का वर्णन भी रहता है।

प्रश्न 173. आकाशगता किसे कहते हैं ?

उत्तर– इसमें आकाश में गमन करने के कारण मंत्र-तंत्र एवं साधना का वर्णन होता है।

प्रश्न 174. साधु परमेष्ठी किन्हें कहते हैं ?

उत्तर– जो विषय आशाओं से रहित हैं। सम्पूर्ण आरंभ और परिग्रह से रहित हैं। सदा, ज्ञान, ध्यान, तप में लीन रहते हैं। वे साधु परमेष्ठी हैं।

प्रश्न 175. साधु परमेष्ठी के कितने मूलगुण होते हैं ?

उत्तर– 5 महाव्रत + 5 समिति + 5 इन्द्रिय विजय + 6 आवश्यक + 7 शेष गुण = 28 मूलगुण साधु परमेष्ठी के होते हैं।

प्रश्न 176. पांच महाव्रतों के नाम कौन से हैं ?

उत्तर– (1) अहिंसा महाव्रत (2) सत्य महाव्रत (3) अचौर्य महाव्रत (4) अपरिग्रह महाव्रत (5) ब्रह्मचर्य महाव्रत।

प्रश्न 177. अहिंसा महाव्रत किसे कहते हैं?

उत्तर– द्रव्य एवं भाव हिंसा का सूक्ष्म एवं स्थूल रूप से तयाग कर षट् काय जीवों की रक्षा करना अहिंसा महाव्रत है।

प्रश्न 178. सत्य महाव्रत किसे कहते हैं ?

उत्तर– असत्य वचनों का सूक्ष्म एवं स्थूल रूप से त्याग करना सत्य महाव्रत है।

प्रश्न 179. अचौर्य महाव्रत किसे कहते हैं ?

उत्तर– चोरी का सूक्ष्म एवं स्थूल रूप से त्याग करने को अचौर्य महाव्रत कहते हैं।

प्रश्न 180. अपरिग्रह महाव्रत तथा ब्रह्मचर्य महाव्रत किसे कहते हैं ?

उत्तर– वाह्य एवं अभ्यंतर परिग्रहों का सूक्ष्म एवं स्थूल रूप से त्याग करने को अपरिग्रह महाव्रत तथा 18000 प्रकार के शीलों का पालन करना ब्रह्मचर्य महाव्रत है।

प्रश्न 181. समिति किसे कहते हैं ?

उत्तर– षट्काय जीवों की रक्षा के लिए विवेक पूर्वक देखकर आहार, विहार, निहार, करने को समिति कहते हैं।

प्रश्न 182. समिति कितनी होती हैं ?

उत्तर– समिति पांच होती हैं। (1) ईर्या समिति (2) भाषा समिति (3) एषणा समिति (4) आदान निक्षेषण समिति (5) प्रतिष्ठापना समिति।

प्रश्न 183. ईर्या समिति किसे कहते हैं ?

उत्तर– चार हाथ आगे जमीन देखकर चलने को ईर्या समिति कहते हैं।

प्रश्न 184. भाषा समिति किसे कहते हैं ?

उत्तर– हित मित, प्रिय वचन बोलना, भाषा समिति है।

प्रश्न 185. एषणा समिति किसे कहते हैं ?

उत्तर– (बत्तीस) 32 दोषों से रहित आहार ग्रहण करना एषणा समिति है।

प्रश्न 186. आदान निक्षेपण समिति किसे कहते हैं ?

उत्तर– जीवों को देखकर वस्तुएं उठाना, रखना, आदान निक्षेपण समिति है।

प्रश्न 187. प्रतिष्ठापना (व्युत्सर्ग) समिति किसे कहते हैं ?

उत्तर– जीव रहित भूमि देखकर मलमूत्र त्यागना प्रतिष्ठापना समिति है।

प्रश्न 188. पांच इन्द्रिय विजय किसे कहते हैं?

उत्तर– स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु, कर्ण इन पांच इन्द्रियों के विषयों में आसक्ति को त्यागना और इन्हें वश में करना ही पंच इन्द्रिय विजय कहलाता है।

प्रश्न 189. छह आवश्यकों के नाम कौन से हैं ?

उत्तर– (1) समता (2) वंदना (3) स्तुति (4) प्रतिक्रमण (5) स्वाध्याय (6) कायोत्सर्ग।

प्रश्न 190. सात शेष गुण कौन से हैं ?

उत्तर– (1) स्नान का त्याग (2) भूमि पर शयन करना (3) नग्न रहना (4) केश लोंच करना (5) खड़े होकर आहार लेना (6) दातोंन नहीं करना (7) दिन में एक बार हाथों में आहार लेना।

2

चौबीस तीर्थंकर एवं विद्यमान बीस तीर्थंकर

प्रश्न 191. तीर्थंकर किसे कहते हैं ?

उत्तर– जो धर्म रूपी तीर्थ के कर्ता हैं, धर्म रूपी तीर्थ का प्रर्वतन करते हैं वे तीर्थंकर कहलाते हैं।

प्रश्न 192. क्या तीर्थंकर धर्म के संस्थापक होते हैं ?

उत्तर– कोई भी तीर्थंकर धर्म के संस्थापक नहीं होते हैं अपितु उपदेशक होते हैं।

प्रश्न 193. तीर्थंकर प्रकृति का बंध कैसे होता है ?

उत्तर– केवली एवं श्रुत केवली के पादमूल में मनुष्य सोलह कारण भावनाओं का चिंतवन करके तीर्थंकर प्रकृति का बंध कर लेते हैं, वह कर्म उदय में आ जाने से तीर्थंकर बन जाते हैं।

प्रश्न 194. भावना किसे कहते हैं ?

उत्तर– बार-बार एक प्रकार का चिंतन करने को भावना कहते हैं।

प्रश्न 195. सोलह कारण भावनायें कौन-कौन सी हैं ?

उत्तर– (1) दर्शन विशुद्धि, (2) विनय सम्पन्नता, (3) शीलव्रतेष्वनतिचार (4) अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग, (5) संवेग, (6) शक्तितस्तप (7) शक्तितस्त्याग (8) साधु समाधि, (9) वैयावृत्यकरण (10) अर्हंत भक्ति, (11) आचार्य भक्ति, (12) बहुश्रुत भक्ति, (13) प्रवचन भक्ति, (14) आवश्यकापरिहाणि, (15) मार्ग प्रभावना, (16) प्रवचन वत्सलत्व।

प्रश्न 196. तीर्थंकर प्रकृति के लिए परिणाम कैसे होने चाहिए ?

उत्तर– तीर्थंकर प्रकृति का बंध करने के लिए जीव के परिणाम जगत के सभी प्राणियों के उद्धार की करूणा भावना से युक्त होना चाहिए। मैं किसी प्रकार से संसार के सभी प्राणियों को भव दुख से निकालकर मोक्ष में पहुँचा दूँ।

प्रश्न 197. दर्शन विशुद्धि भावना की क्या विशेषता है ?

उत्तर– उपरोक्त सोलह भावनाओं में दर्शन विशुद्धि भावना का होना अत्यन्त आवश्यक है उसके साथ एक, दो या कितनी ही भावना हों या सभी हों तो तीर्थंकर प्रकृति का बंध हो सकता हैं यदि दर्शन विशुद्धि भावना नहीं है तो तीर्थंकर प्रकृति का बंध नहीं होगा।

प्रश्न 198. दर्शन विशुद्धि भावना किसे कहते हैं ?

उत्तर– पच्चीस मल दोषों से रहित विशुद्ध सम्यग्दर्शन का पालन करना दर्शन विशुद्धि भावना हैं

प्रश्न 199. विनयसम्पन्नता भावना किसे कहते हैं ?

उत्तर– देवशास्त्र गुरू रत्नत्रय तथा इसके धारण करने वालों का आगम के अनुसार विनय करना विनय सम्पन्नता भावना है।

प्रश्न 200. शीलव्रतेष्वनतीचार भावना क्या है ?

उत्तर– व्रतों एवं शीलों में अतिचार नहीं लगाना शीलव्रतेष्वनतीचार भावना है।

प्रश्न 201. अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग भावना क्या है ?

उत्तर– सदा ज्ञान के अभ्यास में लगे रहना अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग भावना हैं

प्रश्न 202. संवेग भावना क्या है ?

उत्तर– पापों तथा पाप के फल से डरना तथा धर्म एवं धर्म के फल में अनुराग होना संवेग है।

प्रश्न 203. शक्तितस्तप भावना किसे कहते हैं।

उत्तर– अपनी शक्ति के अनुसार शक्ति को न छिपा कर तप करना शक्तितस्तप भावना है।

प्रश्न 204. शक्तितस्त्याग भावना किसे कहते हैं ?

उत्तर– अपनी शक्ति के अनुसार त्याग करना आहार दान आदि देना शक्तितस्त्याग भावना है।

प्रश्न 205. साधु समाधि भावना क्या होती है ?

उत्तर– साधुओं का उपसर्ग आदि दूर करना या समाधि सहित मरण करना साधु समाधि भावना हैं

प्रश्न 206. वैयावृत्यकरण भावना क्या है?

उत्तर– वृती त्यागी आदि की सेवा वैयावृत्ति करना वैयावृत्य करण भावना है।

प्रश्न 207. अर्हत भक्ति भावना क्या है ?

उत्तर– अर्हंत भगवान की भक्ति करना अर्हद् भक्ति भावना है।

प्रश्न 208. आचार्य भक्ति भावना किसे कहते हैं ?

उत्तर– आचार्य की भक्ति करना आचार्य भक्ति भावना है।

प्रश्न 209. बहुश्रुत भक्ति भावना किसे कहते हैं ?

उत्तर– उपाध्याय परमेष्ठी की भक्ति करने को बहुश्रुत भक्ति भावना कहते हैं।

प्रश्न 210. प्रवचन भक्ति भावना किसे कहते हैं ?

उत्तर– जिनवाणी की भक्ति करना प्रवचन भक्ति भावना है।

प्रश्न 211. आवश्यकापरिहाणि भावना क्या है ?

उत्तर– छः आवश्यक क्रियाओं को सावधानी से पलना आवश्यकापरिहाणि भावना है।

प्रश्न 212. मार्ग प्रभावना भावना किसे कहते हैं ?

उत्तर– जैन धर्म के प्रभाव को लोक में प्रसारित करना मार्ग प्रभावना भावना है।

प्रश्न 213. प्रवचन वत्सलत्व भावना क्या है ?

उत्तर– साधर्मीजनों में अगाध प्रेम करना प्रवचनवत्सलत्व भावना है।

प्रश्न 214. तीर्थकर कितने प्रकार के होते है ?

उत्तर– तीर्थकारों को दो भागों मे विभाजित किया जा सकता है–(1) भरत ऐरावत क्षेत्र में होने वाले तीर्थकर, (2) विदेह क्षेत्र में होने वाले तीर्थकर।

प्रश्न 215. भरत ऐरावत क्षेत्रों में होने वाले तथा विदेह क्षेत्रों में होने वाले तीर्थकरों में क्या अन्तर है ?

उत्तर– भरत ऐरावत क्षेत्रों में होने वाले तीर्थंकरों के पूरे पाँच कल्याणक होते हैं। विदेह क्षेत्रों में होने वाले तीर्थंकरों के पाँच, तीन और दो कल्याणक होते हैं तथा विदेह क्षेत्र में चतुर्थकाल विद्यमान रहने से यहाँ तीर्थकरों का अभाव नहीं होता है। भरत, ऐरावत क्षेत्र में कर्मकाल में ही तीर्थंकर होते हैं।

प्रश्न 216. भगवान तीर्थंकर की माता सोलह स्वप्न क्यों देखती है ?

उत्तर– भगवान पूर्व भव में सोलह कारण भावनाओं को भा कर चिंतवन कर, तीर्थंकर प्रकृति का बंध करते हैं। इसलिए तीर्थंकर की माता सोलह स्वप्न देखती हैं।

प्रश्न 217. सोलह स्वप्नों के नाम क्या हैं?

उत्तर– (1) ऐरावत हाथी, (2) श्वेत उत्तम बैल, (3) सिंह (4) माला युगल, (5) लक्ष्मी, (6) चन्द्रमा, (7) सूर्य (8) कलश युगल, (9) मीन युगल, (10) सरोवर, (11) समुद्र , (12) सिंहासन, (13) देवों का विमान, (14) नागेन्द्र भवन, (15) रत्न राशि एवं (16) धूम रहित अग्नि।

प्रश्न 218. तीर्थंकर की माता सोलह स्वप्न कब देखती हैं ?

उत्तर– पिछली रात्रि के पिछले पहर में जब तीर्थंकर माता के गर्भ में आते हैं तब माता सोलह स्वप्न देखती हैं।

प्रश्न 219. स्वप्नों के फलों के उत्तर कौन देता है ?

उत्तर– स्वप्नों के फलों के उत्तर भगवान के पिता देते हैं।

प्रश्न 220. भगवान के गर्भ में आने के पूर्व में क्या होता है?

उत्तर– छः महीने पहले माता के आँगन में प्रतिदिन साढ़े बारह करोड़ रत्नों की वर्षा होती है।

प्रश्न 221. पहले स्वप्न में माता ने ऐरावत हाथी देखा राजा ने उसका क्या फल बताया ?

उत्तर– हे देवी! आपको उत्तम पुत्र की प्राप्ति होगी।

प्रश्न 222. दूसरे स्वप्न में उत्तम श्वेत बैल देखने का क्या फल है ?

उत्तर– आपका पुत्र संसार में सबसे बड़ा होगा महान होगा।

प्रश्न 223. तीसरे स्वप्न में सिंह देखने का क्या फल है ?

उत्तर– आपका पुत्र अनंत बल से युक्त होगा।

प्रश्न 224. चौथे स्वप्न में माला युगल देखने का क्या फल है ?

उत्तर– आपका पुत्र समीचीन धर्म का उपदेशक होगा।

प्रश्न 225. पाँचवे स्वप्न में लक्ष्मी देखने का क्या फल है ?

उत्तर– आपके पुत्र के जन्म के समय मेरू पर्वत पर देवों के द्वारा क्षीर समुद्र के जल से 1008 कलशों से अभिषेक होगा।

प्रश्न 226. छठे स्वप्न में चन्द्रमा देखने का राजा ने क्या फल बताया ?

उत्तर– हे देवी ! चन्द्रमा देखने से आपका पुत्र समस्त जगत को आनन्द देने वाला होगा।

प्रश्न 227. सातवें स्वप्न में सूर्य देखने का क्या फल है ?

उत्तर– आपका पुत्र दैदीप्यमान प्रभा का धारक होगा।

प्रश्न 228. आठवें स्वप्न में कलश युगल देखने का क्या फल है?

उत्तर– आपका पुत्र अनेक निधियों का स्वामी होगा।

प्रश्न 229. नौ वें स्वप्न में मीन युगल देखने से क्या फल है ?

उत्तर– मीन युगल देखने से आपका पुत्र परम सुखी होगा।

प्रश्न 230. दशवें स्वप्न में सरोवर देखने का राजा ने क्या फल बताया ?

उत्तर– सरोवर देखने से आपके पुत्र के शरीर में 1008 लक्षण, व्यंजन शोभित होंगे।

प्रश्न 231. ग्यारहवें स्वप्न में समुद्र देखने का क्या फल है?

उत्तर– समुद्र देखने से वह पुत्र केवलज्ञान रूपी जलधि से युक्त होगा।

प्रश्न 232. बारहवें स्वप्न में सिंहासन देखने का क्या फल है ?

उत्तर– सिंहासन देखने से आपका पुत्र जगत गुरू एवं विपुल साम्राज्य का नायक होगा।

प्रश्न 233. तेरहवें स्वप्न में देवों का विमान देखने का क्या फल है ?

उत्तर– देवों का विमान देखने से वह स्वर्ग से अवतीर्ण होगा।

प्रश्न 234. चौदहवें स्वप्न में नागेन्द्र भवन देखने का क्या फल है ?

उत्तर– नागेन्द्र भवन देखने से आपका पुत्र जन्म से ही मति, श्रुत व अवधिज्ञान का धारी होगा।

प्रश्न 235. पन्द्रहवें स्वप्न में रत्न राशि देखने का क्या फल है ?

उत्तर– आपका पुत्र गुणों की खान होगा।

प्रश्न 236. भगवान की माता के सोलेहवें स्वप्न में धूम रहित अग्नि देखने का क्या फल है ?

उत्तर– आपका पुत्र मोक्ष को प्राप्त करने वाला होगा।

प्रश्न 237. माता की सेवा करने वाली 6 देवियाँ कौन-कौन सी हैं ?

उत्तर– श्री ह्रीं धृति, कीर्ति, बुद्धि लक्ष्मी ये 6 देवियां भगवान के गर्भ जन्म कल्याणक में माता की सेवा करती हैं।

प्रश्न 238. ये देवियाँ कहाँ रहती हैं ?

उत्तर– ये देवियाँ ढाई द्वीप में मेरू के उत्तर दक्षिण में स्थित पूर्व से पश्चिम तक फैले हुए षट् कुलाचलों हिमवान, महा हिमवान, निषध, नील रूक्मी और

शिखरी पर्वतों पर, प्रत्येक के मध्य में स्थित सरोवरों-पद्म महापद्म तिगिंच्छ केसरी महापुंडरीक पुंडरीक सरोवर पर पर बने कमलों पर निवास करती हैं।

प्रश्न 239. भगवान की माता की सेवा करने वाली दिक् कन्यायें कितनी हैं ?

उत्तर– भगवान की माता की सेवा करने वाली दिक् कन्यायें चवालिस हैं।

प्रश्न 240. ये दिक् कन्यायें कहाँ रहती हैं ?

उत्तर– ये दिक् कन्यायें तेरहवें रूचकवर द्वीप में पूर्व, दक्षिण, पश्चिम एवं उत्तर दिशाओं में बने हुए कूटों पर रहती हैं।

प्रश्न 241. रूचकवर पर्वत पर बने हुए पूर्व दिशा के आठ कूटों पर कौन-कौन सी दिक् कन्यायें रहती हैं ?

उत्तर– इन कूटों पर रहने वालीं दिक् कन्याओं के नाम हैं – (1) विजया, (2) विजयंता, (3) जयंता, (4) अपराजिता, (5) नंदा, (6) नंदवती, (7) नंदोत्तरा एवं (8) नंदीषेणा।

प्रश्न 242. ये दिक् कन्यायें जन्म कल्याणक में क्या कार्य करती हैं?

उत्तर– से दिक् कन्यायें जिन जन्म कल्याणक में झारी को धारण करती हैं।

प्रश्न 243. रूचकूवर पर्वत पर दक्षिण के आठ कूटों पर रहने वाली दिक् कन्याओं के नाम क्या हैं?

उत्तर– इन कूटों पर रहने वाली दिक् कन्याओं के नाम इस प्रकार हैं –(1) इच्छा देवी, (2) समाहारादेवी, (3) सुप्रकीर्णदिवी, (4) यशोधरा देवी, (5) लक्ष्मी देवी, (6) शेषवती देवी, (7) चित्रगुप्ता देवी एवं (8) वसुंधरा देवी।

प्रश्न 244. जिन जन्म कल्याणक में ये देवियाँ क्या करती हैं ?

उत्तर– ये अष्ट दिक् कन्यायें जिन जन्म कल्याणक में दर्पण को धारण करती हैं।

प्रश्न 245. रुचकवर पर्वत के पश्चिम आठों कूटों की दिक् कन्याओं के नाम क्या है ?

उत्तर– (1) इलादवी (2) सुरादेवी, (3) पृथ्वीदेवी, (4) पद्मादेवी, (5) इकनासादेवी, (6) नवमीदेवी, (7) सीतादेवी एवं (8) भद्रादेवी।

प्रश्न 246. उपरोक्त देवियाँ जिन जन्म कल्याणक में क्या कार्य करती हैं ?

उत्तर– ये उपरोक्त देवियाँ जिन माता के ऊपर छत्र लगाती हैं।

प्रश्न 247. रुचकवर पर्वत के उत्तर के आठों कूटों पर रहने वाली दिक् कन्याओं के नाम कौन से है?

उत्तर– (1) अलंभूषा देवी, (2) मिश्रिकेशि, (3) पुंडरीकणी देवी, (4) वारुणी देवी, (5) आशा देवी, (6) सत्या देवी, (7) श्री देवी, (8) अतिरूपणि देवी।

प्रश्न 248. ये देवियाँ जिन जन्म कल्याणक में क्या कार्य करती हैं?

उत्तर– ये दिक् कन्यायें जिन माता के ऊपर चंवर ढुराने का कार्य करती हैं।

प्रश्न 249. रुचकवर पर्वत के चार महाकूटों की दिक् कन्याओं के नाम क्या हैं ?

उत्तर– (1) सौदामिनी देवी, (2) कनका देवी (3) शतपदा देवी एवं (4) कनक सुचित्रा।

प्रश्न 250. ये चारों दिक् देवियाँ जिन जन्म कल्याणक में क्या काम करती हैं।

उत्तर– ये दिक् देवियाँ जिन जन्म कल्याणक में दश दिशाओं को निर्मल करती हैं।

प्रश्न 251. रुचकगिरि के चार अभ्यंतर कूटों पर कौन-सी देवियाँ रहती हैं ?

उत्तर– रुचकगिरि के चारों कूटों पर (1) रुचिका, (2) रुचक कीर्ति, (3) रुचककांता एवं (4) रुचकप्रभा नाम की देवियाँ रहती हैं।

प्रश्न 252. ये देवियाँ जिन कल्याणक में कौन-सा कार्य करती हैं?

उत्तर– ये देवियाँ भगवान के जन्म कल्याणक में भक्तिपूर्वक जात कर्म करती हैं।

प्रश्न 253. कल्याणक किसे कहते हैं ?

उत्तर– भगवान के जिन उत्सवों को देवगण मनाते हैं उन्हें कल्याणक कहते हैं।

प्रश्न 254. कल्याणक कितने होते हैं ?

उत्तर– कल्याणक पाँच होते हैं।

प्रश्न 255. पाँच कल्याणकों के नाम क्या हैं?

उत्तर– (1) गर्भ कल्याणक, (2) जन्म कल्याणक, (3) तप कल्याणक, (4) केवलज्ञान कल्याणक एवं (5) मोक्ष कल्याणक।

प्रश्न 256. दीक्षा कल्याणक का दूसरा नाम क्या है ?

उत्तर– दीक्षा कल्याणक को तप कल्याणक तथा निःक्रमण कल्याणक भी कहते हैं।

प्रश्न 257. मोक्ष कल्याणक का दूसरा नाम क्या है ?

उत्तर– मोक्ष कल्याणक का दूसरा नाम निर्वाण कल्याणक है।

प्रश्न 258. जन्म से ही भगवान कितने ज्ञान के धारक होते हैं।

उत्तर– जन्म से ही भगवान मति, श्रुत, अवधि तीन ज्ञान के धारक होते हैं।

प्रश्न 259. भगवान का गर्भ कल्याणक कैसे मनाया जाता है ?

उत्तर– तीर्थंकर प्रकृति का बंध करने वाला जीव जब माता के गर्भ में आता है तब छः महीने पहले से इन्द्र की आज्ञा से कुबेर नगरी को सजाते हैं तथा प्रतिदिन माता के आँगन में रत्नों की वर्षा करते हैं। भगवान की माता पिछली रात्रि में 16 स्वप्न देखती है। अपने पति से स्वप्नों के फल का उत्तर सुनकर रोमांचित हो जाती है। भगवान को गर्भ में आया जानकर श्री आदि देवियाँ तथा चवालिस दिक्कन्यायें भगवान की माता की सेवा करती हैं, मनोरंजन करती हैं, माता से गूढ़ प्रश्न पूछती हैं तथा गर्भ में भगवान के प्रभाव से उन प्रश्नों का उत्तर माता देती हैं।

प्रश्न 260. जन्म कल्याणक कैसे मनाया जाता है ?

उत्तर– भगवान के जन्म के समय चतुर्निकाय के देवों के यहाँ बिना बजाये घंटे, घड़ियाल, शंख आदि बजने लगते हैं, उनके मुकुट अपने आप झुक जाते हैं। इन्द्रासन कम्पायमान होता है, कल्पवृक्षों से पुष्पों की वर्षा होने लगती है। अवधि ज्ञान से जन्म को जानकर, सौधर्म इन्द्र सपरिवार असंख्यातों देव-देवियों सहित ऐरावत हाथी पर चढ़कर नगर की तीन प्रदक्षिणा देते हैं। शची प्रसूति गृह से भगवान को लाकर इन्द्र को देती है। माता के पास मायामयी बालक को छोड़ देती है। इन्द्र भगवान को लेकर मेरु पर्वत की पांडुक शिला पर विराजमान करते हैं। वहाँ पर इन्द्र सभी परिवार सहित 1008 कलशों से भगवान का क्षीर समुद्र के जल से अभिषेक करते हैं।

प्रश्न 261. क्षीर समुद्र कौन-सा समुद्र है ?

उत्तर– क्षीर समुद्र लवण समुद्र से पाँचवाँ समुद्र है।

प्रश्न 262. भगवान के न्हवन का कलश कितना बड़ा होता है ?

उत्तर– भगवान के न्हवन का कलश आठ योजन गहरा चार योजन चौड़ा एवं एक योजन विस्तृत मुख वाला होता है।

प्रश्न 263. ऐरावत हाथी कैसा होता है ?

उत्तर– आभियोग्य जाति के देव विक्रिया से ऐरावत हाथी का रूप बनाते हैं। ऐरावत हाथी का रूप एक लाख योजन विस्तरित हो जाता है, इसके दिव्य मालाओं से युक्त बत्तीस मुख होते हैं, एक-एक मुख में रत्नों के निर्मित 4-4 दाँत होते हैं, एक-एक दाँत पर एक-एक सरोवर एवं सरोवर में कमल बना होता है। एक-एक कमल खंड में 32 महापद्म होते हैं जो एक-एक

योजन के होते हैं। इन एक-एक महाकमलों पर एक-एक नाट्यशाला होती हैं एक-एक नाट्यशाला में 32-32 अप्सराऐं नृत्य करती हैं।

प्रश्न 264. कौन सा देव ऐरावत हाथी बनता है ?

उत्तर– इन्द्र की आज्ञा से आभियोग्य जाति का बालक नाम का देव विक्रिया से ऐरावती हाथी बनता है।

प्रश्न 265. पांडुक शिला कहाँ पर है ?

उत्तर– प्रत्येक मेरू के पांडुक वन की विदिशाओं में अर्धचंद्राकार शिलायें है उन्हें सामान्य से पांडुक शिला कहते हैं, वैसे उनके अलग-अलग नाम हैं। ये ईशान दिशा के क्रम से (1) पांडुकशिला,(2) पांडुकम्बला, (3) रक्तशिला और (4) रक्तकम्बला।

प्रश्न 266. पांडुकशिला का कितना विस्तार है ?

उत्तर– वह पवित्र पांडुकशिला सौ योजन लम्बी, पचास योजन चौड़ी एवं आठ योजन ऊँची है।

प्रश्न 267. तीर्थकरों के अभिषेक का क्रम अर्थात कौन-कौन से तीर्थकर का अभिषेक कहाँ-कहाँ होता है?

उत्तर– पाण्डुकशिला पर भरत क्षेत्र में जन्म लेने वाले तीर्थंकरों का, पाण्डुकम्बला शिला पर पश्चिम विदेह के तीर्थंकरों का, रक्ताशिला पर ऐरावत क्षेत्र के तीर्थंकरों का एवं रक्तकम्बला शिला पर पूर्व विदेह क्षेत्र के तीर्थंकरों का अभिषेक होता है।

प्रश्न 268. पाण्डुकादि शिलायें कितनी होती है ?

उत्तर– पाण्डुकादि शिलायें बीस होती है। एक मेरु पर चार होती हैं।

प्रश्न 269. क्या सभी मनुष्यों के कल्याणक होते हैं ?

उत्तर– सभी मनुष्यों के कल्याणक नहीं होते हैं। जिन जीवों ने तीर्थंकर प्रकृति का बंध किया है, वे ही उदय आने पर तीर्थंकर होते हैं तथा उनके दो कल्याणक भी होते हैं।

प्रश्न 270. क्या सभी तीर्थकरों के पंचकल्याणक होते हैं ?

उत्तर– सभी तीर्थंकरों के पंचकल्याणक नहीं होते हैं, दो कल्याणक तीन या पाँच होते हैं।

प्रश्न 271. पाँच कल्याणक कौन-कौन से तीर्थंकरों के होते हैं ?

उत्तर– पाँच भरत एवं पाँच ऐरावत दश क्षेत्रों में जन्म लेने वाले तीर्थंकरों के पाँच कल्याणक होते हैं।

प्रश्न 272. दो तीन एवं पाँच कल्याणक कौन-से तीर्थंकरों के होते हैं ?

उत्तर– एक सौ साठ विदेह क्षेत्रों में जन्म लेने वाले तीर्थकरों के दो, तीन, या पाँच कल्याणक होते हैं।

प्रश्न 273. विदेह क्षेत्र के तीर्थकरों के तीन कल्याणक कैसे होते है ?

उत्तर– विदेह क्षेत्र में सदा चतुर्थकाल प्रवर्तमान रहता है। केवली श्रुत केवली के पाद मूल में जो मनुष्य सोलह कारण भावनाओं का चिंतवन करते हैं, उसी भव में तीर्थंकर प्रकृति का उदय आ जाने पर उनका, गर्भ एवं जन्म कल्याणक नहीं होता शेष दीक्षा, ज्ञान एवं निर्वाण कल्याणक होते हैं।

प्रश्न 274. विदेह क्षेत्र के तीर्थंकरों के दो कल्याणक कैसे होते हैं ?

उत्तर– जब विदेह क्षेत्र में कोई मुनिराज सोलह कारण भावनाओं का चिंतवन करते हैं, उसी भव में उदय आ जाने से उनका गर्भ, जन्म, दीक्षा कल्याणक नहीं मनाये जा सकते हैं, उनके ज्ञान व मोक्ष कल्याणक मनाये जाते हैं।

प्रश्न 275. दीक्षा कल्याणक कैसे मनाया जाता है?

उत्तर– जब भगवान को किसी निमित्त से वैराग्य होता है तब लौकान्तिक देव आकर भगवान की वैराग्य भावना तथा भगवान की स्तुति करते हैं। देवों द्वारा लाई हुई पालकी में बैठकर भगवान वन में पहुँचते हैं। रत्नशिला पर पूर्व या उत्तर मुख से बैठकर नमः सिद्धेभ्यः मंत्र का उच्चारण कर पंचमुष्ठी केश लौंच करते हैं तथा नग्न दिगम्बर दीक्षा लेकर ध्यान में लीन हो जाते हैं। उसी समय उन्हें मनः पर्यय चौथा ज्ञान प्रकट हो जाता है। इन्द्र उनके केशों को रत्नपिटारे में रखकर क्षीर समुद्र में क्षेपण करते हैं। भगवान जन्म से मति श्रुत अवधि तीन ज्ञान के धारक होते हैं।

प्रश्न 276. क्षीर समुद्र का जल कैसा होता है ?

उत्तर– क्षीर समुद्र का जल जीव रहित दूध के समान सफेद धवल होता है इसलिए इसे क्षीर समुद्र कहते हैं।

प्रश्न 277. केवलज्ञान कल्याणक कैसे मनाया जाता है ?

उत्तर– जब भगवान शुक्ल ध्यान के द्वारा घातिया कर्मो का नाश कर देते हैं तो लोकालोक को प्रकाशित करने वाला उन्हें केवलज्ञान प्रकट होता है।

भगवान बीस हजार हाथ ऊपर जाकर कुबेर द्वारा अर्धनिमिष मात्र में बनाये गये समवसरण के मध्य गंधकुटी के कमलासन के ऊपर अधर विराजमान हो जाते हैं। समवसरण में सात भूमियों के बाद आठवीं श्री मंडप नाम की सभा भूमि में बारह सभायें लगती हैं। भगवान का एक मुख होते हुए भी चारों दिशाओं में मुख दिखते हैं देव, देवियाँ, मनुष्य तिर्यंच वहाँ भगवान का उपदेश सुनते हैं। यद्यपि भगवान का उपदेश अर्धमागधी भाषा में होता है फिर भी सभी को अपनी अपनी भाषा में समझ में आ जाता है।

प्रश्न 278. भगवान की वाणी किस प्रकार खिरती है ?

उत्तर– भगवान की वाणी ॐकार रूप से मेघगर्जन के समान खिरती है।

प्रश्न 279. प्रमुख श्रोता कौन होते हैं ?

उत्तर– प्रमुख चक्रवर्ती या सम्राट भगवान के प्रमुख श्रोता होते हैं।

प्रश्न 280. भगवान की वाणी किसके बिना नहीं खिर सकती है ?

उत्तर– भगवान की वाणी गणधर के बिना नहीं खिर सकती है।

प्रश्न 281. प्रत्येक तीर्थंकर के कितने गणधर होते हैं ?

उत्तर– प्रत्येक तीर्थंकर के अनेक गणधर होते हैं।

प्रश्न 282. सबसे बड़े समवसरण का विस्तार कितना होता है ?

उत्तर– सबसे बड़े समवसरण का विस्तार 12 योजन का होता है।

प्रश्न 283. सबसे छोटे समवसरण का विस्तार कितना है ?

उत्तर– सबसे छोटा समवसरण 1 योजन का होता है।

प्रश्न 284. समवसरण किसे कहते हैं ?

उत्तर– तीर्थंकर की धर्मसभा के स्थान को समवसरण कहते हैं। समवसरण का शाब्दिक भाव है, जो स्थान संसार के समस्त जीवों को शरण देने में समर्थ है वह समवसरण कहलाता है।

प्रश्न 285. समवसरण में स्थित भगवान का दर्शन कौन करते हैं ?

उत्तर– समवसरण में स्थित भगवान का दर्शन केवल सम्यग्दृष्टि जीव ही करते हैं। मिथ्यादृष्टियों की भावना ही नहीं होती है। कुछ मिथ्यादृष्टि जीव मानस्तम्भ तक पहुँचकर सम्यग्दृष्टि बन जाते हैं।

प्रश्न 286. समवसरण में कितनी सीढ़ियाँ होती हैं ?

उत्तर– समवसरण में बीस हजार सीढ़ियाँ होती हैं।

प्रश्न 287. समवसरण की प्रत्येक सीढ़ी की ऊँचाई कितनी होती है ?

उत्तर– समवसरण की प्रत्येक सीढ़ी की ऊँचाई 1 हाथ होती है।

प्रश्न 288. समवसरण में कौन-सी गति के जीव जाकर धर्मामृत का पान करते हैं ?

उत्तर– नारकियों को छोड़कर शेष मनुष्य तिर्यंच, देव सभी भगवान की दिव्य ध्वनि का पान करते हैं ।

प्रश्न 289. कितनी इन्द्रियों के धारक जीव समवसरण में भगवान की दिव्य ध्वनि सुनते हैं ?

उत्तर– केवल संज्ञी पंचेन्द्रिय जीव भगवान को दिव्य ध्वनि सुनते हैं।

प्रश्न 290. समवरण की आठ भूमियों के नाम क्रम से क्या हैं ?

उत्तर– (1) चैत्य प्रासाद भूमि, (2) खातिका भूमि, (3) लता भूमि, (4) उपवन भूमि, (5) ध्वजभूमि, (6) कल्पवृक्ष भूमि, (7) भवनभूमि एवं, (8) श्री मंडप भूमि।

प्रश्न 291. चैत्य प्रसाद भूमि कैसी है ?

उत्तर– चैत्य प्रासाद भूमि में एक-एक जिनमन्दिर के अंतराल से पाँच देव प्रासाद रहते हैं। ये तीर्थंकरों से 12 गुने ऊँचे होते हैं। चारों दिशाओं मे एक-एक मानस्तम्भ, एक-एक बावड़ी होती है। इसमें पृथक-पृथक गलियों में दो-दो नाट्यशालायें होती हैं। प्रत्येक नाट्यशाला में 32-32 रंगभूमियाँ होती हैं। प्रत्येक रंग भूमि में 32-32 देवियाँ नृत्य करती हुई तीर्थंकरों का गुणगान करती हैं। प्रत्येक नाट्यशाला में दो-दो धूप घट रहते हैं।

प्रश्न 292. खातिका भूमि कैसी होती है ?

उत्तर– ये खातिका भूमि एक प्रकार की खाई होती है जो अपने तीर्थंकर की ऊँचाई के चतुर्थ भाग होती हैं।

प्रश्न 293. तीसरी लता भूमि कैसी होती है ?

उत्तर– ये एक प्रकार का लता वन है इसमें लतायें रहती हैं।

प्रश्न 294. चौथी उपवन भूमि की रचना किस प्रकार की है ?

उत्तर– चौथी उपवन भूमि में पूर्वादिदिशा के क्रम से, अशोक, सप्तच्छद चंपक एवं आम्रवन हैं। इसके बीचों-बीच एक-एक चैत्य वृक्ष जिसके मूलभाग में चारों दिशाओं में जिन प्रतिमायें विराजमान हैं। इस वन भूमि की गलियों

के दोनों पार्श्व भागों में दो-दो नाट्यशालयें हैं इस वन भूमि को घेरे हुए वेदी पर यक्षेन्द्र देव पहरा देते हैं।

प्रश्न 295. समवसरण की पाँचवी भूमि की रचना कैसी है ?

उत्तर– पाँचवी भूमि में सिंह, गज, वृषभ, गरूड़, मयूर, चन्द्र, सूर्य, हंस, कमल और चक्र दशचिह्नों से युक्त प्रत्येक चिन्ह की प्रत्येक दिशा में 108-108 ध्वजायें होती हैं इनमें भी प्रत्येक ध्वजा की 108-108 परिवार ध्वजायें रहती हैं इसको घेरकर चाँदी के परकोटे पर द्वार रक्षक भवनवासी देव हैं।

प्रश्न 296. समवसरण की छठी भूमि की रचना किस प्रकार की है ?

उत्तर– समवसरण की छठी भूमि का नाम कल्पवृक्ष भूमि है इसमें 10 प्रकार के कल्पवृक्ष रहते हैं। ये सब नाम के अनुसार ही फल-वस्तुएँ प्रदान करते हैं। इस भूमि में पूर्वादि दिशा के क्रम से नमेरू मंदार, संतानक तथा पारिजात ये चार सिद्धार्थ वृक्ष होते हैं इनमें चारों तरफ चार सिद्ध प्रतिमायें विराजमान रहती हैं।

प्रश्न 297. दश प्रकार के कल्पवृक्ष कौन-कौन से हैं?

उत्तर– दश प्रकार के कल्पवृक्षों के नाम इस प्रकार हैं –
(1) पानांग, (2) तूर्यांग, (3) भूषणांग, (4) वस्त्रांग, (5) भोजनांग, (6) आलयांग, (7) दीपांग, (8) भाजनांग, (9) मालांग एवं (10) तेजांग।

प्रश्न 298. पानांग जाति के कल्पवृक्ष क्या फल प्रदान करते हैं ?

उत्तर– पानांग जाति के कल्पवृक्ष मधुर सुस्वाद छहों रसों युक्त पुष्टि कारक बत्तीस प्रकार के पेय पदार्थों को प्रदान करते हैं।

प्रश्न 299. तूर्यांग जाति के कल्पवृक्ष क्या फल प्रदान करते हैं ?

उत्तर– तूर्यांग जाति के कल्पवृक्ष उत्तम बाजा, पटु पटह, मृदंग आदि वादि यंत्रों को प्रदान करते हैं।

प्रश्न 300. भूषणांग जाति के कल्पवृक्ष जीवों का क्या प्रदान करते हैं ?

उत्तर– भूषणांग जाति के कल्पवृक्ष–कंकण, कटि सूत्र, हार, माला, मुद्रिका आदि आभूषणों को प्रदान करते हैं।

प्रश्न 301. वस्त्रांग जाति के कल्पवृक्ष जीवों को क्या प्रदान करते हैं ?

उत्तर– वस्त्रांग जाति के कल्पवृक्ष चीनपट्ट, क्षौमादि वस्त्रों को प्रदान करते हैं।

प्रश्न 302. भोजनांग जाति के कल्पवृक्ष जीवों को क्या प्रदान करते हैं।

उत्तर– भोजनांग जाति के कल्पवृक्ष सोलह प्रकार के आहर, सोलह प्रकार के

व्यंजन, चौदह प्रकार की दालें, एक सौ आठ प्रकार के खाद्य पदार्थ, 363 प्रकार के स्वाद्य पदार्थ, एवं त्रेसठ प्रकार के रसों को देते हैं।

प्रश्न 303. आलयांग जाति के कल्पवृक्ष जीवों को क्या प्रदान करते हैं ?

उत्तर– आलयांग कल्पवृक्ष, स्वास्तिक नंद्यावर्त आदि सोलह प्रकार के दिव्य भवनों को प्रदान करते हैं।

प्रश्न 304. दीपांग जाति के कल्पवृक्ष जीवों को क्या प्रदान करते हैं ?

उत्तर– दीपांग जाति के कल्पवृक्ष शाखा, प्रवाल, फल, फूल और अंकुर आदि के द्वारा जलते हुए दीपकों के समान प्रकाश को प्रदान करते हैं।

प्रश्न 305. भाजनांग जाति के कल्पवृक्ष जीवों को क्या प्रदान करते हैं ?

उत्तर– भाजनांग जाति के कल्पवृक्ष स्वर्ण आदि से निर्मित झारी कलश, गागर, चामर और आसनादि देते हैं।

प्रश्न 306. मालांग कल्पवृक्ष जीवों को क्या प्रदान करते हैं ?

उत्तर– मालांग जाति के कल्पवृक्ष, बेल, तरू, गुच्छ और लताओं से उत्पन्न हुए सोलह हजार भेद रूप पुष्पों की मालाओं को प्रदान करते हैं।

प्रश्न 307. तेजांग जाति के कल्प वृक्ष जीवों को क्या प्रदान करते हैं ?

उत्तर– ज्योतिरांग (तेजांग) जाति के कल्पवृक्ष मध्य दिन के करोड़ों सूर्यो की किरणों के समान रोशनी को प्रदान करते हैं।

प्रश्न 308. समवशरण की सातवीं भूमि की रचना कैसी है ?

उत्तर– सातवीं भूमि का नाम भवन भूमि है। यहाँ बने हुए भवनों में जिन प्रतिमायें विराजमान हैं तथा जिनाभिषेक होता रहता है। देव देवियाँ नृत्य संगीत से भक्ति करते रहते हैं। इसके दोनों पार्श्वभागों की प्रत्येक गली के मध्य में नौ-नौ स्तूप हैं। जिनमें अर्हत तथा सिद्धों की प्रतिमायें विराजमान हैं। इसके आगे स्फटिक कोट है जिसके द्वारों के रक्षक देव कल्पवासी देव हैं।

प्रश्न 309. आठवीं भूमि का नाम तथा रचना क्या है ?

उत्तर– आठवीं भूमि का नाम श्री मंडप भूमि है। इसके बीच-बीच में सोलह स्फटिक मणि की दीवालें हैं चार-चार गलियों के बाद दीवालों के मध्य में तीन कोठे अपने तीर्थंकर की ऊँचाई के बारह गुने ऊँचे बने हुए हैं। इन्हीं कोठों में बारह सभायें लगती हैं। भव्य जीव यहाँ भगवान का उपदेश ग्रहण करते हैं।

प्रश्न 310. समवशरण मे कितनी सभायें होती हैं ?

उत्तर– समवशरण में बारह सभायें होती हैं।

प्रश्न 311. भगवान की पहली सभा मे कौन कौन से जीव रहते हैं ?

उत्तर– भगवान की पहली सभा पूर्व दिशा में रहती है। इसमें सर्व प्रथम गणधर और मुनिगण रहते हैं।

प्रश्न 312. भगवान की दूसरी सभा में कौन-से जीव रहते हैं ?

उत्तर– भगवान की दूसरी सभा आग्नेय दिशा में होती है। यहाँ दूसरे कोठे में कल्पवासी देवियाँ भगवान का उपदेश ग्रहण करती हैं।

प्रश्न 313. समवशरण के तीसरे कोठे में कौन-कौन से जीव रहते हैं ?

उत्तर– समवशरण का तीसरा कोठा दक्षिण में होता है तथा इसमे आर्यिकायें एवं श्राविकायें होती हैं।

प्रश्न 314. समवशरण के चौथे कोठे में कौन-से जीव धर्म श्रवण करते हैं।

उत्तर– भगवान के समवशरण के चौथे कोठे में ज्योतिष्क चन्द्र सूर्य आदि की देवियाँ धर्म श्रवण करती हैं।

प्रश्न 315. समवशरण के पाँचवे कोठे में कौन से जीव रहते हैं ?

उत्तर– समवशरण के पाँचवे कोठे में व्यंतर देवों की देवियाँ रहती हैं।

प्रश्न 316. समवशरण के छठे कोठे में कौन से जीव बैठते हैं ?

उत्तर– समवशरण के छठे कोठे में भवनवासी देवों की देवियाँ धर्म श्रवण करती हैं ?

प्रश्न 317. समवशरण के सातवें कोठे में कौन-से जीव बैठते हैं ?

उत्तर– समवशरण के सातवें कोठे में भवनवासी देव बैठते हैं।

प्रश्न 318. समवसरण के आठवें कोठे में कौन-से जीव बैठते हैं ?

उत्तर– समवशरण के आठवे कोठे में व्यंतरवासी देव रहते हैं।

प्रश्न 319. समवशरण का नौंवा कोठा कौन से जीवों से भरा रहता है ?

उत्तर– समवशरण के नौंवे कोठे में ज्योतिषप्क देव रहते हैं।

प्रश्न 320. समवशरण के दसवें कोठे में कौन से जीव बैठते हैं ?

उत्तर– समवशरण के दसवें कोठे में कल्पवासी देव बैठते हैं।

प्रश्न 321. समवशरण के ग्यारहवें कोठे में कौन से जीव बैठते हैं ?

उत्तर– समवशरण के ग्यारहवें कोठे में चक्रवर्ती एवं मनुष्य होते हैं।

प्रश्न 322. समवशरण के बारहवें कोठे में कौन से जीव बैठते हैं ?

उत्तर– समवशरण के बारहवें कोठे में संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यच जीव-हाथी, सिंह, व्याध्र, हिरण आदि पशुगण बैठते हैं।

प्रश्न 323. बारह सभाओं से आगे क्या होता है ?

उत्तर– बारह सभाओं के अभ्यंतर निर्मल स्फटिक की वेदी है इसके आगे पहली कटनी वैडूर्यमणि की है उस पर चढ़ने के लिए चार गली बारह कोठों के स्थान पर सोलह-सोलह सीढ़ियाँ हैं इसके चारों दिशाओं में यक्षेन्द्र अपने मस्तक पर धर्मचक्र धारण किये हुए खड़े रहते हैं।

प्रश्न 324. समवशरण में दूसरी कटनी पर क्या है ?

उत्तर– समवशरण की दूसरी स्वर्ण कटनी पर सिंह, बैल, कमल, चक्र, माला, गरूड़, वस्त्र और हाथी इन आठ चिन्हों से युक्त ध्वजायें तथा धूपघट, नव निधियाँ पूजन द्रव्य और मगल द्रव्य रखे हुए हैं।

प्रश्न 325. समवशरण की तीसरी कटनी पर क्या है ?

उत्तर– समवशरण की तीसरी कटनी सूर्य मंडल के समान गोल है। इसी तीसरी कटनी पर गंध कुटी शोभायमान रहती है।

प्रश्न 326. गंध कुटी किसे कहते हैं ?

उत्तर– जिसमें जिनेन्द्र देव विराजमान रहते हैं उसे गंध कुटी कहते हैं यह गंधकुटी चंवर, छत्र, वंदनमाला, किंकणी मोतियों के हार दीपक धूपधट आदि से सजी रहती है। इस गंध गुटी के मध्य सिंहासन पर एक लाल वर्ण का सहस्त्र दल कमल रहता है जिस पर भगवान चार अंगुल अधर विराजमान रहते है।

प्रश्न 327. भगवान के मोक्ष कल्याणक में क्या होता है ?

उत्तर– जब भगवान का आयु कर्म पूरा होने को होता है तो समवसरण विघटित हो जाता है। ध्यान में लीन भगवान अपने शेष चार अघातिया कर्मो का भी नाश कर देते हैं। एक समय में अथवा पच लब्धछर समय मात्र में वे परमात्मा लोक के अग्रभाग पर अनंतानंत काल अर्थात् सदा के लिए सिद्ध शिला पर विराजमान हो जाते है। उस समय चारों प्रकार के देव बड़ी भक्ति से उनके शरीर का अग्नि सस्कार करते हैं। अग्निकुमार के इन्द्र देव अपने मुकुट के अग्रभाग से अग्नि प्रज्ज्वलित करते हैं। सभी देव भस्म को ललाट में लगा कर अपना जन्म धन्य करते हैं।

प्रश्न 328. अग्नि कुमार के इन्द्रों के कितने भेद हैं ?

उत्तर– अग्नि कुमार के इन्द्र तीन प्रकार के हैं – गार्ह्यपत्य, आह्वानीय एवं दक्षिणाग्नेद्रं।

प्रश्न 329. उपरोक्त तीनों इन्द्रों का क्या कार्य है ?

उत्तर– तीर्थंकर के शरीर का संस्कार गार्ह्यपत्य इन्द्र करते हैं, गणधर देव के शरीर का संस्कार आह्वानीय इन्द्र तथा केवली के शरीर का संस्कार दक्षिणाग्नेन्द्र करते हैं।

प्रश्न 330. तीर्थंकर, गणधर तथा केवलियों के लिए किस-किस प्रकार के कुण्डों की रचना होती है ?

उत्तर– तीर्थंकरों के लिए चौकोर कुंड, गणधरों के लिए त्रिकोण कुंड तथा केवलियों के लिए गोल कुंड की रचना होती है।

प्रश्न 331. क्या सभी मोक्ष जाने वाले जीवों के कल्याणक होते हैं ?

उत्तर– नहीं ! जिन जीवों ने तीर्थंकर प्रकृति का आश्रव, बंध किया है केवल उन्हीं जीवों के तीर्थंकर प्रकृति उदय में आ जाने से देव, कल्याणक मानते हैं।

प्रश्न 332. तीर्थंकरों की प्रतिमाओं के चिन्हों का पता किस प्रकार चलता है?

उत्तर– भगवान के न्हवन (अभिषेक) के समय इन्द्र भगवान के दाँये पैर के अंगूठे को देखते हैं, जो चिह्न होता है उसी चिह्न से उनकी प्रतिमा की पहचान होती है।

प्रश्न 333. तीर्थंकरों के शरीर पर कितने चिह्न होते हैं ?

उत्तर– तीर्थंकरों के शरीर पर 1008 चिह्न होते हैं।

प्रश्न 334. इन्द्र कितने नामों से भगवान की स्तुति करते हैं ?

उत्तर– 1008 नामों से इन्द्र भगवान की स्तुति करते हैं।

प्रश्न 335. तीर्थंकरों के जन्म एवं मोक्ष के बारे में आगम का क्या नियम है ?

उत्तर– आगम के नियम के अनुसार सभी तीर्थंकर अयोध्या में ही जन्म लेते हैं तथा सम्मेद शिखर से मोक्ष जाते हैं। इसीलिए अयोध्या एवं सम्मेदशिखर शाश्वत तीर्थ माने जाते हैं।

प्रश्न 336. उपरोक्त के नियम में परिवर्तन क्यों हुआ ?

उत्तर– हुंडावसर्पिणी काल के दोष से इस नियम में परिवर्तन हुआ इस बार न तो चौबीस तीर्थंकरों ने अयोध्या में जन्म लिया और न ही सम्मेद शिखर से मोक्ष गये।

प्रश्न 337. कितने तीर्थंकरों ने अयोध्या में जन्म लिया है ?

उत्तर– केवल पाँच तीर्थंकरों ने अयोध्या में जन्म लिया है।

प्रश्न 338. अयोध्या में जन्म लेने वाले तीर्थंकरों के नाम क्या हैं।

उत्तर– (1) श्री आदिनाथ जी, (2) श्री अजितनाथ जी, (3) श्री अभिनन्दननाथ जी, (4) श्री सुमतिनाथ जी, (5) श्री अनंतनाथ जी।

प्रश्न 339. सम्मेद शिखर से कितने तीर्थंकर मोक्ष गये?

उत्तर– बीस तीर्थंकरों ने सम्मेद शिखर से मोक्ष प्राप्त किया।

प्रश्न 340. कौन-से तीर्थंकरों ने सम्मेद शिखर से मोक्ष प्राप्त नहीं किया ?

उत्तर– (1) श्री आदिनाथजी, (2) श्री वासुपूज्यजी, (3) श्री नेमिनाथ जी एवं (4) श्री महावीर भगवान इन चार तीर्थंकरों ने सम्मेद शिखर से मोक्ष प्राप्त नहीं किया।

प्रश्न 341. अयोध्या एवं सम्मेद शिखर को छोड़कर सर्वाधिक कल्याणकों वाला तीर्थ क्षेत्र कौन-सा है ?

उत्तर– वह क्षेत्र हस्तिनापुर है। कुल 12 कल्याणक हुए हैं।

प्रश्न 342. यहाँ 12 कल्याणक किस प्रकार हुए हैं ?

उत्तर– श्री शांतिनाथ, कुंथुनाथ, एवं अरहनाथ इन तीर्थकरों के गर्भ, जन्म, तप, केवलज्ञान ऐसे चार-चार कल्याणक हुए हैं।

प्रश्न 343. श्री शांतिनाथ कुंथुनाथ अरहनाथ इन तीर्थकरों की विशेषता क्या है ?

उत्तर– तीनों तीर्थंकर चक्रवर्ती, तीर्थंकर एवं कामदेव इन तीन-तीन पदों के धारक थे ये क्रमशः 16वें 17वें एवं 18वें तीर्थंकर थे।

प्रश्न 344. श्री शांति, कुंथु, अरहनाथ भगवान का मोक्ष कल्याणक कहाँ हुआ था ?

उत्तर– इनका मोक्ष कल्याणक श्री सम्मेद शिखर में हुआ था।

प्रश्न 345. दो नामों से कौन-से तीर्थंकर को जाना जाता है ?

उत्तर– ऐसे नोवें तीर्थंकर श्री पुष्पदंतजी हैं जिनका दूसरा नाम श्री सुविधनाथ जी भी है।

प्रश्न 346. ऐसे कौन से तीर्थंकर हैं, जिनके पाँचों कल्याणक एक ही स्थान पर हुए हैं और कहाँ ?

उत्तर– ऐसे बारहवें तीर्थंकर श्री वासूपूज्य जी हैं, इनके पाँचों कल्याणक चम्पापुर जी में हुए हैं।

प्रश्न 347. बालब्रह्मचारी तीर्थंकर कौन से और कितने हैं ?

उत्तर– (1) श्री वासुपूज्य जी, (2) श्री मल्लिनाथ जी, (3) श्री नेमिनाथ जी, (4) श्री पार्श्वनाथ जी, (5) श्री महावीर स्वामी। ये पाँच बालब्रह्मचारी तीर्थंकर हुए हैं।

प्रश्न 348. चौबीस तीर्थंकरों के लिए कौन-से बीजाक्षर का प्रयोग किया गया हैं ?

उत्तर– चौबीस तीर्थंकरों के लिए ह्रीं बीजाक्षर का प्रयोग किया गया है।

प्रश्न 349. ह्रीं बीजाक्षर कितने वर्ण का माना गया है ?

उत्तर– ह्रीं बीजाक्षर में पाँच वर्ण होते हैं, सफेद, नीला, लाल, हरित श्याम एवं सोने समान तपाया हुआ लालवर्ण।

प्रश्न 350. चौबीस तीर्थंकरों के कितने व कौन से वर्ण हैं ?

उत्तर– चौबीस तीर्थंकरों के श्वेत, नील, रक्त, हरित, श्याम ये पॉच वर्ण हैं।

प्रश्न 351. श्वेत वर्ण वाले कौन से तीर्थंकर हैं ?

उत्तर– श्वेत वर्ण वाले दो तीर्थंकर हैं –चन्द्रप्रभु एवं पुष्पदंत जी।

प्रश्न 352. श्री चंद्रप्रभु पुष्पदंत जी ह्रीं में कहाँ स्थित हैं ?

उत्तर– श्री चंद्रप्रभु तथा पुष्पदंत जी ह्रीं बीजाक्षर में श्वेत चन्द्रकार स्थान पर स्थित हैं।

प्रश्न 353. लाल वर्ण के कौन-से तीर्थंकर हैं ?

उत्तर– श्री वासुपूज्य एवं पद्मप्रभु लाल वर्ण के तीर्थंकर हैं।

प्रश्न 354. उपरोक्त तीर्थंकर ह्रीं बीजाक्षर में कहाँ विराजमान हैं ?

उत्तर– श्री वासुपूज्य एवं पद्मप्रभु भगवान ह्रीं बीजाक्षर में ह्रीं मस्तक जोकि लाल वर्ण है उस स्थान पर विराजमान हैं।

प्रश्न 355. नील वर्ण वाले तीर्थंकरों के नाम क्या हैं ?

उत्तर– श्री नेमिनाथ जी एवं श्री मुनिसुव्रतनाथ जी नील वर्ण के तीर्थंकर हैं।

प्रश्न 356. नील वर्ण वाले तीर्थंकर ह्रीं बीजाक्षर में कहाँ पर विराजमान हैं ?

उत्तर– नील वर्ण वाले तीर्थंकर ह्रीं बीजाक्षर के नील बिन्दु में शोभायमान हैं।

प्रश्न 357. हरित श्यामवर्ण वाले तीर्थंकर कौन-कौन से हैं ?

उत्तर– हरित श्यामवर्ण वाले दो तीर्थंकर श्री सुपार्श्वनाथ जी एवं श्री पार्श्वनाथ जी हैं।

प्रश्न 358. उपरोक्त दोनों तीर्थंकर ह्रीं में कहाँ विराजमान हैं ?

उत्तर– उपरोक्त दोनों तीर्थंकर ह्रीं के हरित श्याम ईकारी मे विराजमान हैं।

प्रश्न 359. पंचवर्णीय ह्रीं में पंचवर्णीय चौबीस तीर्थंकर विराजमान हैं। ऐसा वर्णन कहाँ मिलता है ?

उत्तर– ये वर्णन श्री ऋषिमण्डल स्तोत्र में आता है।

प्रश्न 360. शेष तीर्थंकर ह्रीं में कहाँ विराजमान हैं ?

उत्तर– शेष सोलह ह्रीं के ह्रकार में विराजमान हैं।

प्रश्न 361. ये सोलह शेष तीर्थंकर किस वर्ण वाले हैं ?

उत्तर– ये शेष सोलह तीर्थंकर तपाये हुए स्वर्ण के समान आभा वाले हैं ।

प्रश्न 362. उपरोक्त सोलह तीर्थंकरों के नाम क्या हैं?

उत्तर– (1) श्री आदिनाथ जी (2) श्री अजितनाथ जी (3) श्री सम्भवनाथ जी, (4) श्री अभिनंदननाथ जी, (5) श्री सुमतिनाथ जी, (6) श्री शीतलनाथ जी, (7) श्री श्रेयांसनाथ जी, (8) श्री विमलनाथ जी, (9) श्री अनंतनाथ जी, (10) श्री धर्मनाथ जी, (11) श्री शंतिनाथ जी, (12) श्री कुंथुनाथजी, (13) श्री अरहनाथ जी, (14) श्री मल्लिनाथ जी एवं, (15) श्री नमिनाथ जी, (16) श्री महावीर स्वामी।

प्रश्न 363. प्रसिद्ध पंचवर्णीय चौबीसी भारत में कहाँ-कहाँ विराजमान हैं?

उत्तर– प्रसिद्ध पंचवर्णीय चौबीसी तीर्थ क्षेत्र चंदेरी मे विराजमान है वैसे श्री शांतिवीर नगर महावीरजी, नसियाँ जी भिण्ड (म० प्र०) में, सम्मेदशिखर जी में भी विराजमान हैं।

प्रश्न 364. वर्तमान काल के पच्चीसवें तीर्थंकर का नाम क्या है ?

उत्तर– भरत ऐरावत क्षेत्रों में कर्मकाल में केवल चौबीस ही तीर्थंकर होते हैं। न तेइस न पच्चीस।

प्रश्न 365. तीर्थंकर के शरीर की सर्वाधिक ऊँचाई कितनी होती है ? वर्तमान तीर्थंकरों में किसकी थी ?

उत्तर– तीर्थंकरों के शरीर की सबसे अधिक ऊँचाई पाँच सौ धनुष (2000 हाथ) होती है जो श्री आदिनाथ की थी।

प्रश्न 366. तीर्थंकरों के शरीर की ऊँचाई सबसे कम कितनी होती है ?

उत्तर– तीर्थंकरों के शरीर की ऊँचाई सबसे कम सात हाथ होती है।

प्रश्न 367. सबसे कम ऊँचाई वाले तीर्थंकर का नाम क्या है।

उत्तर– भगवान महावीर स्वामी की ऊँचाई सबसे कम है।

प्रश्न 368. बाहुबली को भगवान क्यों कहते हैं जबकि वे तीर्थंकर नहीं थे ?

उत्तर– भगवान बनने के लिए तीर्थंकर बनना आवश्यक नहीं है, मोक्षगामी प्रत्येक भव्य आत्मा (जीव) भगवान है।

प्रश्न 369. जब भगवान बाहुबली तीर्थंकर नहीं थे तो उनकी प्रतिमा की पूजा क्यों की जाती है ?

उत्तर– पंचपरमेष्ठी तीनों लोकों में पूज्य कहे गये हैं इसीलिए पंच परमेष्ठियों की प्रतिमायें अनादिकाल से पूजनीय, वंदनीय हैं। भगवान बाहुबली की गणना अरिहंत, सिद्ध में की जाती है; अतः उनकी प्रतिमा भी पूज्य है। इसी प्रकार सभी मोक्षगामी जीवों की प्रतिमाओं को समझना चाहिए। जैसे– राम, हनुमान आदि।

प्रश्न 370. भगवान आदिनाथ तथा महावीर भगवान का पूर्व सम्बन्ध क्या था ?

उत्तर– भगवान आदिनाथ पूर्व भव में भगवान महावीर के बाबा (दादा) थे।

प्रश्न 371. भगवान महावीर का भरत चक्रवर्ती का पूर्व सम्बन्ध क्या था ?

उत्तर– पूर्व भव में भरत चक्रवर्ती भगवान महावीर के पिता थे।

प्रश्न 372. भगवान बाहुबली एवं भगवान महावीर की पूर्व पर्याय का सम्बन्ध क्या था।

उत्तर– भगवान बाहुबली पूर्व भव में भगवान महावीर के चाचा थे।

प्रश्न 373. हमारे देश का नाम भारत कैसे पड़ा ?

उत्तर– भगवान आदिनाथ के प्रथम पुत्र चक्रवर्ती भरत के नाम पर हमारे देश का नाम भारत पड़ा।

प्रश्न 374. इस कर्म युग में सर्वप्रथम मोक्ष जाने वाले कौन-से महापुरूष थे ?

उत्तर– भगवान आदिनाथ के पुत्र अनंतवीर्य सर्वप्रथम इस कर्म युग में मोक्ष जाने वाले थे।

प्रश्न 375. कितने तीर्थंकरों का जन्म उत्तर भारत में हुआ है ?

उत्तर– सभी तीर्थंकरों का जन्म उत्तर भारत में हुआ।

प्रश्न 376. तीर्थंकर कौन से वर्ण (कुल) वाले होते हैं ?

उत्तर– सभी तीर्थंकर क्षत्रीय वर्ण वाले होते हैं।

प्रश्न 377. कौन-से तीर्थंकरों को तीन-तीन पदवियां थी ?

उत्तर– शान्तिनाथ, कुंथुनाथ, अरहनाथ तीर्थंकरों को तीन-तीन पदवियां थी।

प्रश्न 378. कौन से ऐसे तीर्थंकर हैं जिनकी प्रतिमा के चिन्ह लोक में मंगलकारी जाने जाते हैं?

उत्तर– (1) श्री आदिनाथ भगवान का बैल, (2) श्री अजितनाथ भगवान का हाथी, (7) श्री सुपार्श्वनाथ का स्वस्तिक, (10) श्री शीतलनाथ का कल्पवृक्ष, (18) श्री अरहनाथ की मछली, (19) श्री मल्लिनाथ का कलश, इन तीर्थंकरों के चिन्ह लोक में मंगलकारी जाने जाते हैं।

प्रश्न 379. इस कर्मयुग के अंत में मोक्ष जाने वाले महापुरूष का नाम क्या है।

उत्तर– श्री जम्बूस्वामी मथुरा से कर्मयुग के अंत में मोक्ष गये।

प्रश्न 380. श्री जम्बूस्वामी के बारे में प्रचलित लोकोक्ति क्या है ?

उत्तर– जम्बूस्वामी मोक्ष गये, ताला दे चाबी ले गये लोकोक्ति प्रचालित है।

प्रश्न 381. कौन-से तीर्थंकरों के चिन्ह पालतू पशु (जीव) हैं ?

उत्तर– (1) श्री आदिनाथ जी का बैल, (2) श्री अजितनाथ जी का हाथी, (3) श्री सम्भव नाथ जी का घोड़ा, (12) श्री वासुपूज्य जी का भैंसा, (14) श्री कुंथुनाथ जी का बकरा चिन्ह पालतू पशु (जीव) है।

प्रश्न 382. उन तीर्थंकरों के नाम क्या हैं जिनकी प्रतिमा के चिन्ह पशु है ?

उत्तर– (1) श्री आदिनाथ जी का बैल, (2) श्री अजितनाथ जी का हाथी, (3) श्री सम्भव नाथ जी का घोड़ा, (4) श्री अभिनंदन जी का बंदर, (8) श्री पुष्पदंत जी का मगर, (11) श्री श्रेयांसनाथ जी का गैंडा, (12) श्री वासुपूज्य जी का भैंसा, (13) श्री विमलनाथ जी का सूकर, (14) श्री अनंतनाथ जी का सेही, (16) श्री शांतिनाथ जी का हिरण, (17) श्री कुंथुनाथ जी का बकरा, (18) श्री अरहनाथ जी की मछली, (20) श्री मुनिसुव्रतनाथ जी का कछुआ, (23) श्री पार्श्वनाथ जी का सर्प एवं (24) श्री महावीर स्वामी का सिंह।

प्रश्न 383. उन तीर्थंकरों के नाम क्या हैं जिनकी प्रतिमा के चिन्ह बोझा ढोने वाले पशु है ?

उत्तर–(1) श्री आदिनाथ जी का बैल, (2) श्री अजितनाथ जी का हाथी, (3) श्री सम्भवनाथ जी का घोड़ा एवं (12) श्री वासुपूज्य जी का भैंसा।

प्रश्न 384. उन तीर्थंकरों के नाम क्या हैं जिनकी प्रतिमा के चिन्ह जल में रहने वाले जीव हैं ?

उत्तर– (6) श्री पद्मप्रभु का लाल कमल, (9) श्री पुष्पदंत जी का मगर, (18) श्री अरहनाथ जी की मछली, (20) श्री मुनिसुब्रत जी का कुछआ, (21) श्री नमिनाथ जी का नीलकमल जल में रहने वाले जीव हैं।

प्रश्न 385. उन तीर्थंकरों के नाम क्या है। जिनकी प्रतिमा के चिन्ह निर्जीव वस्तुएँ हैं ?

उत्तर– (7) श्री सुपार्श्वनाथ जी का स्वस्तिक, (15) श्री धर्मनाथजी का वज्रदंड, (19) श्री मल्लिनाथजी का कलश चिन्ह निर्जीव है।

प्रश्न 386. उन तीर्थंकर का नाम क्या है जिनकी प्रतिमा का चिन्ह पक्षी है ?

उत्तर– (5) श्री सुमतिनाथ जी का चकवा चिन्ह पक्षी है।

प्रश्न 387. उन तीर्थंकर का नाम क्या है जिनकी प्रतिमा का चिन्ह ऐसा जीव है जिसके शरीर पर काँटे होते हैं ?

उत्तर– (14) श्री अनंतनाथ जी के सेही चिन्ह के कांटे वाला शरीर है।

प्रश्न 388. ऐसे तीर्थंकर का नाम क्या है जिनकी प्रतिमा का चिन्ह ऐसा जीव है जिसका ऊपरी भाग पत्थर के समान कठोर होता है ?

उत्तर– (20) श्री मुनि सुव्रतनाथ जी के चिन्ह कछुआ के शरीर का ऊपरी भाग पत्थर समान कठोर होता है।

प्रश्न 389. ऐसे तीर्थंकर का नाम क्या है जिनकी प्रतिमा का चिन्ह रेंगने वाला जीव है ?

उत्तर– (23) श्री पार्श्वनाथ जी के चिन्ह सर्प का रेंगने वाला जीव है।

प्रश्न 390. उन तीर्थंकरों के नाम क्या है जिनकी प्रतिमा के चिन्ह एक इन्द्रिय जीव है ?

उत्तर– (6) श्री पद्मप्रभुजी का लाल कमल, (10) श्री शीतलनाथ जी का कल्पवृक्ष, (21) नमिनाथजी का नीलकमल चिन्ह एक इन्द्रिय हैं।

प्रश्न 391. उन तीर्थंकरों के नाम क्या हैं ? जिनकी प्रतिमा के चिन्ह दो इन्द्रिय जीव हैं ?

उत्तर– (22) श्री नेमिनाथजी का शंख का चिन्ह दो इन्द्रिय है।

प्रश्न 392. उन तीर्थंकरों के नाम क्या हैं जिनकी प्रतिमा के चिन्ह पंचेन्द्रिय जीव हैं ?

उत्तर– (1) श्री आदिनाथजी का बैल, (2) श्री अजितनाथ जी का हाथी, (3) श्री सम्भवनाथ जी का घोड़ा, (4) श्री अभिनंदन जी का बंदर, (5) श्री सुमतिनाथ जी का चकवा, (9) पुष्पदंत जी का मगर, (11) श्रेयांसनाथ जी का गैंडा, (12) वासुपूज्य जी का भैंसा, (13) श्री विमलनाथ जी का सूकर, (14) श्री अनंतनाथ जी का सेही, (16) श्री शांतिनाथजी का हिरण, (17) श्री कुंथुनाथ जी का बकरा, (18) श्री अरहनाथ जी की मछली, (20) श्री

मुनिसुव्रतनाथ जी का कछुआ, (23) श्री पार्श्वनाथ जी का सर्प, एवं (24) श्री महावीरस्वामी का सिंह पंचेन्द्रिय है।

प्रश्न 393. ऐसे तीर्थकरों के नाम क्या हैं जिनके पिता बनारस के राजा थे ?

उत्तर– सातवें श्री सुपार्श्वनाथ एवं तेइसवें श्री पार्श्वनाथ जी के पिता बनारस के राजा थे।

प्रश्न 394. कौन-से तीर्थकर का समवसरण सबसे बड़ा था और कितना ?

उत्तर– श्री आदिनाथ जी का समवसरण 12 योजन (16 मील) विस्तृत था।

प्रश्न 395. कौन-से तीर्थकर का समवसरण सबसे छोटा था और कितना ?

उत्तर– 24 वें श्री महावीर स्वामी का समवसरण 1 योजन अर्थात् 4 कोश का था।

प्रश्न 396. तीर्थकरों के लिए वस्त्रादि एवं भोजन की व्यवस्था कहाँ से होती है ?

उत्तर– तीर्थंकरों के भोजन एवं वस्त्रादि की व्यवस्था स्वर्ग से होती है।

प्रश्न 397. क्या तीर्थकर अपनी माता का दूध पीते हैं ?

उत्तर– तीर्थंकर अपनी माता का दूध नहीं पीते हैं।

प्रश्न 398. क्या तीर्थकर अपने माता-पिता को नमस्कार करते हैं?

उत्तर– तीर्थंकर अपने माता-पिता को भी नमस्कार नहीं करते है।

प्रश्न 399. श्री सुपार्श्वनाथ एवं पार्श्वनाथ जी में किन-किन बातों में समानता पायी जाती है ?

उत्तर– निम्न बातो में समानता पायी जाती है–

(1) दोनों तीर्थकरों का गर्भ-जन्म कल्याणक बनारस में हुआ था।

(2) दोनों तीर्थकरों का हरित श्याम वर्ण था।

(3) दोनों तीर्थकरों की प्रतिमाओं पर सर्प का फण पाया जाता है।

(4) दोनों तीर्थकरों का गर्भ, जन्म, तप एवं केवलज्ञान कल्याणक विशाखा नक्षत्र में हुआ था।

(5) दोनों तीर्थकरों ने पूर्वाण्ह काल में दीक्षा ली थी।

(6) दोनों तीर्थकरों को मोक्ष सप्तमी तिथि को हुआ था।

(7) दोनों तीर्थकरों को मोक्ष सम्मेदशिखर से हुआ था।

प्रश्न 400. मिथला नगरी में जन्म लेने वाले तीर्थकरों के नाम क्या हैं ?

उत्तर– 19वें श्री मल्लिनाथ जी एवं 21 वें नमिनाथ जी का मिथिला नगरी में जन्म हुआ।

प्रश्न 401. इक्ष्वाकुवंश में जन्म लेने वाल कितने तीर्थकर थे ?

उत्तर– सत्रह तीर्थंकरों ने इक्ष्वाकुवंश में जन्म लिया।

प्रश्न 402. इक्ष्वाकु वंश में जन्म लेने वाले तीर्थकरों के नाम क्या थे ?

उत्तर– (1) श्री आदिनाथ जी से लेकर 14 अन्तनाथ जी, शांतिनाथ जी, श्री मल्लिनाथ जी, श्री नमिनाथ जी।

प्रश्न 403. कुरुवंश में कौन-कौन से तीर्थंकरों ने जन्म लिया है ?

उत्तर– 15 वें श्री धर्मनाथ जी, 17वें श्री कुंथुनाथजी, 18 वें श्री अरहनाथ जी इन तीन तीर्थंकरों ने कुरू वंश में जन्म लिया है।

प्रश्न 404. यादव वंश में कौन-कौन से तीर्थंकरों ने जन्म लिया है ?

उत्तर– 20 वें मुनिसुव्रतनाथ जी एवं 22 वें श्री नेमिनाथ जी ने यादव वंश में जन्म लिया।

प्रश्न 405. उग्र वंश में कौन से तीर्थंकरों ने जन्म लिया था ?

उत्तर– 23वें श्री पार्श्वनाथ जी ने उग्र वंश में जन्म लिया।

प्रश्न 406. श्री महावीर भगवान ने कौन से वंश में जन्म लिया था ?

उत्तर– नाथ वंश में महावीर भगवान ने जन्म लिया।

प्रश्न 407. चौबीसों तीर्थंकरों के कुल कितने गणधर थे ?

उत्तर– चौबीसों तीर्थंकरों के कुल चौदह सौ बावन गणधर थे।

प्रश्न 408. गणधर किसे कहते हैं ?

उत्तर– जो मुनि तीर्थंकर की दिव्य ध्वनि (वाणी) को सुनकर 11 अंग व 14 पूर्व रूपी द्वादशांग वाणी का सूत्र रुप से संकलन करते हैं, उन्हें गणधर कहते हैं।

प्रश्न 409. बारह गण कौन-कौन से हैं ?

उत्तर– भगवान के समवरण में जो बारह सभायें बारह कोठे होते हैं उन्हें ही बारह गण कहते हैं।

प्रश्न 410. अशोक वृक्ष किसे कहते हैं ?

उत्तर– तीर्थंकर को जिस वृक्ष के नीचे केवलज्ञान होता है उसे अशोक वृक्ष नाम से जाना जाता है ?

प्रश्न 411. अशोक नाम की सार्थकता क्या है ?

उत्तर– समस्त प्राणियों का शोक हरने से इस वृक्ष का अशोक नाम सार्थक है।

प्रश्न 412. शाल वृक्ष के नीचे कौन-कौन से तीर्थंकरों को केवलज्ञान हुआ ?

उत्तर– श्री सुमतिनाथ जी व श्री पद्मप्रभु जी को शाल वृक्ष के नीचे केवल ज्ञान हुआ था ।

प्रश्न 413. पीपल वृक्ष के नीचे कौन से भगवान को केवल ज्ञान हुआ था ?

उत्तर– श्री अनंतनाथजी को पीपल वृक्ष के नीचे केवल ज्ञान हुआ था।

प्रश्न 414. आम्रवृक्ष के नीचे कौन से तीर्थंकर को केवल ज्ञान हुआ था।

उत्तर– श्री अरहनाथजी को आम्रवृक्ष के नीचे केवल ज्ञान हुआ।

प्रश्न 415. तीर्थंकरों के सबसे अधिक कल्याणक कौन से महीने मे आते हैं ओर कितने ?

उत्तर– चैत्र के महीने में सत्रह कल्याणक आते हैं।

प्रश्न 416. तीर्थंकरों के सबसे कम कल्याणक कौन से महीने में आते हैं और कितने?

उत्तर– आश्विन के महीने में केवल तीन कल्याणक आते हैं।

प्रश्न 417. श्री सुमतिनाथ भगवान के कौन से तीन कल्याणक एक ही तिथि को हुए है ?

उत्तर– चैत्र शुक्ला ग्यारह को जन्म ज्ञान व मोक्ष कल्याणक।

प्रश्न 418. कौन-से तीर्थंकरों के तीन कल्याणक एक ही तिथि को हुए है ?

उत्तर– (1) श्री कुथुनाथजी के जन्म, तप एवं मोक्ष कल्याणक वैशाख शुक्ला प्रतिपदा को हुए हैं। (2) श्री शांति नाथ जी का जन्म, तप एवं मोक्ष कल्याणक ज्येष्ठ कृष्णा चौदस को हुए हैं। (3) श्री सुमतिनाथ जी के जन्म, ज्ञान और मोक्ष कल्याणक चैत्र शुक्ला एकादशी को हुए हैं।

प्रश्न 419. ऐसे तीर्थंकरों के नाम व तिथि कौन से हैं ? जिसके जन्म व तप कल्याणक एक ही तिथि को हुए हों ?

उत्तर–

नाम		तिथि
(1) श्री आदिनाथ जी	–	चैत्र कृष्णा 1
(2) श्री अनंतनाथ जी	–	ज्येष्ठ कृष्णा 12
(3) श्री सुपार्श्वनाथ जी	–	ज्येष्ठ शुक्ला 12

(4) श्री नमिनाथ जी – अषाढ़ कृष्णा 10

(5) श्री नेमिनाथ जी – श्रावण शुक्ला 6

(6) श्री पद्मप्रभु जी – कार्तिक कृष्णा 13

(7) श्री पुष्पदंत जी – मंगसिर शुक्ला 1

(8) श्री मल्लिनाथ जी – मंगसिर शुक्ला 11

(9) श्री चंद्रप्रभु जी – पौष कृष्णा 11

(10) श्री पार्श्वनाथ जी – पौष कृष्णा 11

(11) श्री शीतलनाथ जी – माघ कृष्णा 12

(12) श्री धर्मनाथ जी – माघ शुक्ला 13

(13) श्री श्रेयासनाथ जी – फाल्गुन कृष्णा 11

(14) श्री वासुपूज्य जी – फाल्गुन कृष्णा 14

प्रश्न 420. उन तीर्थंकर का नाम क्या है ? जिनके ज्ञान ओर मोक्ष कल्याणक एक ही तिथि को हुए हैं ?

उत्तर– श्री अनंत नाथ जी – चैत्र कृष्णा 30 (अमावस्या)

प्रश्न 421. उन तीर्थंकर का नाम क्या है ? जिनका गर्भ व मोक्ष कल्याणक एक ही तिथि को हुआ हो ?

उत्तर– श्री अभिनंदननाथ जी – बैशाख शुक्ला 6

प्रश्न 422. वे कौन सी तिथियाँ हैं जिसमें दो तीर्थंकरों के चार कल्याणक हुए हों ?

उत्तर– पौष कृष्णा एकादशी को चन्द्रप्रभु एवं पार्श्वनाथ जी के जन्म व तप कल्याणक हुए हैं।

प्रश्न 423. वे कौन सी तिथियाँ हैं जिनमें दो-दो तीर्थंकरों के तीन-तीन कल्याणक हुए हैं ?

उत्तर– (1) चैत्र कृष्णा 30 (अमावस्या) श्री अनंतनाथ जी के ज्ञान व मोक्ष तथा अरहनाथ भगवान को मोक्ष हुआ था। (2) मगसिर कृष्णा 11 मल्लिनाथ जी के जन्म व तप तथा नमिनाथ जी को केवलज्ञान हुआ था। (3) फाल्गुन कृष्णा 11 श्री आदिनाथ जी को केवलज्ञान तथा श्रेयांसनाथ जी का जन्म व तप कल्याणक हुआ था।

प्रश्न 424. श्री ऋषभदेव की पुत्री ब्राह्मी और सुन्दरी ने आर्यिका दीक्षा क्यों ली थी ?

उत्तर– अगले भव में स्त्री पर्याय को समाप्त करने एवं तीर्थकार पिता के सम्मान हेतु तथा परम्परा से मोक्ष प्राप्त करने की इच्छा से तीव्र वैराग्य भाव धारण कर उन कन्याओं ने आर्यिका दीक्षा ग्रहण की थी।

प्रश्न 425. भगवान ऋषभदेव को प्रथम आहार कितने दिन के उपवास के बाद प्राप्त हुआ था ?

उत्तर– एक वर्ष 39 दिनों के उपवास के पश्चात् आहार हुआ।

प्रश्न 426. महावीर स्वामी ने कितने वर्ष की आयु में दीक्षा ली थी ?

उत्तर– 30 वर्ष की आयु में महावीर स्वामी ने दीक्षा ली थी।

प्रश्न 427. भगवान महावीर को केवलज्ञान होने के बाद उनकी दिव्यध्वनि कितने दिनों बाद एवं किस दिन खिरी थी ?

उत्तर– 66 दिन बाद श्रावण बदी एकम को उनकी दिव्यध्वनि खिरी थी ?

प्रश्न 428. चौबीस तीर्थकरों की निर्वाणभूमि के क्या-क्या नाम हैं ?

उत्तर– कैलाशपर्वत, चंपापुरी, पावापुरी, गिरनार और सम्मेद शिखर पर्वतों से तीर्थंकरों ने निर्वाण प्राप्त किया है।

प्रश्न 429. वह तिथि कौन सी है जिसमें विभिन्न तीर्थंकरों के कल्याणक हुए हैं।

उत्तर– फाल्गुन कृष्णा 7 को श्री सुपार्श्वनाथ तथा चन्द्रप्रभु भगवान को केवलज्ञान हुआ था।

प्रश्न 430. कौन-से तीर्थंकर ने पूर्व भव में कौवे के मांस का त्याग किया था ?

उत्तर– भगवान श्री महावीर स्वामी के जीव ने कौवे के मांस का त्याग किया।

प्रश्न 431. 1011 कौन से तीर्थकर का भाई कमठ था ?

उत्तर– भगवान श्री पार्श्वनाथ का भाई कमठ था।

प्रश्न 432. कौन से तीर्थंकर शाकाहार धर्म के प्रर्वतक थे ?

उत्तर– श्री आदिनाथ जी शाकाहार धर्म के प्रर्वतक थे।

प्रश्न 433. कौन-से तीर्थंकर ने जैन धर्म चलाया था ?

उत्तर– जैन धर्म अनादिनिधन है किसी तीर्थंकर ने नहीं चलाया। तीर्थंकर धर्म का उपदेश देते हैं।

प्रश्न 434. कौन-से तीर्थंकर को बंधे हुए पशुओं को देखकर वैराग्य हुआ था ?

उत्तर– भगवान श्री नेमिनाथ जी को।

प्रश्न 435. कौन-से तीर्थंकर को क्षमा में अग्रणीय माना जाता है ?

उत्तर– भगवान पार्श्वनाथ को क्षमा में अग्रणीय माना जाता हैं।

प्रश्न 436. कौन-से तीर्थंकरों को उल्कापात देखकर वैराग्य हुआ था ?

उत्तर– चार तीर्थंकरों को – (1) श्री अजितनाथ जी, (2) श्री पुष्पदंत जी, (3) श्री अनंतनाथ जी, (4) श्री धर्मनाथ जी को उल्कापात देखकर वैराग्य हुआ।

प्रश्न 437. कौन-से तीर्थंकरों को जाति स्मरण से वैराग्य हुआ था ?

उत्तर– नौ तीर्थंकरों को जाति स्मरण से वैराग्य हुआ था– (1) श्री सुमतिनाथ जी, (2) श्री पद्मप्रभु जी, (3) श्री वासुपूज्य जी, (4) श्री शांतिनाथ जी, (5) श्री कुंथुनाथ जी, (6) श्री मुनि सुव्रतनाथ जी, (7) श्री नमिनाथ जी, (8) श्री पार्श्वनाथ जी, (9) श्री महावीर स्वामी जी को जाति स्मरण से वैराग्य हुआ था।

प्रश्न 438. अनित्यादि भावनाओं के चिंतवन से कौन-से तीर्थंकरों को वैराग्य हुआ था ?

उत्तर– दो तीर्थंकरों को– (1) श्री चन्द्रप्रभु जी एवं (2) श्री मल्लिनाथ जी को अनित्यादि भावनाओं के चिंतवन से वैराग्य हुआ था।

प्रश्न 439. मेघों का नाश देखने से कौन-से तीर्थंकरों को वैराग्य हुआ था ?

उत्तर– तीन तीर्थंकरों को– (1) श्री सम्भवनाथ जी, (2) श्री विमलनाथ जी, (3) श्री अरहनाथ जी को मेघों का नाश देखने से वैराग्य हुआ था।

प्रश्न 440. बसंत लक्ष्मी का नाश देखकर वैराग्य प्राप्त करने वाले तीर्थंकर कौन-कौन से हैं ?

उत्तर– दो तीर्थंकर– (1) श्री सुपार्श्वनाथ जी, (2) श्रेयांसनाथ जी को वसंत लक्ष्मी का नाश देखकर वैराग्य हुआ था।

प्रश्न 441. गंधर्वनगर का नाश देखकर कौन-से तीर्थंकर को वैराग्य हुआ था ?

उत्तर– श्री अभिनंदननाथ जी को वैराग्य हुआ था।

प्रश्न 442. कौन से तीर्थंकर की दिव्य ध्वनि 66 दिन बाद खिरी ?

उत्तर– भगवान महावीर की दिव्य ध्वनि 66 दिन बाद खिरी ।

प्रश्न 443. मानस्तम्भ को देखकर किसका मान गलित हुआ था ?

उत्तर– भगवान महावीर स्वामी के समवशरण में मानस्तम्भ को देखकर इन्द्रभूति गौतम का मान गलित हुआ था।

प्रश्न 444. सभी धर्मों के आराध्य तीर्थंकर कौन से हैं और कैसे ?

उत्तर– भगवान श्री आदिनाथ जी इस्लाम धर्म में आदम बाबा, वैदिक धर्म में अष्टम अवतार तथा जैन धर्म में प्रथम अवतार माने हैं।

प्रश्न 445. सबसे अधिक तप कौन से तीर्थंकर ने किया था तथा कितना ?

उत्तर– भगवान श्री आदिनाथ ने एक हजार वर्ष तक तप किया।

प्रश्न 446. सबसे कम तप कौन-से तीर्थंकर ने किया और कितना ?

उत्तर– भगवान श्री मल्लिनाथ जी ने केवल 6 दिन तक तप किया।

प्रश्न 447. भगवान बाहुबली ने कितना तप किया ?

उत्तर– भगवान बाहुबली ने 1 वर्ष तक तप किया

प्रश्न 448. भरत चक्रवर्ती ने कितने समय तक तप किया ?

उत्तर– भरत चक्रवर्ती ने अन्तर्मुहूर्त तक तप किया।

प्रश्न 449. भगवान पार्श्वनाथ के केवलज्ञान क्षेत्र को अहिक्षेत्र क्यों कहते हैं?

उत्तर– क्योंकि धरणेन्द्र पद्मावती ने कमठ द्वारा किये गये उपसर्ग निवारण करने के लिए अहि अर्थात् नाग का छत्र भगवान के ऊपर लगाया था इसीलिए इस स्थान को अहिछत्र कहते हैं।

प्रश्न 450. कौन-कौन से तीर्थंकर ने रोहिणी नक्षत्र में गर्भ धारण किया ?

उत्तर– श्री आदिनाथ जी, अजितनाथ जी दो तीर्थंकरों ने रोहिणी नक्षत्र में गर्भ धारण किया।

प्रश्न 451. श्रवण नक्षत्र में कौन-कौन से तीर्थंकरों ने गर्भ धारण किया ?

उत्तर– श्री श्रेयांसनाथ जी, श्री मुनिसुव्रतनाथ जी इन दो तीर्थंकरों ने श्रवण नक्षत्र में गर्भधारण किया।

प्रश्न 452. रेवती नक्षत्र में कौन-कौन से तीर्थंकरों ने गर्भधारण किया ?

उत्तर– तीन तीर्थंकरों ने, श्री अनंतनाथ जी, श्री धर्मनाथ जी, श्री अरहनाथ जी ने रेवती नक्षत्र में गर्भ धारण किया।

प्रश्न 453. अश्वनी नक्षत्र में कौन-कौन से तीर्थंकरों ने गर्भ धारण किया ?

उत्तर– श्री मल्लिनाथजी, श्री नमिनाथजी इन दो तीर्थंकरों ने अश्वनी नक्षत्र में गर्भधारण किया।

प्रश्न 454. विशाखा नक्षत्र में कौन-कौन से तीर्थंकरों ने गर्भ धारण किया ?

उत्तर– श्री सुपार्श्वनाथजी, श्री पार्श्वनाथ जी इन दो तीर्थंकरों ने पिशाखा नक्षत्र में गर्भ धारण किया।

प्रश्न 455. उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में कौन कौन से तीर्थंकरों ने गर्भ धारण किया ?

उत्तर– नेमिनाथ जी, श्री महावीर स्वामी जी इन दो तीर्थंकरों ने उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में गर्भ धारण किया।

प्रश्न 456. कौन-कौन से तीर्थंकर सर्वार्थ सिद्धि से गर्भ में आये ?

उत्तर– श्री आदिनाथ जी, श्री धर्मनाथ जी, श्री शांतिनाथ जी, श्री कुंथुनाथ जी सर्वार्थ सिद्धि से गर्भ में आये ?

प्रश्न 457. विजय नाम के पहले अनुत्तर विमान से कौन-कौन से तीर्थंकर गर्भ में आये।

उत्तर– श्री अजितनाथ जी, श्री अभिनंदननाथ जी अनुत्तर विमान से गर्भ में आये।

प्रश्न 458. पुष्पोत्तर विमान से कौन-कौन से तीर्थंकर गर्भ में आये ?

उत्तर– श्री श्रेयांसनाथजी, श्री अनंतनाथजी पुष्पोत्तर विमान से गर्भ में आये।

प्रश्न 459. चौथे अपराजित अनुत्तर विमान से कौन-कौन से तीर्थंकर गर्भ में आये ?

उत्तर– श्री अरहनाथजी, श्री मल्लिनाथजी, श्री नमिनाथजी, श्री नेमिनाथजी ये चार तीर्थंकर अपराजित विमान से आये।

प्रश्न 460. रोहिणी नक्षत्र में कौन-कौन से तीर्थंकरों का जन्म हुआ ?

उत्तर– (1) श्री अजितनाथ जी, (2) श्री अरहनाथ जी का रोहिणी नक्षत्र में जन्म हुआ।

प्रश्न 461. चित्रा नक्षत्र में कौन-कौन से तीर्थंकरों का जन्म हुआ ?

उत्तर– (1) श्री पद्मप्रभुजी, (2) श्री नेमिनाथजी का चित्रा नक्षत्र में जन्म हुआ।

प्रश्न 462. विशाखा नक्षत्र में कौन-कौन से तीर्थंकरों का जन्म हुआ ?

उत्तर– (1) श्री सुपार्श्वनाथ जी, (2) श्री वासुपूज्य जी, (3) श्री पार्श्वनाथ जी, इन तीन तीर्थंकरों का विशाखा नक्षत्र में जन्म हुआ।

प्रश्न 463. श्रवण नक्षत्र में कौन कौन से तीर्थंकरों ने जन्म लिया ?

उत्तर– (1) श्री श्रेयांस नाथजी, (2) श्री मुनिसुव्रतनाथ जी का श्रवण नक्षत्र में जन्म हुआ।

प्रश्न 464. कितने तीर्थंकरों ने इक्ष्वाकु वंश में जन्म धारण किया ?

उत्तर– सोलह तीर्थंकरों ने इक्ष्वाकु वंश में जन्म धारण किया।

प्रश्न 465. उन तीर्थंकरों के नाम क्या हैं ? जिन्होंने इक्ष्वाकु वंश में जन्म धारण किया ?

उत्तर– पहले श्री आदिनाथ जी से लेकर चौदहवें अनंतनाथ जी तक 14 तीर्थकर, (15) श्री मल्लिनाथ जी, (16) नमिनाथ जी का इक्ष्वाकुवंश में जन्म हुआ।

प्रश्न 466. कुरु वंश में कौन-कौन से तीर्थंकरों ने जन्म लिया ?

उत्तर– (1) श्री धर्मनाथ जी, (2) श्री कुंथुनाथ जी, (3) श्री अरहनाथ जी ने कुरूवंश में जन्म लिया।

प्रश्न 467. यादव वंश में कौन-कौन से तीर्थकरों ने जन्म लिया ?

उत्तर– श्री मुनिसुव्रतनाथ जी, श्री नेमनाथ जी ने यादव वंश में जन्म लिया।

प्रश्न 468. चित्रा नक्षत्र में कौन-कौन से तीर्थकरों ने दीक्षा ग्रहण की ?

उत्तर– छठवें श्री पद्मप्रभु जी, बाइसवें श्री नेमिनाथ जी ने चित्रा नक्षत्र में दीक्षा ली।

प्रश्न 469. विशाखा नक्षत्र मे कौन-कौन से तीर्थंकरों ने दीक्षा ली ?

उत्तर– सातवें श्री सुपार्श्वनाथ जी, तेरहवें श्री विमलनाथ जी, तेइसवें श्री पार्श्वनाथ जी ने विशाखा नक्षत्र में दीक्षा ली।

प्रश्न 470. अनुराधा नक्षत्र में कौन-कौन से तीर्थंकरों ने दीक्षा ली ?

उत्तर– आठवें श्री चन्द्रप्रभु जी, नौवें पुष्पदंत जी ने अनुराधा नक्षत्र में दीक्षा ली।

प्रश्न 471. श्रवण नक्षत्र में कौन-कौन से तीर्थकरों ने दीक्षा ली ?

उत्तर– ग्यारहवें श्री श्रेयांसनाथजी, बीसवें श्री मुनिसुव्रतनाथ जी ने श्रवण नक्षत्र में दीक्षा ली।

प्रश्न 472. रेवती नक्षत्र में कौन-कौन से तीर्थंकरों ने दीक्षा ली ?

उत्तर– चौदहवें श्री अनंतनाथ जी, अठारहवें श्री अरहनाथ जी ने रेवती नक्षत्र में दीक्षा ली।

प्रश्न 473. अश्वनी नक्षत्र में कौन-कौन से तीर्थकरों ने दीक्षा ली ?

उत्तर– उन्नीसवें श्री मल्लिनाथ जी, इक्कीसवें श्री नमिनाथ जी ने अश्वनी नक्षत्र में दीक्षा ली।

प्रश्न 474. सहेतुक वन में कौन-कौन से तीर्थकरों ने दीक्षा ली ?

उत्तर– दूसरे श्री अजितनाथ जी, तीसरे श्री अभिनंदन नाथ जी, पाँचवें श्री

सुमतिनाथ जी, सातवें श्री सुपार्श्वनाथ जी, दसवें श्री शीतलनाथ जी, तेरहवें श्री विमलनाथ जी, चौदहवें श्री अनंतनाथ जी, सत्रहवें श्री कुंथुनाथ जी, अठारहवें श्री अरहनाथ जी ने सहेतुक वन में दीक्षा ली।

प्रश्न 475. मनोहर वन में कौन-कौन से तीर्थंकरों ने दीक्षा ली ?

उत्तर– छटवें श्री पद्मप्रभु जी, ग्यारहवें श्री श्रेयांसनाथ जी, बारहवें श्री वासुपूज्य जी ने मनोहर वन में दीक्षा ली।

प्रश्न 476. शाल वन में कौन-कौन से तीर्थंकरों ने दीक्षा ली ?

उत्तर– पन्द्रहवें श्री धर्मनाथ जी, उन्नीसवें श्री मल्लिनाथ जी ने शाल वन में दीक्षा ली।

प्रश्न 477. कितने तीर्थंकरों को जति स्मरण से वैराग्य हुआ था ?

उत्तर– दस तीर्थंकरों को जाति स्मरण से वैराग्य हुआ।

प्रश्न 478. उन तीर्थंकरों के नाम क्या हैं जिन्हें जाति-समरण से वैराग्य हुआ था ?

उत्तर– (1) पाँचवें श्री सुमतिनाथ जी, (2) छठवें श्री पद्मप्रभु जी, (3) बारहवें श्री वासुपूज्य जी, (4) सोलहवें श्री शंतिनाथ जी, (5) सत्रहवें श्री कुंथुनाथ जी, (6) बीसवें श्री मुनिसुव्रत जी, (7) इक्कीसवें श्री नमिनाथ जी, (8) बाइसवें श्री नेमिनाथ जी, (9) तेइसवें श्री पार्श्वनाथ जी, (10) चौबीसवें श्री वर्द्धमान जी को जाति-स्मरण से वैराग्य हुआ।

प्रश्न 479. उन तीर्थंकरों का नाम क्या था जिन्हें निलांजना के नृत्य से वैराग्य हुआ था ?

उत्तर– आदिनाथ जी को निलांजना के मृत्यु से वैराग्य हुआ।

प्रश्न 480. उन तीर्थंकरों के नाम क्या हैं जिन्हें अध्रुवादि भावना से वैराग्य हुआ था ?

उत्तर– (1) आठवें श्री चंदप्रभु जी, (2) उन्नीसवें श्री मल्लिनाथ जी।

प्रश्न 481. उन तीर्थंकरों के नाम क्या हैं जिन्हें बिजली गिरने (उल्कापात) से वैराग्य हुआ था ?

उत्तर– (1) नौवें श्री पुष्पदंत जी, (2) चौदहवें श्री अनंतनाथ जी, (3) पन्द्रहवें श्री धर्मनाथ जी को बिजली गिरने से वैराग्य हुआ।

प्रश्न 482. मेघनाश से कौन-कौन से तीर्थंकरों को वैराग्य हुआ था ?

उत्तर– (1) तीसरे श्री सम्भवनाथ जी, (2) तेरहवें विमलनाथ जी, (3) अठारहवें श्री अरहनाथ जी को मेघनाश से वैराग्य हुआ।

प्रश्न 483. उन तीर्थंकरों के नाम क्या हैं ? जिन्होंने अपराह्न काल में दीक्षा धारण की।

उत्तर– (1) प्रथम श्री आदिनाथ जी, (2) दूसरे श्री अजितनाथ जी, (3) तीसरे श्री सम्भवनाथ जी, (4) छठे श्री पद्मप्रभु जी, (5) आठवें श्री चंदप्रभु जी, (6) नोवें श्री पुष्पदंत जी, (7) दसवें श्री शीतलनाथ जी, (8) बारहवें श्री वासुपूज्य जी, (9) तेरहवें श्री विमलनाथ जी, (10) चौदहवें श्री अनंतनाथ जी, (11) पन्द्रहवें श्री धर्मनाथ जी, (12) सोलहवें श्री शांतिनाथ जी, (13) सत्रहवें श्री कुंथुनाथ जी, (14) अठारहवें श्री अरहनाथ जी, (15) बीसवें श्री मुनिसुव्रत जी, (16) इक्कीसवें श्री नमिनाथ जी, (17) बाइसवें श्री नेमिनाथ जी, (18) चौबीसवें श्री महावीर स्वामी जी ने अपराह्न काल में दीक्षा ली।

प्रश्न 484. उन तीर्थंकरों के नाम क्या हैं ? जिन्होंने पूर्वाह्न काल में दीक्षा ली ?

उत्तर– (1) चौथे श्री अभिनंदननाथ जी, (2) पॉचवें श्री सुमतिनाथ जी, (3) सातवें श्री सुपार्श्वनाथ जी, (4) ग्यारहवें श्री श्रेयांसनाथजी, (5) उन्नीसवें श्री मल्लिनाथ जी, (6) तेइसवें श्री पार्श्वनाथ जी ने पूर्वाह्न काल में दीक्षा ली ।

प्रश्न 485. कौन से तीर्थंकर ने अकेले दीक्षा ली ?

उत्तर– श्री महावीर स्वामी ने अकेले दीक्षा ली।

प्रश्न 486. चार हजार राजाओं के साथ कौन-से तीर्थंकर ने दीक्षा ली ?

उत्तर– भगवान श्री आदिनाथ ने चार हजार राजाओं के साथ दीक्षा ली।

प्रश्न 487. एक हजार राजाओं के साथ कितने तीर्थंकरों ने दीक्षा ली ?

उत्तर– उन्नीस तीर्थंकरों ने एक हजार राजाओं के साथ दीक्षा ली।

प्रश्न 488. उन तीर्थंकरों के नाम क्या हैं ? जिन्होंने एक हजार राजाओं के साथ दीक्षा ली?

उत्तर– श्री अजितनाथ से श्रेयांसनाथ तक, श्री विमलनाथ से अरहनाथ तक, श्री मुनिसुव्रतनाथ से नेमिनाथ तक सभी तीर्थंकरों ने एक हजार राजाओं के साथ दीक्षा ली।

प्रश्न 489. तीन सौ राजाओं के साथ कौन-कौन से तीर्थंकरों ने दीक्षा ली ?

उत्तर– (1) तीन सौ राजाओं के साथ उन्नीसवें श्री मल्लिनाथ जी, (2) तेइसवें श्री पार्श्वनाथ जी ने दीक्षा ली।

प्रश्न 490. सबसे अधिक तपस्या कौन से तीर्थंकर ने की ?

उत्तर– श्री आदिनाथ जी ने एक हजार वर्ष तक तपस्या की।

प्रश्न 491. सबसे कम तपस्या कौन-से तीर्थंकर ने की ?

उत्तर– श्री मल्लिनाथ जी ने छः दिन तक तपस्या की।

प्रश्न 492. तीन वर्ष तक तपस्या करने वाले तीर्थंकरों के नाम क्या हैं ?

उत्तर– श्री शीतलनाथ जी, श्री विमलनाथ जी ने तीन वर्ष तपस्या की।

प्रश्न 493. सोलह वर्ष तक तप करने वाले तीर्थंकरों के नाम क्या हैं ?

उत्तर– श्री शांतिनाथ जी, श्री कुंथुनाथ जी, श्री अरहनाथ जी ने सोलह वर्ष तपस्या की।

प्रश्न 494. बारह वर्ष तक तप करने वाले तीर्थंकरों के नाम क्या हैं ?

उत्तर– श्री अजितनाथ जी, श्री महावीर स्वामी ने बारह वर्ष तक तप किया।

प्रश्न 495. एक दीक्षोपवास कौन-से तीर्थंकर ने किया था ?

उत्तर– भगवान श्री वासुपूज्य ने एक दीक्षोपवास किया।

प्रश्न 496. तीन दीक्षोपवास करने वाले तीर्थंकरों के नाम क्या हैं ?

उत्तर– श्री सम्भवनाथ जी, श्री अभिनंदननाथ जी, श्री सुमतिनाथ जी, श्री चन्द्रप्रभु जी, श्री शीतलनाथ जी, श्री विमलनाथ जी, श्री शांतिनाथ जी, श्री मुनिसुव्रतनाथ जी ने तीन दीक्षोपवास किये।

प्रश्न 497. तीन भक्त करने वाले तीर्थंकरों के नाम कौन से हैं ?

उत्तर– श्री पद्मप्रभु जी, श्री सुपार्श्वनाथ जी, श्री पुष्पदंत जी, श्री श्रेयांसनाथ जी, श्री अनंतनाथ जी, श्री धर्मनाथ जी, श्री कुंथुनाथ जी, श्री अरहनाथ जी, श्री नमिनाथ जी, श्री नेमिनाथ जी, श्री महावीर स्वामी जी।

प्रश्न 498. षष्ठोपवास करने वाले तीर्थंकरों के नाम कौन से हैं ?

उत्तर– श्री आदिनाथ जी ने षष्ठोपवास किया।

प्रश्न 499. षष्ठ भक्त करने वाले तीर्थंकरों के नाम कौन से हैं?

उत्तर– श्री अरहनाथ जी, श्री पार्श्वनाथ जी ने षष्ठ भक्त उपवास किया।

प्रश्न 500. अष्टम भक्त करने वाले तीर्थंकर का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री अजितनाथ जी ने अष्टम भक्त उपवास किया।

प्रश्न 501. कौन कौन से तीर्थंकरों को पूर्वाह्न काल में केवलज्ञान हुआ ?

उत्तर– श्री आदिनाथ जी, श्री मुनिसुव्रतनाथ जी, श्री नेमिनाथ जी, श्री पार्श्वनाथ जी, श्री वर्धमान जी को पूर्वाह्न काल में केवलज्ञान हुआ ।

प्रश्न 502. अपराह्न काल में केवल ज्ञान प्राप्त करने वाले कौन-से तीर्थंकर थे ?

उत्तर– श्री अजितनाथ से मल्लिनाथ तक 18 तीर्थंकर तथा श्री नमिनाथ जी ऐसे उन्नीस तीर्थंकरों को अपराह्न काल में केवलज्ञान की प्राप्ति हुई।

प्रश्न 503. सहेतुक वन में केवलज्ञान प्राप्त करने वाले तीर्थंकर कौन से हैं ?

उत्तर– श्री अजितनाथ जी, श्री सम्भवनाथ जी, श्री सुमतिनाथ जी, श्री सुपार्श्वनाथ जी, श्री शीतलनाथ जी, श्री विमलनाथ जी, श्री अनंतनाथ जी, श्री धर्मनाथ जी, श्री कुंथुनाथ जी, श्री अरहनाथ जी, इन दश तीर्थकरों को सहेतुक वन में केवलज्ञान हुआ था।

प्रश्न 504. मनोहर वन में केवल ज्ञान प्राप्त करने वाले तीर्थकर कौन से हैं ?

उत्तर– श्री पद्मप्रभु जी, श्री श्रेयांसनाथ जी, श्री वासुपूज्य जी, श्री मल्लिनाथ जी।

प्रश्न 505. उत्तराषाढ़ा नक्षत्र मे केवलज्ञान प्राप्त करने वाले तीर्थंकर कौन से हैं ?

उत्तर– श्री आदिनाथ जी, श्री विमलनाथ जी को उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में केवलज्ञान हुआ।

प्रश्न 506. चित्रा नक्षत्र में कौन-से तीर्थंकरों को केवलज्ञान हुआ था ?

उत्तर– श्री पद्मप्रभु जी, श्री नेमिनाथ जी को चित्रा नक्षत्र में केवलज्ञान हुआ।

प्रश्न 507. विशाखा नक्षत्र में कौन-कौन से तीर्थकरों को केवलज्ञान हुआ था ?

उत्तर– श्री सुपार्श्वनाथ जी, श्री वासुपूज्य जी, श्री पार्श्वनाथ जी को विशाखा नक्षत्र में केवलज्ञान हुआ।

प्रश्न 508. श्रवण नक्षत्र में केवलज्ञान प्राप्त करने वाले तीर्थकर कौन से हैं ?

उत्तर– श्री श्रेयांसनाथ जी, श्री मुनिसुव्रतनाथ जी को श्रवण नक्षत्र में केवलज्ञान हुआ।

प्रश्न 509. रेवती नक्षत्र में कौन-से तीर्थंकरों को केवलज्ञान हुआ था ?

उत्तर– श्री अनंतनाथ जी तथा श्री अरहनाथ जी को रेवती नक्षत्र में केवलज्ञान हुआ।

प्रश्न 510. अश्वनी नक्षत्र में केवलज्ञान प्राप्त करने वाले कौन से तीर्थंकर थे ?

उत्तर– श्री मल्लिनाथ जी, एवं श्री नमिनाथ जी को अश्वनी नक्षत्र में केवलज्ञान हुआ।

प्रश्न 511. शाल वृक्ष के नीचे कौन से तीर्थंकरों को केवलज्ञान हुआ था ?

उत्तर– श्री सम्भवनाथ जी एवं श्री महावीर भगवान को शालवृक्ष के नीचे केवलज्ञान हुआ।

प्रश्न 512. प्रियंगु वृक्ष के नीचे कौन से तीर्थंकरों को केवलज्ञान हुआ था ?

उत्तर– श्री सुमतिनाथ जी एवं श्री पद्मप्रभु जी को प्रियंगु वृक्ष के नीचे केवलज्ञान हुआ।

प्रश्न 513. अशोक वृक्ष के नीचे कौन से तीर्थंकर ने केवलज्ञान प्राप्त किया ?

उत्तर– श्री मल्लिनाथ जी ने अशोक वृक्ष के नीचे केवल ज्ञान प्राप्त किया।

प्रश्न 514. पूर्वाह्न काल में कितने तीर्थंकरों ने मोक्ष प्राप्त किया था ?

उत्तर– पूर्वाह्न काल में आठ तीर्थकरों ने मोक्ष प्राप्त किया।

प्रश्न 515. पूर्वाह्न काल में कौन-कौन से तीर्थंकरों ने मोक्ष प्राप्त किया ?

उत्तर– (1) श्री आदिनाथ जी, (2) श्री अजितनाथ जी, (3) श्री अभिनंदननाथ जी, (4) श्री सुमतिनाथ जी, (5) सुपार्श्वनाथ जी, (6) श्री चन्द्रप्रभु जी, (7) श्री शीतलनाथ जी, (8) श्री श्रेयांसनाथ जी ने पूर्वाह्न काल में मोक्ष प्राप्त किया।

प्रश्न 516. अपराह्न काल में कितने तीर्थंकर मोक्ष गये ?

उत्तर– अपराह्न काल में चार तीर्थकर मोक्ष गये ?

प्रश्न 517. अपराह्न काल में मोक्ष प्राप्त करने वाले कौन कौन से तीर्थकर थे ?

उत्तर– सम्भवनाथ जी, श्री पद्मप्रभु जी, श्री पुष्पदंत जी, श्री वासूपूज्य जी ने अपराह्न काल में मोक्ष प्राप्त किया।

प्रश्न 518. प्रदोष काल में कितने तीर्थकर मोक्ष गये ?

उत्तर– आठ तीर्थकर प्रदोष काल में मोक्ष गये।

प्रश्न 519. प्रदोष काल में मोक्ष जाने वाले तीर्थकर कौन से हैं ?

उत्तर– प्रदोष काल में (1) श्री विमलनाथ (2) श्री अनंतनाथ जी, (3) श्री शांतिनाथ जी, (4) श्री कुंथुनाथ जी, (5) श्री मल्लिनाथ जी, (6) श्री मुनिसुव्रतनाथ जी, (7) श्री नेमिनाथ जी, (8) श्री पार्श्वनाथ जी मोक्ष गये।

प्रश्न 520. प्रत्यूष अर्थात् ऊषाकाल में कितने तीर्थंकर मोक्ष गये ?

उत्तर– चार तीर्थकर प्रत्यूष काल में मोक्ष गये।

प्रश्न 521. चारों तीर्थकरों के नाम क्या हैं ?

उत्तर– (1) श्री धर्मनाथ जी, (2) श्री अरहनाथ जी, (3) श्री नमिनाथ जी, (4) श्री वीर जी।

प्रश्न 522. भरणी नक्षत्र में मोक्ष प्राप्त करने वाले तीर्थंकर कौन से हैं ?

उत्तर– श्री अजितनाथ जी, श्री शांतिनाथ जी, श्री मल्लिनाथ जी भरणी नक्षत्र में मोक्ष गये।

प्रश्न 523. ज्येष्ठा नक्षत्र में मोक्ष प्राप्त करने वाले तीर्थंकर कौन से हैं ?

उत्तर– (1) श्री सम्भवनाथ जी, (2) श्री चन्द्रप्रभु जी ज्येष्ठा नक्षत्र में मोक्ष गये।

प्रश्न 524. चित्रा नक्षत्र में मोक्ष प्राप्त करने वाले तीर्थंकर कौन से हैं ?

उत्तर– श्री पद्मप्रभु जी एवं श्री नेमिनाथ जी चित्रा नक्षत्र में मोक्ष गये।

प्रश्न 525. अश्वनी नक्षत्र में मोक्ष जाने वाले तीर्थंकर कौन से हैं ?

उत्तर– श्री वासुपूज्य जी, श्री नमिनाथ जी अश्वनी नक्षत्र में मोक्ष गये।

प्रश्न 526. पुष्य नक्षत्र में मोक्ष जाने वाले तीर्थंकरों के नाम क्या हैं ?

उत्तर– श्री धर्मनाथ जी पुष्य नक्षत्र में मोक्ष गये।

प्रश्न 527. कितने तीर्थंकर एक हजार मुनियों के साथ मोक्ष गये ?

उत्तर– बारह तीर्थंकर एक हजार मुनियों के साथ मोक्ष गये।

प्रश्न 528. कौन-कौन से तीर्थंकर एक हजार मुनियों के साथ मोक्ष गये ?

उत्तर– श्री अजितनाथ जी से सुमतिनाथ जी तक सभी, चन्द्रप्रभु जी से लेकर श्रेयांसनाथ तक सभी, श्री कुंथुनाथ जी, श्री अरहनाथ जी, श्री मुनिसुव्रतजी, श्री नमिनाथ जी, एक हजार मुनियों के साथ मोक्ष गये।

प्रश्न 529. पाँच सौ मुनियों के साथ मोक्ष जाने वाले कौन-कौन से तीर्थंकर थे ?

उत्तर– श्री सुपार्श्वनाथ जी, श्री मल्लिनाथ जी, पांच सौ मुनियों के साथ मोक्ष गये।

प्रश्न 530. कौन से तीर्थंकर अकेले मोक्ष गये हैं ?

उत्तर– श्री महावीर स्वामी अकेले मोक्ष गये हैं।

प्रश्न 531. एक महीने पहले योग निवृति कौन से तीर्थंकरों की हुई ?

उत्तर– श्री अजितनाथ से लेकर पार्श्वनाथ तक सभी तीर्थंकरों की योग निवृति एक महीने पहले हुई।

प्रश्न 532. चौदह दिन पूर्व योग निवृत्ति कौन-से तीर्थंकर की हुई थी ?

उत्तर– श्री आदिनाथ जी की योग निवृत्ति चौदह दिन पूर्व हुई।

प्रश्न 533. दो दिन पूर्व योगनिवृत्ति वाले तीर्थंकर कौन थे ?

उत्तर– श्री महावीर भगवान दो दिन पूर्व योग निवृत्ति वाले तीर्थंकर थे।

3

ढाई द्वीप के विद्यमान बीस तीर्थंकर

प्रश्न 534. विदेह क्षेत्र के तीर्थंकरों के नाम बताइये ?

उत्तर– विदेह क्षेत्रों में बीस तीर्थंकर होते हैं। उनके नाम निम्न प्रकार हैं –

(1) श्री सीमंधर जी, (2) श्री युगमंधर जी, (3) श्री बाहु जी, (4) श्री सुबाहु जी, (5) श्री संजातक जी, (6) श्री स्वयंप्रभ जी, (7) श्री ऋषभभान जी, (8) श्री अनंतवीर्य जी, (9) श्री सूरिप्रभ जी, (10) श्री विशाल कीर्ति जी, (11) श्री वज्रधर जी, (12) श्री चन्द्रानन जी, (13) श्री चन्द्रबाहु जी, (14) श्री भुजंगमजी, (15) श्री ईश्वर जी, (16) श्री नेमिप्रभ जी, (17) श्री वीरसेन जी, (18) श्री महाभद्र जी, (19) श्री देवयश जी, एवं (20) श्री अजितवीर्य जी।

प्रश्न 535. इन्हें विद्यमान बीस तीर्थंकर क्यों कहा जाता है ?

उत्तर– इन्हें विद्यमान बीस तीर्थंकर इसलिए कहा जाता है क्योंकि इन नामों वाले तीर्थंकर बीस ही होते हैं तथा कम से कम बीस हमेशा विद्यमान रहते हैं।

प्रश्न 536. तो क्या ये तीर्थंकर मोक्ष नहीं जाते हैं ?

उत्तर– ये तीर्थंकर मोक्ष तो अवश्य ही जाते हैं, किन्तु एक तीर्थंकर के मोक्ष जाने के तुरन्त बाद उसी नाम के दूसरे तीर्थंकर का उद्भव हो जाता हैं इस प्रकार इनका कभी अभाव नहीं होता।

प्रश्न 537. ये तीर्थंकर कहाँ होते हैं ?

उत्तर– ये तीर्थंकर विदेह क्षेत्रों में होते हैं।

प्रश्न 538. विदेह क्षेत्र की नाम की सार्थकता क्या है ?

उत्तर– विदेह का अर्थ, विगत देहाः अर्थात् निकल गई देह जिसमें से वह विदेह हुआ। विदेह क्षेत्रों में चतुर्थ काल (कर्मभूमि) सदा प्रवर्तमान रहता है। अतएव वहाँ से मनुष्य कर्मों का नाश करके विदेह अर्थात् मोक्ष जाते रहते हैं।

प्रश्न 539. विदेह क्षेत्र कहाँ-कहाँ हैं और कितने हैं उनका वर्गीकरण कैसे किया जाता है ?

उत्तर– ढाई द्वीप में पाँच मेरु सम्बन्धी पाँच महाविदेह क्षेत्र कहलाते हैं। विदेह क्षेत्र प्रत्येक मेरु के पूर्व और पश्चिम होने से दस हो जाते हैं। मेरू पर्वतों के पूर्व और पश्चिम सीता-सीतोदा नदियों के बहने से उनके उत्तर-दक्षिण विदेह क्षेत्र होने से 20 विदेह क्षेत्र हो जाते हैं। प्रत्येक मेरु से सम्बन्धित सीता नदी के उत्तर में विदेह क्षेत्रों की आठ कर्म भूमियाँ हैं तथा दक्षिण में आठ इसी प्रकार सीतोदा नदी के दक्षिण में आठ तथा उत्तर में आठ कर्मभूमियाँ एक मेरु से सम्बन्धित 8 × 4 = 32 कर्मभूमियाँ इसीलिए पाँच मेरु से सम्बन्धित 32 × 5 = 160 विदेह क्षेत्रों की कर्मभूमियाँ हुईं।

प्रश्न 540. ढाई द्वीप कौन-कौन से हैं ?

उत्तर– पहला जम्बूद्वीप दूसरा धातकी खंड एवं आधा पुष्करवर द्वीप। ढाई द्वीप है।

प्रश्न 541. आधा पुष्करवर द्वीप क्यों ?

उत्तर– क्योंकि पुष्करवर द्वीप के आधे भाग में मानुषोत्तर पर्वत पड़ा हुआ है।

प्रश्न 542. ढाई द्वीप में मेरु कहाँ-कहाँ हैं ?

उत्तर– जम्बूद्वीप के बीचों-बीच सुदर्शन मेरु है। धातकीखंड द्वीप के पूर्व में विजय मेरु तथा पश्चिम में अचल मेरु है। पुष्कर द्वीप के पूर्व में मन्दिर मेरु तथा पश्चिम में विद्युन्माली मेरु हैं।

प्रश्न 543. दूसरे द्वीप धातकी द्वीप को धातकी खंड द्वीप क्यों कहा जाता है ?

उत्तर– धातकी द्वीप के उत्तर व दक्षिण में दो इष्वाकार पर्वत हैं, जो पूरे धातकी द्वीप को पूर्वी धातकी द्वीप तथा पश्चिमी धातकी द्वीप ऐसे दो भागों में विभाजित कर देते हैं। इसीलिए इसे धातकी खंड द्वीप कहा जाता है।

प्रश्न 544. ढाई द्वीप में कितने आर्य खंड हैं?

उत्तर– ढाई द्वीप के विदेह क्षेत्रों में 160 तथा पाँच भरत, पाँच ऐरावत के दस इस प्रकार के कुल 170 आर्य खंड होते हैं।

प्रश्न 545. ढाई द्वीप में एक समय में एक साथ कितने तीर्थंकर हो सकते हैं ?

उत्तर– कुल 170 तीर्थंकर एक समय में हो सकते हैं।

प्रश्न 546. 170 तीर्थंकर कौन से तीर्थंकर के समय में हुए थे ?

उत्तर– भगवान श्री अजितनाथ के समय में 170 तीर्थंकर हुए।

प्रश्न 547. ढाई द्वीप में कितने म्लेच्छ खंड होते हैं ?

उत्तर– 170 × 5 = 850 म्लेच्छ खंड।

प्रश्न 548. विदेह क्षेत्रों में कितने म्लेच्छ खंड होते हैं ?

उत्तर– 160 × 5 कुल 800 म्लेच्छ खंड।

प्रश्न 549. जम्बूद्वीप में कितने विद्यमान तीर्थंकर होते हैं ? और कौन-कौन से ?

उत्तर– (1) श्री सीमंधर जी, (2) श्री युगमंधर जी, (3) श्री बाहुजी एवं (4) श्री सुबाहु जी ये चार तीर्थंकर जम्बूद्वीप में होते हैं।

प्रश्न 550. विदेह क्षेत्र में सीमंधर स्वामी कहाँ होते हैं ?

उत्तर– सुदर्शन मेरु पर्वत के पूर्व में सीता नदी बहती है उसके उत्तर तट की ओर चार वक्षार से सम्बन्धित आठ विजयार्ध पर्वत हैं उन्हीं आठ पर्वतों के दक्षिण में आठ आर्य खंड हैं उन आठ आर्य खंडों में से किसी एक आर्य खंड में श्री सीमंधर भगवान होते हैं।

प्रश्न 541. कम से कम एवं अधिक से अधिक कितने सीमंधर स्वामी हो सकते हैं ?

उत्तर– कम से कम एक आर्यखंड में एक एवं अधिक से अधिक सभी 8 आर्यखंडों में 8 सीमंधर स्वामी हो सकते हैं।

प्रश्न 552. वर्तमान में सीमंधर स्वामी कहा विराजमान हैं ?

उत्तर– वर्तमान में सीमंधर स्वामी पुंडरीकिणीपुरी नगरी में विराजमान हैं।

प्रश्न 553. सीमंधर स्वामी के शरीर की अवगाहना कितनी है ?

उत्तर– पाँच सौ धनुष (दो हजार हाथ) अवगाहना है।

प्रश्न 554. श्री सीमंधर स्वामी के पिता का नाम क्या है ?

उत्तर– श्री सीमंधर स्वामी के पिता का नाम श्रेयांस जी हैं।

प्रश्न 555. श्री सीमंधर स्वामी की माता का नाम क्या है?

उत्तर– श्री सीमंधर स्वामी की माता का नाम सती है।

प्रश्न 556. श्री सीमंधर स्वामी की प्रतिमा का चिन्ह क्या है ?

उत्तर– बैल सीमंधर स्वामी की प्रतिमा का चिन्ह है।

प्रश्न 557. विदेह क्षेत्रों में होने वाले तीर्थंकरों की विशेषता क्या है।

उत्तर– विदेह क्षेत्रों में तीर्थंकरों के दो, तीन एवं पाँच कल्याणक भी होते हैं।

प्रश्न 558. ऐसा क्यों होता है ?

उत्तर– क्योंकि वहाँ सदा काल चतुर्थ काल रहता है कोई मुनि बनने पर अगर तीर्थंकर प्रकृति का बंध करे और वह उदय में आ जाये तो उसके दो कल्याणक और कोई गृहस्थ तीर्थंकर प्रकृति का बंध करे और उदय में आ जाये तो तीन और जो पिछले भव में बंध करे उसके पाँच कल्याण होते हैं।

प्रश्न 559. विदेह क्षेत्र में युगमंधर स्वामी कहाँ हैं ?

उत्तर– जम्बूद्वीप के सुदर्शन मेरु पर्वत के पूर्व में सीता नदी के दक्षिण तरफ आठ क्षेत्रों के आर्यखंडों में से किसी एक आर्यखंड में युगमंधर स्वामी होते हैं।

प्रश्न 560. युगमंधर स्वामी के पिता का नाम क्या है ?

उत्तर– युगमंधर स्वामी के पिता का नाम दृढ़रथ है।

प्रश्न 561. श्री युगमंधर स्वामी की माता का नाम क्या है ?

उत्तर– श्री युगमंधर स्वामी की माता का नाम सुतारा देवी है।

प्रश्न 562. श्री युगमंधर स्वामी की प्रतिमा का चिन्ह क्या है ?

उत्तर– श्री युगमंधर स्वामी की प्रतिमा का चिन्ह हाथी है।

प्रश्न 563. वर्तमान में श्री युगमंधर स्वामी का समवसरण किस नगरी में है ?

उत्तर– वर्तमान में श्री युगमंधर स्वामी का समवसरण विजया नगरी में है।

प्रश्न 564. विदेह क्षेत्रों में श्री बाहु स्वामी कहाँ होते हैं ?

उत्तर– जम्बूद्वीप के सुदर्शन मेरु के पश्चिम में पश्चिम विद्रेह है वहॉ सीतोदा नदी बहती है उसके दक्षिण किनारे पर आठ आर्यखंड हैं वहॉ के आठ आर्यखडों में से किसी एक में श्री बाहु स्वामी होते हैं।

प्रश्न 565. वर्तमान में श्री बाहुस्वामी कहाँ पर हैं ?

उत्तर– वर्तमान में श्री बाहुस्वामी सुसीमा नगरी में।

प्रश्न 566. श्री बाहुस्वामी की माता का नाम क्या है ?

उत्तर– श्री बाहुस्वामी की माता का नाम रानी विजया है।

प्रश्न 567. श्री बाहुस्वामी के पिता का नाम बताइये ?

उत्तर– श्री बाहुस्वामी के पिता का नाम राजा सुग्रीव है।

प्रश्न 568. श्री बाहुस्वामी की प्रतिमा का चिन्ह क्या है ?

उत्तर– श्री बाहुस्वामी की प्रतिमा का चिन्ह हिरण है।

प्रश्न 569. विदेह क्षेत्र में सुबाहु स्वामी कहाँ होते हैं?

उत्तर– जम्बूद्वीप के सुदर्शन मेरु के पश्चिम विदेह में सीतोदा नदी के उत्तर तट के आठ आर्य खडों में से किसी एक आर्य खंड में सुबाहु स्वामी होते हैं।

प्रश्न 570. वर्तमान के सुबाहु स्वामी कहाँ हैं ?

उत्तर– वर्तमान के सुबाहु स्वामी अयोध्या नगरी में है।

प्रश्न 571. श्री सुबाहु स्वामी की माता का नाम क्या है ?

उत्तर– श्री सुबाहु स्वामी की माता का नाम सुनन्दा जी है।

प्रश्न 572. श्री सुबाहु स्वामी के पिता का नाम क्या है।

उत्तर– श्री सुबाहु स्वामी के पिता का नाम श्री दृढ़राय जी है।

प्रश्न 573. श्री सुबाहु स्वामी की प्रतिमा का चिन्ह क्या है ?

उत्तर– श्री सुबाहु स्वामी की प्रतिमा का चिन्ह बंदर है।

प्रश्न 574. उन आठ देशों के नाम क्या हैं जिनमें श्री सीमंधर स्वामी पैदा होते हैं।

उत्तर– (1) कच्छा, (2) सुकच्छा, (3) महाकच्छा, (4) कच्छकावती, (5) आवर्ता, (6) लांगल आवर्ता, (7) पुष्कला एवं (8) पुष्कलावती में पैदा होते हैं।

प्रश्न 575. उन आठ देशों के नाम क्या हैं जिनमें युगमंधर स्वामी जन्म लेते हैं ?

उत्तर– (1) वत्सा, (2) सुवत्सा, (3) महावत्सा, (4) वत्सकावती, (5) रम्या, (6) सुरम्या, (7) रमणीया, (8) मंगलावती में युगमधर स्वामी जन्म लेते हैं।

प्रश्न 576. उन आठ देशों के नाम क्या हैं जिनमें श्री बाहुस्वामी जन्म लेते हैं ?

उत्तर– (1) पद्मा, (2) सुपद्मा, (3) महापद्मा, (4) पद्मकावती, (5) शंखा, (6) नलिनीदेश, (7) कुमुद, (8) सरित देश में बाहु स्वामी जन्म लेते हैं।

प्रश्न 577. उन आठ देशों के नाम क्या हैं जिनमें सुबाहु स्वामी जन्म लेते हैं ?

उत्तर– (1) वप्रा, (2) सुवप्रा, (3) महावप्रा, (4) वप्रकावती, (5) शंखा, (6) नलिनीदेश, (7) कुमुद, (8) सरितदेश में बाहु स्वामी जन्म लेते हैं।

प्रश्न 578. धातकी खंड मे कितने विद्यमान तीर्थंकर जन्म लेते हैं ?

उत्तर– धातकी खंड में आठ विद्यमान तीर्थंकर जन्म लेते हैं।

प्रश्न 579. धातकी खंड में जन्म लेने वाले आठ विद्यमान तीर्थंकरों के नाम बताइये।

उत्तर– (1) श्री संजातक जी, (2) श्री स्वयंप्रभ जी, (3) श्री ऋषभाननजी, (4) श्री अनंतवीर्य जी, (5) श्री सूरिप्रभ जी, (6) श्री विशाल कीर्ति जी, (7) श्री वज्रधर जी, (8) श्री चन्द्रानन जी।

प्रश्न 580. पूर्वी धातकी खंड में कितने विद्यमान तीर्थंकर जन्म लेते हैं ?

उत्तर– पूर्वी धातकी खंड में चार तीर्थंकर जन्म लेते हैं।

प्रश्न 581. पूर्वी धातकी खंड में जन्म लेने वाले विद्यमान तीर्थंकरों के नाम क्या हैं ?

उत्तर– पूर्वी धातकी खंड में जन्म लेने वाले विद्यमान तीर्थंकरों के नाम (1) श्री संजातक जी, (2) श्री स्वयंप्रभ जी, (3) श्री ऋषभाननजी, (4) श्री अनंतवीर्य जी है।

प्रश्न 582. पश्चिमी धातकी खंड में जन्म लेने वाले विद्यमान तीर्थंकरों के नाम क्या हैं ?

उत्तर- (1) श्री सूरिप्रभ जी, (2) श्री विशालकीर्ति जी, (3) श्री वज्रधर जी, (4) श्री चन्द्रानन जी।

प्रश्न 583. श्री संजातक जी के जन्म लेने का क्षेत्र बताइये।

उत्तर- श्री संजातक जी पूर्वी धातकी खंड में विजय मेरु के पूर्व में सीता नदी के उत्तर तट पर जो कच्छा से पुष्कलावती तक आठ देश हैं उनके आर्य खंडों की नगरियों में जन्म लेते हैं।

प्रश्न 584. वर्तमान में श्री संजातक जी का जन्म स्थान कहाँ है ?

उत्तर- वर्तमान में श्री संजातक जी का जन्म स्थान अलकापुरी है।

प्रश्न 585. श्री संजातक जी की माता का नाम क्या है ?

उत्तर- श्री संजातक जी की माता का नाम देवसेना है।

प्रश्न 586. श्री संजातक जी के पिता का नाम क्या है ?

उत्तर- श्री संजातक जी के पिता का नाम श्री देवसेन है।

प्रश्न 587. श्री संजातक जी की प्रतिमा का चिन्ह क्या है ?

उत्तर- श्री संजातक जी की प्रतिमा का चिन्ह सूर्य है।

प्रश्न 588. श्री स्वयंप्रभ जी विदेह क्षेत्र में कहाँ जन्म लेते हैं ?

उत्तर- पूर्वी धातकी खंड के विजय मेरु के पूर्व में सीता नदी के दक्षिण तट पर वत्सा से लेकर मंगलावती तक जो आठ देश हैं उनके आठ आर्य खंडों में स्थित अयोध्या जैसी आठ नगरियों में स्वयंप्रभ जी जन्म लेते हैं।

प्रश्न 589. श्री स्वयंप्रभ जी की माता का नाम क्या है ?

उत्तर- श्री स्वयंप्रभ जी की माता का नाम सुमंगला है।

प्रश्न 590. श्री स्वयंप्रभ जी के पिता का नाम क्या है ?

उत्तर- श्री स्वयंप्रभ जी के पिता का नाम श्री मित्रभूति है।

प्रश्न 591. श्री स्वयंप्रभ जी की प्रतिमा का चिन्ह क्या है ?

उत्तर- श्री स्वयंप्रभ जी की प्रतिमा का चिन्ह चन्द्रमा है।

प्रश्न 592. श्री स्वयंप्रभ जी वर्तमान में कहाँ विराजमान हैं ?

उत्तर- श्री स्वयंप्रभ जी वर्तमान में विजयानगरी में विराजमान हैं ?

प्रश्न 593. श्री ऋषभानन जी विदेह क्षेत्रों में कहाँ जन्म लेते हैं?

उत्तर- पूर्वी धातकी खंड में विजय मेरु के पश्चिम में सीतोदा नदी के दक्षिण तट पर पद्मा से सरित देश तक आठ देशों के आर्य खंडों विद्यमान अयोध्या के समान आठ नगरियों में ऋषभानन जी जन्म लेते हैं।

प्रश्न 594. श्री ऋषभानन जी की माता का नाम क्या है ?

उत्तर– श्री ऋषभानन जी की माता का नाम श्री वीरसेना है।

प्रश्न 595. श्री ऋषभानन जी के पिता का नाम क्या है ?

उत्तर– श्री ऋषभानन जी के पिता का नाम श्री नृपकीर्ति जी है।

प्रश्न 596. श्री ऋषभानन जी की प्रतिमा का चिन्ह क्या है ?

उत्तर– श्री ऋषभाननजी की प्रतिमा का चिन्ह सिंह है।

प्रश्न 597. वर्तमान में ऋषभानन जी का जन्म स्थान बताइये ?

उत्तर– वर्तमान में ऋषभानन जी का जन्म स्थान सुसीमा नगरी है।

प्रश्न 598. श्री अनंतवीर्य जी विदेह क्षेत्रों में कहाँ जन्म लेते हैं ?

उत्तर– पूर्वी धातकी खंड में विजय मेरु के पश्चिम में सीतोदा नदी के उत्तर तट पर वप्रा से लेकर गंधमालिनी तक आठ देश हैं उनके आठ आर्य खंडों में विद्यमान आठ नगरियों मे भी अनंतवीर्य जी जन्म लेते हैं।

प्रश्न 599. श्री अनंतवीर्य जी की माता का नाम क्या है ?

उत्तर– श्री अनंतवीर्य जी की माता का नाम सुमंगला है।

प्रश्न 600. श्री अनंतवीर्य जी के पिता का नाम क्या है ?

उत्तर– श्री अनंतवीर्य जी के पिता का नाम मेघरथ है।

प्रश्न 601. श्री अनंतवीर्य की प्रतिमा का चिन्ह बताइये।

उत्तर– श्री अनंतवीर्य की प्रतिमा का चिन्ह हाथी है।

प्रश्न 602. वर्तमान में अनंतवीर्य जी ने किस नगरी में जन्म लिया है ?

उत्तर– वर्तमान में अनंतवीर्य जी ने अयोध्या नगरी में जन्म लिया है।

प्रश्न 603. विदेह क्षेत्रों में श्री सूरिप्रभ जी कहाँ जन्म लेते हैं ?

उत्तर– पश्चिमी घातकी खंड में अचल मेरु के पूर्व मे सीता नदी के उत्तर तट पर कच्छा से लेकर पुष्कलावती तक आठ आर्य खंडों में रहने वाली आठ नगरियों में श्री सूरिप्रभ जन्म लेते हैं।

प्रश्न 604. श्री सूरिप्रभ तीर्थंकर की माता का नाम क्या है ?

उत्तर– श्री सूरिप्रभ तीर्थकर की माता का नाम माता भद्रा देवी है।

प्रश्न 605. श्री सूरिप्रभ तीर्थंकर के पिता का नाम क्या है ?

उत्तर– श्री सूरिप्रभ तीर्थकर के पिता का नाम श्री नागराज जी है।

प्रश्न 606. श्री सूरिप्रभ तीर्थंकर की प्रतिमा का चिन्ह क्या है ?

उत्तर– श्री सूरिप्रभ तीर्थंकर की प्रतिमा का चिन्ह सूर्य है।

प्रश्न 607. श्री सूरिप्रभ तीर्थंकर वर्तमान में कौन-सी नगरी में विद्यमान है ?

उत्तर– श्री सूरिप्रभ तीर्थंकर वर्तमान में विजया नगरी में विद्यमान हैं।

प्रश्न 608. श्री विशालकीर्ति तीर्थंकर के जन्म स्थान क्या है ?

उत्तर– पश्चिमी धातकी खंड में अचल मेरु के पूर्व में सीता नदी के दक्षिण तट पर वत्सा से लेकर मंगलावती तक आठ देश हैं, उनके आर्य खंडों की नगरियों में श्री विशालकीर्ति तीर्थंकर भगवान जन्म लेते हैं।

प्रश्न 609. श्री विशालकीर्ति तीर्थंकर की माता का नाम क्या है ?

उत्तर– श्री विशालकीर्ति तीर्थंकर की माता का नाम विजया है।

प्रश्न 610. श्री विशालकीर्ति तीर्थंकर के पिता का नाम बताइये ?

उत्तर– श्री विशालकीर्ति तीर्थंकर के पिता का नाम श्री विजय है।

प्रश्न 611. श्री विशालकीर्ति तीर्थंकर की प्रतिमा का चिन्ह क्या है ?

उत्तर– श्री विशालकीर्ति तीर्थंकर की प्रतिमा का चिन्ह चन्द्रमा है।

प्रश्न 612. वर्तमान में श्री विशालकीर्ति तीर्थंकर का जन्म स्थान कहाँ है ?

उत्तर– वर्तमान में श्री विशालकीर्ति तीर्थंकर का जन्म स्थान पुंडरीकिणी पुरी (नगरी) है।

प्रश्न 613. श्री वज्रधर तीर्थंकर के जन्म स्थान बताइये ?

उत्तर– पश्चिमी धातकी खंड में अचलमेरु के पश्चिम में सीतोदानदी के दक्षिण तट पर पद्मादेश से लेकर सरित देश तक आठ देशों के आठ आर्यखंडों की आठ नगरियों में श्री वज्रधर तीर्थकर जन्म लेते हैं।

प्रश्न 614. वर्तमान में श्री वज्रधर तीर्थंकर का जन्म स्थान कहाँ हैं ?

उत्तर– वर्तमान में श्री वज्रधर तीर्थंकर का जन्म स्थान सुसीमा नगरी में है।

प्रश्न 615. श्री वज्रधर तीर्थंकर की माता का नाम क्या है ?

उत्तर– श्री वज्रधर तीर्थंकर की माता का नाम सरस्वती है।

प्रश्न 616. श्री वज्रधर तीर्थंकर के पिता का नाम क्या है ?

उत्तर– श्री वज्रधर तीर्थंकर के पिता का नाम श्री पद्मरथ है।

प्रश्न 617. श्री वज्रधर तीर्थंकर की प्रतिमा का चिन्ह क्या है ?

उत्तर– श्री वज्रधर तीर्थंकर की प्रतिमा का चिन्ह शंख है।

प्रश्न 618. श्री चन्द्रानन तीर्थंकर के जन्म स्थान कहाँ है ?

उत्तर– पश्चिमी धातकीखंड में अचल मेरु के पश्चिम में सीतोदा नदी के उत्तर तट पर वप्रा से लेकर गंधमालिनी तक आठ देशों के आठ आर्यखंडों की आठ नगारियों में श्री चन्द्रानन भगवान जन्म लेते हैं।

प्रश्न 619. श्री चन्द्रानन तीर्थंकर की माता का नाम क्या है ?

उत्तर– श्री चन्द्रानन तीर्थंकर की माता का नाम पद्मावती जी है।

प्रश्न 620. श्री चन्द्रानन तीर्थंकर के पिता का नाम क्या है ?

उत्तर– श्री चन्द्रानन तीर्थंकर के पिता का नाम बाल्मीकि जी (पद्मरथ) है।

प्रश्न 621. श्री चन्द्रानन तीर्थंकर का वर्तमान जन्म स्थान बताइये ?

उत्तर– श्री चन्द्रानन तीर्थंकर का वर्तमान जन्म स्थान पुंडरीकिणीपुरी है।

प्रश्न 622. श्री चन्द्रानन तीर्थंकर की प्रतिमा का चिन्ह बताइये।

उत्तर– श्री चन्द्रानन तीर्थंकर की प्रतिमा का चिन्ह बैल है।

प्रश्न 623. पुष्करवर द्वीप में होने वाले विद्यमान तीर्थंकरों के नाम क्या है ?

उत्तर– पुष्करवर द्वीप में आठ विद्यमान तीर्थंकर रहते हैं–
(1) श्री चन्द्रबाहु जी, (2) श्री भुजंगम जी, (3) श्री ईश्वर जी, (4) श्री नेमिप्रभ जी, (5) श्री वीरसेन जी, (6) श्री महाभद्र जी, (7) श्री देवयश जी एवं (8) श्री अजितवीर्य जी।

प्रश्न 624. पूर्वी पुष्करवर द्वीप विदेह क्षेत्रों में कौन-कौन से तीर्थंकर जन्म लेते हैं ?

उत्तर– पूर्वी पुष्करवर द्वीप के विदेह क्षेत्रों में चार तीर्थंकर जन्म लेते हैं–
(1) श्री चन्द्रबाहु जी, (2) श्री भुजगंम जी, (3) श्री ईश्वर जी, (4) श्री नेमिप्रभ जी।

प्रश्न 625. श्री चन्द्रबाहु जी विदेह क्षेत्रों में कहाँ-कहाँ जन्म लेते हैं ?

उत्तर– पूर्वी पुष्कर द्वीप में मन्दिर मेरु के पूरब में सीतानदी के उत्तर में कच्छा से लेकर पुष्कलावती तक के आठ आर्यखंडों की नगरियों में श्री चन्द्रबाहु तीर्थंकर जन्म लेते हैं।

प्रश्न 626. वर्तमान में श्री चन्द्रबाहु तीर्थंकर कौन-सी नगरी में हैं ?

उत्तर– वर्तमान में श्री चन्द्रबाहु तीर्थंकर विनीता नाम की नगरी में हैं।

प्रश्न 627. श्री चन्द्रबाहु तीर्थंकर की माता का नाम क्या है ?

उत्तर– श्री चन्द्रबाहु तीर्थंकर की माता का नाम रेणुका देवी है।

प्रश्न 628. श्री चन्द्रबाहु तीर्थंकर के पिता का नाम क्या है ?

उत्तर– श्री चन्द्रबाहु तीर्थंकर के पिता का नाम श्री देवनंदि जी है।

प्रश्न 629. श्री चन्द्रबाहु तीर्थंकर की प्रतिमा का चिन्ह क्या है?

उत्तर– श्री चन्द्रबाहु तीर्थंकर की प्रतिमा का चिन्ह कमल है।

प्रश्न 630. श्री भुजंगम तीर्थंकर कौन-कौन से विदेह क्षेत्रों में जन्म लेते हैं ?

उत्तर– पूर्वी पुष्कर द्वीप में मंदर मेरु के पूरब में सीता नदी के दक्षिण में वत्सा से लेकर मंगलावती तक आठ देशों के आर्य खंडों की नगरियों में श्री भुजंगम तीर्थंकर जन्म लेते हैं।

प्रश्न 631. वर्तमान में श्री भुजंगम तीर्थंकर कौन सी नगरी में हैं ?

उत्तर– वर्तमान में श्री भुजंम तीर्थंकर की विजया नगरी में है।

प्रश्न 632. श्री भुजंगम तीर्थंकर की माता का नाम बताइये।

उत्तर– श्री भुजंगम तीर्थंकर की माता का नाम जिनमती है।

प्रश्न 633. श्री भुजंगम तीर्थंकर के पिता का नाम बताइये?

उत्तर– श्री भुजंगम तीर्थंकर के पिता का नाम श्री महाबल जी है।

प्रश्न 634. श्री भुजंगम तीर्थंकर की प्रतिमा का चिन्ह बताइये ?

उत्तर– श्री भुजंगम तीर्थंकर की प्रतिमा का चिन्ह चन्द्रमा है।

प्रश्न 635. श्री ईश्वर तीर्थंकर कौन-कौन से विदेह क्षेत्रों में जन्म लेते हैं ?

उत्तर– पूर्वी पुष्कर द्वीप में मंदर मेरु के पश्चिम में सीतोदा नदी के दक्षिण तट पर पद्मा देश से लेकर सरित देश तक आठ देशों के आर्य खडों की आठ नगरियों में श्री ईश्वर तीर्थंकर जन्म लेते हैं।

प्रश्न 636. वर्तमान में श्री ईश्वर तीर्थंकर कौन-सी नगरी में हैं ?

उत्तर– वर्तमान में श्री ईश्वर तीर्थंकर सुसीमा नगरी में हैं।

प्रश्न 637. श्री ईश्वर तीर्थंकर की माता का नाम क्या है ?

उत्तर– श्री ईश्वर तीर्थंकर की माता का नाम ज्वाला देवी है।

प्रश्न 638. श्री ईश्वर तीर्थंकर के पिता का नाम क्या है ?

उत्तर– श्री ईश्वर तीर्थंकर के पिता का नाम श्री गलसेन जी है।

प्रश्न 639. श्री ईश्वर तीर्थंकर की प्रतिमा का चिन्ह क्या है ?

उत्तर– श्री ईश्वर तीर्थंकर की प्रतिमा का चिन्ह सूर्य है।

प्रश्न 640. श्री नेमिप्रभ तीर्थंकर कौन-कौन से विदेह क्षेत्रों में जन्म लेते है ?

उत्तर– पूर्वी पुष्कर द्वीप में मंदर मेरु के पश्चिम में सीतोदा नदी के उत्तर तट के वप्रा से लेकर गंधमालिनी के आठ देशों के आठ आर्य खंडों की आठ नगरियों में श्री नेमिप्रभ तीर्थंकर जन्म लेते हैं।

प्रश्न 641. वर्तमान में श्री नेमिप्रभ तीर्थंकर कौन सी नगरी में हैं ?

उत्तर– वर्तमान में श्री नेमिप्रभ तीर्थंकर अयोध्या नगरी में है।

प्रश्न 642. श्री नेमिप्रभ तीर्थंकर की माता का नाम क्या है ?

उत्तर– श्री नेमिप्रभ तीर्थंकर की माता का नाम मतिसेना जी है।

प्रश्न 643. श्री नेमिप्रभ तीर्थंकर के पिता का नाम क्या है ?

उत्तर– श्री नेमिप्रभ तीर्थंकर के पिता का नाम वीरसेन् जी है।

प्रश्न 644. श्री नेमिप्रभ तीर्थंकर की प्रतिमा का चिन्ह क्या है ?

उत्तर– श्री नेमिप्रभ तीर्थंकर की प्रतिमा का चिन्ह बैल है।

प्रश्न 645. पश्चिमी पुष्करवर द्वीप के विद्यमान तीर्थंकरों के नाम क्या हैं ?

उत्तर– पश्चिमी पुष्करार्ध द्वीप के चार विद्यमान तीर्थंकर होते हैं (1) श्री वीरसेन जी, (2) श्री महाभद्र जी, (3) श्री देवयश जी, (4) श्री अजित वीर्य जी।

प्रश्न 646. श्री वीरसेन तीर्थंकर किन विदेह क्षेत्रों में जन्म लेते हैं ?

उत्तर– पश्चिम पुष्कर द्वीप में विद्युन्माली मेरु के पूर्व में सीता नदी के उत्तर तट पर कच्छा से लेकर पुष्कलावती तक के आठ देशों के आठ आर्यखंडों की आठ नगरियों में श्री वीर सेन तीर्थकर जन्म लेते हैं।

प्रश्न 647. श्री वीरसेन तीर्थंकर का वर्तमान जन्म स्थान कहाँ है।

उत्तर– श्री वीरसेन तीर्थंकर का वर्तमान जन्म स्थान पुंडरीकिणीपुरी नगरी में है।

प्रश्न 648. श्री वीरसेन तीर्थंकर की माता का नाम क्या है ?

उत्तर– श्री वीरसेन तीर्थंकर की माता का नाम भानुमती जी है।

प्रश्न 649. श्री वीरसेन तीर्थंकर के पिता का नाम क्या है ?

उत्तर– श्री वीरसेन तीर्थंकर के पिता का नाम श्री भूपाल जी है।

प्रश्न 650. श्री वीर सेन तीर्थंकर की प्रतिमा का चिन्ह क्या है?

उत्तर– श्री वीर सेन तीर्थंकर की प्रतिमा का चिन्ह हाथी है।

प्रश्न 651. श्री महाभद्र तीर्थंकर कौन-कौन से विदेहों में जन्म लेते हैं ?

उत्तर– पश्चिमी पुष्कर द्वीप में विद्यनुमाली मेरु के पूर्व में सीता नदी के दक्षिण तट के वत्सा से लेकर मंगलावती तक के आठ देशों के आठ आर्य खंडों की आठ नगरियों में श्री महाभद्र तीर्थंकर जन्म लेते हैं।

प्रश्न 652. श्री महाभद्र तीर्थंकर का वर्तमान जन्म स्थान कहाँ है ?

उत्तर– श्री महाभद्र तीर्थंकर का वर्तमान जन्म स्थान विजयानगरी है।

प्रश्न 653. श्री महाभद्र तीर्थंकर की माता का नाम क्या है ?

उत्तर– श्री महाभद्र तीर्थंकर की माता का नाम उमा जी है।

प्रश्न 654. श्री महाभद्र तीर्थंकर के पिता का नाम क्या है ?

उत्तर– श्री महाभद्र तीर्थंकर के पिता का नाम श्री देवराज जी है।

प्रश्न 655. श्री महाभद्र तीर्थंकर की प्रतिमा का चिन्ह क्या है ?

उत्तर– श्री महाभद्र तीर्थंकर की प्रतिमा का चन्द्रमा है।

प्रश्न 656. श्री देवयश तीर्थंकर कौन-कौन से विदेह क्षेत्रों में जन्म लेते हैं ?

उत्तर– पश्चिमी पुष्कर द्वीप में विद्युनुमाली मेरु के पश्चिम में सीतोदा नदी के दक्षिणी तट पर पद्मादेश से लेकर सरित देश तक आठ देशों के आठ आर्यखंडों की आठ नगरियों में श्री देवयश तीर्थकर जन्म लेते हैं।

प्रश्न 657. श्री देवयश तीर्थंकर का वर्तमान जन्म स्थान कहाँ है ?

उत्तर– श्री देवयश तीर्थकर का वर्तमान जन्म स्थान सुसीमा नगरी है।

प्रश्न 658. श्री देवयश तीर्थंकर की माता का नाम क्या है ?

उत्तर– श्री देवयश तीर्थकर की माता का नाम गंगादेवी है।

प्रश्न 659. श्री देवयश तीर्थंकर के पिता का नाम क्या है ?

उत्तर– श्री देवयश तीर्थकर के पिता का नाम श्री भूपति जी है।

प्रश्न 660. श्री देवयश तीर्थंकर की प्रतिमा का चिन्ह क्या है ?

उत्तर– श्री देवयश तीर्थकर की प्रतिमा का चिन्ह स्वस्तिक है।

प्रश्न 661. श्री अजितवीर्य तीर्थंकर जी विदेह क्षेत्रों में कहाँ-कहाँ जन्म लेते हैं ?

उत्तर– पश्चिमी पुष्कर द्वीप में विद्युनमाली मेरू के पश्चिम में सीतोदा नदी के उत्तर तट पर वप्रा से लेकर गंध मालिनी तक आठ देशों के आठ आर्यखंडों की आठ नगरियों में श्री अजितवीर्य भगवान जन्म लेते है।

प्रश्न 662. श्री अजितवीर्य भगवान की माता का नाम क्या है?

उत्तर– श्री अजितवीर्य भगवान की माता का नाम कनकमाला जी है।

प्रश्न 663. श्री अजितवीर्य भगवान के पिता का नाम क्या है?

उत्तर– श्री अजितवीर्य भगवान के पिता का नाम श्री सुबोध जी है।

प्रश्न 664. वर्तमान में श्री अजितवीर्य भगवान कहाँ जन्में थे?

उत्तर– वर्तमान में श्री अजितवीर्य भगवान अयोध्या नगरी में जन्में हैं।

प्रश्न 665. श्री अजितवीर्य भगवान की प्रतिमा का चिन्ह क्या है ?

उत्तर– श्री अजितवीर्य भगवान की प्रतिमा का चिन्ह कमल है।

प्रश्न 666. मेरु पर्वतों को लेकर बीस विद्यमान तीर्थकरों का वर्गीकरण किस प्रकार किया जा सकता है?

उत्तर– एक मेरु से सम्बन्धित चार विद्यमान तीर्थकर होते हैं। इसीलिए पाँच मेरुओं से सम्बन्धित बीस विद्यमान तीर्थकर हुए।

प्रश्न 667. प्रथम सुदर्शन मेरु से सम्बन्धित चार विद्यमान तीर्थंकरों के नाम क्या हैं ?

उत्तर– श्री सीमंधर जी, (2) युगमंधर जी, (3) श्री बाहु जी, (4) श्री सुबाहु जी सुदर्शन मेरु सम्बन्धित तीर्थंकर है।

प्रश्न 668. दूसरे विजय मेरु से सम्बन्धित विद्यमान तीर्थंकरों के नाम क्या हैं ?

उत्तर– (1) श्री संजातक जी, (2) श्री स्वयंप्रभ जी, (3) श्री ऋषभानन जी, (4) श्री अनंतवीर्य जी है।

प्रश्न 669. तीसरे अचलमेरु से सम्बन्धित विद्यमान तीर्थंकरों के नाम क्या हैं ?

उत्तर– (1) श्री सूरिप्रभ जी, (2) श्री विशाल कीर्ति जी, (3) श्री बज्रधर जी, (4) श्री चन्द्रानन जी है।

प्रश्न 670. चौथे मंदर मेरु से सम्बन्धित विद्यमान तीर्थंकरों के नाम क्या हैं ?

उत्तर– चौथे मंदर मेरु से सम्बन्धित विद्यमान तीर्थंकरों के नाम (1) चन्द्रबाहु जी, (2) श्री भुजंगमजी, (3) श्री ईश्वर जी, (4) श्री नेमिप्रभ जी हैं।

प्रश्न 671. पाँचवें विद्युन्माली मेरु से सम्बन्धित विद्यमान तीर्थंकरों के नाम क्या हैं ?

उत्तर– (1) श्री वीरसेन जी, (2) श्री महाभद्र जी, (3) श्री देवयश जी, (4) श्री अजितवीर्य जी हैं।

प्रश्न 672. विदेह क्षेत्रों में होने वाले तीर्थंकरों की आयु कितनी होती है ?

उत्तर– विदेह क्षेत्रों में तीर्थंकरों की आयु 1 कोटिवर्ष पूर्व की होती है।

प्रश्न 673. बीस विद्यमान तीर्थंकरों की ऊँचाई कितनी होती है ?

उत्तर– बीस विद्यमान तीर्थंकरों की ऊँचाई 500 धनुष (2000 हाथ) होती है।

प्रश्न 674. विद्यमान बीस तीर्थंकरों में से कितने तीर्थंकरों की प्रतिमा का चिन्ह बैल है।

उत्तर– श्री सीमंधर जी, श्री चन्द्रानन जी, एवं श्री नेमिप्रभ जी इन तीन प्रतिमाओं का चिन्ह बैल है।

प्रश्न 675. बैल चिन्ह हमारे भरत क्षेत्र के कौन से तीर्थंकर की प्रतिमा के चिन्ह से मिलता है ?

उत्तर– बैल चिन्ह हमारे भरत क्षेत्र के श्री आदिनाथ जी की प्रतिमा के चिन्ह से मिलता है।

प्रश्न 676. कौन से विद्यमान तीर्थंकरों की प्रतिमा का चिन्ह हाथी है ?

उत्तर– (1) श्री युगमंधर जी, (2) श्री अनंतवीर्य जी, (3) श्री वीरसेन जी की प्रतिमाओं का चिन्ह हाथी है।

प्रश्न 677. हाथी चिन्ह हमारे भरत क्षेत्र के कौन से तीर्थंकर की प्रतिमा के चिन्ह से मिलता है ?

उत्तर– श्री अजितनाथ जी की प्रतिमा के चिन्ह हाथी से मिलता है।

प्रश्न 678. कौन से विद्यमान तीर्थंकर की प्रतिमा का चिन्ह हिरण है ?

उत्तर– श्री बाहु जी की प्रतिमा का चिन्ह हिरण है।

प्रश्न 679. हिरण चिन्ह भरत क्षेत्र के कौन से तीर्थंकर की प्रतिमा के चिन्ह से मिलता है।

उत्तर– श्री शांतिनाथ जीं की प्रतिमा के चिन्ह हिरण से मिलता है।

प्रश्न 680. कौन से विद्यमान तीर्थंकर की प्रतिमा का चिन्ह बंदर है ?

उत्तर– श्री सुबाहु जी की प्रतिमा का चिन्ह बन्दर है।

प्रश्न 681. बन्दर चिन्ह भरत क्षेत्र के कौन से तीर्थंकर की प्रतिमा के चिन्ह से मिलता है ?

उत्तर– श्री अभिनन्दन नाथ जी की प्रतिमा के चिन्ह बन्दर से मिलता है।

प्रश्न 682. कौन से विद्यमान तीर्थंकरों की प्रतिमा का चिन्ह सूर्य है ?

उत्तर– (1) श्री संजातक जी, (2) श्री सूरिप्रभ जी, एवं (3) श्री ईश्वर जी की प्रतिमा का चिन्ह सूर्य है।

प्रश्न 683. बीस विद्यमान तीर्थंकरों की ऊँचाई हमारे भरत क्षेत्र के कौन से तीर्थंकर से मिलती है ?

उत्तर– बीस विद्यमान तीर्थंकरों की ऊँचाई हमारे भरत क्षेत्र के पहले तीर्थंकर आदिनाथ जी से मिलती है।

प्रश्न 684. कौन से विद्यमान तीर्थंकरों का चिन्ह चन्द्रमा है ?

उत्तर– (1) श्री स्वयंप्रभ जी, (2) श्री विशाल कीर्ति जी, (3) श्री भुजंगम जी, (4) श्री महाभद्र जी की प्रतिमाओं का चिन्ह चन्द्रमा है।

प्रश्न 685. चन्द्रमा चिन्ह भरत क्षेत्र के किस तीर्थंकर के चिन्ह से मिलता है ?

उत्तर– चन्द्रमा चिन्ह श्री चन्द्रप्रभु जी की प्रतिमा के चिन्ह से मिलता है।

प्रश्न 686. कौन-से विद्यमान तीर्थंकर का चिन्ह सिंह है ?

उत्तर– श्री ऋषभानन जी की प्रतिमा का चिन्ह सिंह है।

प्रश्न 687. सिंह चिन्ह हमारे किस तीर्थंकर के चिन्ह से मिलता है ?

उत्तर– सिंह चिन्ह हमारे तीर्थंकर श्री महावीर भगवान के चिन्ह से मिलता है।

प्रश्न 688. कौन-से विद्यमान तीर्थंकर की प्रतिमा का चिन्ह शंख है ?

उत्तर– श्री वज्रधर जी की प्रतिमा का चिन्ह शंख है।

प्रश्न 689. शंख चिन्ह हमारे कौन से तीर्थंकर की प्रतिमा के चिन्ह से मिलता है ?

उत्तर– शंख चिन्ह हमारे तीर्थकर श्री नेमिनाथ जी की प्रतिमा के चिन्ह से मिलता है।

प्रश्न 690. कौन से विद्यमान तीर्थंकरों की प्रतिमा का चिन्ह कमल है ?

उत्तर– (1) श्री चन्द्रबाहु जी, (2) श्री अजितवीर्य जी की प्रतिमा का चिन्ह कमल है।

प्रश्न 691. कमल चिन्ह हमारे कौन से तीर्थंकर के चिन्ह से मिलता है ?

उत्तर– पद्मप्रभु तथा नमिनाथ जी की प्रतिमा के चिन्ह से मिलता है।

प्रश्न 692. कौन से विद्यमान तीर्थकर का चिन्ह स्वस्तिक है ?

उत्तर– श्री देवयश जी की प्रतिमा का चिन्ह स्वस्तिक है।

प्रश्न 693. स्वस्तिक चिन्ह् भरत क्षेत्र के कौन-से तीर्थकर के चिन्ह से मिलता है ?

उत्तर– श्री सुपार्श्वनाथ जी की प्रतिमा के चिन्ह से चिन्ह से मिलता है।

प्रश्न 694. पाँच मेरुओं से सम्बन्धित जो बत्तीस-बत्तीस आर्य खंड हैं उनकी बत्तीस नगरियों के नाम क्या हैं ?

उत्तर– (1) क्षेमा नगरी, (2) क्षेमपुरी, (3) अरिष्टापुरी, (4) अरिष्टपुरी, (5) खडगा नगरी, (6) मंजूषा नगरी, (7) औषधिनगरी, (8) पुंडरीकिणी नगरी, (9) सुसीमा नगरी, (10) कुंडला नगरी, (11) अपराजित पुरी, (12) प्रभंकरापुरी, (13) अंकावती, (14) पद्मामावती पुरी, (15) सुभापुरी, (16) रत्नसंचयापुरी, (17) अश्वपुरी, (18) सिंहपुरी, (19) महापुरी, (20) विजयापुरी, (21) अरजानगरी, (22) विरजापुरी, (23) अशोकपुरी, (24) वीतशोकपुरी, (25) विजयापुरी, (26) वैजयंतीपुरी, (27) जयंती नगरी, (28) अपराजितापुरी, (29) चक्रापुरी, (30) खड्गापुरी, (31) अयोध्यापुरी, एवं (32) अवध्यापुरी।

प्रश्न 695. विदेह क्षेत्रों के कौन-से देशों में कौन-सी नगरियाँ हैं ?

उत्तर– (1) कच्छा देश – क्षेमा नगरी, (2) सुकच्छा देश – क्षेमपुरी, (3) महाकच्छा देश – अरिष्टापुरी, (4) कच्छाकावती में – अरिष्टपुरी, (5) आवर्ता में – खड्गा नगरी, (6) लांगलावर्त में – मंजूषा नगरी, (7) पुष्कला में – औषधिनगरी, (8) पुष्कलावती – पुंडरीकिणी नगरी, (9) वत्सा में – सुसीमा नगरी, (10) सुवत्सा – कुंडला नगरी, (11) महावत्सा – अपराजित पुरी, (12) वत्सकावती – प्रभंकरापुरी, (13) रम्या में – अंकावती, (14) सुरम्या – पद्मावती पुरी, (15) रमणीया – सुभापुरी, (16) मंगलावती – रत्नसंचया, (17) पद्मदेश – अश्वपुरी, (18) सुपद्मा – सिंहपुरी, (19) महापद्मा – महापुरी, (20) पद्मकावती – विजयापुरी, (21) शंखादेश

— अरजा, (22) नलिना — विरजा, (23) कुमदा — अशोकपुरी, (24) सरिता — वीतशोक नगरी, (25) वप्रा — विजयापुरी, (26) सुवप्रा — वैजयंती, (27) महावप्रा — जयंती, (28) वप्रकावती — अपराजितापुरी, (29) गंधा — चक्रापुरी, (30) सुगंधा में — खड्गापुरी, (31) गंधीला — अयोध्या, एवं (32) गंधमालिनी — अवध्या विदेह क्षेत्र में हैं।

प्रश्न 696. पाँच मेरुओं से सम्बन्धित बत्तीस-बत्तीस विदेहों में, देशों तथा नगरियों की क्या व्यवस्था है ?

उत्तर– पॉचों मेरुओं के 32-32 विदेह क्षेत्रो में देशों तथा नगरियों के नाम भी उपरोक्त देशों तथा नगरियों के समान ही नाम हैं। अतः एक सी व्यवस्था है।

4

तीस चौबीसी के तीर्थंकर

प्रश्न 697. तीस चौबीसी क्या है ?

उत्तर– ढाई द्वीप के अन्दर पाँच मेरुओं से सम्बन्धित पाँच भरत एवं पाँच ऐरावत ऐसे दश क्षेत्रों के प्रत्येक कर्मकाल में चौबीस-चौबीस तीर्थंकर होते हैं। भूतकाल की दश क्षेत्रों की दश चौबीसी वर्तमान काल की दश एवं भविष्यत् काल की दश ऐसी तीस चौबीसी होती हैं।

प्रश्न 698. कुल चौबीसी कितनी होती हैं ?

उत्तर– ऐसे तो अनंत चौबीसी होती हैं।

प्रश्न 699. तीस चौबीसी के कुल कितने तीर्थंकर होते हैं ?

उत्तर– 30 × 24 कुल 720 तीर्थंकर होते हैं।

प्रश्न 700. पाँच भरत एवं पाँच ऐरावत कहाँ-कहाँ हैं ?

उत्तर– जम्बूद्वीप के सुदर्शन मेरु से सम्बन्धित एक भरत तथा एक ऐरावत है। धातकीखंड के विजय मेरु अचल मेरु से सम्बन्धित दो भरत तथा दो ऐरावत क्षेत्र हैं तथा पुष्करार्ध द्वीप में मंदर मेरु विद्युन्माली मेरु से सम्बन्धित दो भरत तथा दो ऐरावत क्षेत्र हैं इस प्रकार पाँच भरत पाँच ऐरावत क्षेत्र हैं।

प्रश्न 701. जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र के भूत कालीन चौबीस तीर्थंकरों के नाम क्या हैं।

उत्तर– (1) श्री निर्वाण जी, (2) श्री सागर जी, (3) श्री महासाधु जी, (4) श्री विमल प्रभु जी, (5) श्रीधरजी, (6) श्री सुदत्त जी, (7) श्री अमलप्रभ जी, (8) श्री उद्धर जी, (9) श्री अंगिर जी, (10) श्री संमति जी, (11) श्री सिंधु जी, (12) श्री कुसमांजलि जी, (13) श्री शिवगण जी, (14) श्री उत्साह जी, (15) श्री ज्ञानेश्वर जी, (16) श्री परमेश्वर जी, (17) श्री विमलेश्वर जी, (18) श्री यशोधर जी, (19) श्री कृष्णमति जी, (20) श्री ज्ञानमति जी, (21) श्री शुद्धमति जी, (22) श्री भद्र जी, (23) श्री अतिक्रांत जी, (24) श्री शांत जी हैं।

प्रश्न 702. जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र के वर्तमान काल के चौबीस तीर्थंकरों के नाम क्या हैं ?

उत्तर– (1) श्री आदिनाथ जी, (2) श्री अजितनाथ जी, (3) श्री संभवनाथ जी, (4) श्री अभिनंदन नाथ जी, (5) श्री सुमतिनाथ जी, (6) श्री पद्मप्रभु जी, (7) श्री सुपार्श्वनाथ जी, (8) श्री चन्द्रप्रभ जी, (9) श्री पुष्पदंत जी, (10) श्री शीतलनाथ जी, (11) श्री श्रेयांसनाथ जी, (12) श्री वासुपूज्य जी, (13) श्री विमलनाथ जी, (14) श्री अनंतनाथ जी, (15) श्री धर्मनाथ जी, (16) श्री शांतिनाथ जी, (17) श्री कुंथुनाथ जी, (18) श्री अरहनाथ जी, (19) श्री मल्लिनाथ जी, (20) श्री मुनिसुव्रत नाथ जी, (21) श्री नमिनाथ जी, (22) श्री नेमिनाथ जी, (23) श्री पार्श्वनाथ जी, (24) श्री वर्धमान जी हैं।

प्रश्न 703. जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र के भविष्यत कालीन तीर्थंकरों के नाम क्या हैं ?

उत्तर– (1) श्री महापद्म जी, (2) श्री सुरदेव जी, (3) श्री सुपार्श्व जी, (4) श्री स्वयंप्रभ जी, (5) श्री सर्वात्मभूत जी, (6) श्री देवपुत्र जी, (7) श्री कुल पुत्र जी, (8) श्री उदंक जी, (9) श्री प्रोष्ठिल्य जी, (10) श्री जय कीर्ति जी, (11) श्री मुनिसुव्रत जी, (12) श्री अरहनाथ जी, (13) श्री निष्पाप जी, (14) श्री निष्कषाय जी, (15) श्री विपुल जी, (16) श्री निर्मल जी, (17) श्री चित्रगुप्त जी, (18) श्री समाधिगुप्त जी, (19) श्री स्वयंभू जी, (20) श्री अनिवर्तक जी, (21) श्री जयनाथ जी, (22) श्री विमलजी, (23) श्री देवपाल जी, (24) श्री अनंतवीर्य जी हैं।

प्रश्न 704. जम्बूद्वीप के ऐरावत क्षेत्र के भूतकालीन चौबीस तीर्थंकरों के नाम क्या हैं?

उत्तर– (1) श्री पंचरूप जी, (2) श्री जिनधर जी, (3) श्री सांप्रतिक जी, (4) श्री उर्जयंत जी, (5) श्री आधिक्षायिक जी, (6) श्री अभिनंदन जी, (7) श्री रत्नसेन जी, (8) श्री रामेश्वर जी, (9) श्री अनंगोज्झित जी, (10) श्री विन्यास जी, (11) श्री अरोष जी, (12) श्री सुविधान जी, (13) श्री प्रदत्त जी, (14) श्री कुमार जी, (15) श्री सर्वशैल जी, (16) श्री प्रभंजन जी, (17) श्री सौभाग्य नाथ जी, (18) श्री व्रत बिन्दु जी, (19) श्री सिद्धकर जी, (20) श्री ज्ञान शरीर जी, (21) श्री कल्पद्रुम जी, (22) श्री तीर्थकलेश जी (23) श्री दिनकर जी, (24) श्री वीरप्रभु जी हैं।

प्रश्न 705. जम्बूद्वीप के ऐरावत क्षेत्र के वर्तमान कालिक चौबीस तीर्थंकरों के नाम क्या हैं?

उत्तर– (1) श्री बालचंद्र जी, (2) श्री सुव्रत जी, (3) श्री अग्निसेन जी, (4) श्री नंदिसेन जी, (5) श्रीदत्त जी, (6) श्रीव्रतधर जी, (7) श्री सोमचन्द्र जी, (8) श्री धृतिदीर्घ जी, (9) श्री शतयुष्य जी, (10) श्री विवसित जी, (11) श्री श्रेयान जी, (12) श्री विश्रुतजल जी, (13) श्री सिंहसेन जी,

(14) श्री उपशांत जी, (15) श्री गुप्तशासन जी, (16) श्री अनंतवीर्य जी, (17) श्री पार्श्वजिनेन्द्र जी, (18) श्री अभिधानजी, (19) श्री मरुदेव जी, (20) श्री श्रीधरजी, (21) श्री शामकंठ जी, (22) श्री अग्निप्रभ जी (23) श्री अग्निदत्त जी, (24) श्री वीरसेन जी हैं।

प्रश्न 706. जम्बूद्वीप के ऐरावत क्षेत्र के भविष्यत् कालीन चौबीस तीर्थंकरों के नाम क्या हैं?

उत्तर– (1) श्री सिद्धार्थ जी, (2) श्री विमल जी, (3) श्री जयघोष जी, (4) श्री नंदिसेन जी, (5) श्री स्वर्गमंगल जी, (6) श्री वज्राधारी जी, (7) श्री निर्वाण जी, (8) श्री धर्मध्वज जी, (9) श्री सिद्धसेन जी, (10) श्री महासेन जी, (11) श्री रविमित्र जी, (12) श्री सत्यसेन जी, (13) श्री चन्द्रनाथ जी, (14) श्री महीचन्द्र जी, (15) श्री श्रुतांजन जी, (16) श्री देवसेन जी, (17) श्री सुव्रतनाथ जी, (18) श्री जिनेन्द्रनाथ जी, (19) श्री सुपार्श्वजी, (20) श्री सुकौशल जी, (21) श्री अनंतनाथ जी, (22) श्री विमल जी (23) श्री अमृतसेन जी, (24) श्री अग्निदत्त जी हैं।

प्रश्न 707. पूर्व धातकी खंड के भरत क्षेत्र के भूतकालीन चौबीसी तीर्थकरों के नाम क्या हैं ?

उत्तर– (1) श्री रत्नप्रभ जी, (2) श्री अमितनाथ जी, (3) श्री संभवनाथ जी, (4) श्री अकलंक जी, (5) श्री चन्द्रस्वामी जी, (6) श्री शुभंकर जी, (7) श्री तत्त्वनाथ जी, (8) श्री सुन्दर स्वामी जी, (9) श्री पुरंधर जी, (10) श्री स्वामिदेव जी, (11) श्री देवदत्त जी, (12) श्री वासवदत्त जी, (13) श्री श्रेयोनाथ जी, (14) श्री विश्वरूप जी, (15) श्री तपस्तेज जी, (16) श्री प्रतिवोधदेव जी, (17) श्री विमलनाथ जी, (18) श्री संजमजिन जी, (19) श्री विमलनाथ जी, (20) श्री देवेन्द्र जी, (21) श्री प्रवरनाथ जी, (22) श्री विश्वेन जी (23) श्री मेघनंदि जी, (24) श्री त्रिजेत्रक जी हैं।

प्रश्न 708. पूर्वधातकी खंड के भरत क्षेत्र के वर्तमान कालीन चौबीस तीर्थंकरों के नाम क्या हैं।

उत्तर– (1) श्री युगादिदेव जी, (2) श्री सिद्धान्त जी, (3) श्री महेशनाथ जी, (4) श्री परमार्थनाथ जी, (5) श्री समुन्द्र जी, (6) श्री भूधरनाथ जी, (7) श्री उद्योत जी, (8) श्री आर्जव जी, (9) श्री अभयनाथ जी, (10) श्री अप्रकंप जी, (11) श्री पद्मनाथ जी, (12) श्री पद्मनंदि जी, (13) श्री प्रियंकर जी, (14) श्री सुव्रतनाथ जी, (15) श्री भद्रनाथ जी, (16) श्री मुनिचन्द्र जी, (17) श्री पंचमुष्ठिजी, (18) श्री त्रिमुष्ठि जी, (19) श्री गांगिक नाथ जी, (20) श्री गणनाथ जी, (21) श्री सर्वांगदेव जी, (22) श्री ब्रह्मेन्द्रनाथ जी (23) श्री इन्द्रद्रत जी, (24) श्री नायक नाथ जी हैं।

प्रश्न 709. पूर्व धातकी खंड के भरत क्षेत्र के भविष्यत कालीन चौबीस तीर्थंकरों के नाम क्या हैं?

उत्तर– (1) श्री सिद्धार्थ देव जी, (2) श्री सम्यगुण जी, (3) श्री जिनेन्द्रदेव जी, (4) श्री सम्पन्ननाथ जी, (5) श्री सर्वस्वामिजी, (6) श्री मुनिनाथ जी, (7) श्री विशिष्ट देव जी, (8) श्री अमरनाथ जी, (9) श्री ब्रह्मशांति जी, (10) श्री पार्श्वनाथ जी, (11) श्री अकामुक देव जी, (12) श्री ध्याननाथ जी, (13) श्री कल्पजी, (14) श्री संवरनाथ जी, (15) श्री स्वास्थ्यनाथ जी, (16) श्री आनंदनाथ जी, (17) श्री रविप्रभ जी, (18) श्री चन्द्रप्रभ जी, (19) श्री सुनन्द जी, (20) श्री सुकर्ण देव जी, (21) श्री पार्श्वनाथ जी, (22) श्री शाश्वतनाथ जी (23) श्री मेघनंदि जी, (24) श्री त्रिजेत्रक जी हैं।

प्रश्न 710. पूर्वी धातकी खंड के ऐरावत क्षेत्र के भूतकाल के चौबीस तीर्थंकरों के नाम क्या हैं ?

उत्तर– (1) श्री वज्रस्वामी जी, (2) श्री उदत्त जी, (3) श्री सूर्यस्वामी जी, (4) श्री पुरुषोत्तम जी, (5) श्री शरणस्वामि जी, (6) श्री अवबोध जी, (7) श्री विक्रम जी, (8) श्री निघंटिक जी, (9) श्री हरीन्द्र जी, (10) श्री परित्रेरित जी, (11) श्री निर्वाणसूरि जी, (12) श्री धर्महेतु जी, (13) श्री चतुर्मुख जी (14) श्री सुक्रतेन्द्र जी, (15) श्री श्रुताम्बु जी, (16) श्री विमलार्क जी, (17) श्री देवप्रभ जी, (18) श्री धरणेन्द्र जी, (19) श्री सुतीर्थनाथ जी, (20) श्री उदयानंद जी, (21) श्री सर्वार्थ देव जी, (22) श्री धार्मिक जी (23) श्री क्षेत्रस्वामी जी, (24) श्री हरिचंद जी हैं।

प्रश्न 711. पूर्व धातकी खंड के ऐरावत क्षेत्र के वर्तमान कालीन चौबीस तीर्थंकरों के नाम क्या हैं ?

उत्तर– (1) श्री अपश्चिम जी, (2) श्री पुष्पंदत जी, (3) श्री अर्हदेव जी, (4) श्री चरित्रनाथ जी, (5) श्री सिद्धानंद जी, (6) श्री नंदग जी, (7) श्री पद्मकूप जी, (8) श्री उदयनाभि जी, (9) श्री अकमेन्द्र जी, (10) श्री कृपालु जी, (11) श्री प्रोष्ठिल जी, (12) श्री सिद्धेश्वर जी, (13) श्री अमृतेन्दु जी, (14) श्री स्वामिनाथ जी, (15) श्री भुवन लिंग जी, (16) श्री सर्वरथ जी, (17) श्री मेघनंद जी, (18) श्री नंदकेश जी, (19) श्री हरिनाथ जी, (20) श्री अधिष्ठ जी, (21) श्री शांतिक देव जी, (22) श्री नंदस्वामिजी (23) श्री कुंदपार्श्व जी, (24) श्री विरोचन जी हैं।

प्रश्न 712. पूर्व धातकी खंड के ऐरावत क्षेत्र के भविष्यत कालीन चौबीस तीर्थंकरों के नाम क्या हैं?

उत्तर– (1) श्री प्रवरवीर जी, (2) श्री विजयप्रभ जी, (3) श्री सत्यपद जी, (4) श्री महामृगेन्द्र जी, (5) श्री चिंतामणि जी, (6) श्री अशोकि जी, (7) श्री द्विमृगेन्द्र जी, (8) श्री उपवासिक जी, (9) श्री पद्मचंद जी, (10) श्री बोधकेन्दु जी, (11) श्री चिंताहिम जी, (12) श्री उत्साहिक जी, (13) श्री अपाशिव जी, (14) श्री देवजल जी, (15) श्री नारिक जी, (16) श्री अनघ जी, (17) श्री नागेन्द्र जी, (18) श्री नीलोत्पल जी, (19) श्री अप्रकंप जी, (20) श्री पुरोहित जी, (21) श्री भिंदक नाथ जी, (22) श्री पार्श्वनाथ जी (23) श्री निर्वाच जी, (24) श्री विरोषिक नाथ जी हैं ?

प्रश्न 713. पश्चिम धातकी खंड के भरत क्षेत्र के भूतकालीन चौबीस तीर्थकरों के नाम क्या हैं।

उत्तर– (1) श्री वृषभनाथ जी, (2) श्री प्रियमित्र जी, (3) श्री शांतिनाथ जी, (4) श्री सुमतिनाथ जी, (5) श्री आदिनाथ जी, (6) श्री अतिव्यक्त जी, (7) श्री कलासेन जी, (8) श्री कर्मजित जी, (9) श्री प्रबुद्ध जी, (10) श्री प्रवजित जी, (11) श्री सुधर्म जी, (12) श्री तमोदीप जी, (13) श्री वज्रनाथ जी, (14) श्री बुद्धनाथ जी, (15) श्री प्रबंधदेव जी, (16) श्री अतीतनाथ जी, (17) श्री प्रमुख जिनेन्द्र जी, (18) श्री पल्योपम जी, (19) श्री अकोप जी, (20) श्री निष्ठित जी, (21) श्री मृगनाभि जी, (22) श्री देवेन्द्र जी (23) श्री पदस्थ जी, (24) श्री शिवनाथ जी है।

प्रश्न 714. पश्चिम धातकी खंड के भरत क्षेत्र के वर्तमान कालीन चौबीस तीर्थकरों के नाम क्या हैं?

उत्तर– (1) श्री विश्वचन्द्र जी, (2) श्री कपिल जिनेन्द्र जी, (3) श्री वृषभदेव जी, (4) श्री प्रियतेज जी, (5) श्री प्रशम जिनेन्द्र जी, (6) श्री विपनाम जी, (7) श्री चरित्रनाथ जी, (8) श्री प्रभादित्य जी, (9) श्री मुंजकेश जी, (10) श्री वीतवास जी, (11) श्री सुराधिप जी, (12) श्री दयानाथ जी, (13) श्री सहस्त्रभुज जी, (14) श्री जिनसिंह जी, (15) श्री रैवतनाथ जी, (16) श्री बाहुस्वामी जी, (17) श्री श्रीमालि जी, (18) श्री अयोग देव जी, (19) श्री अयोगिनाथ जी, (20) श्री कामरिपु जी, (21) श्री आरम्भ जी, (22) श्री नेमिनाथ जी (23) श्री गर्भज्ञाति जी, (24) श्री एकार्जित जी हैं।

प्रश्न 715. पश्चिम धातकी खंड के भरत क्षेत्र के भविष्यत्काल चौबीस तीर्थंकरों के नाम क्या हैं?

उत्तर– (1) श्री रक्त केश जी, (2) श्री चक्रहस्त जी, (3) श्री कृतनाथ जी, (4) श्री परमेश्वर जी, (5) श्री सुमूर्ति जी, (6) श्री मुक्तिकांत जी, (7) श्री निकेशि जी, (8) श्री प्रशस्त जी, (9) श्री निराहार जी, (10) श्री अमूर्त जी,

(11) श्री द्विजनाथ जी, (12) श्री श्रयोगत जी, (13) श्री अरुजनाथ जी (14) श्री देवनाथ जी, (15) श्री दयाधिक जी, (16) श्री पुष्पनाथ जी, (17) श्री नरनाथ जी, (18) श्री प्रतिभूति जी, (19) श्री नागेन्द्र जी, (20) श्री तपोधिक जी, (21) श्री दशानन जी, (22) श्री आरण्यक जी (23) श्री दशानीक जी, (24) श्री सात्विक जी हैं।

प्रश्न 716. पश्चिम धातकी खंड के ऐरावत क्षेत्र के भूतकाल चौबीस तीर्थंकरों के नाम क्या हैं।

उत्तर– (1) श्री सुमेरु जिनेन्द्र जी, (2) श्री जिनकृत जी, (3) श्री कैटभनाथ जी, (4) श्री प्रशस्त दायक जी, (5) श्री निर्दमन जी, (6) श्री कुलकर जी, (7) श्री वर्धमान जी, (8) श्री अमृतेन्दु जी, (9) श्री संख्यानंद जी, (10) श्री कल्पकृत जी, (11) श्री हरिनाथ जी, (12) श्री बाहुस्वामि जी, (13) श्री भार्गव जी (14) श्री सुभद्रस्वामि जी, (15) श्री पविपाणि जी, (16) श्री विपोषित जी, (17) श्री ब्रह्मचारि जी, (18) श्री असांक्षिक जी, (19) श्री चारित्रेश जी, (20) श्री पारिणामिक जी, (21) श्री शाश्वतनाथ जी, (22) श्री निधिनाथ जी (23) श्री कौशिक जी, (24) श्री धर्मेशजी हैं।

प्रश्न 717. पश्चिम धातकी खंड के ऐरावत क्षेत्र के वर्तमान काल चौबीस तीर्थंकरों के नाम क्या हैं?

उत्तर– (1) श्री साधित जी, (2) श्री जिनस्वामि जी, (3) श्री स्तमितेन्द्र जी, (4) श्री अत्यानंद जी, (5) श्री पुष्पोत्फुल्लजी, (6) श्री मंडित जी, (7) श्री प्रहित देव जी, (8) श्री मदनसिद्ध जी, (9) श्री हसदिंद्र जी, (10) श्री चन्द्रपार्श्वजी, (11) श्री अब्जबोध जी, (12) श्री जिनवल्लभ जी, (13) श्री सुविभूति जी (14) श्री कुकुद्‌भास जी, (15) श्री सुवर्णनाथ जी, (16) श्री हरिवासिक जी, (17) श्री प्रियमित्र जी, (18) श्री धर्मदेव जी, (19) श्री प्रियरत जी, (20) श्री नंदिनाथ जी, (21) श्री अश्वानीक जी, (22) श्री पूर्वनाथ जी (23) श्री पार्श्वनाथ जी, (24) श्री चित्रहृदय जी हैं।

प्रश्न 718. पश्चिम धातकी खंड के ऐरावत क्षेत्र के भविष्यत्‌काल चौबीस तीर्थंकरों के नाम क्या हैं ?

उत्तर– (1) श्री रवीन्दु जी, (2) श्री सोम कुमार जी, (3) श्री पृथ्वीनाथ जी, (4) श्री कुलरत्न जी, (5) श्री धर्मनाथ जी, (6) श्री सोमजिन जी, (7) श्री वरुणेन्द्र जी, (8) श्री अभिनंदन जी, (9) श्री सर्वनाथ जी, (10) श्री सुदृष्टि जी, (11) श्री शिष्ट जी, (12) श्री धन्य जिनेन्द्र जी, (13) श्री सोमचन्द्र जी (14) श्री क्षेत्राधीश जी, (15) श्री संदतिक नाथ जी, (16) श्री जयंतदेव जी, (17) श्री तमोरिपुर जी, (18) श्री निर्मित देव जी,

(19) श्री कृतपार्श्व जी, (20) श्री बोधिलाभ जी, (21) श्री बहुनंद जी, (22) श्री सुदृष्टि जी (23) श्री कंकुभनाथ जी, (24) श्री वक्षेश जी है।

प्रश्न 719. पूर्वी पुष्करार्धद्वीप के भरत क्षेत्र के भूतकाल के चौबीस तीर्थकरों के नाम क्या हैं?

उत्तर– (1) श्री दमनेन्द्र जी, (2) श्री मूर्तस्वामी जी, (3) श्री विराग स्वामी जी, (4) श्री प्रलंब जी, (5) श्री पृथ्वीपति जी, (6) श्री चारित्रनिधी जी, (7) श्री अपराजित जी, (8) श्री सुबोधक जी, (9) श्री बुद्धीशजी, (10) श्री वैतालिक जी, (11) श्री त्रिमुष्टिनाथ जी, (12) श्री मुनिबोध जी, (13) श्री तीर्थस्वामी जी (14) श्री धर्मधीश जी, (15) श्री धरणेश जी, (16) श्री प्रभवदेव जी, (17) श्री अनादिदेव जी, (18) श्री अनादि प्रभु जी, (19) श्री सर्वतीर्थनाथ जी, (20) श्री निरूपमदेव जी, (21) श्री कौमारिक जी, (22) श्री विहार गृह जी (23) श्री धरणी पूर्व जी, (24) श्री विकासदेव जी है।

प्रश्न 720. पूर्वी पुष्करार्धद्वीप के भरत क्षेत्र के वर्तमान काल के चौबीस तीर्थकरों के नाम क्या हैं?

उत्तर– (1) श्री जगन्नाथ जी, (2) श्री प्रभासनाथ जी, (3) श्री स्वरस्वामी जी, (4) श्री भरतेश जी, (5) श्री दीर्घानन जी, (6) श्री विख्यात कीर्ति जी, (7) श्री अवसानि जी, (8) श्री प्रबोध जी, (9) श्री बुद्धीशजी, (10) श्री पावक जी, (11) श्री त्रिपुरेश्वर जी, (12) श्री सौगत जी, (13) श्री वासव जी (14) श्री मनोहर जी, (15) श्री शुभकर्मेश जी, (16) श्री इष्टसेवित जी, (17) श्री विमलेन्द्र जी, (18) श्री धर्मवास जी, (19) श्री प्रसाद जी, (20) श्री प्रभामृगांक जी, (21) श्री उज्झित कलक जी, (22) श्री स्फटिक प्रभ जी (23) श्री गजेन्द्र जी, (24) श्री ध्यानजय जी है।

प्रश्न 721. पूर्वी पुष्करार्धद्वीप के भरत क्षेत्र के भविष्य काल के चौबीस तीर्थकरों के नाम क्या हैं।

उत्तर– (1) श्री बसंतध्वज जी, (2) श्री त्रिजयंत जी, (3) श्री त्रिस्तम्भ जी, (4) श्री परब्रह्म जी, (5) श्री अबालिश जी, (6) श्री प्रवादिक जी, (7) श्री भूमानंद जी, (8) श्री त्रिनयन जी, (9) श्री विद्वान जी, (10) श्री परमात्मप्रसंग जी, (11) श्री भूमीन्द्र जी, (12) श्री गोस्वामी जी, (13) श्री कल्याण प्रकाशित जी (14) श्री मंडल जी, (15) श्री महाबसू जी, (16) श्री उदयभान जी, (17) श्री दिव्य ज्योति जी, (18) श्री प्रबोधेश जी, (19) श्री अभयांक जी, (20) श्री प्रमित जी, (21) श्री दिव्यस्कारक जी, (22) श्री व्रतस्वामी जी (23) श्री निधान जी, (24) श्री त्रिविक्रम जी हैं।

प्रश्न 722. पूर्वी पुष्करार्धद्वीप के ऐरावत क्षेत्र के भूतकाल के चौबीस तीर्थंकरों के नाम क्या हैं?

उत्तर– (1) श्री कृतिनाथ जी, (2) श्री उपविष्ट जी, (3) श्री देवादित्य जी, (4) श्री आस्थानिक जी, (5) श्री प्रचंद्र जी, (6) श्री बेषिक जी, (7) श्री त्रिभानु जी, (8) श्री ब्रह्म जी, (9) श्री व्रजांग जी, (10) श्री अविरोधी जी, (11) श्री अपाय जी, (12) श्री लोकोत्तर जी, (13) श्री जलधिशेष जी (14) श्री विद्योत जी, (15) श्री सुमेरु जी, (16) श्री विभावित जी, (17) श्री वत्सल जी, (18) श्री जिनालय जी, (19) श्री तुषार जी, (20) श्री भुवनस्वामि जी, (21) श्री सुकाम जी, (22) श्री देवाधिदेव जी (23) श्री अकारिम जी, (24) श्री बिम्बित जी हैं।

प्रश्न 723. पूर्वी पुष्करार्धद्वीप के ऐरावत क्षेत्र के वर्तमान काल के चौबीस तीर्थंकरों के नाम क्या हैं?

उत्तर– (1) श्री शंकर जी, (2) श्री अक्षवास जी, (3) श्री नग्नाधिप जी, (4) श्री नग्नाधिपतीश जी, (5) श्री नष्टपाखंड जी, (6) श्री स्वप्नवेद जी, (7) श्री तपोधन जी, (8) श्री पुष्पकेतु जी, (9) श्री धार्मिक जी, (10) श्री चन्द्रकेतु जी, (11) श्री अनुराज्य सुज्योति जी, (12) श्री वीतराग जी, (13) श्री उद्योत जी (14) श्री तपोपेक्ष जी, (15) श्री मधुनाद जी, (16) श्री मरुदेव जी, (17) श्री दमनाथ जी, (18) श्री वृषभस्वामी जी, (19) श्री शिलातन जी, (20) श्री विश्वनाथ जी, (21) श्री महेन्द्र जी, (22) श्री नंद जिनेन्द्र जी (23) श्री तमोहर जी, (24) श्री ब्रह्मज जी हैं।

प्रश्न 724. पूर्वी पुष्करार्धद्वीप के ऐरावत क्षेत्र के भविष्य काल के चौबीस तीर्थंकरों के नाम क्या हैं ?

उत्तर– (1) श्री यशोधर जी, (2) श्री सुकृतनाथ जी, (3) श्री अभयघोष जी, (4) श्री निर्वाण जी, (5) श्री व्रतवास जी, (6) श्री अतिराज जी, (7) श्री अश्वदेव जी, (8) श्री अर्जुन जी, (9) श्री तपश्चन्द्र जी, (10) श्री शरीरिक जी, (11) श्री महेश जी, (12) श्री सुग्रीव जी, (13) श्री दृढ़प्रहार जी (14) श्री अम्बरीष जी, (15) श्री दयातीत जी, (16) श्री तुम्बर जी, (17) श्री सर्वशील जी, (18) श्री प्रतिजात जी, (19) श्री जितेन्द्रिय जी, (20) श्री तपादित्य जी, (21) श्री रत्नाकर जी, (22) श्री देवेश जी (23) श्री लांछन जी, (24) श्री सुप्रदेश जी है।

प्रश्न 725. पश्चिमी पुष्करार्धद्वीप के भरत क्षेत्र के भूत कालिक चौबीस तीर्थंकरों के नाम क्या हैं।

उत्तर– (1) श्री पद्मचंद्र जी, (2) श्री रत्नांग जी, (3) श्री अयोगिकेश जी, (4) श्री सर्वार्थ जी, (5) श्री ऋषिनाथ जी, (6) श्री हरिभद्र जी, (7) श्री गुणाधिप जी, (8) श्री पारत्रिक जी, (9) श्री ब्रह्मनाथ जी, (10) श्री मुनीन्द्र जी, (11) श्री दीपक जी, (12) श्री राजर्षि जी, (13) श्री विशाखदेव जी (14) श्री आनंदित जी, (15) श्री रविस्वामी जी, (16) श्री सोमदत्त जी, (17) श्री जयस्वामी जी, (18) श्री मोक्षनाथ जी, (19) श्री अग्रभास जी, (20) श्री धनुसंग जी, (21) श्री रोमांचक जी, (22) श्री मुक्तिनाथ जी (23) श्री प्रसिद्धनाथ जी, (24) श्री जितेश जी हैं।

प्रश्न 726. पश्चिमी पुष्करार्धद्वीप के भरत क्षेत्र के वर्तमान काल के चौबीस तीर्थंकरों के नाम क्या हैं।

उत्तर– (1) श्री सर्वांग स्वामी जी, (2) श्री पद्माकर जी, (3) श्री प्रभाकर जी, (4) श्री बलनाथ जी, (5) श्री योगीश्वर जी, (6) श्री सूक्ष्मांगजी, (7) श्री व्रतचलातीत जी, (8) श्री कलम्बक जी, (9) श्री परित्याग जी, (10) श्री निषेधक जी, (11) श्री पापापहारि जी, (12) श्री सुस्वामि जी, (13) श्री मुक्तिचन्द्र जी (14) श्री अप्रासिक जी, (15) श्री जयचंद्र जी, (16) श्री मलधारि जी, (17) श्री सुसंयत जी, (18) श्री मलयसिन्धु जी, (19) श्री अक्षधर जी, (20) श्री देवधर जी, (21) श्री देवगण जी, (22) श्री आगमिक जी (23) श्री विनीत जी, (24) श्री रतानंद जी हैं।

प्रश्न 727. पश्चिमी पुष्करार्धद्वीप के भरत क्षेत्र के भविष्यत कालीन चौबीस तीर्थंकरों के नाम क्या हैं ?

उत्तर– (1) श्री प्रभावक जी, (2) श्री विनतेन्द्र जी, (3) श्री सुभावक जी, (4) श्री दिनकर जी, (5) श्री अगस्त्येज जी, (6) श्री धनदत्त जी, (7) श्री पौरव जी, (8) श्री जिनदत्त जी, (9) श्री पार्श्वनाथ जी, (10) श्री मुनि सिंधु जी, (11) श्री आस्तिक जी, (12) श्री भवानीक जी, (13) श्री नृपनाथ जी (14) श्री नारायण जी, (15) श्री प्रशमौक जी, (16) श्री भूपति जी, (17) श्री सुदृष्टि जी, (18) श्री भवभीरु जी, (19) श्री नंदन जी, (20) श्री भार्गव जी, (21) श्री सुवसू जी, (22) श्री परावश जी (23) श्री वनवासिक जी, (24) श्री भरतेश जी हैं।

प्रश्न 728. पश्चिमी पुष्करार्धद्वीप के ऐरावत क्षेत्र के भूतकालीन चौबीस तीर्थंकरों के नाम क्या हैं ?

उत्तर– (1) श्री उपशांत जी, (2) श्री फाल्गुण जी, (3) श्री पूर्वासजी, (4) श्री सौधर्म जी, (5) श्री गौरिक जी, (6) श्री त्रिविक्रम जी, (7) श्री नरसिंह जी, (8) श्री मृगवसू जी, (9) श्री सोमेश्वर जी, (10) श्री सुधासुर जी,

(11) श्री अपापमल्ल जी, (12) श्री विवाध जी, (13) श्री संधिक स्वामी जी (14) श्री मांधत्र जी, (15) श्री अश्वतेज जी, (16) श्री विद्याधर जी, (17) श्री सुलोचन जी, (18) श्री मौन निधि जी, (19) श्री पुंडरीक जी, (20) श्री चित्रगण जी, (21) श्री मणिरिन्द्र जी, (22) श्री सर्वकाल जी (23) श्री भूरिश्रवण जी, (24) श्री पुण्यांग जी हैं।

प्रश्न 729. पश्चिमी पुष्करार्धद्वीप के ऐरावत क्षेत्र के वर्तमान काल के चौबीस तीर्थंकरों के नाम क्या हैं ?

उत्तर– (1) श्री गांगेयक जी, (2) श्री नल्लवासव जी, (3) श्री भीमजिनेन्द्र जी, (4) श्री दयाधिक जी, (5) श्री सुभद्र जी, (6) श्री स्वामिजी, (7) श्री हनिक जी, (8) श्री नंदिघोष जी, (9) श्री रूपबीज जी, (10) श्री वज्रनाभ जी, (11) श्री संतोष जी, (12) श्री सुधर्म जी, (13) श्री फणीश्वर जी (14) श्री वीरचन्द्र जी, (15) श्री मेधानिक जी, (16) श्री स्वच्छ नाथ जी, (17) श्री कोपक्षय जी, (18) श्री अकाम जी, (19) श्री धर्मधाम जी, (20) श्री सूक्तिसेन जी, (21) श्री क्षेमंकर जी, (22) श्री दयानाथ जी, (23) श्री कीर्तिप जी, (24) श्री शुभंकर जी है।

प्रश्न 730. पश्चिमी पुष्करार्धद्वीप के ऐरावत क्षेत्र के भविष्य कालीन चौबीस तीर्थंकरों के नाम क्या हैं ?

उत्तर– (1) श्री अदोषिक जी, (2) श्री वृषभ देव जी, (3) श्री विनयानंद जी, (4) श्री मुनिभारत जी, (5) श्री इंद्रक जी, (6) श्री चन्द्रकेतु जी, (7) श्री ध्वजादित्य जी, (8) श्री वासुबोध जी, (9) श्री मुक्तिगत जी, (10) श्री धर्मबोध जी, (11) श्री देवांग जी, (12) श्री मारीचिक जी, (13) श्री सुजीव जी (14) श्री यशोधर जी, (15) श्री गौतम जी, (16) श्री मुनिशुद्धि जी, (17) श्री प्रवोधिक जी, (18) श्री सदानीक जी, (19) श्री चारित्रनाथ जी, (20) श्री शतानंन्द जी, (21) श्री वेदार्थ जी, (22) श्री सुधानीक जी, (23) ज्योतिर्मुख जी, (24) श्री सुरार्ध जी हैं।

प्रश्न 731. जम्बूदीप में कितनी चौबीसी होती हैं?

उत्तर– जम्बूदीप में छः चौबीसी होती हैं।

प्रश्न 732. जम्बूदीप में छः चौबीसी किस प्रकार होती हैं?

उत्तर– भूत, वर्तमान, भविष्यकाल की भरत क्षेत्र की तीन चौबीसी तथा ऐरावत क्षेत्र की तीनों कालों की तीन चौबीसी। इस प्रकार छः चौबीसी होती हैं।

प्रश्न 733. धातकीखंड में कितनी चौबीसी होती हैं?

उत्तर– धातकीखंड में 12 चौबीसी होती हैं।

प्रश्न 734. धातकीखंड में 12 चौबीसी किस प्रकार होती हैं?

उत्तर– पूर्वी धातकी खंड के भरतक्षेत्र की तीन तथा ऐरावत क्षेत्र की तीन कुल छः, इसी प्रकार पश्चिमी धातकी खंड के भरतक्षेत्र की तीन तथा ऐरावत क्षेत्र की तीन। कुल मिलाकर 12 चौबीसी हुई।

प्रश्न 735. पुष्करार्ध द्वीप में कितनी चौबीसी होती हैं?

उत्तर– पुष्करार्ध द्वीप में भी 12 चौबीसी होती हैं।

प्रश्न 736. पुष्करार्ध द्वीप में बारह चौबीसी किस प्रकार होती हैं?

उत्तर– धातकी खंड के समान ही पूर्वी पुष्करार्ध द्वीप में छः तथा पश्चिमी पुष्करार्ध द्वीप में छ चौबीसी होती है।

प्रश्न 737. मेरुओं के सम्बन्ध में तीस चौबीसी की गिनती किस प्रकार हैं?

उत्तर– एक मेरु से सम्बन्धित तीन भरत की तथा तीन ऐरावत की कुल छः चौबीस होती हैं। ढाई द्वीप में मेरु पाँच हैं। अतः 5 × 6 = 30 चौबीसी होती हैं।

हमारे वर्तमान के चौबीस तीर्थंकर

1

भगवान श्री आदिनाथ जी

प्रश्न 738. भगवान श्री आदिनाथ जी के अन्य नाम कौन से हैं ?

उत्तर– भगवान श्री आदिनाथ जी के अन्य नाम (1) श्री आदिनाथ जी, (2) श्री ऋषभनाथ जी, (3) श्री वृषभनाथ जी, (4) श्री पुरुदेव जी, (5) श्री आदि ब्रह्मा, (6) प्रजापति हैं।

प्रश्न 739. भगवान आदिनाथ के नाम की सार्थकता क्या है ?

उत्तर– तीर्थंकरों में प्रथम होने से उन्हें आदिनाथ कहा जाता है अथवा युग के आदि में होने से उन्हें आदिनाथ कहा जाता है।

प्रश्न 740. भगवान आदिनाथ को ऋषभनाथ क्यों कहते हैं ?

उत्तर– युग की आदि में दीक्षा लेने तथा ऋषि समूह के नायक पति, स्वामी होने से उन्हें ऋषभनाथ कहते हैं।

प्रश्न 741. भगवान आदिनाथ को वृषभनाथ क्यों कहते हैं?

उत्तर– वृष धर्म को कहते हैं, धर्म का उपदेश देने तथा धर्म को धारण करने के कारण वे धर्मनाथ देव हुए, अतः उन्हें वृषभदेव कहते हैं अथवा भगवान की प्रतिमा का चिन्ह वृषभ होने से भी उन्हें वृषभनाथ; वृषभदेव कहते हैं।

प्रश्न 742. भगवान आदिनाथ को आदि ब्रह्मा क्यों कहते हैं?

उत्तर– क्योंकि भगवान प्रथम केवलज्ञानी थे समवशरण में उनके चारों दिशाओं में मुख दिखने से उन्हें आदि ब्रह्मा कहते हैं।

प्रश्न 743. भगवान आदिनाथ को प्रजापति क्यों कहते हैं?

उत्तर– क्योकि आदिनाथ भगवान ने प्रजा को असि, मसि आदि छः क्रियाओं का उपदेश देकर उनका पालन किया था। अतः उन्हें प्रजापति कहते हैं।

प्रश्न 744. भगवान श्री आदिनाथ का जन्म कब हुआ था ?

उत्तर– भगवान श्री आदिनाथ का जन्म तृतीय काल में हुआ था।

प्रश्न 745. भगवान श्री आदिनाथ का जन्म तृतीय का कितना समय शेष रहने पर हुआ था ?

उत्तर– जब तृतीय काल में चौरासी लाख वर्ष पूर्व तीन वर्ष साढ़े आठ महीने प्रमाण काल शेष रह गया था तब श्री आदिनाथ जी का जन्म हुआ था।

प्रश्न 746. भगवान श्री आदिनाथ कहाँ से गर्भ में आये थे ?

उत्तर– भगवान श्री आदिनाथ सवार्थ सिद्धि नाम के अनुत्तर विमान से देव पर्याय को छोड़कर गर्भ में आये थे।

प्रश्न 747. भगवान श्री आदिनाथ की पूर्व भव की देव आयु कितनी थी ?

उत्तर– भगवान श्री आदिनाथ की पूर्व भव की देव आयु 33 सागर थी।

प्रश्न 748. भगवान श्री आदिनाथ के गर्भ कल्याणक की तिथि कौन सी ?

उत्तर– भगवान श्री आदिनाथ के गर्भ कल्याणक की तिथि आषाढ़ कृष्णा द्वितीया है।

प्रश्न 749. भगवान श्री आदिनाथ का गर्भ नक्षत्र कौन सा था ?

उत्तर– भगवान श्री आदिनाथ गर्भ नक्षत्र रोहिणी नक्षत्र था।

प्रश्न 750. आदिनाथ भगवान ने तीर्थंकर प्रकृति का बंध किस पर्याय में किया ?

उत्तर– आदिनाथ भगवान ने तीर्थंकर प्रकृति का बंध वज्रनाभि चक्रवर्ती की पर्याय में किया।

प्रश्न 751. आदिनाथ भगवान की पूर्व पर्याय वज्रनाभि चक्रवर्ती के पिता का नाम क्या था ?

उत्तर– आदिनाथ भगवान की पूर्व पर्याय वज्रनाभि चक्रवर्ती के पिता का नाम वज्रसेन था।

प्रश्न 752. आदिनाथ भगवान की पूर्व पर्याय वज्रनाभि चक्रवर्ती के दीक्षा गुरु का नाम क्या था ?

उत्तर– आदिनाथ भगवान की पूर्व पर्याय वज्रनाभि चक्रवर्ती के दीक्षा गुरु का नाम बज्रसेन था।

प्रश्न 753. श्री आदिनाथ भगवान कहाँ पैदा हुए तथा उस नगरी के अन्य नाम क्या है ?

उत्तर– भगवान श्री आदिनाथ जी अयोध्या नगरी में पैदा हुए तथा अयोध्या नगरी के अन्य नाम साकेत नगरी, सुकौशला, विनीता एवं मिथलानगरी है।

प्रश्न 754. भगवान श्री आदिनाथ की माता का नाम क्या था ?

उत्तर– भगवान श्री आदिनाथ की माता का नाम माता मरुदेवी था।

प्रश्न 755. भगवान श्री आदिनाथ के पिता का नाम क्या था ?

उत्तर– भगवान श्री आदिनाथ के पिता का नाम श्री नाभिराय जी था।

प्रश्न 756. भगवान श्री आदिनाथ के पिता की विशेषता क्या थी ?

उत्तर– भगवान श्री आदिनाथ के पिता श्री नाभिराय कुलकरों में अंतिम कुलकर थे।

प्रश्न 757. भगवान श्री आदिनाथ कौन-से वंश में पैदा हुए थे ?

उत्तर– भगवान श्री आदिनाथ इक्ष्वाकु वंश में पैदा हुये थे।

प्रश्न 758. भगवान श्री आदिनाथ का जन्म कौन-सी तिथि में हुआ था ?

उत्तर– भगवान श्री आदिनाथ का जन्म चैत्र कृष्णा नवमी को हुआ था।

प्रश्न 759. भगवान श्री आदिनाथ का जन्म नक्षत्र क्या था ?

उत्तर– भगवान श्री आदिनाथ का जन्म नक्षत्र उत्तराषाढ़ा नक्षत्र था।

प्रश्न 760. भगवान श्री आदिनाथ की जन्म राशि कौन सी थी ?

उत्तर– भगवान श्री आदिनाथ की जन्म राशि धनु थी।

प्रश्न 761. भगवान श्री आदिनाथ की आयु कितनी थी ?

उत्तर– भगवान श्री आदिनाथ की आयु चौरासी लाख वर्ष पूर्व थी।

प्रश्न 762. भगवान श्री आदिनाथ का कुमार काल कितना था ?

उत्तर– भगवान श्री आदिनाथ का कुमार काल बीस लाख वर्ष पूर्व था।

प्रश्न 763. भगवान श्री आदिनाथ जन्म से कितने ज्ञान के धारक थे ?

उत्तर– भगवान श्री आदिनाथ जन्म से मति, श्रुत, अवधि तीन ज्ञान के धारक थे।

प्रश्न 764. भगवान श्री आदिनाथ किस भोज्य सामग्री का भोजन करते थे ?

उत्तर– भगवान श्री आदिनाथ स्वर्ग की दिव्य भोज्य सामग्री का भोजन करते थे।

प्रश्न 765. भगवान की भोज्य सामग्री कहाँ से आती थी ?

उत्तर– भगवान की भोज्य सामग्री प्रतिदिन स्वर्ग से देवों द्वारा लायी जाती थी।

प्रश्न 766. भगवान श्री आदिनाथ के शरीर की ऊँचाई कितनी थी ?

उत्तर– भगवान श्री आदिनाथ के शरीर की ऊँचाई पाँच सौ धनुष (दो हजार हाथ थी)।

प्रश्न 767. भगवान श्री आदिनाथ के शरीर का रंग कैसा था ?

उत्तर– भगवान श्री आदिनाथ के शरीर का रंग तपाये हुए स्वर्ण के समान था।

प्रश्न 768. भगवान श्री आदिनाथ की प्रतिमा का चिन्ह क्या है ?

उत्तर– भगवान श्री आदिनाथ की प्रतिमा का चिन्ह वृषभ (बैल) है।

प्रश्न 769. भगवान श्री आदिनाथ कौन सी विशेष पदवी के धारक थे ?

उत्तर– भगवान श्री आदिनाथ मंडलीक राजा थे।

प्रश्न 770. भगवान श्री आदिनाथ ने कितने वर्ष तक राज्य किया ?

उत्तर– भगवान श्री आदिनाथ ने त्रेसठ लाख वर्ष पूर्व तक राज्य किया।

प्रश्न 771. भगवान श्री आदिनाथ के कितनी रानियाँ थीं ?

उत्तर– भगवान श्री आदिनाथ के दो रानियाँ थीं।

प्रश्न 772. दोनों रानियों के नाम क्या थे ?

उत्तर– दोनों रानियों के नाम नंदा व सुनंदा। अथवा यशस्वती और सुनंदा थे।

प्रश्न 773. यशस्वती और सुनंदा कन्यायें कौन थीं।

उत्तर– ये दोनों कन्यायें राजा कच्छ एवं महाकच्छ की बहिनें थी।

प्रश्न 774. यशस्वती रानी से भगवान श्री आदिनाथ के कितने पुत्र हुए।

उत्तर– यशस्वती रानी से चक्रवर्ती भरत, वृषभसेन, अनंतविजय अनंतवीर्य अच्युतवीर्य, वीरवर वीर आदि सौ पुत्र हुए।

प्रश्न 775. यशस्वती रानी ने कौन-सी कन्या रत्न को जन्म दिया ?

उत्तर– यशस्वती ने ब्राह्मी नाम की कन्या को जन्म दिया था।

प्रश्न 776. भगवान श्री आदिनाथ की सुनंदा रानी से कौन से पुत्र का जन्म हुआ

उत्तर– भगवान श्री बाहुबली का जन्म हुआ।

प्रश्न 777. भगवान बाहुबली की क्या विशेषता थी।

उत्तर– भगवान बाहुबली प्रथम कामदेव, चक्रीजित, पौदनपुर नरेश, तथा तद्भव मोक्षगामी थे।

प्रश्न 778. भगवान बाहुबली के शरीर का वर्ण और ऊँचाई कितनी थी ?

उत्तर– भगवान बाहुबली के शरीर का वर्ण नील वर्ण तथा शरीर की ऊँचाई सवा पाँच सौ धनुष थी।

प्रश्न 779. भगवान भरत की विशेषता क्या थी ?

उत्तर– वे प्रथम चक्रवर्ती, तद्भव मोक्षगामी अन्तमर्हूत में केवलज्ञान प्राप्त करने वाले थे। तथा उन्हीं के नाम से हमारे देश का नाम भारतवर्ष जाना जाता है।

प्रश्न 780. सुनंदा रानी से कौन सी कन्या का जन्म हुआ ?

उत्तर– सुन्दरी नाम की कन्या का जन्म हुआ।

प्रश्न 781. तीर्थंकरों के कन्यायें नहीं होतीं फिर भी आदिनाथ के क्यों हुई ?

उत्तर– हुंडावसर्पिणी काल के दोष से आदिनाथ के कन्या हुई।

प्रश्न 782. भगवान श्री आदिनाथ ने ब्राह्मी कन्या को कौन-सी शिक्षा दी ?

उत्तर– श्री आदिनाथ ने ब्राह्मीकन्या को अ, आ, क, ख आदि स्वर और व्यंजनों की शिक्षा दी। इसलिए इस लिपि को ब्राह्मी लिपि कहा जाता है।

प्रश्न 783. भगवान श्री आदिनाथ ने सुन्दरी कन्या को कौन सी शिक्षा दी ?

उत्तर– भगवान श्री आदिनाथ ने सुन्दरी कन्या को इकाई, दहाई, से लेकर दस आदि अंकों की शिक्षा दी।

प्रश्न 784. भगवान श्री आदिनाथ ने अपने पुत्रों को कौन सी शिक्षा दी ?

उत्तर– अर्थशास्त्र, नृत्यशास्त्र, चित्रकला वास्तुशास्त्र, शिल्पशास्त्र, कामशास्त्र, आयुर्वेद, तन्त्र परीक्षा, रत्नपरीक्षा आदि अनेक शास्त्रों को पढ़ाया।

प्रश्न 785. भगवान श्री आदिनाथ ने कौन-कौन से वर्णों की स्थापना की ?

उत्तर– भगवान श्री आदिनाथ ने क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र इन तीन वर्णों की विदेह क्षेत्र की व्यवस्था के अनुसार स्थापना की।

प्रश्न 786. ब्राह्मण वर्ण की उत्पत्ति किसने की ?

उत्तर– ब्राह्मण वर्ण की स्थापना भरत चक्रवर्ती ने की।

प्रश्न 787. भगवान श्री आदिनाथ ने अपनी प्रजा को कौन-सी शिक्षा दी ?

उत्तर– भगवान श्री आदिनाथ ने प्रजा को षट्कर्म का उपदेश दिया–(1) असि, (2) मसि, (3) कृषि, (4) वाणिज्य, (5) शिल्प, (6) विद्या की शिक्षा दी।

प्रश्न 788. असि किसे कहते हैं ?

उत्तर– तलवार शस्त्र आदि धारण करना समाज की रक्षा करना असि कर्म कहलाता है।

प्रश्न 789. मसि कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर– लिखकर आजीविका करना मसि कर्म कहलाता है।

प्रश्न 790. भगवान श्री वृषभदेव को कृतयुग क्यों कहा जाता है ?

उत्तर– कर्म युग का प्रारम्भ करने से उन्हें कृत युग कहा जाता है।

प्रश्न 791. भगवान श्री आदिनाथ को इक्ष्वाकु क्यों कहते हैं ?

उत्तर– भगवान ने मनुष्यों को इक्षु रस संग्रह करने का उपदेश दिया इसीलिए उन्हें इक्ष्वाकु कहते हैं।

प्रश्न 792. भगवान श्री आदिनाथ को कश्यप क्यों कहते हैं।

उत्तर– भगवान श्री आदिनाथ को काश्य-तेज के रक्षक होने से उन्हें कश्यप कहते है।

प्रश्न 793. भगवान को मनु, कुलकर क्यों कहा जाता है ?

उत्तर– उन्हें मनन करने से मनु तथा कुलों की व्यवस्था करने से कुलकर तथा कुलधर कहा जाता है।

प्रश्न 794. भगवान श्री आदिनाथ के अन्य नाम क्या हैं ?

उत्तर– भगवान श्री आदिनाथ जी के अन्य नाम हैं, विधाता, स्रष्टा विश्वकर्मा मोक्ष विधाता आदि।

प्रश्न 795. भगवान श्री आदिनाथ को वैराग्य कैसे हुआ था ?

उत्तर– नृत्य करते हुए नीलांजना अप्सरा की मृत्यु जानकर वैराग्य हुआ था।

प्रश्न 796. भगवान श्री आदिनाथ की दीक्षा तिथि कौन सी हैं ?

उत्तर– भ० श्री आदिनाथ की दीक्षा तिथि चैत्र कृष्णा नवमी है।

प्रश्न 797. भगवान श्री आदिनाथ ने जब दीक्षा ली तो कौन-सा नक्षत्र था ?

उत्तर– भगवान श्री आदिनाथ ने जब दीक्षा ली तो उत्तराषाढ़ा नक्षत्र था।

प्रश्न 798. भगवान श्री आदिनाथ ने कौन से वन में दीक्षा ली ?

उत्तर– भगवान श्री आदिनाथ ने सिद्धार्थवन में दीक्षा ली।

प्रश्न 799. भगवान श्री आदिनाथ ने कौन से समय दीक्षा ली ?

उत्तर– भगवान श्री आदिनाथ ने अपराह्न काल में दीक्षा ली।

प्रश्न 800. दीक्षा के लिए इन्द्र द्वारा कौन सी पालकी लाई गई थी ?

उत्तर– दीक्षा के लिए इन्द्र द्वारा सुदर्शन नामक पालकी लाई गई थी।

प्रश्न 801. सर्वप्रथम पालकी किसने उठाई ?

उत्तर– सर्वप्रथम पालकी राजाओं ने उठाई

प्रश्न 802. पालकी उठाने का क्रम क्या था ?

उत्तर– सर्व प्रथम मनुष्य राजाओं के बाद विद्याधरों ने फिर वैमानिक देवों ने, फिर भवनत्रिक देवों ने पालकी उठाई।

प्रश्न 803. भगवान श्री आदिनाथ ने दीक्षा कहाँ ली थी ?

उत्तर– भगवान श्री आदिनाथ ने प्रयाग में दीक्षा ली।

प्रश्न 804. प्रयाग नाम की सार्थकता क्या है ?

उत्तर– जिस स्थान पर दीक्षा के लिए प्रजा ने उनकी पूजा की उसी स्थान का नाम प्रयाग पड़ा।

प्रश्न 805. अपराह्न काल किसे कहते है ?

उत्तर– अपराह्न काल दोपहर के बाद वाले काल को कहते हैं।

प्रश्न 806. भगवान श्री आदिनाथ ने दीक्षा किस प्रकार ली ?

उत्तर– भगवान पूर्व दिशा की ओर मुख करके पद्मासन से विराजमान हुए और ॐ नमः सिद्धेभ्यः कहकर पंच मुष्ठी केश लोंच किया तथा दिगम्बरी दीक्षा धारण की।

प्रश्न 807. भगवान श्री आदिनाथ ने कितने राजाओं के साथ दीक्षा ली ?

उत्तर– भगवान श्री आदिनाथ ने चार हजार राजाओं के साथ दीक्षा ली।

प्रश्न 808. दीक्षा के उपरांत कौन-सा ज्ञान प्रकट हुआ ?

उत्तर– दीक्षा के अन्तर्महूर्त बाद ही भगवान को मनः पर्यय नाम का चौथा ज्ञान प्रकट हुआ।

प्रश्न 809. भगवान श्री आदिनाथ के दीक्षोपवास कितने थे?

उत्तर– भगवान श्री आदिनाथ के दीक्षोपवास षष्ठोपवास (छह महीने) था।

प्रश्न 810. भगवान का छद्मस्थ काल कितने वर्षों का था ?

उत्तर– भगवान का छद्मस्थ काल एक हजार वर्ष का था।

प्रश्न 811. छद्मस्थ काल किसे कहते हैं ?

उत्तर– दीक्षा लेने से लेकर केवलज्ञान प्रकट होने के काल को छद्मस्थ काल कहते हैं।

प्रश्न 812. भगवान श्री आदिनाथ ने कितने वर्षों तक तपस्या की ?

उत्तर– भगवान श्री आदिनाथ ने एक हजार वर्ष तक की तपस्या की थी।

प्रश्न 813. भगवान श्री आदिनाथ को केवलज्ञान कौन सी तिथि को प्रकट हुआ ?

उत्तर– भगवान श्री आदिनाथ को केवलज्ञान फाल्गुन कृष्णा एकादशी को प्रकट हुआ।

प्रश्न 814. भगवान श्री आदिनाथ का आहार कहाँ हुआ था ?

उत्तर– भगवान श्री आदिनाथ का आहार हस्तिनापुर नगर में हुआ था।

प्रश्न 815. भगवान श्री आदिनाथ का आहार कितने समय बाद हुआ ?

उत्तर– 1 वर्ष 39 दिन बाद हुआ।

प्रश्न 816. भगवान श्री आदिनाथ को प्रथम आहार किसने दिया था ?

उत्तर– भ० श्री आदिनाथ को प्रथम आहार हस्तिनापुर के राजा श्रेयांस व भाई सोम-प्रभ ने दिया।

प्रश्न 817. भगवान श्री आदिनाथ का आहार कौन-सी तिथि को हुआ था ?

उत्तर– भगवान श्री आदिनाथ का आहार बैसाख शुक्ला तृतीया को हुआ था।

प्रश्न 818. उस तिथि को क्या कहते हैं ?

उत्तर– उस तिथि को आखा तीज, अक्षय तृतीया कहते हैं।

प्रश्न 819. इसे आखा तीज क्यों कहते हैं ?

उत्तर– क्योंकि उस दिन भगवान को दिया गया आहार अक्षय हो गया था।

प्रश्न 820. भगवान श्री आदिनाथ ने किस वस्तु का आहार लिया था ?

उत्तर– भगवान श्री आदिनाथ ने इक्षु रस (गन्ने के रस) का आहार लिया था।

प्रश्न 821. भगवान श्री आदिनाथ को आहार पहले क्यों नहीं मिला ?

उत्तर– क्योंकि भगवान श्री आदिनाथ के पहले मुनि नहीं थे एवं आहार दान के लिए आवश्यक नवधा भक्ति करना कोई नहीं जानता था।

प्रश्न 822. नवधा भक्ति का ज्ञान राजा श्रेयांस को कैसे हुआ ?

उत्तर– भगवान के रूप को देखकर राजा श्रेयांस को जातिस्मरण हो गया तथा उसने विचार किया कि आठ भव पूर्व भगवान श्री आदिनाथ राजा बज्रजंघ थे और मैं रानी श्रीमती का जीव था हम दोनों ने दो चरण ऋद्धिधारी मुनियों को आहार दिया था।

प्रश्न 823. नवधा भक्ति किसे कहते हैं ?

उत्तर– (1) पड़गाहन, (2) उच्च आसन देना, (3) चरण धोना (पाद प्रक्षालन), (4) पूजा करना, (5) नमस्कार करना, (6) मन शुद्धि बोलना, (7) वचन शुद्धि बोलना, (8) काय शुद्धि बोलना, (9) आहार ग्रहण करने को बोलना नवधा भक्ति होती हैं

प्रश्न 824. भगवान श्री आदिनाथ को केवलज्ञान किस नगर में प्रकट हुआ था ?

उत्तर– भगवान श्री आदिनाथ को केवलज्ञान पुरिमतालपुर नगर में हुआ।

प्रश्न 825. भगवान श्री आदिनाथ को केवलज्ञान कौन से वन (उद्यान) में हुआ था ?

उत्तर– भगवान श्री आदिनाथ को केवलज्ञान शकटास्य नाम के उद्यान में हुआ था।

प्रश्न 826. भगवान श्री आदिनाथ को किस वृक्ष के नीचे केवलज्ञान हुआ था ?

उत्तर– वट वृक्ष (न्यग्रोध वृक्ष) के नीचे केवलज्ञान हुआ था।

प्रश्न 827. पुरिमतालपुर में राजा कौन थे ?

उत्तर– भगवान श्री आदिनाथ के पुत्र और भरत के भाई वृषभसेन इस नगर के राजा थे।

प्रश्न 828. आदिनाथ भगवान को केवलज्ञान कौन-से नक्षत्र में हुआ था ?

उत्तर– भ० श्री आदिनाथ को केवलज्ञान उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में हुआ था।

प्रश्न 829. भ० श्री आदिनाथ के प्रथमगणधर कौन थे।

उत्तर– वृषभसेन भगवान श्री आदिनाथ के प्रथमगणधर थे।

प्रश्न 830. श्री आदिनाथ के कितने गणधर थे ?

उत्तर– भगवान श्री आदिनाथ के चौरासी गणधर थे।

प्रश्न 831. भगवान श्री आदिनाथ को केवलज्ञान किस समय हुआ था ?

उत्तर– भगवान श्री आदिनाथ को केवलज्ञान पूर्वाह्न काल में हुआ था।

प्रश्न 832. भगवान श्री आदिनाथ के समवसरण का विस्तार कितना था ?

उत्तर– भगवान श्री आदिनाथ के समवसरण का विस्तार बारह योजन था।

प्रश्न 833. भगवान श्री आदिनाथ का केवली काल कितना था ?

उत्तर– एक लाख पूर्व में एक हजार वर्ष कम था।

प्रश्न 834. भगवान आदिनाथ के समवसरण में ऋषि-मुनियों की संख्या कितनी थी ?

उत्तर– भगवान आदिनाथ के समवसरण में ऋषि-मुनियों की संख्या चौरासी हजार थी।

प्रश्न 835. भगवान श्री आदिनाथ के समवसरण में पूर्वधर मुनियों की संख्या कितनी थी ?

उत्तर– भगवान श्री आदिनाथ के समवसरण में पूर्वधर मुनियों की संख्या चार हजार सात सौ पचास थी।

प्रश्न 836. भगवान श्री आदिनाथ के समवसरण में शिक्षक मुनि कितने थे ?

उत्तर– भगवान श्री आदिनाथ के समवसरण में शिक्षक मुनि चार हजार एक सौ पचास थे।

प्रश्न 837. भगवान श्री आदिनाथ के समवसरण में अवधिज्ञानी मुनियों की संख्या कितनी थी।

उत्तर– भगवान श्री आदिनाथ के समवसरण में अवधिज्ञानी मुनियों की संख्या नौ हजार थी।

प्रश्न 838. भगवान श्री आदिनाथ के समवसरण में केवली मुनि कितने थे ?

उत्तर– भगवान श्री आदिनाथ के समवसरण में केवली मुनि बीस हजार छः सौ थे।

प्रश्न 839. भगवान श्री आदिनाथ के समवसरण में विक्रियाधारी मुनि कितने थे ?

उत्तर– भगवान श्री आदिनाथ के समवसरण में केवली मुनि बीस हजार छः सौ थे।

प्रश्न 840. भगवान श्री आदिनाथ के समवसरण में विपुलमति ज्ञान के धारक कितने मुनि थे।

उत्तर– भगवान श्री आदिनाथ के समवसरण में विपुलमति ज्ञान के धारक बारह हजार सात सौ पचास मुनि थे।

प्रश्न 841. भगवान श्री आदिनाथ के समवसरण में वादी मुनियों की संख्या कितनी थी ?

उत्तर– भगवान श्री आदिनाथ के समवसरण में वादी मुनियों की संख्या बारह हजार सात सौ पचास थी।

प्रश्न 842. भगवान श्री आदिनाथ के समवसरण में कितनी आर्यिकायें थीं ?

उत्तर– भगवान श्री आदिनाथ के समवसरण में तीन लाख पाचस हजार आर्यिकाये यें थीं।

प्रश्न 843. भगवान श्री आदिनाथ के समवसरण की प्रमुख आर्यिका कौन थीं ?

उत्तर– भगवान श्री आदिनाथ के समवसरण की प्रमुख आर्यिका श्री ब्राह्मी, आर्यिका श्री सुन्दरी थी।

प्रश्न 844. भगवान श्री आदिनाथ की शासन देवी का नाम क्या था ?

उत्तर– भगवान श्री आदिनाथ की शासन देवी का नाम श्री चकेश्वरी देवी था।

प्रश्न 845. भगवान श्री आदिनाथ के शासन देव का नाम क्या था ?

उत्तर– भगवान श्री आदिनाथ के शासन देव का नाम श्री गोमुख यक्ष था

प्रश्न 846. भगवान श्री आदिनाथ के समवसरण में कितने श्रावक थे ?

उत्तर– भगवान श्री आदिनाथ के समवसरण में तीन लाख श्रावक थे।

प्रश्न 847. भगवान श्री आदिनाथ के समवरण में कितने श्राविकायें थीं ?

उत्तर– भगवान श्री आदिनाथ के समवरण में पांच लाख श्राविकाये थीं।

प्रश्न 848. भगवान श्री आदिनाथ की मोक्ष तिथि कौन सी है ?

उत्तर– भगवान श्री आदिनाथ की मोक्ष तिथि माघ कृष्णा-चौदस है।

प्रश्न 849. भगवान श्री आदिनाथ को मोक्ष किस समय हुआ ?

उत्तर– भगवान श्री आदिनाथ को मोक्ष पूर्वाह्न काल में हुआ।

प्रश्न 850. भगवान श्री आदिनाथ कौन से नक्षत्र में मोक्ष गये ?

उत्तर– भगवान श्री आदिनाथ (अभिजित नक्षत्र) में मोक्ष गये।

प्रश्न 851. भगवान श्री आदिनाथ कौन-से स्थान से मोक्ष गये।

उत्तर– भगवान श्री आदिनाथ कैलाश पर्वत से मोक्ष गये।

प्रश्न 852. भगवान श्री आदिनाथ के साथ कितने मुनि मोक्ष गये ?

उत्तर– भगवान श्री आदिनाथ के साथ दस हजार मुनि मोक्ष गये।

प्रश्न 853. भगवान श्री आदिनाथ ने योगनिवृत्ति कितने दिन पूर्व की थी ?

उत्तर– भगवान श्री आदिनाथ ने योगनिवृति चौदह दिन की थी।

प्रश्न 854. कैलाश पर्वत का दूसरा नाम क्या है?

उत्तर– अष्टापद कैलाश पर्वत का दूसरा नाम है।

प्रश्न 855. भगवान श्री आदिनाथ कौन-से काल मे मोक्ष गये ?

उत्तर– भगवान श्री आदिनाथ तृतीय काल में मोक्ष गये।

प्रश्न 856. भगवान श्री आदिनाथ कौन से आसन से मोक्ष गये हैं?

उत्तर– भगवान श्री आदिनाथ पर्यकासन से मोक्ष गये।

प्रश्न 857. भगवान श्री आदिनाथ किस समय मोक्ष गये ?

उत्तर– जब चतुर्थकाल प्रारम्भ होने मे तीन वर्ष, आठ माह और पन्द्रह दिन शेष रह गये तब वे मोक्ष गये।

प्रश्न 858. आदिनाथ भगवान दस भव पूर्व किस पर्याय में थे ?

उत्तर– महावल नाम के विद्याधर की पर्याय में थे।

प्रश्न 859. भगवान श्री आदिनाथ नौंवे भव में कौन-सी पर्याय में थे ?

उत्तर– ऐशान स्वर्ग में ललितांग नाम के देव की पर्याय में थे।

प्रश्न 860. भगवान श्री आदिनाथ आठवें भव में कौन-सी पर्याय में थे ?

उत्तर– भगवान श्री आदिनाथ राजा वज्रजंघ की पर्याय में थे।

प्रश्न 861. भगवान श्री आदिनाथ सातवें भव मे कौन-सी पर्याय में थे

उत्तर– सातवें भव में भोगभूमिज आर्य की पर्याय में थे।

प्रश्न 862. छठवें भव में भगवान श्री आदिनाथ कौन थे ?

उत्तर– छठवें भव में भगवान श्री आदिनाथ श्रीधर के नाम के देव थे।

प्रश्न 863. पाँचवे भव में भगवान श्री आदिनाथ कौन थे ?

उत्तर– पाँचवें भव में भगवान सुविधि नाम के राजा थे।

प्रश्न 864. चौथे भव में भगवान श्री आदिनाथ कौन थे ?

उत्तर– चौथे भव में भगवान श्री आदिनाथ अच्युत स्वर्ग के इन्द्र थे।

प्रश्न 865. पहले भव में भगवान श्री आदिनाथ कौन थे ?

उत्तर– भगवान श्री आदिनाथ ही थे।

प्रश्न 866. भगवान श्री आदिनाथ के समवसरण में प्रथम श्रोता कौन थे?

उत्तर– भगवान श्री आदिनाथ के समवसरण में प्रथम श्रोता चक्रवर्ती भरत थे।

प्रश्न 867. भगवान श्री आदिनाथ के समवसरण में प्रमुख श्रावक कौन थे ?

उत्तर– भगवान श्री आदिनाथ के समवसरण में प्रमुख श्रावक दृढ़व्रत नाम के श्रावक थे।

प्रश्न 868. भगवान के समवसरण में प्रमुख श्राविका कौन थीं ?

उत्तर– भगवान के समवसरण में सुव्रता नाम की श्राविका प्रमुख थीं।

प्रश्न 869. भगवान श्री आदिनाथ के चौरासी गणधरों के नाम कौन से हैं ?

उत्तर– (1) श्री वृषभसेन, (2) श्री कुंभ, (3) श्री हणरथ, (4) श्री शतधनु, (5) श्री देवशर्मा, (6) श्री देवभाव (7) श्री नंदन, (8) श्री सोमदत्त, (9) श्री सुरदत्त, (10) श्री वायु शर्मा, (11) श्री यशोबाहु, (12) श्री देवाग्नि, (13) श्री अग्निदेव, (14) श्री अग्नि गुप्त, (15) श्री मित्राग्नि, (16) श्री हलंभृत, (17) श्री महीधर, (18) श्री महेन्द्र, (19) श्री बसुदेव, (20) श्री बसुंधर (21) श्री अचल, (22) श्री मेरु, (23) श्री मेरुधन, (24) श्री मेरुभूति, (25) श्री सर्वयश, (26) श्री सर्वयज्ञ, (27) श्री सर्वगुप्त (28) श्री सर्वप्रिय, (29) श्री सर्वदेव, (30) श्री सर्व विजय, (31) श्री विजयगुप्त, (32) श्री विजय मित्र, (33) श्री विजयिल, (34) श्री अपराजित, (35) श्री वसुमित्र, (36) श्री विश्वसेन, (37) श्री साधु सेन, (38) श्री सत्यदेव, (39) श्री देवसत्य, (40) श्री सत्यगुप्त, (41) श्री सत्यमित्र (42) श्री निर्मल, (43) श्री विनीत, (44) श्री संवर, (45) श्री मुनिगुप्त, (46) श्री मुनिदत्त, (47) श्री मुनियज्ञ, (48) श्री मुनिदेव, (49) श्री मुनिमित्र, (50) श्री मित्रयज्ञ, (51) श्री स्वयंभू, (52) श्री भगदेव, (53) श्री भगदत्त, (54) श्री भगफल्गू, (55) श्री गुप्त फल्गु, (56) श्री मित्र फल्गु, (57) श्री प्रजापति, (58) श्री सर्वसंघ, (59) श्री वरुण, (60) श्री धनपालक, (61) श्री मघवान, (62) श्री तेजो राशि, (63) श्री महावीर, (64) श्री महारथ, (65) श्री विशालाक्ष, (66) श्री महाबल, (67) श्री शुचिशाल, (68) श्री वज्र, (69) श्री वज्रसार, (70) श्री चन्द्रचूल, (71) श्री जयकुमार, (72) श्री महारस, (73) श्री कच्छ, (74) श्री महाकच्छ, (75) श्री नमि, (76) श्री विनामि, (77) श्री बल, (78) श्री अतिबल, (78) श्री भद्र बल, (80) श्री नंदी, (81) श्री श्री महाभागी, (82) श्री नंदिमित्र (83) श्री कामदेव (84) श्री अनुपम।

प्रश्न 870. भगवान श्री आदिनाथ के समय में कौन से चक्रवर्ती राजा हुए ?

उत्तर– भगवान श्री आदिनाथ के समय मे भरत चक्रवर्ती राजा हुए थे।

प्रश्न 871. भगवान श्री आदिनाथ के समय में कौन से कामदेव हुए ?

उत्तर– भगवान श्री आदिनाथ के समय में भगवान बाहुबली कामदेव हुए।

प्रश्न 872. भगवान श्री आदिनाथ के समवसरण में प्रथम श्रोता कौन थे ?

उत्तर– भगवान श्री आदिनाथ के समवसरण में प्रथम श्रोता चक्रवर्ती भरत थे

प्रश्न 873. कौन से तीर्थंकर को सभी धर्मों में पूजा जाता है ?

उत्तर– भगवान श्री आदिनाथ को सभी धर्मों में पूजा जाता है।

प्रश्न 874. इस्लाम धर्म में भगवान आदिनाथ को क्या माना गया है ?

उत्तर– इस्लाम धर्म में भगवान आदिनाथ को आदम बाबा माना गया है।

प्रश्न 875. ऋग्वेद में भगवान श्री आदिनाथ का नाम कहाँ आया है ?

उत्तर– ऋग्वेद में सूक्त नं० 94 मंत्र नं० 10 में आया है।

प्रश्न 876. अथर्ववेद में भगवान श्री आदिनाथ का नाम कहाँ आया है ?

उत्तर– अथर्ववेद में का० 16 में, भाग 5 स्कंध 6 अध्याय में भ० श्री आदिनाथ का नाम आया है।

प्रश्न 877. वायुपुराण में भगवान श्री आदिनाथ का नाम कहाँ आया है ?

उत्तर– वायुपुराण, 31, 5052 में भगवान श्री आदिनाथ का नाम आया है।

प्रश्न 878. भगवान श्री आदिनाथ के काल में कौन से रुद्र हुए।

उत्तर– भगवान श्री आदिनाथ के काल में भीमावलि रुद्र हुए।

प्रश्न 879. भगवान श्री आदिनाथ को ब्रह्मा क्यों कहते हैं ?

उत्तर– समवसरण में चारों दिशाओं में मुख दिखने से आदिनाथ को ब्रह्मा कहते हैं।

प्रश्न 880. बौदिक ग्रन्थों मे भगवान श्री आदिनाथ को विष्णु का कौन सा अवतार माना गया है।

उत्तर– बौदिक ग्रन्थों मे भगवान श्री आदिनाथ को विष्णु का आठवॉ अवतार माना गया है।

प्रश्न 881. भगवान श्री आदिनाथ को पुरुषोत्तम क्यों कहते हैं ?

उत्तर– समस्त मानवों, पुरूषों में सर्वोत्तम होने से आदिनाथ को पुरूषोत्तम कहते है।

प्रश्न 882. भगवान श्री आदिनाथ को विष्णु क्यों कहते हैं ?

उत्तर– अपने केवलज्ञान से समस्त जीवों का हित करने, पालन करने से विष्णु कहते हैं?

प्रश्न 883. भगवान श्री आदिनाथ को शंकर क्यों कहते हैं ?

उत्तर– सभी जीवों को शं अर्थात् सुख प्रदान करने से आदिनाथ को शंकर कहते हैं।

प्रश्न 884. भगवान श्री आदिनाथ को बुद्ध क्यों कहते हैं ?

उत्तर– केवलज्ञान रूपी सुबुद्धि उत्पन्न होने के कारण आदिनाथ को बुद्ध कहते हैं।

प्रश्न 885. भगवान आदिनाथ की स्तुति के कौन-से स्रोत्र हैं ?

उत्तर– स्वयंभू स्तोत्र, सभी ग्रन्थों पुराणों में भक्तामर स्तोत्र में आदिनाथ की स्तुति है।

प्रश्न 886. भगवान श्री आदिनाथ के अनुबद्ध केवली कितने थे।

उत्तर– भगवान श्री आदिनाथ के अनुबद्ध केवली चौरासी थे।

प्रश्न 887. भगवान श्री आदिनाथ के समय में कौन-से नारायण हुए ?

उत्तर– कोई नारायण नहीं हुए।

प्रश्न 888. भगवान श्री आदिनाथ के काल में कौन-से बलभद्र हुए ?

उत्तर– कोई बलभ्रद नहीं हुए।

प्रश्न 889. भगवान श्री आदिनाथ के काल मे कौन-से प्रतिनारायण हुए ?

उत्तर– कोई भी प्रतिनारायण नहीं हुए

प्रश्न 890. इस हुंडावसर्पिणी काल के प्रथम चक्रवर्ती का नाम क्या है ?

उत्तर– इस हुंडावसर्पिणी काल के प्रथम चक्रवर्ती का नाम भरत चक्रवर्ती है।

प्रश्न 891. भगवान श्री आदिनाथ के समोशरण में विद्यमान कितने मुनियों ने अनुत्तर विमानों में जन्म लिया।

उत्तर– बीस हजार मुनियों ने अनुत्तर विमानों में जन्म लिया।

प्रश्न 892. श्री आदिनाथ भगवान के कितने शिष्यों ने मुक्ति पद प्राप्त किया ?

उत्तर– साठ हजार नौ सौ मुनियों ने मुक्ति पद प्राप्त किया।

प्रश्न 893. श्री आदिनाथ भगवान के कितने शिष्यों ने सौधर्म स्वर्ग से ग्रैवेयक तक के स्वर्गों को प्राप्त किया ?

उत्तर– तीन हजार एक सौ मुनियों ने ग्रैवेयक तक के स्वर्गो को प्राप्त किया।

प्रश्न 894. श्री आदिनाथ भगवान के तीर्थ प्रवर्तन काल का समय कितना था ?

उत्तर– पचास लाख करोड़ सागर तथा एक पूर्वांगकाल था।

प्रश्न 895. भगवान आदिनाथ के मोक्ष जाने के बाद कितने मुनि मोक्ष गये ?

उत्तर– भगवान आदिनाथ के मोक्ष जाने के बाद 1,84,45,00,000 मुनि मोक्ष गये।

प्रश्न 896. भगवान आदिनाथ की निर्वाण भूमि से कितने मुनि मोक्ष गये ?

उत्तर– भगवान आदिनाथ की निर्वाण भूमि से 14 हजार मुनि मोक्ष गये।

2

भगवान श्री अजितनाथ जी

प्रश्न 897. दूसरे तीर्थंकर का नाम क्या है?

उत्तर– दूसरे तीर्थकर का नाम श्री अजितनाथ जी है।

प्रश्न 898. भगवान श्री अजितनाथ ने कहाँ जन्म लिया ?

उत्तर– भगवान श्री अजितनाथ ने अयोध्या नगरी में जन्म लिया।

प्रश्न 899. भगवान श्री अजितनाथ ने तीर्थंकर प्रकृति का बंध कौन सी पर्याय में किया ?

उत्तर– भगवान श्री अजितनाथ ने तीर्थकर प्रकृति का बंध विमलवाहन राजा की पर्याय में किया।

प्रश्न 900. भगवान श्री अजितनाथ के पूर्व भव के पिता का नाम क्या था ?

उत्तर– भगवान श्री अजितनाथ के पूर्व भव के पिता महातेज थे।

प्रश्न 901. भगवान श्री अजितनाथ के पूर्व भव के दीक्षा गुरू कौन थे ?

उत्तर– भगवान श्री अजितनाथ के पूर्व भव के दीक्षा गुरू अरिंदम थे।

प्रश्न 902. भगवान श्री अजितनाथ की पूर्व भव की देव आयु कितनी थी ?

उत्तर– भगवान श्री अजितनाथ की पूर्व भव की देव आयु 33 सागर थी।

प्रश्न 903. भगवान श्री अजितनाथ कहाँ से गर्भ में आये?

उत्तर– भगवान श्री अजितनाथ विजय नामक अनुत्तर विमान से गर्भ में आये।

प्रश्न 904. भगवान श्री अजितनाथ ने कौन से वंश में जन्म लिया ?

उत्तर– भगवान श्री अजितनाथ ने इक्ष्वाकु वंश में जन्म लिया।

प्रश्न 905. श्री अजितनाथ भगवान की माता का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री अजितनाथ भगवान की माता का नाम विजया रानी (विजयासेना) था।

प्रश्न 906. श्री अजितनाथ भगवान के पिता का नाम क्या था।

उत्तर– श्री अजितनाथ भगवान के पिता का नाम जितशत्रु राजा था।

प्रश्न 907. भगवान श्री अजितनाथ कौन-सी तिथि को गर्भ में आये ?

उत्तर– भगवान श्री अजितनाथ ने ज्येष्ठ कृष्णा अमावस को गर्भ में आये ?

प्रश्न 908. भगवान श्री अजितनाथ ने कौन-से नक्षत्र में गर्भ धारण किया ?

उत्तर– भगवान श्री अजितनाथ रोहिणी नक्षत्र में गर्भ में आयें।

प्रश्न 909. भगवान श्री अजितनाथ ने कौन सी तिथि को जन्म लिया ?

उत्तर– भगवान श्री अजितनाथ ने रोहिणी नक्षत्र में जन्म लिया।

प्रश्न 910. भगवान श्री अजितनाथ ने कौन सी तिथि में जन्म लिया ?

उत्तर– भगवान श्री अजितनाथ ने माघ शुक्ला दशमी को हुआ था।

प्रश्न 911. भगवान श्री अजितनाथ की आयु कितनी थी ?

उत्तर– भगवान श्री अजितनाथ की आयु बहत्तर लाख वर्ष पूर्व थी ।

प्रश्न 912. भगवान श्री अजितनाथ का कुमार काल कितने वर्ष का था ?

उत्तर– भगवान श्री अजितनाथ का कुमार काल अठारह लाख वर्ष पूर्व का था।

प्रश्न 913. भगवान श्री अजितनाथ के शरीर की ऊँचाई कितनी थी ?

उत्तर– भगवान श्री अजितनाथ के शरीर की ऊँचाई चार सौ पचास धनुष थी।

प्रश्न 914. भगवान श्री अजितनाथ के शरीर का वर्ण कैसा था

उत्तर– भगवान श्री अजितनाथ के शरीर का वर्ण तपाये हुए स्वर्ण सदृश था।

प्रश्न 915. भगवान श्री अजितनाथ जी ने कितने वर्ष तक राज्य किया ?

उत्तर– भगवान श्री अजितनाथ जी ने त्रेपनलाख पूर्व वर्ष एक पूर्वांग वर्ष तक राज्य किया था।

प्रश्न 916. भगवान श्री अजितनाथ जी का चिन्ह क्या है ?

उत्तर– भगवान श्री अजितनाथ जी का चिन्ह हाथी है।

प्रश्न 917. भगवान श्री अजितनाथ के पूर्वभव का क्या नाम था ?

उत्तर– भगवान श्री अजितनाथ के पूर्वभव का नाम श्री विमलवाहन था।

प्रश्न 918. भगवान श्री अजितनाथ ने कौन-से गोत्र में जन्म लिया ?

उत्तर– भगवान श्री अजितनाथ ने कश्यपगोत्र में जन्म लिया।

प्रश्न 919. भगवान श्री आदिनाथ के मोक्ष जाने के कितने समय बाद भगवान श्री अजितनाथ का जन्म हुआ ?

उत्तर– भगवान श्री आदिनाथ के मोक्ष जाने के पचास लाख करोड़ सागर बीत जाने के बाद अजित नाथ का जन्म हुआ।

प्रश्न 920. भगवान श्री अजितनाथ के पुत्र का नाम क्या था ?

उत्तर– भगवान श्री अजितनाथ के पुत्र का नाम श्री अजितसेन था।

प्रश्न 921. भगवान श्री अजितनाथ के वैराग्य का कारण क्या था ?

उत्तर– भगवान श्री अजितनाथ के वैराग्य का कारण उल्कापात अर्थात् बिजली का गिरना था।

प्रश्न 922. भगवान श्री अजितनाथ ने दीक्षा कौन सी तिथि को ली ?

उत्तर– भगवान श्री अजितनाथ ने दीक्षा माघ शुक्ला नौवीं को ली।

प्रश्न 923. भगवान श्री अजितनाथ ने दीक्षा कौन से नक्षत्र में ली ?

उत्तर– भगवान श्री अजितनाथ ने दीक्षा रोहिणी नक्षत्र में ली।

प्रश्न 924. भगवान श्री अजितनाथ के दीक्षावन का नाम बताइये।

उत्तर– भगवान श्री अजितनाथ का दीक्षावन सहेतुक वन था।

प्रश्न 925. भगवान श्री अजितनाथ के दीक्षा उपवास कितने थे ?

उत्तर– भगवान श्री अजितनाथ के दीक्षा उपवास षष्ठोपवास था।

प्रश्न 926. भगवान श्री अजितनाथ ने किस समय दीक्षा धारण की ?

उत्तर– भगवान श्री अजितनाथ ने सांयकाल में दीक्षा धारण की

प्रश्न 927. भगवान श्री अजितनाथ ने कितने राजाओं के साथ दीक्षा ली ?

उत्तर– भगवान श्री अजितनाथ ने एकं हजार राजाओं के साथ दीक्षा ली।

प्रश्न 928. भगवान श्री अजितनाथ ने कितने वर्षों तक तप किया ?

उत्तर– भगवान श्री अजितनाथ ने बारह वर्षो तक तप किया।

प्रश्न 929. भगवान श्री अजितनाथ ने प्रथम आहार किसके यहाँ लिया था ?

उत्तर– भगवान श्री अजितनाथ ने प्रथम आहार ब्रह्मा नामक श्रेष्ठी के यहाँ किया।

प्रश्न 930. भगवान श्री अजितनाथ की दीक्षा कौन-से नगर में हुई थी ?

उत्तर– भगवान श्री अजितनाथ की दीक्षा साकेत नगरी में हुई थी।

प्रश्न 931. भगवान श्री अजितनाथ जी की दीक्षा पालकी का नाम क्या था ?

उत्तर– भगवान श्री अजितनाथ जी की दीक्षा पालकी का नाम सुप्रभा पालकी था।

प्रश्न 932. भगवान श्री अजितनाथ ने दीक्षा कौन-से वृक्ष के नीचे ली थी ?

उत्तर– भगवान श्री अजितनाथ ने दीक्षा सप्तपर्ण वृक्ष के नीचे ली।

प्रश्न 933. भगवान श्री अजितनाथ का आहार कौन-सी नगरी में हुआ था ?

उत्तर– भगवान श्री अजितनाथ का आहार अयोध्या नगरी में हुआ।

प्रश्न 934. भगवान श्री अजितनाथ ने किस वस्तु का आहार लिया था ?

उत्तर- भगवान श्री अजितनाथ ने गाय के दूध की खीर का आहार लिया।

प्रश्न 935. भगवान श्री अजितनाथ को केवलज्ञान कौन सी तिथि को हुआ था ?

उत्तर- भगवान श्री अजितनाथ को केवलज्ञान पौष शुक्ला ग्यारस को हुआ था।

प्रश्न 936. भगवान श्री अजितनाथ को केवलज्ञान किस समय हुआ ?

उत्तर- भगवान श्री अजितनाथ को केवलज्ञान सायंकाल में हुआ था

प्रश्न 937. भगवान श्री अजितनाथ को केवलज्ञान कौन-सी नगरी में हुआ ?

उत्तर- भगवान श्री अजितनाथ को केवलज्ञान अयोध्या नगरी में प्राप्त हुआ।

प्रश्न 938. भगवान श्री अजितनाथ को केवलज्ञान कौन-से वन में हुआ ?

उत्तर- भगवान श्री अजितनाथ को केवलज्ञान सहेतुक वन में हुआ।

प्रश्न 939. भगवान श्री अजितनाथ को केवलज्ञान कौन-से वृक्ष के नीचे हुआ ?

उत्तर- भगवान श्री अजितनाथ को केवलज्ञान सप्तपर्ण वृक्ष के नीचे हुआ।

प्रश्न 940. भगवान श्री अजितनाथ के समवसरण का विस्तार कितना था ?

उत्तर- भगवान श्री अजितनाथ के समवसरण का विस्तार साढ़े ग्यारह योजन था।

प्रश्न 941. भगवान श्री अजितनाथ की शासनदेवी का नाम क्या था ?

उत्तर- भगवान श्री अजितनाथ की शासनदेवी का नाम रोहिणी देवी था।

प्रश्न 942. भगवान श्री अजितनाथ के शासनदेव का नाम क्या था ?

उत्तर- भगवान श्री अजितनाथ के शासनदेव का नाम महायक्ष था।

प्रश्न 943. भगवान श्री अजितनाथ का केवलीकाल कितना था।

उत्तर- भगवान श्री अजितनाथ का केवलीकाल एक लाख वर्ष पूर्व में 1 पूर्वांग और बारह वर्ष कम था।

प्रश्न 944. भगवान श्री अजितनाथ को केवलज्ञान कौन से नक्षत्र में हुआ था ?

उत्तर- भगवान श्री अजितनाथ को रोहिणी नक्षत्र मे केवलज्ञान प्राप्त हुआ।

प्रश्न 945. भगवान श्री अजितनाथ के गणधरों की संख्या कितनी थी ?

उत्तर- भगवान श्री अजितनाथ के गणधरों की संख्या नब्बे गणधर थे।

प्रश्न 946. भगवान श्री अजितनाथ के प्रथम गणधर कौन थे ?

उत्तर- भगवान श्री अजितनाथ के प्रथम गणधर श्री सिंहसेन थे।

प्रश्न 947. भगवान श्री अजितनाथ के समवसरण में कुल कितने मुनि थे ?

उत्तर- भगवान श्री अजितनाथ के समवसरण में कुल एक लाख मुनि थे

प्रश्न 948. भगवान श्री अजितनाथ के समवसरण में पूर्वधर मुनि कितने थे।

उत्तर– भगवान श्री अजितनाथ के समवसरण में पूर्वधर मुनि तीन हजार सात सौ पचास थे।

प्रश्न 949. भगवान श्री अजितनाथ के समबरण में शिक्षक मुनि कितने थे।

उत्तर– भगवान श्री अजितनाथ के समवसरण में इक्कीस हजार छः सौ शिक्षक मुनि थे।

प्रश्न 950. भगवान श्री अजितनाथ के समवसरण में अविधज्ञानी मुनि कितने थे ?

उत्तर– भगवान श्री अजितनाथ के समवसरण में अविधज्ञानी मुनि नौ हजार चार सौ अवधिज्ञानी थे।

प्रश्न 951. भगवान श्री अजितनाथ के समवसरण में केवलज्ञानी मुनि कितने थे ?

उत्तर– भगवान श्री अजितनाथ के समवसरण में केवलज्ञानी मुनि बीस हजार थे।

प्रश्न 952. भगवान श्री अजितनाथ जी के समवसरण में विक्रियाधारी मुनि कितने थे ?

उत्तर– भगवान श्री अजितनाथ जी के समवशरण में विक्रियाधारी मुनि बीस हजार सौ थे।

प्रश्न 953. भगवान श्री अजित नाथ को समवशरण में विपुलमति मनः पर्यय ज्ञान धारी मुनि कितने थे ?

उत्तर– भगवान श्री अजितनाथ के समवशरण में विपुलमति मनः पर्यय ज्ञानधारी बारह हजार चार सौ पचास थे।

प्रश्न 954. भगवान श्री अजितनाथ के समवशरण में कितने थे ?

उत्तर– बारह हजार चार सौ वादी मुनि थे।

प्रश्न 955. भगवान श्री अजितनाथ के समवशरण में कितनी आर्यिकायें थी ?

उत्तर– भगवान श्री अजितनाथ के समवशरण में तीन लाख बीस हजार आर्यिकायें थी।

प्रश्न 956. भगवान श्री अजितनाथ के समवशरण में प्रमुख आर्यिका कौन थीं ?

उत्तर– भगवान श्री अजितनाथ के समवशरण में प्रकुब्जा आर्यिका प्रमुख थी।

प्रश्न 957. भगवान श्री अजितनाथ के समवशरण में कितने श्रावक थे ?

उत्तर– भगवान श्री अजितनाथ के समवशरण में तीन लाख श्रावक थे।

प्रश्न 958. भगवान श्री अजितनाथ के समवशरण मे कितनी श्राविकायें थीं ?

उत्तर– पाँच लाख श्राविकायें अजितनाथ के समवशरण में थी।

प्रश्न 959. भगवान श्री अजितनाथ के समय के चक्रवर्ती का नाम क्या था?

उत्तर– भगवान श्री अजितनाथ के समय के चक्रवर्ती सगरसेन चक्रवर्ती थे।

प्रश्न 960. भगवान श्री अजितनाथ के समय में ढाई द्वीप में कितने तीर्थंकर विद्यमान थे ?

उत्तर– भगवान श्री अजितनाथ के समय में एक सौ सत्तर तीर्थंकर विद्यमान थे।

प्रश्न 961. भगवान श्री अजितनाथ ने कौन-सी तिथि को मोक्ष प्राप्त किया ?

उत्तर– भगवान श्री अजितनाथ ने चैत्र शुक्ला पंचमी को मोक्ष प्राप्त किया था।

प्रश्न 962. भगवान श्री अजितनाथ ने कौन-से समय, किस आसन से मोक्ष प्राप्त किया ?

उत्तर– भगवान श्री अजितनाथ ने पूर्वाण्हकाल में खड्गासन से मोक्ष प्राप्त किया।

प्रश्न 963. भगवान श्री अजितनाथ ने कौन-से नक्षत्र में मोक्ष प्राप्त किया ?

उत्तर– भगवान श्री अजितनाथ ने भरणी नक्षत्र में मोक्ष प्राप्त किया।

प्रश्न 964. भगवान श्री अजितनाथ ने कहाँ से मोक्ष प्राप्त किया ?

उत्तर– भगवान श्री अजितनाथ ने श्री सम्मेद शिखर जी से मोक्ष प्राप्त किया।

प्रश्न 965. भगवान श्री अजितनाथ ने कितने मुनियों के साथ मोक्ष प्राप्त किया ?

उत्तर– भगवान श्री अजितनाथ ने एक हजार मुनियों के साथ मोक्ष प्राप्त किया।

प्रश्न 966. वर्तमानकाल के तीर्थकरों में सर्वप्रथम सम्मेदशिखर से कौन-से तीर्थंकर मोक्ष गये ?

उत्तर– भगवान श्री अजितनाथ जी सम्मेद शिखर से सर्व प्रथम मोक्ष गये।

प्रश्न 967. भगवान श्री अजितनाथ ने कौन से कूट से मोक्ष प्राप्त किया ?

उत्तर– भगवान श्री अजितनाथ ने श्री सिद्धवर कूट से मोक्ष प्राप्त किया।

प्रश्न 968. भगवान श्री अजितनाथ का योग निवृतिकाल बताइये?

उत्तर– भगवान श्री अजितनाथ का योग निवृतिकाल एक माह था।

प्रश्न 969. भगवान श्री अजितनाथ के अनुबद्ध केवलियों की संख्या कितनी थी ?

उत्तर– भगवान श्री अजितनाथ के अनुबद्ध केवलियों की संख्या चौरासी थी।

प्रश्न 970. भगवान श्री अजितनाथ से सम्बन्धित क्षेत्रपालों के नाम क्या थे।

उत्तर– (1) श्री क्षेमभद्र, (2) श्री शांतिभद्र, (3) श्रीमद्, (4) श्री क्षांतिभद्र। क्षेत्रपाल थे।

प्रश्न 971. भगवान श्री अजितनाथ के समवसरण में प्रमुख श्रोता कौन थे ?

उत्तर– भगवान श्री अजितनाथ के समवसरण में प्रमुख श्रोता श्री सत्यभाव थे।

प्रश्न 972. भगवान श्री अजितनाथ के समवसरण में विद्यमान, कितने मुनियों ने अनुत्तर विमानों में जन्म लिया ?

उत्तर– बीस हजार मुनियों ने अनुत्तर विमानों में जन्म लिया।

प्रश्न 973. भगवान श्री अजितनाथ के कितने शिष्यों ने मोक्ष को प्राप्त किया ?

उत्तर– भगवान श्री अजितनाथ के सत्तर हजार एक सौ मुनियों ने मोक्ष प्राप्त किया।

प्रश्न 974. भगवान श्री अजितनाथ के कितने शिष्यों ने प्रथम स्वर्ग से ग्रैवेयक तक के स्वर्गो को प्राप्त किया ?

उत्तर– भगवान श्री अजितनाथ के दो हजार नौ सौ मुनियों ने प्रथम स्वर्ग से ग्रैवेयक तक के स्वर्गो को प्राप्त किया।

प्रश्न 975. भगवान श्री अजितनाथ का तीर्थ प्रवर्तन काल कितना था ?

उत्तर– तीस लाख करोड़ सागर एवं तीन पूर्वांग भगवान श्री अजितनाथ का तीर्थ प्रवर्तन काल था।

प्रश्न 976. भगवान श्री अजितनाथ के मोक्ष जाने के बाद कितने मुनि मोक्ष गये ?

उत्तर– भगवान श्री अजितनाथ के मोक्ष जाने के बाद 9 करोडा कोड़ी 7207542 मुनि मोक्ष गये।

3

भगवान श्री सम्भवनाथ जी

प्रश्न 977. तीसरे तीर्थंकर का नाम क्या है?

उत्तर – तीसरे तीर्थंकर का नाम श्री संभव नाथ जी है।

प्रश्न 978. श्री अजितनाथ भगवान के कितने समय बाद श्री संभव नाथभगवान हुए ?

उत्तर– दस लाख कोटि सागर काल बीत जाने पर संभव नाथ का जन्म हुआ।

प्रश्न 979. भगवान श्री सम्भव नाथ जी कहाँ से गर्भ में आये ?

उत्तर– भगवान श्री सम्भव नाथ जी अधोग्रैवेयक से गर्भ में आये।

प्रश्न 980. संभवनाथ भगवान का गर्भ कल्याणक कौन सी तिथि को हुआ ?

उत्तर– संभवनाथ भगवान का गर्भ कल्याणक फाल्गुन शुक्ला अष्टमी को हुआ।

प्रश्न 981. श्री संभवनाथ भगवान की माता का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री संभवनाथ भगवान की माता का नाम सुसेना था।

प्रश्न 982. श्री संभवनाथ भगवान के पिता का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री संभवनाथ भगवान के पिता का नाम राजा जितारी (श्री दृढ़ राजा) था।

प्रश्न 983. भगवान श्री संभवनाथ जी ने कौन से नक्षत्र में जन्म लिया ?

उत्तर–. भगवान श्री संभवनाथ जी ने मृगसिरा नक्षत्र में जन्म लिया।

प्रश्न 984. भगवान श्री सम्भव नाथ के जन्म स्थान का नाम क्या था ?

उत्तर– भगवान श्री सम्भव नाथ के जन्म स्थान का नाम श्रावस्ती नगरी था।

प्रश्न 985. भगवान श्री सम्भवनाथ ने कौन-सी तिथि को जन्म लिया ?

उत्तर– कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा को भगवान सम्भवनाथ का जन्म हुआ।

प्रश्न 986. भगवान श्री सम्भवनाथ का जन्म नक्षत्र कौन सा था?

उत्तर– भगवान श्री सम्भवनाथ का जन्म नक्षत्र ज्येष्ठा था।

प्रश्न 987. भगवान श्री सम्भवनाथ ने कौन-से वंश में जन्म लिया ?

उत्तर– भगवान श्री सम्भवनाथ ने इक्ष्वाकु वंश में जन्म लिया।

प्रश्न 988. भगवान श्री सम्भवनाथ का जन्म कौन-से गोत्र में हुआ था ?

उत्तर– भगवान श्री सम्भवनाथ का जन्म कश्यप गोत्र में हुआ था।

प्रश्न 989. भगवान श्री सम्भवनाथ की जन्म राशि कौन सी थी ?

उत्तर– भगवान श्री सम्भवनाथ की जन्म राशि मिथुन थी।

प्रश्न 990. भगवान श्री सम्भवनाथ जी की कितनी आयु थी ?

उत्तर– भगवान श्री सम्भवनाथ जी की आयु साठ लाख वर्ष पूर्व थी।

प्रश्न 991. भगवान श्री सम्भवनाथ जी का कुमार काल कितने वर्ष का था ?

उत्तर– भगवान श्री सम्भवनाथ जी का कुमार काल पन्द्रह लाख वर्ष पूर्व का था।

प्रश्न 992. भगवान श्री सम्भवनाथ के शरीर की ऊँचाई कितनी थी ?

उत्तर– भगवान श्री सम्भवनाथ जी के शरीर की उँचाई चार सौ धनुष (1600 हाथ) थी।

प्रश्न 993. भगवान श्री सम्भवनाथ जी के शरीर का वर्ण कौन सा था ?

उत्तर– भगवान श्री सम्भवनाथ जी स्वर्ण वर्ण के थे।

प्रश्न 994. भगवान श्री सम्भवनाथ को कौन से चिन्ह से जाना जाता है ?

उत्तर– भगवान श्री सम्भवनाथ को घोड़ा चिन्ह से जाना जाता हैं।

प्रश्न 995. भगवान श्री सम्भवनाथ ने कितने वर्ष तक राज्य किया ?

उत्तर– भगवान श्री सम्भवनाथ जी ने चवालिस लाख वर्ष पूर्व चार पूर्वांग तक राज्य किया।

प्रश्न 996. भगवान श्री सम्भवनाथ की पूर्व पर्याय का नाम क्या था ?

उत्तर– भगवान श्री सम्भवनाथ की पूर्व पर्याय का नाम श्री विमलवाहन था।

प्रश्न 997. भगवान श्री सम्भवनाथ ने तीर्थंकर प्रकृति का बंध कौन सी पर्याय में किया ?

उत्तर– भगवान श्री सम्भवनाथ ने तीर्थंकर प्रकृति का बंध विमलवाहन राजाकी पर्याय में किया।

प्रश्न 998. भगवान श्री सम्भवनाथ के पूर्व भव के पिता का नाम क्या था ?

उत्तर– भगवान श्री सम्भवनाथ के पूर्व भव पिता का नाम रिपुदन था।

प्रश्न 999. भगवान श्री सम्भवनाथ के पूर्व भव के दीक्षा गुरू कौन थे ?

उत्तर– भगवान श्री सम्भवनाथ के पूर्व भव के दीक्षा गुरू स्वयंप्रभ थे।

प्रश्न 1000. भगवान श्री सम्भवनाथ की पूर्व भव की देव आयु कितनी थी ?

उत्तर– भगवान श्री सम्भवनाथ की पूर्व भव की देव आयु 23 सागर थी।

प्रश्न 1001. भगवान श्री सम्भवनाथ को वैराग्य किस कारण हुआ ?

उत्तर– भगवान श्री सम्भवनाथ को मेघ (बादलों) का विनाश देखकर वैराग्य प्राप्त हुआ।

प्रश्न 1002. भगवान श्री सम्भवनाथ ने दीक्षा कौन-सी तिथि को ली ?

उत्तर– भगवान श्री सम्भव ने दीक्षा मंगसिर शुक्ला पूर्णिमा को दीक्षा ली।

प्रश्न 1003. भगवान श्री सम्भवनाथ ने कौन से नक्षत्र में दीक्षा ली ?

उत्तर– भगवान श्री सम्भवनाथ ने ज्येष्ठा नक्षत्र में दीक्षा ली।

प्रश्न 1004. भगवान श्री सम्भवनाथ ने कौन से वन में दीक्षा ली ?

उत्तर– भगवान श्री सम्भवनाथ सहेतुक वन में दीक्षा ली।

प्रश्न 1005. भगवान श्री सम्भवनाथ ने किस समय दीक्षा ली ?

उत्तर– भगवान श्री सम्भवनाथ ने अपराह्न काल में दीक्षा ली।

प्रश्न 1006. भगवान श्री सम्भवनाथ के दीक्षोपवास की संख्या बताइये।

उत्तर– भगवान श्री सम्भवनाथके दीक्षोपवास की संख्या तृतीय (तीन) उपवास थी।

प्रश्न 1007. श्री संभवनाथ भगवान ने कितने राजाओं के साथ दीक्षा ली ?

उत्तर– भगवान श्री सम्भवनाथ ने एक हजार राजाओं के साथ दीक्षा ली।

प्रश्न 1008. भगवान श्री सम्भवनाथ ने कौन से नगर में दीक्षा ली ?

उत्तर– भगवान श्री सम्भवनाथ ने श्रावस्ती नगर के उद्यान में दीक्षा ली।

प्रश्न 1009. श्री सम्भवनाथ भगवान की दीक्षा पालकी का नाम क्या था।

उत्तर– श्री सम्भवनाथ भगवान की दीक्षा पालकी का नाम सिद्धार्था था।

प्रश्न 1010. भगवान सम्भवनाथ का प्रथम आहार कौन से नगर में हुआ था ?

उत्तर– भगवान सम्भवनाथ का प्रथम आहार श्रावस्ती नगर में हुआ था।

प्रश्न 1011. भगवान श्री सम्भव को प्रथम आहार किसने दिया था ?

उत्तर– श्री सुरेन्द्र दत्त जी ने भगवान श्री सम्भव को प्रथम आहार दिया था।

प्रश्न 1012. भगवान जी सम्भवनाथ ने किस वस्तु का आहार लिया था ?

उत्तर– भगवान जी सम्भवनाथ ने गाय के दूध की खीर का आहार लिया था।

प्रश्न 1013. श्री सम्भवनाथ भगवान ने कितने वर्षों तक तपस्या की ?

उत्तर– भगवान श्री सम्भवनाथ ने चौदह वर्षों तक तपस्या की।

प्रश्न 1014. श्री सम्भवनाथ भगवान को केवलज्ञान किस तिथि को हुआ था ?

उत्तर– श्री सम्भवनाथ भगवान को केवलज्ञान कार्तिक कृष्णा चतुर्थी को।

प्रश्न 1015. श्री सम्भवनाथ भगवान को केवलज्ञान किस समय हुआ था ?

उत्तर– श्री सम्भवनाथ भगवान को केवलज्ञान अपराह्न काल (संध्या के समय) हुआ था।

प्रश्न 1016. श्री सम्भवनाथ भगवान ने कौन से नक्षत्र में केवलज्ञान प्राप्त किया ?

उत्तर– श्री सम्भवनाथ भगवान ने केवलज्ञान ज्येष्ठा नक्षत्र में प्राप्त किया।

प्रश्न 1017. श्री सम्भवनाथ भगवान को कौन-से स्थान पर केवलज्ञान प्राप्त हुआ ?

उत्तर– श्री सम्भवनाथ भगवान को सहेतुक वन में केवलज्ञान प्राप्त हुआ।

प्रश्न 1018. श्री सम्भवनाथ भगवान को केवलज्ञान कौन-सी नगरी में हुआ था ?

उत्तर– श्री सम्भवनाथ भगवान को केवलज्ञान श्रावस्ती नगरी में हुआ था।

प्रश्न 1019. श्री सम्भवनाथ भगवान को केवलज्ञान किस वृक्ष के नीच हुआ था ?

उत्तर– श्री सम्भवनाथ भगवान को शालवृक्ष के नीचे केवलज्ञान प्राप्त हुआ था।

प्रश्न 1020. श्री सम्भवनाथ भगवान के समोसरण का विस्तार कितना था ?

उत्तर– श्री सम्भवनाथ भगवान के समोसरण का विस्तार ग्यारह योजन था।

प्रश्न 1021. श्री सम्भवनाथ भगवान की शासन देवी का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री सम्भवनाथ भगवान की शासन देवी का नाम श्री प्रज्ञप्ती देवी था।

प्रश्न 1022. श्री सम्भवनाथ भगवान के शासन देव का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री सम्भवनाथ भगवान के शासन देव का नाम त्रिमुख यक्ष था।

प्रश्न 1023. श्री संभव नाथ भगवान का केवली काल कितने वर्षो का था ?

उत्तर– श्री संभव नाथ भगवान का केवली काल एक लाख पूर्व में चार पूर्वांग चौदह वर्ष कम था।

प्रश्न 1024. श्री सम्भवनाथ भगवान के गणधरों की संख्या कितनी थी ?

उत्तर– श्री सम्भवनाथ भगवान के गणधरों की संख्या एक सौ पाँच थी।

प्रश्न 1025. श्री सम्भवनाथ भगवान के प्रमुख गणधर कौन थे ?

उत्तर– श्री सम्भवनाथ भगवान के प्रमुख गणधर श्री चारूदत्त थे

प्रश्न 1026. श्री सम्भवनाथ भगवान के समोशरण में कितने ऋषि थे ?

उत्तर– श्री सम्भवनाथ भगवान के समोशरण में दो लाख ऋषि थे।

प्रश्न 1027. श्री सम्भवनाथ भगवान के समोशरण में कितने पूर्वधर मुनि थे ?

उत्तर– श्री सम्भवनाथ भगवान के दो हजार एक सौ पाचस पूर्वधर मुनि थे।

प्रश्न 1028. श्री सम्भवनाथ भगवान के समोशरण में शिक्षक मुनि कितने थे ?

उत्तर– श्री सम्भवनाथ भगवान के एक लाख उनतीस हजार तीन सौ शिक्षक मुनि थे।

प्रश्न 1029. श्री सम्भवनाथ भगवान के समोशरण मे अवधिज्ञानी मुनि कितने थे ?

उत्तर– श्री सम्भवनाथ भगवान के समोशरण में नौ हजार चार सौ अवधि ज्ञानी मुनि थे।

प्रश्न 1030. भगवान श्री सम्भवनाथ के समोशरण में कितने केवली थे ?

उत्तर– श्री सम्भवनाथ भगवान के समोशरण में पन्द्रह हजार केवली थे।

प्रश्न 1031. श्री संभवनाथ भगवान के समोशरण में कितने विक्रिया धारी मुनि थे ?

उत्तर– श्री सम्भवनाथ भगवान के समोशरण में उन्नीस हजार आठ सौ विक्रिया धारी मुनि थे।

प्रश्न 1032. श्री सम्भवनाथ भगवान के समोशरण में कितने मुनि, विपुलमती मनःपर्यय ज्ञान को धारण करने वाले थे ?

उत्तर– श्री सम्भवनाथ भगवान के समोशरण में बारह हजार एक सौ पचास मुनि विपुलमती मनःपर्यय ज्ञानी थे।

प्रश्न 1033. श्री सम्भवनाथ भगवान के समोशरण में वादी मुनि कितने थे ?

उत्तर– श्री सम्भवनाथ भगवान के समोशरण में बारह हजार वादी मुनि थे।

प्रश्न 1034. श्री सम्भवनाथ भगवान के समोशरण में कितनी आर्यिकायें थी ?

उत्तर– श्री सम्भवनाथ भगवान के समोशरण तीन लाख तीस हजार आर्यिकायें थीं।

प्रश्न 1035. श्री सम्भवनाथ भगवान के समोशरण की प्रमुख आर्यिका कौन थी ?

उत्तर– श्री सम्भवनाथ भगवान के समोशरण की प्रमुख धर्मश्री नाम की आर्यिका थी।

प्रश्न 1036. श्री सम्भवनाथ भगवान के समोशरण में कितने श्रावक थे ?

उत्तर– श्री सम्भवनाथ भगवान के समोशरण में तीन लाख श्रावक थे।

प्रश्न 1037. श्री सम्भवनाथ भगवान के समोशरण में कितनी श्राविकायें थीं ?

उत्तर– श्री सम्भवनाथ भगवान के समोशरण में पाँच लाख श्राविकायें थी।

प्रश्न 1038. भगवान श्री सम्भवनाथ के समोशरण में प्रमुख श्रोता कौन थे ?

उत्तर– भगवान श्री सम्भवनाथ के समोशरण में प्रमुख श्रोता राजा श्री सत्यवीर्य जी थे।

प्रश्न 1039. भगवान श्री सम्भवनाथ कौन सी तिथि में मोक्ष गये ?

उत्तर– भगवान श्री सम्भवनाथ चैत्र शुक्ला षष्ठी तिथि में मोक्ष गये थे।

प्रश्न 1040. भगवान श्री सम्भवनाथ किस समय मोक्ष गये?

उत्तर– भगवान श्री सम्भवनाथ अपराह्न काल में मोक्ष गये।

प्रश्न 1041. भगवान श्री सम्भवनाथ किस नक्षत्र में मोक्ष गये?

उत्तर– भगवान श्री सम्भवनाथ ज्येष्ठा नक्षत्र में मोक्ष गये।

प्रश्न 1042. श्री सम्भवनाथ भगवान किस स्थान से मोक्ष गये ?

उत्तर– भगवान श्री सम्भवनाथ श्री सम्मेद शिखर से मोक्ष गये थे।

प्रश्न 1043. श्री सम्भवनाथ भगवान के साथ कितने मुनि मोक्ष गये ?

उत्तर– श्री सम्भवनाथ भगवान के साथ एक हजार मुनि मोक्ष गये।

प्रश्न 1044. श्री सम्भवनाथ भगवान की योग निवृत्ति कितने दिन पूर्व हुई ?

उत्तर– श्री सम्भवनाथ भगवान की योग निवृत्ति 1 माह पूर्व हुई।

प्रश्न 1045. श्री सम्भवनाथ भगवान किस कूट से मोक्ष गये।

उत्तर– श्री सम्भवनाथ भगवान धवलकूट से मोक्ष गये।

प्रश्न 1046. श्री सम्भवनाथ भगवान से संबंधित क्षेत्रपालों के नाम क्या थे ?

उत्तर– 1. श्री वीर भद्र जी, 2. श्री बलिभद्र जी, 3. श्री गुणभद्र जी, 4. श्री चन्द्राभ जी सम्भवनाथ से सबंधित क्षेत्रपाल है।

प्रश्न 1047. श्री सम्भव भगवान के शासनकाल में चतुर्विध संघ को यात्रा कराने वाले संघपति का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री सम्भवनाथ भगवान के शासनकाल मे मघवा चक्रवर्ती ने चतुर्विध संघ को यात्रा कराई।

प्रश्न 1048. धवल कूट की वंदना से कितने उपवासों का फल होता है ?

उत्तर– धवल कूट की वदना से व्यालीस लाख उपवासो का फल होता है।

प्रश्न 1049. श्री सम्भवनाथ भगवान के अनुबद्ध केवलियों की कितनी थी ?

उत्तर– श्री सम्भवनाथ भगवान के अनुबद्ध केवलियो की संख्या चौरासी है।

प्रश्न 1050. श्री संभवनाथ भगवान किस आसन से मोक्ष गये ?

उत्तर– श्री संभवनाथ भगवान खड्गासन से मोक्ष गये।

प्रश्न 1051. श्री सम्भवनाथ भगवान अपने शासन काल में किस पदवी के धारक थे ?

उत्तर– महामंडलीक राजा के पदवी के धारक हुए।

प्रश्न 1052. श्री सम्भवनाथ भगवान के कितने मुनि अनुत्तर विमानों को प्राप्त हुये?

उत्तर– श्री सम्भवनाथ भगवान के बीस हजार मुनि अनुत्तर विमान में जन्मे।

प्रश्न 1053. श्री संभवनाथ भगवान के शासनकाल में कितने मुनियों ने मुक्ति को प्राप्त किया है?

उत्तर– एक लाख सत्तर हजार एक सौ मुनियों ने मुक्ति को प्राप्त किया।

प्रश्न 1054. श्री सम्भवनाथ भगवान के कितने शिष्यों ने पहले स्वर्ग से नवग्रैवेयक तक के स्वर्गों को प्राप्त किया ?

उत्तर– नौ हजार नौ सौ शिष्यों ने पहले स्वर्ग से नवग्रैवयक तक के स्वर्गों को प्राप्त किया।

प्रश्न 1055. श्री सम्भवनाथ भगवान का तीर्थ प्रवर्तन काल कितने वर्षों का था ?

उत्तर– दस लाख करोड़ सागर तथा चार पूर्वांग प्रवर्तन काल था।

प्रश्न 1056. भगवान श्री सम्भवनाथ के मोक्ष जाने के बाद कितने मुनि मोक्ष गये ?

उत्तर– भगवान श्री सम्भवनाथ के मोक्ष जाने के बाद 73 कोड़ा कोड़ी 7070 सात सौ हजार 542 मुनि मोक्ष गये।

4

भगवान श्री अभिनन्दननाथ जी

प्रश्न 1057. चौथे तीर्थंकर का नाम क्या है ?

उत्तर– चौथे तीर्थंकर का नाम श्री अभिनंदन नाथ जी है।

प्रश्न 1058. श्री सम्भवनाथ भगवान से कितने समय पश्चात् श्री अभिनंदन नाथ भगवान हुये।

उत्तर– श्री सम्भवनाथ भगवान के नौ लाख करोड़ सागर पश्चात् श्री अभिनंदन नाथ जी हुये?

प्रश्न 1059. श्री अभिनंदन नाथ जी के पिता का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री अभिनंदन नाथ जी के पिता का नाम श्री स्वयंवर राजा था।

प्रश्न 1060. श्री अभिनंदन नाथ भगवान की माता का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री अभिनंदन नाथ जी की माता का नाम सिद्धार्था देवी था।

प्रश्न 1061. श्री अभिनंदन नाथ भगवान ने कहाँ जन्म लिया था?

उत्तर– श्री अभिनंदन भगवान ने अयोध्या नगरी में जन्म लिया था।

प्रश्न 1062. श्री अभिनंदन नाथ जी के शरीर का वर्ण कैसा था ?

उत्तर– श्री अभिनंदन नाथ जी के शरीर का स्वर्ण वर्ण था।

प्रश्न 1063. श्री अभिनंदन नाथ भगवान के शरीर की ऊँचाई कितनी थी ?

उत्तर– श्री अभिनंदन नाथ भगवान के शरीर की ऊँचाई तीन सो पचास धनुष थी।

प्रश्न 1064. श्री अभिनंदन नाथ भगवान की आयु कितनी थी ?

उत्तर– श्री अभिनंदन नाथ भगवान की आयु पचास लाख वर्ष पूर्व थी।

प्रश्न 1065. श्री अभिनंदन नाथ भगवान की पूर्व पर्याय का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री अभिनदन नाथ भगवान की पूर्व पर्याय का नाम महाबल राजा था।

प्रश्न 1066. भगवान श्री अभिनंदन नाथ पूर्व पर्याय में किस देश के राजा थे।

उत्तर– श्री अभिनंदन नाथ भगवान पूर्व पर्याय मंगलावती देश के राजा थे।

प्रश्न 1067. भगवान श्री अभिनंदननाथ ने तीर्थंकर प्रकृति का बंध कौन सी पर्याय में किया ?

उत्तर– श्री अभिनंदननाथ ने तीर्थंकर प्रकृति का बंध महाबल राजा की पर्याय मे किया।

प्रश्न 1068 भगवान श्री अभिनंदन नाथ के पूर्व भव के पिता का नाम क्या था ?

उत्तर– भगवान श्री अभिनंदन नाथ के पूर्व भव के पिता का नाम स्वयंप्रभ था।

प्रश्न 1069. श्री अभिनंदन नाथ भगवान पूर्व पर्याय में किस नगर के राजा थे ?

उत्तर– श्री अभिनंदन नाथ भगवान पूर्व पर्याय में रत्नसंचयपुर नगर के राजा थे।

प्रश्न 1070. श्री अभिनंदन नाथ भगवान की पूर्व पर्याय के पुत्र का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री अभिनंदन नाथ भगवान की पूर्व पर्याय के पुत्र का नाम श्री धनपाल जी था।

प्रश्न 1071. श्री अभिनंदननाथ भगवान ने पूर्व पर्याय में कौन से गुरु से दीक्षा ली थी ?

उत्तर– श्री अभिनंदन नाथ भगवान ने पूर्व पर्याय में श्री विमलवाहन नाम के मुनिराज से दीक्षा ली थी।

प्रश्न 1072. श्री अभिनंदन नाथ भगवान कहाँ से गर्भ में आये ?

उत्तर– श्री अभिनंदननाथ विजय नाम के अनुत्तर विमान से गर्भ में आये।

प्रश्न 1073. श्री अभिनंदननाथ की पूर्व भव की देव आयु कितनी थी ?

उत्तर– भगवान श्री अभिनंदन की पूर्व भव की देव आयु 33 सागर थी।

प्रश्न 1074. भगवान श्री अभिनंदन नाथ किस तिथि में गर्भ में आये ?

उत्तर– भगवान श्री अभिनंदन नाथ बैशाख शुक्ला षष्ठी को गर्भ में आये।

प्रश्न 1075. श्री अभिनंदन नाथ कौन से नक्षत्र में गर्भ में आये?

उत्तर– श्री अभिनंदन नाथ पुनर्वसु नक्षत्र में गर्भ में आये।

प्रश्न 1076. श्री अभिनंदन नाथ भगवान ने कौन सी तिथि में जन्म लिया था ?

उत्तर– भगवान श्री अभिनंदन ने माघशुक्ला बारस को जन्म लिया।

प्रश्न 1077. श्री अभिनंदन नाथ भगवान ने कौन नक्षत्र में जन्म लिया ?

उत्तर– श्री अभिनंदन नाथ भगवान ने पुनर्वसु नक्षत्र में जन्म लिया।

प्रश्न 1078. श्री अभिनंदन नाथ भगवान ने कौन से वंश में जन्म लिया ?

उत्तर– श्री अभिनंदन नाथ भगवान ने इक्ष्वाकुवंश में जन्म लिया।

प्रश्न 1079. श्री अभिनंदन नाथ भगवान का कुमार काल कितने वर्ष का था ?

उत्तर– श्री अभिनंदन नाथ भगवान कुमार काल साढ़े बारह लाख वर्ष पूर्व का था।

प्रश्न 1080. श्री अभिनंदन नाथ भगवान ने कितने वर्ष तक राज्य किया।

उत्तर– साड़े छत्तीस लाख वर्ष पूर्व तथा 8 पूर्वांग वर्ष तक राज्य किया ?

प्रश्न 1081. श्री अभिनंदन नाथ भगवान की प्रतिमा को किस चिन्ह से जाना जाता है?

उत्तर– श्री अभिनंदन नाथ भगवान की प्रतिमा को बंदर चिन्ह से जाना जाता है।

प्रश्न 1082. श्री अभिनंदन नाथ भगवान को वैराग्य कैसे हुआ ?

उत्तर– श्री अभिनंदन नाथ भगवान को गंधर्वनगर के नाश को देखकर वैराग्य हुआ।

प्रश्न 1083. भगवान श्री अभिनंदन की जन्म राशि कौन सी थी ?

उत्तर– भगवान श्री अदिनदन की जन्म राशि मिथुन थी।

प्रश्न 1084. श्री अभिनंदन नाथ भगवान ने कौन सी तिथि को दीक्षा ली ?

उत्तर– श्री अभिनंदन नाथ भगवान ने माघशुक्ला बारस को दीक्षा ली।

प्रश्न 1085. श्री अभिनंदन नाथ भगवान ने कौन से नक्षत्र में दीक्षा ली ?

उत्तर– श्री अभिनंदन नाथ भगवान ने पुनर्वसु नक्षत्र में दीक्षा ली।

प्रश्न 1086. श्री अभिनंदन नाथ भगवान का दीक्षा वन कौन सा था ?

उत्तर– श्री अभिनंदन नाथ भगवान की दीक्षा उग्रवन था।

प्रश्न 1087. श्री अभिनंदन भगवान ने किस समय दीक्षा ली।

उत्तर– श्री अभिनंदन भगवान ने पूर्वान्ह काल में दीक्षा ली।

प्रश्न 1088. श्री अभिनंदन नाथ भगवान की दीक्षा पालकी का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री अभिनंदन नाथ भगवान की दीक्षा हस्तचित्रा पालकी था।

प्रश्न 1089. श्री अभिनंदन नाथ भगवान ने दीक्षा पूर्व कितने उपवास किसे?

उत्तर– श्री अभिनंदन नाथ भगवान ने दीक्षा पूर्व दो दिन के उपवास किये।

प्रश्न 1090. श्री अभिनंदन नाथ भगवान ने कौन से नगर में दीक्षा ली ?

उत्तर– श्री अभिनंदन नाथ भगवान ने अयोध्या नगर में दीक्षा ली।

प्रश्न 1091. श्री अभिनंदन नाथ भगवान का आहार कहाँ हुआ था ?

उत्तर– श्री अभिनंदन नाथ का आहार अयोध्या नगर में हुआ था।

प्रश्न 1092. श्री अभिनंदन नाथ को प्रथम आहार किसने दिया था ?

उत्तर– श्री अभिनंदन नाथ को प्रथम आहार इन्द्रदत नाम के राजा ने दिया था।

प्रश्न 1093. श्री अभिनंदन नाथ भगवान ने कितने वर्ष तक तप किया था ?

उत्तर– श्री अभिनंदन नाथ भगवान ने अठारह वर्ष तक तप किया।

प्रश्न 1094. श्री अभिनंदन नाथ भगवान के दीक्षा वृक्ष का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री अभिनंदन नाथ भगवान के दीक्षा वृक्ष का नाम आसन वृक्ष था।

प्रश्न 1095. श्री अभिनंदन नाथ भगवान ने किस वस्तु का आहार लिया था ?

उत्तर– श्री अभिनंदन नाथ भगवान ने गाय के दूध की खीर का आहार लिया था।

प्रश्न 1096. श्री अभिनंदन नाथ भगवान को केवलज्ञान कौन सी तिथि को हुआ था ?

उत्तर– श्री अभिनंदन नाथ भगवान को केवलज्ञान पौषशुक्ला चतुर्दशी को हुआ था।

प्रश्न 1097. श्री अभिनंदन नाथ भगवान को केवलज्ञान किस समय हुआ था ?

उत्तर– श्री अभिनंदन नाथ भगवान को केवलज्ञान अपरान्ह काल में हुआ था।

प्रश्न 1098. श्री अभिनंदन नाथ भगवान को केवलज्ञान कौन से वन में हुआ था ?

उत्तर– श्री अभिनंदन नाथ भगवान को केवलज्ञान उग्रवन में हुआ था।

प्रश्न 1099. श्री अभिनंदन नाथ भगवान को केवलज्ञान किस नगर में हुआ था ?

उत्तर– श्री अभिनंदन नाथ भगवान का केवलज्ञान अयोध्या नगर में हुआ था।

प्रश्न 1100. श्री अभिनंदन नाथ भगवान को केवलज्ञान किस नक्षत्र में हुआ था ?

उत्तर– श्री अभिनंदन नाथ भगवान को केवलज्ञान पुनर्वसु नक्षत्र में हुआ था।

प्रश्न 1101. भगवान श्री अभिनंदन नाथ को केवल ज्ञान किस वृक्ष के नीचे हुआ था ?

उत्तर– भगवान श्री अभिनंदन नाथ को केवलज्ञान सरल वृक्ष के नीचे प्राप्त हुआ था।

प्रश्न 1102. श्री अभिनंदन नाथ भगवान के समोशरण का विस्तार कितना था ?

उत्तर– श्री अभिनंदन नाथ भगवान के समोशरण का विस्तार साड़े दस योजन था।

प्रश्न 1103. श्री अभिनंदन नाथ भगवान की शासन यक्ष का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री अभिनंदन नाथ भगवान की शासन यक्ष का नाम यक्षेश्वर था।

प्रश्न 1104. श्री अभिनंदन नाथ भगवान के शासन देवी का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री अभिनंदन नाथ भगवान के शासन देवी का नाम वज्र श्रृंखला देवी था।

प्रश्न 1105. श्री अभिनंदन नाथ भगवान का केवली काल कितने वर्षों का था ?

उत्तर– श्री अभिनंदन नाथ भगवान का केवली काल एक लाख पूर्व में 8 पूर्वांग 18 वर्ष कम था।

प्रश्न 1106. श्री अभिनंदन नाथ भगवान के कितने गणधर थे ?

उत्तर– श्री अभिनंदन नाथ भगवान के एक सौ तीन गणधर थे।

प्रश्न 1107. श्री अभिनंदननाथ भगवान के प्रथम गणधर का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री अभिनंदन नाथ भगवान के प्रथम गणधर का नाम श्री वज्रचमर (वज्रनाभि) था।

प्रश्न 1108. श्री अभिनंदन नाथ भगवान के समोशरण में कितने ऋषि थे ?

उत्तर– श्री अभिनंदन भगवान के समोशरण में तीन लाख ऋषि थे।

प्रश्न 1109. श्री अभिनंदन भगवान के समोशरण में पूर्वघर मुनियों की संख्या कितनी थी ?

उत्तर– श्री अभिनंदन भगवान के समोशरण में पूर्वघर मुनियों की संख्या दो हजार पॉच सौ थी।

प्रश्न 1110. श्री अभिनंदन भगवान के समोशरण में शिक्षक मुनियों की संख्या कितनी थी ?

उत्तर– श्री अभिनंदन नाथ भगवान के समोशरण में शिक्षक मुनियों की संख्या दो लाख तीस हजार, पचास थी।

प्रश्न 1111. श्री अभिनंदन नाथ भगवान के समोशरण में अवधि ज्ञानी मुनियों की संख्या कितनी थी ?

उत्तर– श्री अभिनंदन भगवान के समोशरण में नौ हजार आठ सौ अवधि ज्ञानी मुनि थे।

प्रश्न 1112. श्री अभिनंदन नाथ भगवान के समोशरण में कितने केवली थे ?

उत्तर– भगवान श्री अभिनंदननाथ के समोशरण में सोलह हजार केवली थे।

प्रश्न 1113. श्री अभिनंदन नाथ भगवान के समोशरण में कितने विक्रिया धारी मुनि थे।

उत्तर– श्री अभिनंदन नाथ भगवान के समोशरण में उन्नीस हजार विक्रिया धारी मुनि थे।

प्रश्न 1114. श्री अभिनंदन नाथ भगवान के समोशरण में विपुलमती मनःपर्यय ज्ञान के धारक मुनियों की संख्या कितनी थी?

उत्तर– श्री अभिनंदन नाथ भगवान के समोशरण में इक्कीस हजार छह सौ पचास मुनि विपुलमती मनःपर्यय ज्ञान के धारक थे।

प्रश्न 1115. भगवान श्री अभिनंदन नाथ के समोशरण में वादी मुनि कितने थे ?

उत्तर– भगवान श्री अभिनंदन नाथ के समोशरण में वादी मुनि एक हजार थे।

प्रश्न 1116. श्री अभिनंदन नाथ भगवान के समोशरण में कितनी आर्यिकायें थीं ?

उत्तर– श्री अभिनंदन नाथ भगवान के समोशरण में तीन लाख तीस हजार छह सौ आर्यिकायें थीं।

प्रश्न 1117. श्री अभिनंदन नाथ भगवान के समोशरण की प्रमुख आर्यिका कौन थीं।

उत्तर– श्री अभिनंदन नाथ भगवान के समोशरण की प्रमुख आर्यिका मेरुषेणा थीं।

प्रश्न 1118. श्री अभिनंदन नाथ भगवान के समोशरण में कितने श्रावक थे।

उत्तर– श्री अभिनंदन नाथ भगवान के समोशरण में तीन लाख श्रावक थे।

प्रश्न 1119. श्री अभिनंदन नाथ भगवान के समोशरण में कितनी श्राविकायें थे ?

उत्तर– श्री अभिनंदन नाथ भगवान के समोशरण में पॉच लाख श्राविकायें थी।

प्रश्न 1120. श्री अभिनंदन नाथ भगवान के समोशरण में प्रमुख श्रोता कौन थे ?

उत्तर– श्री अभिनंदन नाथ भगवान के समोशरण में प्रमुख श्रोता श्री मित्रभाव जी थे।

प्रश्न 1121. श्री अभिनंदन नाथ भगवान कौन-सी तिथि को मोक्ष गये ?

उत्तर– श्री अभिनंदन नाथ भगवान बैशाख शुक्ला षष्ठी को मोक्ष गये।

प्रश्न 1122. श्री अभिनंदन नाथ भगवान ने किस समय मोक्ष प्राप्त किया?

उत्तर– श्री अभिनंदन नाथ भगवान ने पूर्वान्ह काल में मोक्ष प्राप्त किया।

प्रश्न 1123. श्री अभिनंदन नाथ भगवान ने किस नक्षत्र में मोक्ष प्राप्त किया ?

उत्तर– श्री अभिनंदन नाथ भगवान ने पुनर्वसु नक्षत्र में मोक्ष प्राप्त किया।

प्रश्न 1124. श्री अभिनंदन नाथ भगवान ने किस स्थान से मोक्ष प्राप्त किया

उत्तर– श्री अभिनंदन नाथ भगवान ने श्री सम्मेद शिखर से मोक्ष प्राप्त किया।

प्रश्न 1125. श्री अभिनंदन नाथ भगवान ने किस कूट से मोक्ष प्राप्त किया ?

उत्तर– श्री अभिनंदन नाथ भगवान आनंद कूट से मोक्ष प्राप्त किया।

प्रश्न 1126. श्री अभिनंदन नाथ भगवान ने कितने मुनियों के साथ मोक्ष प्राप्त किया ?

उत्तर– श्री अभिनंदन नाथ भगवान ने एक हजार मुनियो के साथ मोक्ष प्राप्त किया।

प्रश्न 1127. श्री अभिनंदन नाथ भगवान का योगनिवृत्ति काल कितना था ?

उत्तर– श्री अभिनंदन नाथ भगवान का योगनिवृत्ति काल 1 माह था।

प्रश्न 1128. श्री अभिनंदन नाथ भगवान ने किस आसन से मोक्ष प्राप्त किया है ?

उत्तर– श्री अभिनंदन नाथ भगवान ने खड्गासन से मोक्ष प्राप्त किया।

प्रश्न 1129. श्री अभिनंदन नाथ भगवान ने कौन सा पद प्राप्त किया था ?

उत्तर– श्री अभिनंदन नाथ भगवान ने महामण्डलीक राजा का पद प्राप्त किया।

प्रश्न 1130. श्री अभिनंदन नाथ भगवान के शासन काल में चतुर्विध संघ को यात्रा कराने वाले संघपति का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री अभिनंदननाथ भगवान के शासन काल में चतुर्विध संघ को यात्रा कराने वाले संघपति का नाम श्री सनत्कुमार चक्रवर्ती था।

प्रश्न 1131. श्री अभिनंदन नाथ भगवान के शासन से संबंधित क्षेत्रपालों के नाम क्या थे ?

उत्तर– 1. श्री महाभ्रदजी, 2. श्री भद्र भद्रजी, 3. श्री सतभद्र जी, 4. श्री दानभद्र जी थे।

प्रश्न 1132. श्री अभिनंदन नाथ भगवान के अनुबद्ध केवलियों की संख्या कितनी थी ?

उत्तर– श्री अभिनंदन नाथ भगवान के चौरासी अनुबद्ध केवली थे।

प्रश्न 1133. श्री अभिनंदन नाथ भगवान के कितने शिष्यों के अनुत्तर विमानों को प्राप्त किया ?

उत्तर– श्री अभिनंदन नाथ भगवान के बारह हजार मुनियों ने अनुत्तर विमानों को प्राप्त किया।

प्रश्न 1134. श्री अभिनंदन नाथ भगवान के कितने शिष्यों ने मोक्ष प्राप्त किया ?

उत्तर– श्री अभिनंदन नाथ भगवान के दो लाख अस्सी हजार एक सौ मुनियों ने मोक्ष प्राप्त किया।

प्रश्न 1135. श्री अभिनंदन नाथ भगवान के कितने शिष्यों ने स्वर्गादि ग्रैवेयक विमानों को प्राप्त किया ?

उत्तर– श्री अभिनंदन नाथ भगवान के सात हजार नौ सौ शिष्यों ने र्स्वगादि ग्रैवेयक विमानों की प्राप्त किया।

प्रश्न 1136. भगवान श्री अभिनंदन नाथ का तीर्थ प्रवर्तन काल कितने वर्षों का था?

उत्तर– श्री अभिनंदन नाथ भगवान के नौ लाख करोड़ सागर, चार पूर्वांग वर्ष रहा।

प्रश्न 1137. भगवान श्री अभिनंदन नाथ के मोक्ष जाने के बाद कितने मुनि मोक्ष गये ?

उत्तर– भगवान श्री अभिनंदन नाथ के मोक्ष जाने के बाद 1,84,12,781 मुनि मोक्ष गये।

5

भगवान श्री सुमतिनाथ जी

प्रश्न 1138. पांचवे तीर्थंकर का नाम क्या है?

उत्तर– पांचवे तीर्थंकर का नाम श्री सुमतिनाथ जी है।

प्रश्न 1139. श्री सुमतिनाथ भगवान के पिता का नाम क्या है ?

उत्तर– श्री सुमतिनाथ भगवान के पिता का नाम श्री मेघप्रभ जी है।

प्रश्न 1140. श्री सुमतिनाथ भगवान की माता का क्या नाम है ?

उत्तर– श्री सुमतिनाथ भगवान की माता का नाम श्री मंगलादेवी है।

प्रश्न 1141. श्री सुमतिनाथ भगवान कहाँ से गर्भ में आये ?

उत्तर– श्री सुमतिनाथ भगवान जयंत नाम के विमान से गर्भ में आये।

प्रश्न 1142. श्री सुमतिनाथ की पूर्व भव की देव आयु कितनी थी ?

उत्तर– श्री सुमतिनाथ की पूर्व भव की देव आयु 33 सागर थी।

प्रश्न 1143. श्री सुमतिनाथ भगवान की आयु कितनी थी ?

उत्तर– श्री सुमतिनाथ भगवान की आयु चालिस लाख वर्ष पूर्व थी।

प्रश्न 1144. श्री सुमतिनाथ भगवान के वंश का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री सुमतिनाथ भगवान के वंश का नाम इक्ष्वाकुवंश था।

प्रश्न 1145. भगवान श्री सुमतिनाथ ने तीर्थंकर प्रकृति का बंध कौन सी पर्याय में किया ?

उत्तर– भगवान श्री सुमतिनाथ ने तीर्थंकर प्रकृति का बंध महाराज रतिसेण की पर्याय में किया।

प्रश्न 1146. श्री सुमतिनाथ भगवान की पूर्व पर्याय का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री सुमतिनाथ भगवान की पूर्व पर्याय का नाम श्री रतिषेण राजा था।

प्रश्न 1147. श्री रतिषेण कहाँ के राजा था ?

उत्तर– श्री रतिषेण पुष्कलावती नामक देश के राजा थे।

प्रश्न 1148. भगवान श्री सुमतिनाथ के पूर्व भव के पिता का नाम क्या था ?

उत्तर– भगवान श्री समुतिनाथ के पूर्व भव के पिता विमलवाहन थे।

प्रश्न 1149. भगवान श्री सुमतिनाथ के पूर्व भव के दीक्षा गुरू कौन थे ?

उत्तर– भगवान श्री सुमतिनाथ के पूर्व भव के दीक्षा गुरू सीमंधर थे।

प्रश्न 1150. श्री सुमतिनाथ भगवान पूर्व पर्याय मे किस नगरी के राजा थे ?

उत्तर– श्री सुमतिनाथ भगवान पुंडरीकिणी नगरी के राजा थे।

प्रश्न 1151. श्री रतिषेण राजा के पुत्र का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री रतिषेण राजा के पुत्र का नाम अतिरथ था।

प्रश्न 1152. श्री सुमतिनाथ भगवान का गर्भ कल्याणक कौन सी तिथि को हुआ था ?

उत्तर– श्री सुमतिनाथ भगवान का गर्भ कल्याणक श्रावण शुक्ला द्वितीया को हुआ था।

प्रश्न 1153. श्री सुमतिनाथ भगवान का गर्भ कल्याणक कौन से नक्षत्र में हुआ था ?

उत्तर– श्री सुमतिनाथ भगवान का गर्भ कल्याणक मघा नक्षत्र में हुआ था।

प्रश्न 1154. श्री सुमतिनाथ भगवान का जन्म कहाँ हुआ था ?

उत्तर– श्री सुमतिनाथ भगवान का जन्म अयोध्यानगरी में हुआ था।

प्रश्न 1155. श्री सुमतिनाथ भगवान के जन्म कल्याणक की तिथि क्या थी ?

उत्तर– श्री सुमतिनाथ भगवान के जन्म कल्याणक की तिथि चैत्र शुक्ला एकादशी थी।

प्रश्न 1156. श्री सुमतिनाथ भगवान का जन्म कौन-से नक्षत्र में हुआ था ?

उत्तर– श्री सुमतिनाथ भगवान का जन्म मघा नक्षत्र में हुआ था।

प्रश्न 1157. श्री सुमतिनाथ भगवान का कुमार काल कितने वर्ष का था ?

उत्तर– श्री सुमतिनाथ भगवान का कुमार काल दस लाख वर्ष पूर्व का था।

प्रश्न 1158. भगवान श्री सुमतिनाथ की जन्म राशि कौन-सी थी ?

उत्तर– भगवान श्री सुमतिनाथ की जन्म राशि सिंह थी।

प्रश्न 1159. श्री सुमतिनाथ भगवान कहाँ के राजा थे ?

उत्तर– श्री सुमतिनाथ भगवान साकेत नगरी के राजा थे।

प्रश्न 1160. श्री सुमतिनाथ भगवान के शरीर की ऊँचाई कितनी थी ?

उत्तर– श्री सुमतिनाथ भगवान के शरीर की ऊँचाई तीन सौ धनुष थी।

प्रश्न 1161. श्री सुमतिनाथ भगवान के शरीर का वर्ण कैसा था ?

उत्तर– श्री सुमतिनाथ भगवान के शरीर का वर्ण सुवर्ण वर्ण था।

प्रश्न 1162. श्री सुमतिनाथ भगवान का चिन्ह क्या था ?

उत्तर– श्री सुमतिनाथ भगवान का चिन्ह चकवा था।

प्रश्न 1163. श्री सुमतिनाथ भगवान ने कितने वर्ष तक राज्य किया ?

उत्तर– श्री सुमतिनाथ भगवान ने उन्तीस लाख वर्ष पूर्व तथा बारह पूर्वांग तक राज्य किया।

प्रश्न 1164. श्री सुमतिनाथ भगवान को वैराग्य किस कारण हुआ ?

उत्तर– श्री सुमतिनाथ भगवान को जाति-स्मरण से वैराग्य हुआ।

प्रश्न 1165. श्री सुमतिनाथ भगवान की दीक्षा तिथि क्या थी ?

उत्तर– श्री सुमतिनाथ भगवान की दीक्षा तिथि वैशाख शुक्ला नवमी थी।

प्रश्न 1166. श्री सुमतिनाथ भगवान का दीक्षा नक्षत्र क्या था ?

उत्तर– श्री सुमतिनाथ भगवान का दीक्षा नक्षत्र मघा था।

प्रश्न 1167. श्री सुमतिनाथ भगवान का दीक्षा कौन से नगर में हुई।

उत्तर– श्री सुमतिनाथ भगवान की दीक्षा अयोध्या नगर में हुई।

प्रश्न 1168. श्री समुतिनाथ भगवान ने कौन से वन में दीक्षा ली ?

उत्तर– श्री सुमतिनाथ भगवान ने सहेतुक वन में दीक्षा ली।

प्रश्न 1169. श्री सुमतिनाथ भगवान ने किस समय दीक्षा ली ?

उत्तर– श्री सुमतिनाथ भगवान ने पूर्वान्ह काल में दीक्षा ली।

प्रश्न 1170. श्री सुमतिनाथ भगवान ने दीक्षा के समय कितने उपवास किये ?

उत्तर– श्री समुतिनाथ भगवान ने दीक्षा के समय तीन उपवास किए।

प्रश्न 1171. श्री सुमतिनाथ भगवान ने कितने राजाओं के साथ दीक्षा ली ?

उत्तर– श्री सुमतिनाथ भगवान ने एक हजार राजाओं के साथ दीक्षा ली।

प्रश्न 1172. श्री सुमतिनाथ भगवान ने कितने वर्ष तप किया ?

उत्तर– श्री सुमतिनाथ भगवान ने बीस वर्ष तप किया।

प्रश्न 1173. श्री सुमतिनाथ भगवान की दीक्षा पालकी का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री सुमतिनाथ भगवान की दीक्षा पालकी का नाम अभया था।

प्रश्न 1174. श्री सुमतिनाथ भगवान का आहार कौन से नगर में हुआ था ?

उत्तर श्री सुमतिनाथ भगवान का आहार सौमनस नाम के नमर में हुआ था।

प्रश्न 1175. श्री सुमतिनाथ भगवान ने पहला आहार किसके यहाँ लिया था ?

उत्तर– श्री सुमतिनाथ भगवान ने पहला आहार प्रद्युम्नद्युति नाम के राजा के यहाँ लिया था।

प्रश्न 1176. श्री सुमतिनाथ भगवान ने किस वस्तु का आहार लिया था ?

उत्तर– श्री सुमतिनाथ भगवान ने खीर का आहार लिया था।

प्रश्न 1177. श्री सुमतिनाथ भगवान ने किस वृक्ष के नीचे दीक्षा ग्रहण की ?

उत्तर– श्री सुमतिनाथ भगवान ने प्रियंगु वृक्ष के नीचे दीक्षा ग्रहण की।

प्रश्न 1178. श्री सुमतिनाथ भगवान को केवलज्ञान कौन सी तिथि को हुआ था ?

उत्तर– श्री सुमतिनाथ भगवान को केवलज्ञान चैत्र शुक्ला ग्यारस को हुआ था।

प्रश्न 1179. श्री सुमतिनाथ भगवान को केवलज्ञान किस समय हुआ था ?

उत्तर– श्री सुमतिनाथ भगवान को केवलज्ञान अपरान्ह काल में हुआ था।

प्रश्न 1180. श्री सुमतिनाथ भगवान को केवलज्ञान कौन से नक्षत्र में हुआ ?

उत्तर– श्री सुमतिनाथ भगवान को केवलज्ञान हस्त नक्षत्र में हुआ था।

प्रश्न 1181. श्री सुमतिनाथ भगवान को किस स्थान पर केवल ज्ञान हुआ ?

उत्तर– श्री सुमतिनाथ भगवान को केवल ज्ञान सहेतुक वन में हुआ।

प्रश्न 1182. श्री सुमतिनाथ भगवान को केवलज्ञान किस वृक्ष के नीचे हुआ ?

उत्तर– श्री सुमतिनाथ भगवान को केवलज्ञान प्रियंगु वृक्ष के नीचे हुआ था।

प्रश्न 1183. श्री सुमतिनाथ भगवान का समवशरण कितना विस्तरित था ?

उत्तर– श्री सुमतिनाथ भगवान का समवशरण दस योजन विस्तरित था।

प्रश्न 1184. श्री सुमतिनाथ भगवान की शासनदेवी का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री सुमतिनाथ भगवान की शासनदेवी का नाम श्री पुरुषदत्ता था।

प्रश्न 1185. श्री सुमतिनाथ भगवान के शासनदेव का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री सुमतिनाथ भगवान के शासनदेव का नाम श्री तुम्बुर देव था।

प्रश्न 1186. श्री सुमतिनाथ भगवान के शासन देव क्षेत्रपालों के नाम क्या थे ?

उत्तर– श्री सुमतिनाथ भगवान के शासन देव क्षेत्रपालों के नाम 1. श्री कल्याण चन्द्र 2. श्री महाचन्द्र, 3. श्री पद्मचन्द्र, 4. श्री नय चन्द्र थे।

प्रश्न 1187. श्री सुमतिनाथ भगवान के शासन में चतुर्विध संघ के संघपति का नाम क्या था

उत्तर– श्री सुमतिनाथ भगवान के शासन में चतुर्विध संघ के संघपति का नाम श्री राजा आनंद सेन था।

प्रश्न 1188. श्री सुमतिनाथ भगवान का केवलीकाल कितने वर्षों का था ?

उत्तर– श्री सुमतिनाथ भगवान का केवलीकाल एक लाख पूर्व में 12 पूर्वांग 20 वर्ष कम था।

प्रश्न 1189. श्री सुमतिनाथ भगवान के गणधरों की संख्या कितनी थी ?

उत्तर– श्री सुमतिनाथ भगवान के एक सौ सोलह गणधर थे।

प्रश्न 1190. श्री सुमतिनाथ भगवान के प्रमुख गणधर का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री सुमतिनाथ भगवान के प्रमुख गणधर वज्रसेन (अमर वज्र) थे।

प्रश्न 1191. श्री सुमतिनाथ भगवान के समोशरण में ऋषियों की कितनी संख्या थी।

उत्तर– श्री सुमतिनाथ भगवान के समोशरण में तीन लाख बीस हजार ऋषि थे।

प्रश्न 1192. श्री सुमतिनाथ भगवान के समोशरण में पूर्वधर मुनि कितने थे ?

उत्तर– श्री सुमतिनाथ भगवान के समोशरण में दो हजार चार सौ पूर्वधर मुनि थे।

प्रश्न 1193. श्री सुमतिनाथ भगवान के समोशरण में कितने शिक्षक मुनि थे?

उत्तर– श्री सुमतिनाथ भगवान के समोशरण में दो लाख चौवन हजार तीन सौ पचास शिक्षक मुनि थे।

प्रश्न 1194. श्री सुमतिनाथ भगवान के समोशरण में अवधिज्ञानी मुनि कितने थे ?

उत्तर– श्री सुमतिनाथ भगवान के समोशरण में ग्यारह हजार अवधि ज्ञानी मुनि थे।

प्रश्न 1195. श्री सुमतिनाथ भगवान के समोशरण में कितने केवली मुनि थे ?

उत्तर– श्री सुमतिनाथ भगवान के समोशरण में तेरह हजार केवली मुनि थे।

प्रश्न 1196. श्री सुमतिनाथ भगवान के समोशरण में विक्रियाधारी मुनि कितने थे ?

उत्तर– श्री सुमतिनाथ भगवान के समोशरण में अठारह हजार चार सौ विक्रियाधारी मुनि थे।

प्रश्न 1197. श्री सुमतिनाथ भगवान के विपुलमती ज्ञान के धारक मुनि कितने थे?

उत्तर– श्री सुमतिनाथ भगवान के समोशरण में दस हजार चार सौ विपुलमति मनःपर्यय ज्ञान के धारक मुनि थे।

प्रश्न 1198. श्री सुमतिनाथ भगवान के समोशरण में वादी कितने थे ?

उत्तर– श्री सुमतिनाथ भगवान के समोशरण दस हजार चार सौ पाचस वादी मुनि थे।

प्रश्न 1199. श्री सुमतिनाथ भगवान के समोशरण में कितनी आर्यिकायें थीं ?

उत्तर– श्री सुमतिनाथ भगवान के समोशरण में तीन लाख तीस हजार आर्यिकायें थीं।

प्रश्न 1200. श्री सुमतिनाथ भगवान के समोशरण में प्रमुख आर्यिका कौन थी ?

उत्तर– श्री सुमतिनाथ भगवान के समोशरण में आर्यिका श्री अनंतमती जी प्रमुख थी।

प्रश्न 1201. श्री सुमतिनाथ भगवान के समोशरण में कितने श्रावक थे ?

उत्तर– श्री सुमतिनाथ भगवान के समोशरण में तीन लाख श्रावक थे।

प्रश्न 1202. श्री सुमतिनाथ भगवान के समोशरण में श्राविकाओं की संख्या कितनी थी ?

उत्तर– श्री सुमतिनाथ भगवान के समोशरण में पाँच लाख श्राविकायें थी।

प्रश्न 1203. श्री सुमतिनाथ भगवान के समोशरण में प्रमुख श्रोता कौन थे ?

उत्तर– श्री सुमतिनाथ भगवान के समोशरण में प्रमुख श्रोता श्री मित्रवीर्य जी थे।

प्रश्न 1204. श्री सुमतिनाथ भगवान किस तिथि को मोक्ष गए ?

उत्तर– श्री सुमतिनाथ भगवान चैत्र शुक्ला ग्यारस को मोक्ष गए।

प्रश्न 1205. श्री सुमतिनाथ भगवान ने मोक्ष किस समय प्राप्त किया ?

उत्तर– श्री सुमतिनाथ भगवान ने पूर्वान्ह काल में मोक्ष समय प्राप्त किया

प्रश्न 1206. श्री सुमतिनाथ भगवान ने कौन से नक्षत्र में मोक्ष प्राप्त किया ?

उत्तर– श्री सुमतिनाथ भगवान ने मघा नक्षत्र में मोक्ष प्राप्त किया था।

प्रश्न 1207. श्री सुमतिनाथ भगवान कहाँ से, किस आसन से मोक्ष गए ?

उत्तर– श्री सुमतिनाथ भगवान श्री सम्मेद शिखर से खड्गासन से मोक्ष गए।

प्रश्न 1208. श्री सुमतिनाथ भगवान ने कितने मुनियों के साथ मोक्ष प्राप्त किया ?

उत्तर– श्री सुमतिनाथ भगवान ने एक हजार मुनियों के साथ मोक्ष प्राप्त किया।

प्रश्न 1209. श्री सुमतिनाथ भगवान का योग निर्वृत्ति काल कितना था ?

उत्तर– श्री सुमतिनाथ भगवान का एक माह का योग निर्वृति काल था।

प्रश्न 1210. श्री सुमतिनाथ भगवान ने कौन से कूट से मोक्ष प्राप्त किया ?

उत्तर– श्री सुमतिनाथ भगवान ने अविचल कूट से मोक्ष प्राप्त किया।

प्रश्न 1211. श्री सुमतिनाथ भगवान के अनुबद्ध केवलियों की संख्या कितनी थी?

उत्तर– श्री सुमतिनाथ भगवान के चौरासी अनुबद्ध केवली थे।

प्रश्न 1212. श्री सुमतिनाथ भगवान के कितने शिष्यों ने अनुत्तरादि विमानों को प्राप्त किया ?

उत्तर– श्री सुमतिनाथ भगवान के बारह हजार शिष्यों ने अनुत्तर विमानों को प्राप्त किया।

प्रश्न 1213. श्री सुमतिनाथ भगवान के कितने शिष्यों ने मोक्ष प्राप्त किया ?

उत्तर– श्री सुमितनाथ भगवान के तीन लाख सोलह हजार मुनियों ने मोक्ष प्राप्त किया।

प्रश्न 1214. श्री सुमतिनाथ भगवान के कितने शिष्यों ने पहले स्वर्ग से ग्रैवेयक तक प्राप्त किया ?

उत्तर– श्री सुमतिनाथ भगवान के छह हजार चार सौ मुनियों ने पहले स्वर्ग से ग्रैवेयक तक प्राप्त किया।

प्रश्न 1215. श्री सुमतिनाथ भगवान का तीर्थ प्रर्वतन काल कितने वर्षों का था ?

उत्तर– श्री सुमतिनाथ भगवान का तीर्थ प्रर्वतन काल नब्बे हजार करोड़ सागर चार पूर्वांग वर्ष का था।

प्रश्न 1216. भगवान श्री सुमतिनाथ के मोक्ष जाने के बाद कितने मुनि मोक्ष गये ?

उत्तर– भगवान श्री सुमतिनाथ के मोक्ष जाने के बाद 998442707 मुनि मोक्ष गये।

6

भगवान श्री पद्मप्रभु जी

प्रश्न 1217. छठे तीर्थंकर कौन से है ?

उत्तर– छठे तीर्थंकर श्री पद्मप्रभु जी है।

प्रश्न 1218. श्री पद्मप्रभु भगवान की पूर्व पर्याय का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री पद्मप्रभु भगवान की पूर्व पर्याय का नाम श्री अपराजित राजा था।

प्रश्न 1219. भगवान श्री पद्मप्रभु ने तीर्थंकर प्रकृति का बंध कौन सी पर्याय में किया ?

उत्तर– भगवान ने श्री पद्मप्रभ ने तीर्थंकर प्रकृति का बंध महाराज अपराजित की पर्याय में किया।

प्रश्न 1220. भगवान श्री पद्मप्रभु के पूर्व भव के पिता का नाम क्या था ?

उत्तर– भगवान श्री पद्मप्रभु के पूर्व भव के पिता का नाम सीमंधर था ?

प्रश्न 1221. भगवान श्री पद्मप्रभु के पूर्व भव के दीक्षा गुरु कौन थे।

उत्तर– भगवान श्री पद्मप्रभु के पूर्व भव के दीक्षा गुरु पिहताश्रव थे।

प्रश्न 1222. भगवान श्री पद्मप्रभु के पूर्व भव की देव आयु कितनी थी ?

उत्तर– भगवान श्री पद्मप्रभु के पूर्व भव की देव आयु 31 सागर थी।

प्रश्न 1223. श्री अपराजित कहाँ के राजा थे ?

उत्तर– श्री अपराजित सुसीमा नगरी के राजा थे।

प्रश्न 1224. सुसीमा नगरी कहाँ है?

उत्तर– सुसीमा नगरी धातकी खंड के पूर्व विदेह के वत्सा देश में स्थित है।

प्रश्न 1225. श्री पद्म प्रभु भगवान ने किस वंश में जन्म लिया ?

उत्तर– श्री पद्मप्रभु भगवान ने इक्ष्वाकु वंश में जन्म लिया।

प्रश्न 1226. श्री पद्मप्रभु भगवान कहाँ से गर्भ में आये थे ?

उत्तर– श्री पद्मप्रभु भगवान माघ कृष्णा छट को गर्भ में आये।

प्रश्न 1227. श्री पद्मप्रभु भगवान किस तिथि का गर्भ में आये ?

उत्तर– श्री पद्मप्रभु भगवान उपरिम ग्रैवेयक के प्रीतिकर विमान से गर्भ मे आये।

प्रश्न 1228. श्री सुमतिनाथ के मोक्ष जाने के कितने समय बाद भगवान श्री पद्मप्रभु जी का जन्म हुआ ?

उत्तर– श्री भगवान श्री सुमतिनाथ के मोक्ष जाने के नब्बे हजार करोड़ सागर बाद श्री पद्मप्रभु जी का जन्म हुआ।

प्रश्न 1229. भगवान श्री पद्मप्रभु जी के माता-पिता का नाम क्या था ?

उत्तर– भगवान श्री पद्मप्रभु के पिता का नाम राजाधरण तथा माता का नाम सुसीमा देवी था।

प्रश्न 1230. श्री पद्मप्रभु भगवान कौन-से नक्षत्र में गर्भ में आये ?

उत्तर– श्री पद्मप्रभु भगवान चित्रा नक्षत्र में गर्भ में आये।

प्रश्न 1231. श्री पद्मप्रभु भगवान ने कौन-सी नगरी में जन्म लिया ?

उत्तर– श्री पद्मप्रभु भगवान ने कौशाम्बी नगरी में जन्म लिया।

प्रश्न 1232. श्री पद्म प्रभ भगवान की जन्म तिथि बताइये ?

उत्तर– श्री पद्मप्रभु भगवान कार्तिक कृष्णा तेरस को जन्मे थे।

प्रश्न 1233. श्री पद्मप्रभु भगवान ने कौन से नक्षत्र में जन्म लिया ?

उत्तर– श्री पद्मप्रभु भगवान ने चित्रा नक्षत्र में जन्म लिया।

प्रश्न 1234. भगवान श्री पद्मप्रभु की जन्म राशि कौन-सी थी?

उत्तर– भगवान श्री पद्मप्रभु की जन्म राशि कन्या थी।

प्रश्न 1235. श्री पद्मप्रभु भगवान की कितनी आयु थी?

उत्तर– श्री पद्मप्रभु भगवान की आयु तीस लाख वर्ष पूर्व थी।

प्रश्न 1236. श्री पद्मप्रभु भगवान का कुमार काल कितने वर्ष का था ?

उत्तर– श्री पद्मप्रभु भगवान का कुमार काल साढ़े सात लाख वर्ष पूर्व का था।

प्रश्न 1237. श्री पद्मप्रभु भगवान का चिन्ह क्या है ?

उत्तर– श्री पद्मप्रभु भगवान लाल कमल से जाने जाते हैं।

प्रश्न 1238. श्री पद्मप्रभु भगवान के शरीर ऊँचाई कितनी थी ?

उत्तर– श्री पद्मप्रभु भगवान के शरीर की ऊँचाई दो सौ पचास धनुष थी।

प्रश्न 1239. श्री पद्मप्रभु भगवान के शरीर का रंग कैसा था ?

उत्तर– श्री पद्मप्रभु भगवान के शरीर का रंग विद्रुमवर्ण, (लालवर्ण) था।

प्रश्न 1240. श्री पद्मप्रभु भगवान का राज्यकाल कितने वर्ष का था ?

उत्तर– श्री पद्मप्रभु भगवान का राज्यकाल साढ़े इक्कीस लाख वर्ष पूर्व सोलह पूर्वांग का था।

प्रश्न 1241. श्री पद्मप्रभु भगवान को वैराग्य किस प्रकार हुआ ?

उत्तर– श्री पद्मप्रभु भगवान को वैराग्य जाति स्मरण से हुआ था।

प्रश्न 1242. श्री पद्मप्रभु भगवान की दीक्षा कौन सी तिथि को हुई थी ?

उत्तर– श्री पद्मप्रभु भगवान की दीक्षा कार्तिक कृष्णा तेरस का हुई थी।

प्रश्न 1243. श्री पद्मप्रभु भगवान ने दीक्षा कौन से नेक्षत्र में ली ?

उत्तर– श्री पद्मप्रभु भगवान ने दीक्षा चित्रा नक्षत्र में ली।

प्रश्न 1244. श्री पद्मप्रभु भगवान ने कौन से वन में दीक्षा ली ?

उत्तर– श्री पद्मप्रभु भगवान ने मनोहर वन में दीक्षा ली।

प्रश्न 1245. श्री पद्मप्रभु भगवान ने किस समय दीक्षा ली ?

उत्तर– श्री पद्मप्रभु अपरान्ह काल में दीक्षा ली।

प्रश्न 1246. श्री पद्मप्रभु भगवान ने कितने दीक्षा उपवास किये ?

उत्तर– श्री पद्मप्रभु भगवान ने दो उपवास (तृतीय भक्त) किये थे।

प्रश्न 1247. श्री पद्मप्रभु भगवान की दीक्षा पालकी का क्या नाम था ?

उत्तर– श्री पद्मप्रभु भगवान निवृत्ति नाम की दीक्षा पालकी थी।

प्रश्न 1248. श्री पद्मप्रभु भगवान का प्रथम आहर कौन से नगर में हुआ था ?

उत्तर– श्री पद्मप्रभु भगवान का आहार वर्धमान पुर नाम के नगर में हुआ था।

प्रश्न 1249. श्री पद्मप्रभु भगवान को सर्वप्रथम आहार किसने दिया था ?

उत्तर– श्री पद्मप्रभु भगवान का आहार श्री सोमदत्त राजा ने दिया था।

प्रश्न 1250. श्री पद्मप्रभु भगवान ने कितने राजाओं के साथ दीक्षा ली ?

उत्तर– श्री पद्मप्रभु भगवान ने एक हजार राजाओं के साथ दीक्षा ली।

प्रश्न 1251. श्री पद्मप्रभु भगवान ने कितने समय तक तप किया ?

उत्तर– श्री पद्मप्रभु भगवान ने छह महीने तक तप किया।

प्रश्न 1252. श्री पद्मप्रभु भगवान की दीक्षा कौन से नगर में हुई थी ?

उत्तर– श्री पद्मप्रभु भगवान की दीक्षा कौशाम्बी नगर में हुई थी।

प्रश्न 1253. श्री पद्मप्रभु भगवान ने किस वृक्ष के नीचे दीक्षा ली ?

उत्तर– श्री पद्मप्रभु भगवान ने प्रियंगु वृक्ष के नीचे दीक्षा ली थी।

प्रश्न 1254. श्री पद्मप्रभु भगवान ने किस वस्तु का आहार लिया था।

उत्तर– श्री पद्मप्रभु भगवान ने खीर का आहार लिया था।

प्रश्न 1255. श्री पद्मप्रभु भगवान को केवलज्ञान कौन-सी तिथि को हुआ था ?

उत्तर– श्री पद्मप्रभु भगवान को केवलज्ञान चैत्र शुक्ला पूर्णिमा को हुआ था।

प्रश्न 1256. श्री पद्मप्रभु भगवान को केवलज्ञान कौन से नक्षत्र में हुआ था ?

उत्तर– श्री पद्मप्रभु भगवान को केवलज्ञान चित्रा नक्षत्र में हुआ था।

प्रश्न 1257. श्री पद्मप्रभु भगवान को केवलज्ञान किस समय हुआ था ?

उत्तर– श्री पद्मप्रभु भगवान को केवलज्ञान अपरान्ह काल में हुआ था।

प्रश्न 1258. श्री पद्मप्रभु भगवान ने केवलज्ञान कहाँ प्राप्त किया था ?

उत्तर– श्री पद्मप्रभु भगवान ने केवलज्ञान मनोहर वन में प्राप्त किया था।

प्रश्न 1259. श्री पद्मप्रभु भगवान को केवलज्ञान कौन से नगर में हुआ था ?

उत्तर– श्री पद्मप्रभु भगवान को केवलज्ञान कौशाम्बी नगर में हुआ था।

प्रश्न 1260. श्री पद्मप्रभु भगवान को केवलज्ञान किस वृक्ष के नीचे हुआ था ?

उत्तर– श्री पद्मप्रभु भगवान केवलज्ञान प्रियंगुवृक्ष के नीचे हुआ था।

प्रश्न 1261. श्री पद्मप्रभु भगवान के समोशरण का विस्तार कितना था ?

उत्तर– श्री पद्मप्रभु भगवान के समोशरण का विस्तार साढ़े 9 योजन था।

प्रश्न 1262. श्री पद्मप्रभु भगवान की शासन देव का नाम क्या था।

उत्तर– श्री पद्मप्रभु भगवान के शासन देव का नाम कुसुम यक्ष था।

प्रश्न 1263. श्री पद्मप्रभु भगवान की शासन देवी का नाम क्या था।

उत्तर– श्री पद्मप्रभु भगवान के शासन देवी का नाम मनोवेगा था।

प्रश्न 1264. श्री पद्मप्रभु भगवान का केवली काल कितने वर्षो का था ?

उत्तर– एक लाख पूर्व में सोलह पूर्वांग छह मास कम था।

प्रश्न 1265. श्री पद्मप्रभु भगवान के शासन से सम्बन्धित क्षेत्रपाल देवों के नाम क्या थे ?

उत्तर– 1. श्री कलचन्द्र, 2. श्री कल्प चन्द्र, 3. श्री कुमुद चन्द्र 4. श्री कुमुद चन्द्र जी थे।

प्रश्न 1266. श्री पद्मप्रभु भगवान के समोशरण में कितने गणधर थे ?

उत्तर– श्री पद्मप्रभु भगवान के समोशरण में एक सौ ग्यारह गणधर थे।

प्रश्न 1267. श्री पद्मप्रभु भगवान के प्रमुख गणधर का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री पद्मप्रभु भगवान के प्रमुख गणधर वज्र चमर जी थे।

प्रश्न 1268. श्री पद्मप्रभु भगवान के समोशरण में कितने ऋषि थे ?

उत्तर– श्री पद्मप्रभु भगवान के समोशरण में तीन लाख तीस हजार ऋषि थे।

प्रश्न 1269. श्री पद्मप्रभु भगवान के समोशरण में कितने पूर्वधर मुनि थे ?

उत्तर– श्री पद्मप्रभु भगवान के समोशरण में दो हजार तीन सौ पूर्वधर मुनि थे।

प्रश्न 1270. श्री पद्मप्रभु भगवान के शिक्षक मुनियों की संख्या कितनी थी ?

उत्तर– श्री पद्मप्रभु भगवान के शिक्षक मुनियों की संख्या एक लाख उनत्तर हजार थी।

प्रश्न 1271. श्री पद्मप्रभु भगवान के समोशरण में कितने अवधि-ज्ञानी मुनि थे।

उत्तर– श्री पद्मप्रभु भगवान के समोशरण में नौ हजार छह सौ अवधि-ज्ञानी मुनि थे।

प्रश्न 1272. श्री पद्मप्रभु भगवान के समोशरण में केवलज्ञानी मुनि कितने थे ?

उत्तर– श्री पद्मप्रभु भगवान के समोशरण में केवलज्ञानी मुनि बारह हजार थे।

प्रश्न 1273. श्री पद्मप्रभु भगवान के समोशरण में विक्रियाधारी मुनियों की संख्या कितनी थी।

उत्तर– श्री पद्मप्रभु भगवान के समोशरण में विक्रियाधारी मुनि सोलह हजार आठ सौ थे।

प्रश्न 1274. श्री पद्मप्रभु भगवान के समोशरण में कितने वादी मुनि थे ?

उत्तर– श्री पद्मप्रभु भगवान के समोशरण मे नौ हजार छह सौ वादी मुनि थे।

प्रश्न 1275. श्री पद्म भगवान के समोशरण में कितनी आर्यिकायें थी ?

उत्तर– श्री पद्मप्रभु भगवान के समोशरण में चार लाख बीस हजार आर्यिकायें थी।

प्रश्न 1276. श्री पद्मप्रभु भगवान के समोशरण में प्रमुख आर्यिका कौन थी ?

उत्तर– श्री पद्मप्रभु भगवान के समोशरण में आर्यिका प्रमुख श्री रतिषेणा जी थीं।

प्रश्न 1277. श्री पद्मप्रभु भगवान के समोशरण में कितने श्रावक थे?

उत्तर–

प्रश्न 1278. श्री पद्मप्रभु भगवान के समोशरण में विपुलमति मनःपर्यय मति ज्ञान के धारक कितने मुनि थे ?

उत्तर– श्री पद्मप्रभु भगवान के समोशरण विपुलमति मनःपर्यय ज्ञान के धारक दस हजार तीन सौ थे।

प्रश्न 1279. श्री पद्मप्रभु भगवान के समोशरण में कितने श्राविकायें थी ?

उत्तर– श्री पद्मप्रभु भगवान के समोशरण में पाँच लाख श्राविकायें थीं।

प्रश्न 1280. श्री पद्मप्रभु भगवान को मोक्ष कौन सी तिथि में हुआ था ?

उत्तर– श्री पद्मप्रभु भगवान को मोक्ष श्री फाल्गुन कृष्णा चतुर्थी को हुआ था।

प्रश्न 1281. श्री पद्मप्रभु भगवान को मोक्ष किस समय हुआ था ?

उत्तर– श्री पद्मप्रभु भगवान को मोक्ष अपरान्ह काल में हुआ था।

प्रश्न 1282. श्री पद्मप्रभु भगवान को मोक्ष किस नक्षत्र में हुआ था ?

उत्तर– श्री पद्मप्रभु भगवान को मोक्ष चित्रा नक्षत्र में हुआ था।

प्रश्न 1283. श्री पद्मप्रभु भगवान कहाँ से मोक्ष गये ?

उत्तर– श्री पद्मप्रभु भगवान श्री सम्मेद शिखर जी से मोक्ष गए।

प्रश्न 1284. श्री पद्मप्रभु भगवान सम्मेद शिखर में किस कूट से मोक्ष गये ?

उत्तर– श्री पद्मप्रभु भगवान सम्मेद शिखर में मोहन कूट से मोक्ष गए।

प्रश्न 1285. श्री पद्मप्रभु भगवान के शासन काल में चतुर्विध संघ को यात्रा करने वाले संघपति का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री पद्मप्रभु भगवान के शासन काल में चतुर्विध संघ को यात्रा करने वाले संघपति का नाम राजा सुप्रभ जी था।

प्रश्न 1286. श्री पद्म प्रभु भगवान ने कितने मुनियों के साथ मोक्ष प्राप्त किया ?

उत्तर– श्री पद्मप्रभु भगवान ने तीन सौ चौबीस-मुनियों के साथ मोक्ष प्राप्त किया था।

प्रश्न 1287. श्री पद्मप्रभु भगवान का योग निवृत्ति काल कितना था ?

उत्तर– श्री पद्मप्रभु भगवान का योग निवृत्ति काल 1 माह का था।

प्रश्न 1288. श्री पद्मप्रभु भगवान के समोशरण में प्रमुख श्रोता कौन थे ?

उत्तर– श्री पद्मप्रभु भगवान के समोशरण में प्रमुख श्रोता श्री धमवीर्य जी थे।

प्रश्न 1289. श्री पद्मप्रभु भगवान ने किस आसन से मोक्ष प्राप्त किया ?

उत्तर– श्री पद्मप्रभु भगवान ने खड़गासन से मोक्ष प्राप्त किया।

प्रश्न 1290. श्री पद्मप्रभु भगवान के अनुबद्ध केवली कितने थे ?

उत्तर– श्री पद्मप्रभु भगवान के चौरासी अनुबद्ध केवली थे।

प्रश्न 1291. श्री पद्मप्रभु भगवान के कितने शिष्यों ने अनुत्तर विमानों में जन्म लिया ?

उत्तर– बारह हजार मुनियों ने अनुत्तर विमानों में जन्म लिया।

प्रश्न 1292. श्री पद्मप्रभु भगवान के कितने शिष्यों ने मोक्ष प्राप्त किया ?

उत्तर– तीन लाख चौदह हजार मुनियों ने मोक्ष प्राप्त किया।

प्रश्न 1293. श्री पद्मप्रभु भगवान के कितने शिष्यों ने सौधर्मादिक स्वर्गों को प्राप्त किया ?

उत्तर– श्री पद्मप्रभु भगवान के चार हजार मुनियों ने सौधर्मादिक स्वर्गों को प्राप्त किया।

प्रश्न 1294. श्री पद्मप्रभु भगवान का तीर्थ प्रर्वतन काल कितने वर्षों का था ?

उत्तर– श्री पद्मप्रभु भगवान का तीर्थ प्रर्वतन काल नौ हजार करोड़ सागर चार पूर्वांग वर्ष का था।

प्रश्न 1295. श्री पद्मप्रभु भगवान ने अपने शासन काल में कौन सा विशेष पद प्राप्त किया था ?

उत्तर– महामण्डलीक राजा के पद को प्राप्त किया था।

प्रश्न 1296. भगवान श्री पद्मप्रभु के मोक्ष जाने के बाद कितने मुनि मोक्ष गये ?

उत्तर– भगवान श्री पद्मप्रभु के मोक्ष जाने के बाद 7207742 मुनि मोक्ष गये।

7

भगवान श्री सुपार्श्वनाथ जी

प्रश्न 1297. सातवें तीर्थंकर का नाम क्या है ?

उत्तर– सातवें तीर्थंकर का नाम श्री सुपार्श्वनाथ जी है।

प्रश्न 1298. श्री पद्म प्रभ भगवान के कितने समय बाद श्री सुपार्श्वनाथ भगवान हुये?

उत्तर– श्री पद्म प्रभ भगवान के नौ हजार करोड़ सागर के बाद श्री सुपार्श्वनाथ भगवान हुये।

प्रश्न 1299. श्री सुपार्श्वनाथ भगवान की पूर्व पर्याय का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री सुपार्श्वनाथ भगवान की पूर्व पर्याय का नाम राजा श्री नंदिषेण था।

प्रश्न 1300. श्री नंदिषेण जी कहाँ के राजा थे ?

उत्तर– श्री नंदिषेण जी पूर्व धातकी खंड के पूर्व विदेह क्षेत्र में सुकच्छा देश के राजा थे।

प्रश्न 1301. भगवान श्री सुपार्श्वनाथ ने तीर्थंकर प्रकृति का बंध कौन सी पर्याय में किया ?

उत्तर– भगवान श्री सुपार्श्वनाथ ने तीर्थंकर प्रकृति का बंध महाराज नंदिषेण की पर्याय में किया।

प्रश्न 1302. भगवान श्री सुपार्श्वनाथ के पूर्व भव के पिता का नाम क्या था ?

उत्तर– भगवान श्री सुपार्श्वनाथ के पूर्व भव के पिता का नाम पिहिताश्रव था।

प्रश्न 1303. भगवान के पूर्व भव के दीक्षा गुरु कौन थे ?

उत्तर– भगवान के पूर्व भव के दीक्षा गुरु अरिंदम थे।

प्रश्न 1304. भगवान श्री सुपार्श्वनाथ की पूर्व भव की देव आयु कितनी थी ?

उत्तर– भगवान सुपार्श्वनाथ की पूर्व भव की देव आयु 27 सागर थी।

प्रश्न 1305. श्री नंदिषेण जी किस नगर के राजा थे ?

उत्तर– श्री नंदिषेण क्षेमपुर नगर के राजा थे।

प्रश्न 1306. श्री नंदिषेण राजा के पुत्र का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री नंदिषेण राजा के पुत्र का नाम धनपति था।

प्रश्न 1307. श्री सुपार्श्वनाथ भगवान के पिता का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री सुपार्श्वनाथ भगवान के पिता राजा सुप्रतिष्ठ जी थे।

प्रश्न 1308. श्री सुपार्श्वनाथ भगवान की माता का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री सुपार्श्वनाथ भगवान की माता का नाम रानी पृथ्वीमती था।

प्रश्न 1309. श्री सुपार्श्वनाथ भगवान ने कहाँ पर जन्म लिया था ?

उत्तर– श्री सुपार्श्वनाथ भगवान ने बनारस में जन्म लिया था।

प्रश्न 1310. श्री सुपार्श्वनाथ भगवान कहाँ से गर्भ में आये ?

उत्तर– श्री सुपार्श्वनाथ भगवान सुभद्र नामक विमान से गर्भ में आये थे।

प्रश्न 1311. श्री सुपार्श्वनाथ भगवान का गर्भ कल्याणक कौन-सी तिथि को हुआ?

उत्तर– श्री सुपार्श्वनाथ भगवान का गर्भ कल्याणक भाद्रपद शुक्ला षष्ठी को हुआ।

प्रश्न 1312. श्री सुपार्श्वनाथ भगवान का गर्भ कल्याणक कौन से नक्षत्र में हुआ था ?

उत्तर– श्री सुपार्श्वनाथ भगवान का गर्भ कल्याणक विशाखा नक्षत्र में हुआ था।

प्रश्न 1313. श्री सुपार्श्वनाथ भगवान की जन्म राशि कौन सी थी ?

उत्तर– भगवान श्री सुपार्श्वनाथ की जन्म राशि तुला थी।

प्रश्न 1314. श्री सुपार्श्वनाथ भगवान का जन्म कौन सी तिथि में हुआ था ?

उत्तर– श्री सुपार्श्वनाथ भगवान का जन्म ज्येष्ठ शुक्ला बारस को हुआ था।

प्रश्न 1315. श्री सुपार्श्वनाथ भगवान का जन्म कौन से नक्षत्र में हुआ था ?

उत्तर– श्री सुपार्श्वनाथ भगवान का जन्म विशाखा नक्षत्र में हुआ था।

प्रश्न 1316. श्री सुपार्श्वनाथ भगवान का जन्म कौन से वंश में हुआ ?

उत्तर– श्री सुपार्श्वनाथ भगवान का जन्म इक्ष्वाकु वंश में हुआ।

प्रश्न 1317. श्री सुपार्श्वनाथ भगवान की आयु कितनी थी ?

उत्तर– श्री सुपार्श्वनाथ भगवान की आयु बीस लाख वर्ष पूर्व की थी।

प्रश्न 1318. श्री सुपार्श्वनाथ भगवान का कुमार काल कितने वर्ष का था ?

उत्तर– श्री सुपार्श्वनाथ भगवान का कुमार काल पांच लाख वर्ष पूर्व का था।

प्रश्न 1319. श्री सुपार्श्वनाथ भगवान के शरीर की ऊँचाई कितनी थी ?

उत्तर– श्री सुपार्श्वनाथ भगवान के शरीर की ऊँचाई दो सौ धनुष थी।

प्रश्न 1320. श्री सुपार्श्वनाथ भगवान के शरीर का वर्ण कैसा था ?

उत्तर– श्री सुपार्श्वनाथ भगवान के शरीर का वर्ण हरित था।

प्रश्न 1321. श्री सुपार्श्वनाथ भगवान का राज्य काल कितने वर्ष का था ?

उत्तर– श्री सुपार्श्वनाथ भगवान का राज्य काल चौदह लाख वर्ष पूर्व 20 पूर्वांग का था।

प्रश्न 1322. श्री सुपार्श्वनाथ भगवान को कौन से चिन्ह से जाना जाता है ?

उत्तर– श्री सुपार्श्वनाथ भगवान को स्वस्तिक चिन्ह (नंधावर्त) से जाना जाता है।

प्रश्न 1323. श्री सुपार्श्वनाथ भगवान को कैसे वैराग्य हुआ था ?

उत्तर– श्री सुपार्श्वनाथ भगवान को बसंत लक्ष्मी का नाश देखकर वैराग्य हुआ।

प्रश्न 1324. श्री सुपार्श्वनाथ भगवान ने कौन सी तिथि में दीक्षा ली ?

उत्तर– श्री सुपार्श्वनाथ भगवान ने ज्येष्ठ शुक्ला बारस को दीक्षा ली।

प्रश्न 1325. श्री सुपार्श्वनाथ भगवान ने कौन से नक्षत्र में दीक्षा ली ?

उत्तर– श्री सुपार्श्वनाथ भगवान ने विशाखा नक्षत्र में दीक्षा ली।

प्रश्न 1326. श्री सुपार्श्वनाथ भगवान ने कौन से वन में दीक्षा ली।

उत्तर– श्री सुपार्श्वनाथ भगवान ने सहेतुक वन में दीक्षा ली।

प्रश्न 1327. श्री सुपार्श्वनाथ भगवान ने कौन-से नगर में दीक्षा ली ?

उत्तर– श्री सुपार्श्वनाथ भगवान ने बनारस नगर में दीक्षा ली।

प्रश्न 1328. श्री सुपार्श्वनाथ भगवान की दीक्षा पालकी का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री सुपार्श्वनाथ भगवान की दीक्षा पालकी मनोगति नाम की थी।

प्रश्न 1329. श्री सुपार्श्वनाथ भगवान ने दीक्षा समय कितने उपवास किये ?

उत्तर– श्री सुपार्श्वनाथ भगवान ने दीक्षा समय दो उपवास किये थे।

प्रश्न 1330. श्री सुपार्श्वनाथ भगवान ने किस समय दीक्षा ली ?

उत्तर– श्री सुपार्श्वनाथ भगवान ने पूर्वाण्ह काल में दीक्षा ली।

प्रश्न 1331. श्री सुपार्श्वनाथ भगवान ने प्रथम आहार कौन से नगर में लिया ?

उत्तर– श्री सुपार्श्वनाथ भगवान ने प्रथम आहार सोमखेट नाम के नगर में लिया।

प्रश्न 1332. श्री सुपार्श्वनाथ भगवान को प्रथम आहर किसने दिया था ?

उत्तर– श्री सुपार्श्वनाथ भगवान को प्रथम आहर राजा महेन्द्रदत्त जी ने दिया था।

प्रश्न 1333. श्री सुपार्श्वनाथ भगवान ने कितने राजाओं के साथ दीक्षा ली ?

उत्तर– श्री सुपार्श्वनाथ भगवान ने एक हजार राजाओं के साथ दीक्षा ली।

प्रश्न 1334. श्री सुपार्श्वनाथ भगवान ने कितने वर्षो तक तप किया ?

उत्तर– श्री सुपार्श्वनाथ भगवान ने नौ वर्षों तक तप किया था।

प्रश्न 1335. श्री सुपार्श्वनाथ भगवान को केवलज्ञान कौन सी तिथि को हुआ ?

उत्तर– श्री सुपार्श्वनाथ भगवान ने फाल्गुन कृष्णा षष्ठी को हुआ था।

प्रश्न 1336. श्री सुपार्श्वनाथ भगवान को केवलज्ञान किस समय हुआ था ?

उत्तर– श्री सुपार्श्वनाथ भगवान को केवलज्ञान अपरान्ह काल में हुआ था।

प्रश्न 1337. श्री सुपार्श्वनाथ भगवान को केवलज्ञान कहाँ हुआ था ?

उत्तर– श्री सुपार्श्वनाथ भगवान को केवलज्ञान सहेतुक वन में हुआ था।

प्रश्न 1338. श्री सुपार्श्वनाथ भगवान को केवलज्ञान किस नक्षत्र में हुआ था ?

उत्तर– श्री सुपार्श्वनाथ भगवान को केवलज्ञान विशाखा नक्षत्र में हुआ था।

प्रश्न 1339. श्री सुपार्श्वनाथ भगवान को केवलज्ञान किस वृक्ष के नीचे हुआ था ?

उत्तर– श्री सुपार्श्वनाथ भगवान को केवलज्ञान शिरीष वृक्ष के नीचे हुआ था।

प्रश्न 1340. श्री सुपार्श्वनाथ भगवान का समोशरण कितना विस्तरित था ?

उत्तर– श्री सुपार्श्वनाथ भगवान का समोशरण नौ योजन विस्तारित था।

प्रश्न 1341. श्री सुपार्श्वनाथ भगवान के शासन यक्ष का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री सुपार्श्वनाथ भगवान के शासन यक्ष का नाम वरनंदि देव था।

प्रश्न 1342. श्री सुपार्श्वनाथ भगवान की शासन देवी का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री सुपार्श्वनाथ भगवान की शासन देवी का नाम काली देवी था।

प्रश्न 1343. श्री सुपार्श्वनाथ भगवान का केवली काल कितने वर्ष का था ?

उत्तर– एक लाख पूर्व में बीस पूर्वांग तथा नौ वर्ष कम रहा

प्रश्न 1344. श्री सुपार्श्वनाथ भगवान के गणधरों की संख्या कितनी थी ?

उत्तर– श्री सुपार्श्वनाथ भगवान के गणधरों की संख्या पंचानवे थी।

प्रश्न 1345. श्री सुपार्श्वनाथ भगवान के प्रमुख गणधर का नाम क्या था?

उत्तर– श्री सुपार्श्वनाथ भगवान के प्रमुण गणधर का नाम श्री बलदत्त था।

प्रश्न 1346. श्री सुपार्श्वनाथ भगवान के शासन से संबंधित क्षेत्रपालों के नाम क्या थे ?

उत्तर– श्री सुपार्श्वनाथ 1. श्रीविधि चन्द्र, 2. श्री गुण चन्द्र, 3. श्री खेमचंद्र, 4. श्री विनयचन्द्र थे।

प्रश्न 1347. श्री सुपार्श्वनाथ भगवान के समोशरण में कितने ऋषि थे ?

उत्तर– श्री सुपार्श्वनाथ भगवान के समोशरण में तीन लाख ऋषि थे।

प्रश्न 1348. श्री सुपार्श्वनाथ भगवान के समोशरण में कितने पूर्वधर मुनि थे ?

उत्तर– श्री सुपार्श्वनाथ भगवान के समोशरण में दो हजार तीस पूर्वधर मुनि थे।

प्रश्न 1349. श्री सुपार्श्वनाथ भगवान के समोशरण में शिक्षक मुनियों की संख्या कितनी थी ?

उत्तर– श्री सुपार्श्वनाथ भगवान के समोशरण में दो लाख चवालिस हजार नौ सौ बीस शिक्षक मुनि थे।

प्रश्न 1350. श्री सुपार्श्वनाथ भगवान के समोशरण में कितने अवधि ज्ञानी मुनि थे ?

उत्तर– श्री सुपार्श्वनाथ भगवान के समोशरण में नौ हजार अवधि ज्ञानी मुनि थे।

प्रश्न 1351. श्री सुपार्श्वनाथ भगवान के समोशरण में कितने केवलज्ञानी मुनि थे ?

उत्तर– श्री सुपार्श्वनाथ भगवान के समोशरण में ग्यारह हजार केवली मुनि थे।

प्रश्न 1352. श्री सुपार्श्वनाथ भगवान के समोशरण में कितने विक्रिया धारी मुनि थे ?

उत्तर– श्री सुपार्श्वनाथ भगवान के समोशरण में पन्द्रह हजार तीन सौ विक्रिया धारी मुनि थे।

प्रश्न 1353. श्री सुपार्श्वनाथ भगवान के समोशरण में विपलुमति मनःपर्यय ज्ञान धारक मुनियों की संख्या कितनी थी ?

उत्तर– श्री सुपार्श्वनाथ भगवान के समोशरण में नौ हजार एक सौ पचास विपलुमति मनःपर्यय ज्ञान धारक मुनि थे।

प्रश्न 1354. श्री सुपार्श्वनाथ भगवान के समोशरण में वादी मुनियों की संख्या कितनी थी ?

उत्तर– श्री सुपार्श्वनाथ भगवान के समोशरण में आठ हजार छह सौ वादी मुनि थे।

प्रश्न 1355. श्री सुपार्श्वनाथ भगवान के समोशरण में कितनी आर्यिकायें थीं ?

उत्तर– श्री सुपार्श्वनाथ भगवान के समोशरण में तीन लाख तीस हजार आर्यिकायें थीं।

प्रश्न 1356. श्री सुपार्श्वनाथ भगवान के समोशरण की प्रमुख आर्यिका का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री सुपार्श्वनाथ भगवान के समोशरण में प्रमुख आर्यिका श्री मीना जी थीं।

प्रश्न 1357. श्री सुपार्श्वनाथ भगवान के समोशरण में कितने श्रावक थे ?

उत्तर– श्री सुपार्श्वनाथ भगवान के समोशरण में तीन लाख श्रावक थे।

प्रश्न 1358. श्री सुपार्श्वनाथ भगबान के समोशरण में कितनी श्राविकायें थी ?

उत्तर– श्री सुपार्श्वनाथ भगवान के समोशरण में पांच लाख श्राविकायें थीं।

प्रश्न 1359. श्री सुपार्श्वनाथ भगवान के समोशरण में प्रमुख श्रोता का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री सुपार्श्वनाथ भगवान के समोशरण में प्रमुख श्रोता श्री धर्मवीर्य जी थे।

प्रश्न 1360. श्री सुपार्श्वनाथ भगवान को मोक्ष कौन-सी तिथि में हुआ था ?

उत्तर– श्री सुपार्श्वनाथ भगवान को फाल्गुन कृष्णा सप्तमी को मोक्ष हुआ था।

प्रश्न 1361. श्री सुपार्श्वनाथ भगवान को मोक्ष किस समय में हुआ ?

उत्तर– श्री सुपार्श्वनाथ भगवान को मोक्ष पूर्वान्ह काल में हुआ।

प्रश्न 1362. श्री सुपार्श्वनाथ भगवान को मोक्ष कौन से नक्षत्र में हुआ ?

उत्तर– श्री सुपार्श्वनाथ भगवान को मोक्ष अनुराधा नक्षत्र में हुआ।

प्रश्न 1363. श्री सुपार्श्वनाथ भगवान ने मोक्ष कहाँ से प्राप्त किया ?

उत्तर– श्री सुपार्श्वनाथ भगवान ने मोक्ष श्री सम्मेदशिखर जी से प्राप्त किया।

प्रश्न 1364. श्री सुपार्श्वनाथ भगवान ने मोक्ष कौन से कूट से प्राप्त किया ?

उत्तर– श्री सुपार्श्वनाथ भगवान ने मोक्ष प्रभास कूट से प्राप्त किया।

प्रश्न 1365. श्री सुपार्श्वनाथ भगवान ने कितने मुनियों के साथ मोक्ष प्राप्त किया ?

उत्तर– श्री सुपार्श्वनाथ भगवान ने पॉच सौ मुनियो के साथ मोक्ष प्राप्त किया।

प्रश्न 1366. श्री सुपार्श्वनाथ भगवान का योग निवृत्तिकाल कितना था ?

उत्तर– श्री सुपार्श्वनाथ भगवान का योग निवृत्ति काल 1 माह रहा।

प्रश्न 1367. श्री सुपार्श्वनाथ भगवान ने मोक्ष किस आसन से प्राप्त किया ?

उत्तर– श्री सुपार्श्वनाथ भगवान ने मोक्ष खड्गासन से प्राप्त किया।

प्रश्न 1368. श्री सुपार्श्वनाथ भगवान के अनुबद्ध केवलियों की संख्या कितनी थी ?

उत्तर– श्री सुपार्श्वनाथ भगवान के चौरासी अनुबद्ध केवली हुए।

प्रश्न 1369. श्री सुपार्श्वनाथ भगवान के कितने शिष्यों के अनुत्तर विमानों को प्राप्त किया ?

उत्तर– श्री सुपार्श्वनाथ भगवान के बारह हजार शिष्यों ने अनुत्तर विमानों को प्राप्त किया।

प्रश्न 1370. श्री सुपार्श्वनाथ भगवान के कितने शिष्यों ने मोक्ष प्राप्त किया ?

उत्तर– श्री सुपार्श्वनाथ भगवान के दो लाख पच्चीस हजार छह सौ मुनियों ने मोक्ष प्राप्त किया।

प्रश्न 1371. श्री सुपार्श्वनाथ भगवान के कितने शिष्यों ने पहले स्वर्ग से ग्रैवेयक तक प्राप्त किया ?

उत्तर– श्री सुपार्श्वनाथ भगवान के दो हजार चार सौ मुनियों ने पहले स्वर्ग से ग्रैवेयक स्वर्ग तक प्राप्त किया।

प्रश्न 1372. श्री सुपार्श्वनाथ भगवान का तीर्थ प्रर्वतन काल कितना रहा ?

उत्तर– श्री सुपार्श्वनाथ भगवान का नौ सौ करोड़ सागर चार पूर्वांग वर्ष रहा।

प्रश्न 1373. श्री सुपार्श्वनाथ भगवान के शासन काल में चतुर्विध संघ को तीर्थयात्रा कराने वाले संघपति का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री सुपार्श्वनाथ भगवान के शासन काल में चतुर्विध संघ को तीर्थयात्रा कराने वाले संघपति उद्योग नाम के राजा थे।

प्रश्न 1374. श्री सुपार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा पर कौन सा चिन्ह हैं ?

उत्तर– श्री सुपार्श्वनाथ भगवान प्रतिमा पर सर्प का चिन्ह है।

प्रश्न 1375. भगवान श्री सुपार्श्वनाथ के मोक्ष जाने के बाद कितने मुनि मोक्ष गये ?

उत्तर– भगवान श्री सुपार्श्वनाथ के मोक्ष जाने के बाद 84,72,00,84,555 मुनि मोक्ष गये।

8

भगवान श्री चन्द्रप्रभु जी

प्रश्न 1376. आठवें तीर्थंकर का नाम क्या है ?

उत्तर– श्री चन्द्रप्रभु भगवान है।

प्रश्न 1377. श्री चन्द्रप्रभु ने तीर्थंकर प्रकृति का बंध कौन सा पर्याय में किया ?

उत्तर– श्री चन्द्रप्रभु ने तीर्थकर प्रकृति का बंध पद्मनाभ की पर्याय में किया।

प्रश्न 1378. श्री चन्द्रप्रभु भगवान की पूर्व पर्याय का नाम बताइये।

उत्तर– राजा श्री श्रीषेण है।

प्रश्न 1379. श्री चन्द्रप्रभु के पूर्व भव के पिता का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री चन्द्रप्रभु के पूर्व भव के पिता अरिंदम थे।

प्रश्न 1380. श्री चन्द्रप्रभु के पूर्व भव के दीक्षा गुरु कौन थे ?

उत्तर– श्री चन्द्रप्रभु के पूर्व भव के दीक्षा गुरु युगंधर थे।

प्रश्न 1381. श्री श्रीषेण किस देश के राजा थे?

उत्तर– श्री श्रीषेण सुगंधा देश के राजा थे।

प्रश्न 1382. श्री श्रीषेण किस नगर के राजा थे।

उत्तर– श्री श्रीषेण श्रीपुर नगर के राजा थे।

प्रश्न 1383. श्रीपुर नगर कहाँ स्थित है ?

उत्तर– पूर्व पुष्करार्ध द्वीप में सीता नदी के उत्तर तट पर सुगंधा देश के आर्यखंड में श्रीपुर नगर है।

प्रश्न 1384. श्री चन्द्रप्रभु भगवान के सात भव कौन से हैं ?

उत्तर– 1. श्रीवर्मा नाम के राजा, 2. पहले स्वर्ग में देव, 3. अजित सेन नामक चक्रवर्ती, 4. अच्युत स्वर्ग में इन्द्र, 5. पद्मनाभ नाम के राजा, 6. वैजयंत विमान में देव, 7. तीर्थंकर श्री चन्द्रप्रभु।

प्रश्न 1385. श्री सुपार्श्वनाथ भगवान के कितने काल बाद श्री चंन्द्रप्रभ भगवान हुए ?

उत्तर– नौ सौ करोड़ सागर बीत जाने पर श्री चन्द्रप्रभु भगवान हुए।

प्रश्न 1386. श्री चन्द्रप्रभु भगवान कहाँ से गर्भ में आये ?

उत्तर– भगवान श्री चन्द्रप्रभु वैजयंतनामक अनुत्तर विमान से गर्भ में आये।

प्रश्न 1387. भगवान श्री चन्द्रप्रभु की पूर्व भव की देव आयु कितनी थी ?

उत्तर– भगवान श्री चन्द्रप्रभु की पूर्व भव की देव आयु 33 सागर थी।

प्रश्न 1388. श्री चन्द्रप्रभु भगवान के पिता का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री चन्द्रप्रभु भगवान के पिता का नाम श्री महासेन राजा था।

प्रश्न 1389. श्री चन्द्रप्रभु भगवान की माता का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री चन्द्रप्रभु भगवान की माता का नाम श्रीमती लक्ष्मणा देवी था।

प्रश्न 1390. श्री चन्द्रप्रभु भगवान का गर्भ कल्याणक कौन सी तिथि को हुआ था?

उत्तर– श्री चन्द्रप्रभु भगवान का गर्भ कल्याणक चैत्र कृष्णा पंचमी को हुआ था।

प्रश्न 1391. श्री चन्द्रप्रभु भगवान का गर्भ कल्याणक कौन से नक्षत्र में हुआ था ?

उत्तर– श्री चन्द्रप्रभु भगवान का गर्भ कल्याणक ज्येष्ठा नक्षत्र में हुआ था।

प्रश्न 1392. श्री चन्द्रप्रभु भगवान के शरीर का वर्ण कैसा था ?

उत्तर– श्री चन्द्रप्रभु भगवान के शरीा का वर्ण चन्द्रमा के समान श्वेत वर्ण था।

प्रश्न 1393. श्री चन्द्रप्रभु भगवान की आयु कितनी थी ?

उत्तर– श्री चन्द्रप्रभु भगवान की आयु दस लाख वर्ष पूर्व की थी।

प्रश्न 1394. श्री चन्द्रप्रभु भगवान के शरीर की ऊँचाई कितनी थी ?

उत्तर– श्री चन्द्रप्रभु भगवान के शरीर की ऊँचाई एक सौ पचास धनुष थी।

प्रश्न 1395. श्री चन्द्रप्रभु भगवान का जन्म कहाँ हुआ था ?

उत्तर– श्री चन्द्रप्रभु भगवान का जन्म चन्द्रपुर नगर में हुआ था।

प्रश्न 1396. श्री चन्द्रप्रभु भगवान का चिन्ह क्या हैं ?

उत्तर– श्री चन्द्रप्रभु भगवान का चन्द्रमा चिन्ह है।

प्रश्न 1397. श्री चन्द्रप्रभु भगवान का जन्म कौन सी तिथि को हुआ था ?

उत्तर– श्री चन्द्रप्रभु भगवान का जन्म पौष कृष्णा ग्यारस को हुआ था।

प्रश्न 1398. श्री चन्द्रप्रभु भगवान का जन्म कौन से नक्षत्र में हुआ था ?

उत्तर– श्री चन्द्रप्रभु भगवान का जन्म अनुराधा नक्षत्र में हुआ था।

प्रश्न 1399. भगवान श्री चन्द्रप्रभु की जन्म राशि कौन-सी थी ?

उत्तर– भगवान श्री चन्द्रप्रभु की जन्म राशि वृषभ थी।

प्रश्न 1400. श्री चन्द्रप्रभु भगवान का कुमार काल कितने वर्ष का था ?

उत्तर– श्री चन्द्रप्रभु भगवान का कुमार काल ढाई लाख वर्ष पूर्व का था।

प्रश्न 1401. श्री चन्द्रप्रभु भगवान का जन्म कौन से वंश में हुआ था ?

उत्तर– श्री चन्द्रप्रभु भगवान का जन्म इक्ष्वाकु वंश में हुआ था।

प्रश्न 1402. श्री चन्द्रप्रभु भगवान को वैराग्य कैसे हुआ ?

उत्तर– अध्रुवादि भावनाओं के चिंतवन करने से हुआ था।

प्रश्न 1403. श्री चन्द्रप्रभु भगवान का दीक्षा कल्याणक कौन-सी तिथि में हुआ था ?

उत्तर– पौष कृष्णा ग्यारस को हुआ था।

प्रश्न 1404. श्री चन्द्रप्रभु भगवान का दीक्षा कल्याणक कौन से नक्षत्र में हुआ था।

उत्तर– श्री चन्द्रप्रभु भगवान का दीक्षा कल्याणक अनुराधा नक्षत्र में हुआ था।

प्रश्न 1405. श्री चन्द्रप्रभु भगवान की दीक्षा कौन से वन में हुई थी ?

उत्तर– श्री चन्द्रप्रभु भगवान की दीक्षा सर्वार्थ नाम के वन में हुई थी।

प्रश्न 1406. श्री चन्द्रप्रभु भगवान ने कितने दीक्षोपवास किये ?

उत्तर– दो दीक्षोपवास किए थे।

प्रश्न 1407. श्री चन्द्रप्रभु भगवान की दीक्षा किस समय हुई थी ?

उत्तर– श्री चन्द्रप्रभु भगवान की दीक्षा अपरान्ह काल में हुई थी।

प्रश्न 1408. श्री चन्द्रप्रभु भगवान की दीक्षा कौन से नगर में हुई थी ?

उत्तर– श्री चन्द्रप्रभु भगवान की दीक्षा चन्द्रपुर नगर में।

प्रश्न 1409. श्री चन्द्रप्रभु भगवान की दीक्षा किस वृक्ष के नीचे हुई थी ?

उत्तर– श्री चन्द्रप्रभु भगवान की दीक्षा नाग वृक्ष के नीचे हुई थी।

प्रश्न 1410. श्री चन्द्रप्रभु भगवान की दीक्षा पालकी का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री चन्द्रप्रभु भगवान की दीक्षा पालकी का नाम विमला था।

प्रश्न 1411. श्री चन्द्रप्रभु भगवान ने कितने राजाओं के साथ दीक्षा ली ?

उत्तर– श्री चन्द्रप्रभु भगवान ने एक हजार राजाओं के साथ दीक्षा ली थी।

प्रश्न 1412. श्री चन्द्रप्रभु भगवान ने कितने समय तक तप किया ?

उत्तर– श्री चन्द्रप्रभु भगवान ने तीन महीने तक तप किया।

प्रश्न 1413. श्री चन्द्रप्रभु भगवान का प्रथम आहार किस नगर में हुआ था ?

उत्तर– श्री चन्द्रप्रभु भगवान का प्रथम आहार नलिनपुर नगर में हुआ था।

प्रश्न 1414. श्री चन्द्रप्रभु भगवान को प्रथम आहार किसने दिया था ?

उत्तर– श्री चन्द्रप्रभु भगवान को प्रथम आहार राजा सोमदत्त ने दिया था।

प्रश्न 1415. श्री चन्द्रप्रभु भगवान ने किस वस्तु का आहार लिया था ?

उत्तर– श्री चन्द्रप्रभु भगवान ने दूध की खीर का आहार लिया था।

प्रश्न 1416. श्री चन्द्रप्रभु भगवान को केवलज्ञान कौन सी तिथि को हुआ ?

उत्तर– श्री चन्द्रप्रभु भगवान को केवलज्ञान फाल्गुन कृष्णा सप्तमी को हुआ था।

प्रश्न 1417. श्री चन्द्रप्रभु भगवान को केवलज्ञान किस समय हुआ ?

उत्तर– श्री चन्द्रप्रभु भगवान को केवलज्ञान अपरान्ह काल में हुआ था।

प्रश्न 1418. श्री चन्द्रप्रभु भगवान को केवलज्ञान कहाँ हुआ था ?

उत्तर– श्री चन्द्रप्रभु भगवान को केवलज्ञान सर्वार्थवन में हुआ था।

प्रश्न 1419. श्री चन्द्रप्रभु भगवान को केवलज्ञान किस नक्षत्र में हुआ था ?

उत्तर– श्री चन्द्रप्रभु भगवान को केवलज्ञान अनुराधा नक्षत्र में हुआ था।

प्रश्न 1420. श्री चन्द्रप्रभु भगवान को केवलज्ञान किस वृक्ष के नीचे हुआ था ?

उत्तर– श्री चन्द्रप्रभु भगवान को केवलज्ञान नागवृक्ष के नीचे हुआ था।

प्रश्न 1421. श्री चन्द्रप्रभु भगवान का समवशरण कितना विस्तरित था ?

उत्तर– श्री चन्द्रप्रभु भगवान का समवरण साढ़े आठ योजन विस्तरित था।

प्रश्न 1422. श्री चन्द्रप्रभु भगवान का केवली काल कितने वर्षो का था ?

उत्तर– श्री चन्द्रप्रभु भगवान का केवलीकाल एक लाख पूर्व में चौबीस पूर्वाग तथा तीन मास कम था।

प्रश्न 1423. श्री चन्द्रप्रभु भगवान के शासन यक्ष का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री चन्द्रप्रभु भगवान के शासन यक्ष का नाम विजय देव था।

प्रश्न 1424. श्री चन्द्रप्रभु भगवान की शासन देवी का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री चन्द्रप्रभु भगवान की शासन देवी का नाम मनोवेगा (अपर नाम ज्वालामालिनी) था।

प्रश्न 1425. श्री चन्द्रप्रभु भगवान के शासन देव क्षेत्रपालों के नाम क्या थे ?

उत्तर– 1. श्री सोमकांति, 2. श्री रविकांति, 3. श्री शुभ्रकांति, 4. श्री हेमकांति थे।

प्रश्न 1426. श्री चन्द्रप्रभु भगवान के समोशरण में गणधरों की संख्या कितनी थी ?

उत्तर– श्री चन्द्रप्रभु भगवान के समोशरण में तिरानवे गणधर थे।

प्रश्न 1427. श्री चन्द्रप्रभु भगवान के प्रमुख गणधर का नाम क्या था।

उत्तर– श्री चन्द्रप्रभु भगवान के प्रमुख गण्धर का नाम श्री वैदर्भ (दत्त) था।

प्रश्न 1428. श्री चन्द्रप्रभु भगवान के समोशरण में ऋषियों की संख्या कितनी थी ?

उत्तर– श्री चन्द्रप्रभु भगवान के समोशरण में ऋषियों की संख्या दो लाख पचास हजार थी।

प्रश्न 1429. श्री चन्द्रप्रभु भगवान के समोशरण में पूर्वधर मुनियों की संख्या कितनी थी ?

उत्तर– श्री चन्द्रप्रभु भगवान के समोशरण में चार हजार पूर्वधर मुनि थे।

प्रश्न 1430. श्री चन्द्रप्रभु भगवान के समोशरण में शिक्षक मुनि कितने थे ?

उत्तर– श्री चन्द्रप्रभु भगवान के समोशरण में दो लाख दस हजार चार सौ शिक्षक मुनि थे।

प्रश्न 1431. श्री चन्द्रप्रभु भगवान के समोशरण में अवधि ज्ञानी मुनियों की संख्या कितनी थी ?

उत्तर– श्री चन्द्रप्रभु भगवान के समोशरण में दो हजार अवधि ज्ञानी मुनि थे।

प्रश्न 1432. श्री चन्द्रप्रभु भगवान के समोशरण में कितने केवली थे ?

उत्तर– श्री चन्द्रप्रभु भगवान के समोशरण में अठारह हजार केवली मुनि थे।

प्रश्न 1433. श्री चन्द्रप्रभु भगवान के समोशरण में कितने विक्रिया धारी मुनि थे ?

उत्तर– श्री चन्द्रप्रभु भगवान के समोशरण में छह सौ विक्रिया धारी मुनि थे।

प्रश्न 1434. श्री चन्द्रप्रभु भगवान के समोशरण में विपुलमति ज्ञानधारी मुनियों की संख्या कितनी थी ?

उत्तर– श्री चन्द्रप्रभु भगवान के समोशरण में आठ हजार विपुलमति ज्ञान धारी मुनि थे।

प्रश्न 1435. श्री चन्द्रप्रभु भगवान के समोशरण में कितने वादी मुनि थे ?

उत्तर– श्री चन्द्रप्रभु भगवान के समोशरण में सात हजार वादी मुनि थे।

प्रश्न 1436. श्री चन्द्रप्रभु भगवान के समोशरण में कितनी आर्यिकायें थीं ?

उत्तर– श्री चन्द्रप्रभु भगवान के समोशरण में तीन लाख अस्सी हजार आर्यिकायें थीं।

प्रश्न 1437. श्री चन्द्रप्रभु भगवान के समोशरण में प्रमुख आर्यिका कौन थीं।

उत्तर– श्री चन्द्रप्रभु भगवान के समोशरण में वरुण श्री आर्यिका जी प्रमुख थीं।

प्रश्न 1438. श्री चन्द्रप्रभु भगवान के समोशरण में कितने श्रावक थे ?

उत्तर– श्री चन्द्रप्रभु भगवान के समोशरण में तीन लाख श्रावक थे।

प्रश्न 1439. श्री चन्द्रप्रभु भगवान के समोशरण में कितनी श्राविकायें थीं ?

उत्तर– श्री चन्द्रप्रभु भगवान में समोशरण में पाँच लाख श्राविकायें थीं।

प्रश्न 1440. श्री चन्द्रप्रभु भगवान के समोशरण में प्रमुख श्रोता कौन थे ?

उत्तर– श्री चन्द्रप्रभु भगवान के समोशरण में माधव जी प्रमुख श्रोता थे।

प्रश्न 1441. श्री चन्द्रप्रभु भगवान को मोक्ष कौन सी तिथि में हुआ था ?

उत्तर– श्री चन्द्रप्रभु भगवान को मोक्ष फाल्गुन शुक्ला सप्तमी को हुआ था।

प्रश्न 1442. श्री चन्द्रप्रभु भगवान को मोक्ष किस समय हुआ था ?

उत्तर– श्री चन्द्रप्रभु भगवान को मोक्ष पूर्वान्ह काल में हुआ था।

प्रश्न 1443. श्री चन्द्रप्रभु भगवान को मोक्ष किस नक्षत्र में हुआ था ?

उत्तर– श्री चन्द्रप्रभु भगवान को मोक्ष ज्येष्ठा नक्षत्र में हुआ था।

प्रश्न 1444. श्री चन्द्रप्रभु भगवान को मोक्ष किस स्थान से हुआ था ?

उत्तर– श्री चन्द्रप्रभु भगवान को मोक्ष श्री सम्मेदशिखर जी से हुआ था।

प्रश्न 1445. श्री चन्द्रप्रभु भगवान को मोक्ष किस कूट से हुआ था ?

उत्तर– श्री चन्द्रप्रभु भगवान को मोक्ष ललित कूट से हुआ था।

प्रश्न 1446. श्री चन्द्रप्रभु भगवान ने मोक्ष कितने मुनियों के साथ प्राप्त किया ?

उत्तर– श्री चन्द्रप्रभु भगवान ने एक हजार मुनियों के साथ मोक्ष प्राप्त किया।

प्रश्न 1447. श्री चन्द्रप्रभु भगवान का योग निवृत्तिकाल कितना था ?

उत्तर– श्री चन्द्रप्रभु भगवान का योग निवृत्तिकाल एक माह रहा।

प्रश्न 1448. श्री चन्द्रप्रभु भगवान के शासन काल में चतुर्विध संघ को यात्रा कराने वाले संघपति का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री चन्द्रप्रभु भगवान के शासन काल में चतुर्विध संघ को यात्रा कराने वाले श्री ललित दत्त जी थे।

प्रश्न 1449. श्री चन्द्रप्रभु भगवान किस आसन से मोक्ष गये हैं ?

उत्तर– श्री चन्द्रप्रभु भगवान खड्गासन से मोक्ष गये।

प्रश्न 1450. श्री चन्द्रप्रभु भगवान के कितने अनुबद्ध केवली थे ?

उत्तर– श्री चन्द्रप्रभु भगवान के चोरासी अनुबद्ध केवली थे।

प्रश्न 1451. श्री चन्द्रप्रभु भगवान के कितने शिष्यों ने अनुत्तर विमानों को प्राप्त किया ?

उत्तर– श्री चन्द्रप्रभु भगवान के बारह हजार मुनियों ने अनुत्तर विमानों को प्राप्त किया।

प्रश्न 1452. श्री चन्द्रप्रभु भगवान के कितने शिष्यों ने मोक्ष प्राप्त किया ?

उत्तर– श्री चन्द्रप्रभु भगवान के शिष्य दो लाख चौंतीस हजार मुनियों ने मोक्ष को प्राप्त किया।

प्रश्न 1453. श्री चन्द्रप्रभु भगवान के कितने शिष्यों ने पहले स्वर्ग से लेकर ग्रैवेयक तक के स्वर्गों को प्राप्त किया ?

उत्तर– श्री चन्द्रप्रभु भगवान के शिष्य चार हजार मुनियों ने पहले स्वर्ग से लेकर ग्रैवेयक तक के स्वर्गो को प्राप्त किया।

प्रश्न 1454. श्री चन्द्रप्रभु भगवान का तीर्थ प्रवर्तन काल कितने वर्षों का था ?

उत्तर– श्री चन्द्रप्रभु भगवान का तीर्थ प्रवर्तनकाल नब्बे करोड़ सागर चार पूर्वांग का था।

9

भगवान श्री पुष्पदंत जी

प्रश्न 1455. नोवें तीर्थंकर का नाम क्या है ?

उत्तर— नोवें तीर्थंकर का नाम श्री पुष्पदंत जी है।

प्रश्न 1456. श्री पुष्पदंत जी भगवान जी का दूसरा नाम क्या हैं ?

उत्तर— श्री पुष्पदंत जी भगवान का दूसरा नाम श्री सुविधिनाथ जी है।

प्रश्न 1457. श्री पुष्पदंत जी भगवान का चिन्ह कौन सा है ?

उत्तर— श्री पुष्पदंत जी भगवान का चिन्ह् मगर है।

प्रश्न 1458. श्री पुष्पदंत जी भगवान का पूर्व पर्याय का नाम क्या था ?

उत्तर— श्री पुष्पदंत जी भगवान की पूर्व पर्याय का नाम राजा महापद्म था।

प्रश्न 1459. भगवान श्री पुष्पदंत जी ने तीर्थंकर प्रकृति का बंध कौन सी पर्याय में किया ?

उत्तर— भगवान श्री पुष्पदंत जी ने तीर्थंकर प्रकृति का बंध महापद्म की पर्याय में किया।

प्रश्न 1460. भगवान श्री पुष्पदंत जी के पूर्व भव के पिता का नाम क्या था ?

उत्तर— भगवान श्री पुष्पदंत जी के पूर्व भव के पिता जुगंधर थे।

प्रश्न 1461. भगवान श्री पुष्पदंत जी के पूर्व भव के दीक्षा गुरु कौन थे ?

उत्तर— भगवान श्री पुष्पदंत जी के पूर्व भव के दीक्षा गुरु सर्वजानंद थे।

प्रश्न 1462. श्री महापद्म किस देश के राजा थे ?

उत्तर— श्री महापद्म पुष्कलावती देश के राजा थे।

प्रश्न 1463. श्री महापद्म किस नगर के राजा थे।

उत्तर— श्री महापद्म पुंडरीकिणी नगरी के राजा थे।

प्रश्न 1464. पुंडरीकिणी नगर कहाँ है ?

उत्तर— पूर्व पुष्पकरार्ध के पूर्व विदेह में पुष्कलावती देश के आर्य खंड में पुंडरीकिणी नगर है।

प्रश्न 1465. श्री पुष्पदंत जी भगवान कहाँ से गर्भ में आये थे ?

उत्तर– श्री पुष्पदंत जी भगवान आरण स्वर्ग से गर्भ में आये थे।

प्रश्न 1466. भगवान श्री पुष्पदंत जी की पूर्व भव की देव आयु कितनी थी ?

उत्तर– भगवान श्री पुष्पदंत जी की पूर्व भव देव आयु 20 सागर थी।

प्रश्न 1467. श्री पुष्पदंत जी भगवान के पिता का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री पुष्पदंत जी भगवान के पिता का नाम राजा सुग्रीव था।

प्रश्न 1468. श्री पुष्पदंत जी भगवान की माता का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री पुष्पदंत जी भगवान की माता का नाम श्रीमती जयरामादेवी था।

प्रश्न 1469. श्री पुष्पदंत जी भगवान ने किस नगरी में जन्म लिया ?

उत्तर– श्री पुष्पदंत जी भगवान ने काकंदी नगरी में जन्म लिया था।

प्रश्न 1470. श्री पुष्पदंत जी भगवान का गर्भकल्याणक किस तिथि को हुआ था ?

उत्तर– श्री पुष्पदंत जी भगवान का गर्भकल्याणक फाल्गुन कृष्णा नौमी को हुआ था ?

प्रश्न 1471. श्री पुष्पदंत जी भगवान का गर्भकल्याणक किस नक्षत्र में हुआ था ?

उत्तर– श्री पुष्पदंत जी भगवान का गर्भकल्याणक मूल नक्षत्र में हुआ था।

प्रश्न 1472. श्री पुष्पदंत जी भगवान का जन्म किस तिथि में हुआ था ?

उत्तर– श्री पुष्पदंत जी भगवान का जन्म मगंसिर शुक्ला एकम् तिथि को हुआ था।

प्रश्न 1473. श्री पुष्पदंत जी भगवान का जन्म कल्याणक किस नक्षत्र में हुआ था।

उत्तर– श्री पुष्पदंत जी भगवान का जन्म कल्याणक मूल नक्षत्र में हुआ था।

प्रश्न 1474. श्री पुष्पदंत जी भगवान की जन्म राशि कौन सी थी ?

उत्तर– श्री पुष्पदंत जी भगवान की जन्म राशि धनु थी।

प्रश्न 1475. श्री पुष्पदंत जी भगवान का जन्म किस वंश में हुआ था ?

उत्तर– श्री पुष्पदंत जी भगवान का जन्म इक्ष्वाकु वंश में हुआ था।

प्रश्न 1476. श्री पुष्पदंत जी भगवान की आयु कितनी थी।

उत्तर– श्री पुष्पदंत जी भगवान की आयु दो लाख वर्ष पूर्व की थी।

प्रश्न 1477. श्री चंद्रप्रभु जी भगवान के मोक्ष जाने के कितने समय बाद श्री पुष्पदंत भगवान का जन्म हुआ ?

उत्तर– श्री चंद्रप्रभु जी भगवान के मोक्ष जाने के नब्बे करोड़ सागर बीत जाने के बाद श्री पुष्पदंत भगवान का जन्म हुआ।

प्रश्न 1478. श्री पुष्पदंत जी भगवान का कुमार काल कितने वर्ष का था ?

उत्तर– श्री पुष्पदंत जी भगवान का कुमार काल पचास हजार पूर्व वर्ष का था।

प्रश्न 1479. श्री पुष्पदंत जी भगवान के शरीर की ऊँचाई कितनी थी ?

उत्तर– श्री पुष्पदंत जी भगवान के शरीर की ऊँचाई एक सौ धनुष थी।

प्रश्न 1480. श्री पुष्पदंत जी भगवान का वर्ण कौन सा था ?

उत्तर– श्री पुष्पदंत जी भगवान का वर्ण श्वेत था।

प्रश्न 1481. श्री पुष्पदंत जी भगवान का राज्य काल कितने वर्ष का था ?

उत्तर– श्री पुष्पदंत जी भगवान का राज्य काल पचास हजार वर्ष पूर्व अट्ठाईस पूर्वांग था।

प्रश्न 1482. श्री पुष्पदंत जी भगवान को वैराग्य किस कारण हुआ ?

उत्तर– श्री पुष्पदंत जी भगवान को वैराग्य उल्कापात देखकर हुआ था।

प्रश्न 1483. श्री पुष्पदंत जी भगवान की दीक्षा तिथि कौन सी थी ?

उत्तर– श्री पुष्पदंत जी भगवान की दीक्षा तिथि मंगसिर शुक्ला एकम् थी।

प्रश्न 1484. श्री पुष्पदंत जी भगवान की दीक्षा कौन से नक्षत्र में हुई थी ?

उत्तर– श्री पुष्पदंत जी भगवान की दीक्षा अनुराधा नक्षत्र में हुई थी।

प्रश्न 1485. श्री पुष्पदंत जी भगवान की दीक्षा कौन से वन में हुई थी ?

उत्तर– श्री पुष्पदंत जी भगवान की दीक्षा पुष्पक वन में हुई थी।

प्रश्न 1486. श्री पुष्पदंत जी भगवान के दीक्षोपवास की संख्या कितनी थी?

उत्तर– श्री पुष्पदंत जी भगवान के दीक्षोपवास की संख्या दो उपवास थी।

प्रश्न 1487. श्री पुष्पदंत जी भगवान ने दीक्षा किस समय ली ?

उत्तर– श्री पुष्पदंत जी भगवान ने दीक्षा अपरान्ह काल में ली थी।

प्रश्न 1488. श्री पुष्पदंत जी भगवान की दीक्षा पालकी का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री पुष्पदंत जी भगवान की दीक्षा पालकी का नाम सूर्यप्रभा था।

प्रश्न 1489. श्री पुष्पदंत जी भगवान ने कितने राजाओं के साथ दीक्षा ली ?

उत्तर– श्री पुष्पदंत जी भगवान ने एक हजार राजाओं के साथ दीक्षा ली।

प्रश्न 1490. श्री पुष्पदंत जी भगवान के पुत्र का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री पुष्पदंत जी भगवान के पुत्र का नाम श्री सुमति था।

प्रश्न 1491. श्री पुष्पदंत जी भगवान ने किस वृक्ष के नीचे दीक्षा ली।

उत्तर– श्री पुष्पदंत जी भगवान ने नाग वृक्ष के नीचे दीक्षा ली।

प्रश्न 1492. श्री पुष्पदंत जी भगवान ने कितने वर्ष तक तप किया ?

उत्तर– श्री पुष्पदंत जी भगवान ने चार वर्ष तक तप किया।

प्रश्न 1493. श्री पुष्पदंत जी भगवान की दीक्षा किस नगर में हुई ?

उत्तर– श्री पुष्पदंत जी भगवान की दीक्षा काकंदी नगर में हुई थी।

प्रश्न 1494. श्री पुष्पदंत जी भगवान ने किस नगर में प्रथम आहार लिया ?

उत्तर– श्री पुष्पदंत जी भगवान ने प्रथम आहार शैलपुर नगर में लिया था।

प्रश्न 1495. श्री पुष्पदंत जी भगवान ने सर्वप्रथम आहार किस वस्तु का किससे लिया ?

उत्तर– श्री पुष्पदंत जी भगवान के प्रथम आहार दाता राजापुष्प मित्र थे और उनसे खीर का आहार लिया।

प्रश्न 1496. श्री पुष्पदंत जी भगवान को केवलज्ञान किस तिथि को हुआ था ?

उत्तर– श्री पुष्पदंत जी भगवान को केवलज्ञान कार्तिक शुक्ला दोज को हुआ।

प्रश्न 1497. श्री पुष्पदंत जी भगवान को केवलज्ञान किस नक्षत्र में हुआ था ?

उत्तर– श्री पुष्पदत जी भगवान को केवलज्ञान मूल नक्षत्र में हुआ।

प्रश्न 1498. श्री पुष्पदंत जी भगवान को केवलज्ञान किस समय हुआ था ?

उत्तर– श्री पुष्पदंत जी भगवान को केवलज्ञान अपरान्ह काल में हुआ।

प्रश्न 1499. श्री पुष्पदंत जी भगवान को केवलज्ञान किस वृक्ष के नीचे हुआ ?

उत्तर– श्री पुष्पदंत जी भगवान को केवलज्ञान बहेड़ा वृक्ष के नीचे हुआ।

प्रश्न 1500. श्री पुष्पदंत जी भगवान को केवलज्ञान कहाँ हुआ था ?

उत्तर– श्री पुष्पदंत जी भगवान को केवलज्ञान पुष्पक वन में हुआ था।

प्रश्न 1501. श्री पुष्पदंत जी भगवान को केवलज्ञान किस नगर में हुआ था ?

उत्तर– श्री पुष्पदंत जी भगवान को केवलज्ञान काकदी नगर मे हुआ था।

प्रश्न 1502. श्री पुष्पदंत जी भगवान के शासन देव का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री पुष्पदंत जी भगवान के शासन देव का नाम श्री अजित यक्ष था।

प्रश्न 1503. श्री पुष्पदंत जी भगवान की शासन देवी का नाम क्या है ?

उत्तर– श्री पुष्पदंत जी भगवान की शासन देवी का नाम महाकाली देवी है।

प्रश्न 1504. श्री पुष्पदंत जी भगवान के शासन देव क्षेत्रपालों के नाम क्या हैं ?

उत्तर– 1. श्री वज्रकांति, 2. वीर कांति, 3. विष्णु कांति, 4. चंद्र कांति।

प्रश्न 1505. श्री पुष्पदंत जी भगवान का समोशरण कितना विस्तरित था ?

उत्तर– श्री पुष्पदंत जी भगवान का समोशरण आठ योजन विस्तरित था।

प्रश्न 1506. श्री पुष्पदंत जी भगवान का केवली काल कितने वर्ष का था ?

उत्तर– श्री पुष्पदंत जी भगवान का केवलीकाल एक लाख पूर्व में 28 पूर्वांग 4 वर्ष कम था।

प्रश्न 1507. श्री पुष्पदंत जी भगवान के कितने गणधर थे ?

उत्तर– श्री पुष्पदंत जी भगवान के अट्ठासी गणधर थे।

प्रश्न 1508. श्री पुष्पदंत जी भगवान के प्रमुख गणधर का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री पुष्पदंत जी भगवान के प्रमुख गणधर श्री विदर्भ जी थे।

प्रश्न 1509. श्री पुष्पदंत जी भगवान के समोशरण में प्रमुख श्रोता का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री पुष्पदंत जी भगवान के समोशरण में प्रमुख श्रोता श्री युद्धवीर्य जी थे।

प्रश्न 1510. श्री पुष्पदंत जी भगवान के समोशरण में कितने ऋषि थे ?

उत्तर– श्री पुष्पदंत जी भगवान के समोशरण में दो लाख ऋषि थे।

प्रश्न 1511. श्री पुष्पदंत जी भगवान के समोशरण में पूर्वधर मुनियों की संख्या कितनी थी ?

उत्तर– श्री पुष्पदंत जी भगवान के समोशरण में एक हजार पाँच सौ पूर्वधर मुनि थे।

प्रश्न 1512. श्री पुष्पदंत जी भगवान के समोशरण में शिक्षक मुनि कितने थे ?

उत्तर– श्री पुष्पदंत जी भगवान के समोशरण में एक लाख पचपन हजार पाँच सौ शिक्षक मुनि थे।

प्रश्न 1513. श्री पुष्पदंत जी भगवान के समोशरण में अवधिज्ञानी मुनि कितने थे ?

उत्तर– श्री पुष्पदंत जी भगवान के समोशरण में आठ हजार चार सौ अवधिज्ञानी मुनि थे।

प्रश्न 1514. श्री पुष्पदंत जी भगवान के समोशरण में कितने केवली मुनि थे ?

उत्तर– श्री पुष्पदंत जी भगवान के समोशरण में सात हजार पाँच सौ केवली मुनि थे।

प्रश्न 1515. श्री पुष्पदंत जी भगवान के समोशरण में विक्रिया धारी मुनि कितने थे ?

उत्तर– श्री पुष्पदंत जी भगवान के समोशरण में तेरह हजार विक्रिया धारी मुनि थे।

प्रश्न 1516. श्री पुष्पदंत जी भगवान के समोशरण में कितने विपुलमति ज्ञानी मुनि थे ?

उत्तर– श्री पुष्पदंत जी भगवान के समोशरण में सात हजार विपुलमति ज्ञानी मुनि थे।

प्रश्न 1517. श्री पुष्पदंत जी भगवान के समोशरण में वादी मुनि कितने थे ?

उत्तर– श्री पुष्पदंत जी भगवान के समोशरण में छह हजार छह सौ वादी मुनिथे।

प्रश्न 1518. श्री पुष्पदंत जी भगवान के समोशरण में कितनी आर्यिकायें थी ?

उत्तर– श्री पुष्पदंत जी भगवान के समोशरण में तीन लाख अस्सी हजार आर्यिकायें थी।

प्रश्न 1519. श्री पुष्पदंत जी भगवान के समोशरण की प्रमुख आर्यिका कौन थीं ?

उत्तर– श्री पुष्पदंत जी भगवान के समोशरण की श्री घोषा नाम की आर्यिका प्रमुख थी।

प्रश्न 1520. श्री पुष्पदंत जी भगवान के समोशरण में कितने श्रावक थे ?

उत्तर– श्री पुष्पदंत जी भगवान के समोशरण में दो लाख श्रावक थे।

प्रश्न 1521. श्री पुष्पदंत जी भगवान के समोशरण में कितनी श्राविकायें थीं ?

उत्तर– श्री पुष्पदंत जी भगवान के समोशरण में चार लाख श्राविकायें थीं।

प्रश्न 1522. श्री पुष्पदंत जी भगवान के समोशरण में चतुर्विध संघ को यात्रा कराने वाले संघ पति का नाम क्या था।

उत्तर– श्री पुष्पदंत जी भगवान के समोशरण में चतुर्विध संघ को यात्रा कराने वाले संघ पति का नाम राजा श्री सोम प्रभ था।

प्रश्न 1523. श्री पुष्पदंत जी भगवान को मोक्ष कौन सी तिथि में हुआ था ?

उत्तर– श्री पुष्पदंत जी भगवान को मोक्ष भादों शुक्ला अष्टमी को हुआ।

प्रश्न 1524. श्री पुष्पदंत जी भगवान को मोक्ष किस समय हुआ था ?

उत्तर– श्री पुष्पदंत जी भगवान को मोक्ष अपरान्ह काल में हुआ।

प्रश्न 1525. श्री पुष्पदंत जी भगवान किस आसन से मोक्ष गये ?

उत्तर– श्री पुष्पदंत जी भगवान खड्गासन से मोक्ष गये।

प्रश्न 1526. श्री पुष्पदंत जी भगवान किस नक्षत्र में मोक्ष गये ?

उत्तर– श्री पुष्पदंत जी भगवान मूल नक्षत्र में मोक्ष गये ?

प्रश्न 1527. श्री पुष्पदंत जी भगवान किस स्थान से मोक्ष गये ?

उत्तर– श्री पुष्पदंत जी भगवान श्री सम्मेद शिखर से मोक्ष गये।

प्रश्न 1528. श्री पुष्पदंत जी भगवान किस कूट से मोक्ष गये ?

उत्तर– श्री पुष्पदंत जी भगवान सुप्रभ कूट से मोक्ष गये।

प्रश्न 1529. श्री पुष्पदंत जी भगवान कितने मुनियों के साथ मोक्ष गये ?

उत्तर– श्री पुष्पदंत जी भगवान एक हजार मुनियों के साथ मोक्ष गये।

प्रश्न 1530. श्री पुष्पदंत जी भगवान का योग निवृत्ति काल कितना था ?

उत्तर– श्री पुष्पदंत जी भगवान का योग निवृत्ति काल 1 माह का था।

प्रश्न 1531. श्री पुष्पदंत जी भगवान के अनुबद्ध केवलियों की संख्या कितनी थी ?

उत्तर– श्री पुष्पदंत जी भगवान के चौरासी अनुबद्ध केवली थे।

प्रश्न 1532. श्री पुष्पदंत जी भगवान के कितने शिष्यों ने अनुत्तर विमानों में जन्म लिया ?

उत्तर– श्री पुष्पदंत जी भगवान के ग्यारह हजार शिष्यों ने अनुत्तर विमानों में जन्म लिया।

प्रश्न 1533. श्री पुष्पदंत जी भगवान के कितने शिष्यों ने मोक्ष प्राप्त किया ?

उत्तर– श्री पुष्पदंत जी भगवान के एक लाख उन्यासी हजार छह सौ शिष्यों ने मोक्ष को प्राप्त किया।

प्रश्न 1534. श्री पुष्पदंत जी भगवान के कितने शिष्यों ने पहले स्वर्ग से लेकर ग्रैवेयक तक विमानों को प्राप्त किया ?

उत्तर– श्री पुष्पदंत जी भगवान के नौ हजार चार सौ मुनियों ने पहले स्वर्ग से लेकर ग्रैवेयक तक विमानों को प्राप्त किया।

प्रश्न 1535. श्री पुष्पदंत जी भगवान का तीर्थ प्रवर्तन काल कितना था ?

उत्तर– श्री पुष्पदंत जी भगवान का पाव पल्य कम नौ करोड़ सागर अट्ठाइस पूर्वांग वर्ष तीर्थ प्रवर्तन काल था।

प्रश्न 1536. श्री पुष्पदंत जी भगवान के तीर्थ काल में कितने समय तक धर्मतीर्थ का विच्छेद माना है ?

उत्तर– श्री पुष्पदंत जी भगवान के तीर्थ काल में पाव पल्य काल तक धर्मतीर्थ का विच्छेद माना है।

प्रश्न 1537. श्री पुष्पदंत जी भगवान के मोक्ष जाने के बाद कितने मुनि मोक्ष गये ?

उत्तर– श्री पुष्पदंत जी भगवान के मोक्ष जाने के बाद 18 कोड़ा कोड़ी 42 करोड़ 23 लाख 42905 मुनि मोक्ष गये।

प्रश्न 1538. धर्म तीर्थ विच्छेद में क्या होता है ?

उत्तर– उस काल में चतुर्विध (मुनि, आर्यिका, श्रावक, श्राविका) संघ नहीं होता है।

10

भगवान श्री शीतलनाथ जी

प्रश्न 1539. दसवें तीर्थंकर का नाम क्या है ?

उत्तर– दसवें तीर्थंकर का नाम श्री शीतलनाथ भगवान है।

प्रश्न 1540. श्री शीतलनाथ भगवान को किस चिन्ह् से जाना जाता है ?

उत्तर– श्री शीतलनाथ भगवान को कल्पवृक्ष चिन्ह से जाना जाता है।

प्रश्न 1541. श्री शीतलनाथ भगवान ने तीर्थंकर प्रकृति का बंध कौन सी पर्याय में किया ?

उत्तर– श्री शीतलनाथ भगवान ने तीर्थंकर प्रकृति का बंध पद्मगुल्म की पर्याय में किया।

प्रश्न 1542. श्री शीतलनाथ भगवान के पूर्व भव के पिता का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री शीतलनाथ भगवान के पूर्व भव के पिता सर्वजानंद थे।

प्रश्न 1543. श्री शीतलनाथ भगवान के पूर्व भव के दीक्षा गुरु कौन थे ?

उत्तर– श्री शीतलनाथ भगवान के पूर्व भव के दीक्षा गुरु उभयानंद थे।

प्रश्न 1544. श्री शीतलनाथ भगवान की पूर्व पर्याय का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री शीतलनाथ भगवान का पूर्व पर्याय का नाम पद्मगुल्म था।

प्रश्न 1545. श्री पद्मगुल्म किस देश के राजा थे ?

उत्तर– श्री पद्मगुल्म वत्सा देश के राजा थे।

प्रश्न 1546. श्री पद्मगुल्म किस नगरी के राजा थे ?

उत्तर– श्री पद्मगुल्म सुसीमा नामक नगरी के राजा थे।

प्रश्न 1547. सुसीमा नगर कहाँ स्थित हैं ?

उत्तर– सुसीमा नगर पूर्व पुष्करार्ध द्वीप में पूर्वी विदेह क्षेत्र में स्थित है।

प्रश्न 1548. श्री शीतलनाथ भगवान के पिता का क्या नाम था ?

उत्तर– श्री शीतलनाथ भगवान के पिता का नाम राजा श्री दृढ़रथ था।

प्रश्न 1549. श्री शीतलनाथ भगवान की माता का क्या नाम था ?

उत्तर– श्री शीतलनाथ भगवान की माता का नाम रानी सुनंदा देवी था।

प्रश्न 1550. श्री शीतलनाथ भगवान के वंश का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री शीतलनाथ भगवान का इक्ष्वाकु वंश था।

प्रश्न 1551. श्री शीतलनाथ भगवान कहाँ से गर्भ में आये ?

उत्तर– श्री शीतलनाथ भगवान अच्युत स्वर्ग से गर्भ में आये।

प्रश्न 1552. श्री शीतलनाथ भगवान की पूर्व भव की देव आयु कितनी थी ?

उत्तर– श्री शीतलनाथ भगवान की पूर्व भव की देव आयु 22 सागर थी।

प्रश्न 1553. श्री शीतलनाथ भगवान का गर्भ कल्याणक कौन-सी तिथि को हुआ था ?

उत्तर– श्री शीतलनाथ भगवान का गर्भ कल्याणक चैत्र कृष्णा अष्टमी को हुआ था।

प्रश्न 1554. श्री पुष्पदंत भगवान से कितने साल बाद शीतलनाथ भगवान हुये ?

उत्तर– श्री पुष्पदंत भगवान के मोक्ष जाने के सौ सागर बाद श्री शीतलनाथ भगवान का जन्म हुआ।

प्रश्न 1555. श्री शीतलनाथ भगवान का गर्भ कल्याणक कौन से नक्षत्र में हुआ था ?

उत्तर– श्री शीतलनाथ भगवान का गर्भ कल्याणक पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में हुआ था।

प्रश्न 1556. श्री शीतलनाथ भगवान का जन्म किस नगरी में हुआ था ?

उत्तर– श्री शीतलनाथ भगवान का जन्म भद्रिलपुर नगरी में हुआ था।

प्रश्न 1557. श्री शीतलनाथ भगवान का जन्म कौन सी तिथि में हुआ था ?

उत्तर– श्री शीतलनाथ भगवान का जन्म माघ कृष्णा द्वादशी को हुआ था।

प्रश्न 1558. श्री शीतलनाथ भगवान की जन्म राशि कौन सी थी ?

उत्तर– श्री शीतलनाथ भगवान की जन्म राशि धनु थी।

प्रश्न 1559. श्री शीतलनाथ भगवान का जन्म किस नक्षत्र में हुआ था।

उत्तर– श्री शीतलनाथ भगवान का जन्म पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में हुआ था।

प्रश्न 1560. श्री शीतलनाथ भगवान की आयु कितनी थी ?

उत्तर– श्री शीतलनाथ भगवान की आयु एक लाख पूर्व वर्ष की थी।

प्रश्न 1561. श्री शीतलनाथ भगवान का कुमार काल कितने वर्ष का था ?

उत्तर– श्री शीतलनाथ भगवान का कुमार काल पच्चीस हजार पूर्व वर्ष का था।

प्रश्न 1562. श्री शीतलनाथ भगवान के शरीर की ऊँचाई कितनी थी ?

उत्तर– श्री शीतलनाथ भगवान के शरीर की ऊँचाई नब्बे धनुष थी।

प्रश्न 1563. श्री शीतलनाथ भगवान के शरीर का वर्ण कैसा था ?

उत्तर– श्री शीतलनाथ भगवान के शरीर का स्वर्ण वर्ण था।

प्रश्न 1564. श्री शीतलनाथ भगवान का राज्य काल कितने वर्ष का था ?

उत्तर– श्री शीतलनाथ भगवान का राज्य काल पचास हजार पूर्व वर्ष का था।

प्रश्न 1565. श्री शीतलनाथ भगवान को कैसे वैराग्य हुआ ?

उत्तर– श्री शीतलनाथ भगवान को हिम माने ओस का नाश देखकर वैराग्य हुआ।

प्रश्न 1566. श्री शीतलनाथ भगवान की दीक्षा कौन सी तिथि को हुई ?

उत्तर– श्री शीतलनाथ भगवान की दीक्षा माघ कृष्णा द्वादशी को हुई।

प्रश्न 1567. श्री शीतलनाथ भगवान ने दीक्षा कौन से नक्षत्र में ली ?

उत्तर– श्री शीतलनाथ भगवान ने दीक्षा मूल नक्षत्र में ली।

प्रश्न 1568. श्री शीतलनाथ भगवान की दीक्षा पालकी का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री शीतलनाथ भगवान की दीक्षा पालकी का नाम शुक्रप्रभा था।

प्रश्न 1569. श्री शीतलनाथ भगवान ने कौन से वन में दीक्षा ली ?

उत्तर– श्री शीतलनाथ भगवान ने सहेतुक वन में दीक्षा ली।

प्रश्न 1570. श्री शीतलनाथ भगवान के पुत्र का क्या नाम था ?

उत्तर– श्री शीतलनाथ भगवान के पुत्र का नाम निदान था।

प्रश्न 1571. श्री शीतलनाथ भगवान ने कितने राजाओं के साथ दीक्षा ली ?

उत्तर– श्री शीतलनाथ भगवान ने एक हजार राजाओं के साथ दीक्षा ली।

प्रश्न 1572. श्री शीतलनाथ भगवान के दीक्षा उपवासों की संख्या कितनी हैं ?

उत्तर– श्री शीतलनाथ भगवान के दीक्षा उपवासों की संख्या दो है।

प्रश्न 1573. श्री शीतलनाथ भगवान ने किस वृक्ष के नीचे दीक्षा ली ?

उत्तर– श्री शीतलनाथ भगवान ने बेलवृक्ष के नीचे दीक्षा ली।

प्रश्न 1574. श्री शीतलनाथ भगवान की दीक्षा कौन से नगर में हुई थी ?

उत्तर– श्री शीतलनाथ भगवान की दीक्षा भद्रिल पुर नगर में हुई थी।

प्रश्न 1575. श्री शीतलनाथ भगवान की दीक्षा किस समय हुई ?

उत्तर– श्री शीतलनाथ भगवान की दीक्षा अपरान्ह काल में हुई थी।

प्रश्न 1576. श्री शीतलनाथ भगवान का प्रथम आहार किस नगर में हुआ था ?

उत्तर– श्री शीतलनाथ भगवान का प्रथम आहार अरिष्टपुर नगर में हुआ।

प्रश्न 1577. श्री शीतलनाथ भगवान को प्रथम आहार दान किसने दिया ?

उत्तर– श्री शीतलनाथ भगवान को प्रथम आहार दान राजा श्री पुनर्वसु ने दिया।

प्रश्न 1578. श्री शीतलनाथ भगवान ने किस वस्तु का आहार किया ?

उत्तर– श्री शीतलनाथ भगवान ने खीर का आहार लिया।

प्रश्न 1579. श्री शीतलनाथ भगवान ने कितने वर्षों तक तप किया ?

उत्तर– श्री शीतलनाथ भगवान तीन वर्ष तक तप किया।

प्रश्न 1580. श्री शीतलनाथ भगवान को केवलज्ञान कौन सी तिथि को हुआ था ?

उत्तर– श्री शीतलनाथ भगवान को केवलज्ञान पौष कृष्णा चतुर्दशी को हुआ था।

प्रश्न 1581. श्री शीतलनाथ भगवान को केवलज्ञान कौन से नक्षत्र में हुआ था ?

उत्तर– श्री शीतलनाथ भगवान को केवलज्ञान पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में हुआ था।

प्रश्न 1582. श्री शीतलनाथ भगवान को केवलज्ञान किस वन में हुआ था ?

उत्तर– श्री शीतलनाथ भगवान को केवलज्ञान सहेतुक वन में हुआ था।

प्रश्न 1583. श्री शीतलनाथ भगवान को केवलज्ञान किस समय हुआ था ?

उत्तर– श्री शीतलनाथ भगवान को केवलज्ञान अपरान्ह काल में हुआ था।

प्रश्न 1584. श्री शीतलनाथ भगवान को केवलज्ञान किस वृक्ष के नीचे हुआ था ?

उत्तर– श्री शीतलनाथ भगवान को केवलज्ञान धूलीपलाश वृक्ष के नीचे हुआ था।

प्रश्न 1585. श्री शीतलनाथ भगवान का समोशरण कितना विस्तरित था ?

उत्तर– श्री शीतलनाथ भगवान का समोशरण साढ़े सात योजन विस्तरित था।

प्रश्न 1586. श्री शीतलनाथ भगवान का केवली काल कितने वर्ष का था ?

उत्तर– श्री शीतलनाथ भगवान का केवली काल पच्चीस हजार पूर्व में तीन वर्ष कम था।

प्रश्न 1587. श्री शीतलनाथ भगवान के शासन यक्ष का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री शीतलनाथ भगवान के शासन यक्ष का नाम ब्रह्मेश्वर देव था।

प्रश्न 1588. श्री शीतलनाथ भगवान की शासन देवी का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री शीतलनाथ भगवान के शासन देवी का नाम मानषी था।

प्रश्न 1589. श्री शीतलनाथ भगवान के शासन से संबंधित क्षेत्रपालों के नाम क्या हैं ?

उत्तर– श्री शीतलनाथ भगवान के शासन से संबंधित क्षेत्रपालों के नाम – 1. श्री शतवीर्य, 2. श्री महावीर्य, 3. श्री बल वीर्य, 4. श्री कार्तिवीर्य जी हैं।

प्रश्न 1590. श्री शीतलनाथ भगवान के समोशरण में कितने गणधर थे ?

उत्तर– श्री शीतलनाथ भगवान के समोशरण में सतासी गणधर थे।

प्रश्न 1591. श्री शीतलनाथ भगवान के समोशरण में प्रमुख गणधर कौन थे ?

उत्तर– श्री शीतलनाथ भगवान के समोशरण में प्रमुख गणधर श्री कुंथु जी थे।

प्रश्न 1592. श्री शीतलनाथ भगवान के समोशरण में कुल कितने ऋषि थे ?

उत्तर– श्री शीतलनाथ भगवान के समोशरण में एक लाख ऋषि थे।

प्रश्न 1593. श्री शीतलनाथ भगवान के समोशरण में पूर्वधर मुनियों की संख्या कितनी थी ?

उत्तर– श्री शीतलनाथ भगवान के समोशरण में पूर्वधर मुनियों की संख्या एक हजार चार सौ थी।

प्रश्न 1594. श्री शीतलनाथ भगवान के समोशरण में कितने शिक्षक मुनि थे ?

उत्तर– श्री शीतलनाथ भगवान के समोशरण में उनसठ हजार दो सौ शिक्षक मुनि थे।

प्रश्न 1595. श्री शीतलनाथ भगवान के समोशरण में कितने अवधिज्ञानी मुनि थे ?

उत्तर– श्री शीतलनाथ भगवान के समोशरण में सात हजार दो सौ अवधि ज्ञानी मुनि थे।

प्रश्न 1596. श्री शीतलनाथ भगवान के समोशरण में कितने केवली थे ?

उत्तर– श्री शीतलनाथ भगवान के समोशरण में सात हजार केवली थे।

प्रश्न 1597. श्री शीतलनाथ भगवान के समोशरण में कितने विक्रिया धारी मुनि थे ?

उत्तर– श्री शीतलनाथ भगवान के समोशरण में बारह हजार विक्रिया धारी मुनि थे।

प्रश्न 1598. श्री शीतलनाथ भगवान के समोशरण में विपुलमति ज्ञान धारक मुनियों की संख्या कितनी थी ?

उत्तर– श्री शीतलनाथ भगवान के समोशरण में सात हजार पाँच सौ विपुलमति ज्ञान धारक मुनि थे।

प्रश्न 1599. श्री शीतलनाथ भगवान के समोशरण में वादी मुनियों की संख्या कितनी थी ?

उत्तर– श्री शीतलनाथ भगवान के समोशरण में पांच हजार सात सौ वादी मुनि थे।

प्रश्न 1600. श्री शीतलनाथ भगवान के समोशरण में कितनी आर्यिकाये थीं ?

उत्तर– श्री शीतलनाथ भगवान के समोशरण में तीन लाख अस्सी हजार आर्यिकायें थी।

प्रश्न 1601. श्री शीतलनाथ भगवान के समोशरण की प्रमुख आर्यिका कौन थीं ?

उत्तर– श्री शीतलनाथ भगवान के समोशरण की प्रमुख आर्यिका श्री धारणी थीं।

प्रश्न 1602. श्री शीतलनाथ भगवान के समोशरण में कितने श्रावक थे ?

उत्तर– श्री शीतलनाथ भगवान के समोशरण दो लाख श्रावक थे।

प्रश्न 1603. श्री शीतलनाथ भगवान के समोशरण में कितनी श्राविकायें थी ?

उत्तर– श्री शीतलनाथ भगवान के समोशरण में चार लाख श्राविकायें थी।

प्रश्न 1604. श्री शीतलनाथ भगवान को मोक्ष कौन सी तिथि को हुआ था ?

उत्तर– श्री शीतलनाथ भगवान को मोक्ष आश्विन शुक्ला अष्टमी को हुआ था।

प्रश्न 1605. श्री शीतलनाथ भगवान को मोक्ष कौन से नक्षत्र में हुआ था ?

उत्तर– श्री शीतलनाथ भगवान को मोक्ष पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में हुआ था।

प्रश्न 1606. श्री शीतलनाथ भगवान को मोक्ष किस समय हुआ था ?

उत्तर– श्री शीतलनाथ भगवान को मोक्ष पूर्वान्ह् काल में हुआ था।

प्रश्न 1607. श्री शीतलनाथ भगवान ने मोक्ष कहाँ से किस आसन से प्राप्त किया ?

उत्तर– श्री शीतलनाथ भगवान ने मोक्ष श्री सम्मेद शिखर से खड्गासन से प्राप्त किया।

प्रश्न 1608. श्री शीतलनाथ भगवान ने मोक्ष कौन से कूट से प्राप्त किया ?

उत्तर– श्री शीतलनाथ भगवान ने मोक्ष विद्युत कूट से प्राप्त किया।

प्रश्न 1609. श्री शीतलनाथ भगवान ने कितने मुनियों के साथ मोक्ष प्राप्त किया ?

उत्तर– श्री शीतलनाथ भगवान ने एक हजार मुनियों के साथ मोक्ष प्राप्त किया।

प्रश्न 1610. श्री शीतलनाथ भगवान का योगनिवृत्ति काल कितना था ?

उत्तर– श्री शीतलनाथ भगवान का योगनिवृत्ति काल एक माह था।

प्रश्न 1611. श्री शीतलनाथ भगवान के शासन काल में चतुर्विध संघ को यात्रा कराने वाले संघ पति का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री शीतलनाथ भगवान के शासन काल में चतुर्विध संघ को यात्रा कराने वाले संघ पति का नाम अविचल राजा था।

प्रश्न 1612. श्री शीतलनाथ भगवान के समोशरण में प्रमुख श्रोता कौन थे ?

उत्तर– श्री शीतलनाथ भगवान के समोशरण में प्रमुख श्रोता श्री मंदर जी थे।

प्रश्न 1613. श्री शीतलनाथ भगवान के शासन काल में कौन से रुद्र हुये ?

उत्तर– श्री शीतलनाथ भगवान के शासन काल में वैश्वानर नाम के रुद्र हुए।

प्रश्न 1614. श्री शीतलनाथ भगवान के कितने अनुबद्ध केवली थे ?

उत्तर– श्री शीतलनाथ भगवान चौरासी अनुबद्ध केवली थे।

प्रश्न 1615. श्री शीतलनाथ भगवान के कितने शिष्यों ने अनुत्तर विमानों में जन्म लिया ?

उत्तर– श्री शीतलनाथ भगवान के ग्यारह हजार शिष्यों ने अनुत्तर विमानों में जन्म लिया।

प्रश्न 1616. श्री शीतलनाथ भगवान के कितने शिष्यों ने मुक्ति को प्राप्त किया ?

उत्तर– श्री शीतलनाथ भगवान के अस्सी हजार छह सौ शिष्यों ने मुक्ति को प्राप्त किया।

प्रश्न 1617. श्री शीतलनाथ भगवान के कितने शिष्यों ने पहले स्वर्ग से ग्रैवेयक तक के स्वर्गों को प्राप्त किया ?

उत्तर– श्री शीतलनाथ भगवान के आठ हजार चार सौ शिष्यों ने पहले स्वर्ग से ग्रैवेयक तक के स्वर्गों को प्राप्त किया।

प्रश्न 1618. श्री शीतलनाथ भगवान का तीर्थ प्रवर्तन काल कितने वर्ष का था ?

उत्तर– श्री शीतलनाथ भगवान का तीर्थ प्रवर्तन काल एक करोड़ सागर में से सौ सागर आधा पल्य छियासठ लाख छब्बीस हजार कम पच्चीस हजार पूर्व वर्षों का तीर्थ प्रर्वतन काल था।

प्रश्न 1619. श्री शीतलनाथ भगवान के शासन काल में धर्म तीर्थ का विच्छेदन कितने काल तक रहा ?

उत्तर– श्री शीतलनाथ भगवान के शासन काल में आधापल्य काल की धर्म तीर्थ की व्युच्छिति हुई।

प्रश्न 1620. श्री शीतलनाथ भगवान के मोक्ष जाने के बाद कितने मुनि मोक्ष गये ?

उत्तर– श्री शीतलनाथ भगवान के मोक्ष जाने के बाद 96 कोड़ा-कोड़ी 969645542 मुनि मोक्ष गये।

11

भगवान श्री श्रेयांस नाथ जी

प्रश्न 1621. ग्यारहवें तीर्थंकर का नाम क्या है ?

उत्तर— ग्यारहवें तीर्थंकर का नाम श्री श्रेयांस नाथ भगवान जी है।

प्रश्न 1622. श्री श्रेयांस नाथ भगवान की पूर्व पर्याय का क्या नाम था ?

उत्तर— श्री श्रेयांस नाथ भगवान पूर्व पर्याय में श्री नीलप्रभ नाम के राजा थे।

प्रश्न 1623. श्री श्रेयांस नाथ भगवान ने तीर्थंकर प्रकृति का बंध कौन सी पर्याय में किया ?

उत्तर— श्री श्रेयांस नाथ भगवान ने तीर्थंकर प्रकृति का बंध नलिनप्रभ की पर्याय में किया।

प्रश्न 1624. श्री श्रेयांस नाथ भगवान के पूर्व भव के पिता का नाम क्या था ?

उत्तर— श्री श्रेयांस नाथ भगवान के पूर्व भव के पिता का नाम नित्यानंद था।

प्रश्न 1625. श्री श्रेयांस नाथ भगवान के पूर्व भव के दीक्षा गुरु कौन थे ?

उत्तर— श्री श्रेयांस नाथ भगवान के पूर्व भव दीक्षा गुरु बज्रदत्त थे।

प्रश्न 1626. श्री नीलप्रभ कहाँ के राजा थे ?

उत्तर— श्री नील प्रभ क्षेमपुर नगर के राजा थे।

प्रश्न 1627. श्री नील प्रभ किस देश के राजा थे ?

उत्तर— श्री नील प्रभ सुकच्छ देश के राजा थे।

प्रश्न 1628. क्षेमपुर नगर कहाँ है ?

उत्तर— क्षेमपुर नगर पूर्व पुष्करवर द्वीप के विदेह क्षेत्र में है।

प्रश्न 1629. श्री श्रेयांस नाथ भगवान के पिता का नाम क्या था ?

उत्तर— श्री श्रेयांस नाथ भगवान के पिता का नाम श्री विष्णु राज था।

प्रश्न 1630. श्री श्रेयांस नाथ भगवान की माता का नाम क्या था ?

उत्तर— श्री श्रेयांस नाथ भगवान की माता का नाम वेणु देवी (सुनंदा) नाम था।

प्रश्न 1631. श्री श्रेयांस नाथ भगवान कहाँ से गर्भ में आये ?

उत्तर— श्री श्रेयांस नाथ भगवान पुष्पोत्तर नाम के विमान से गर्भ में आये।

प्रश्न 1632. श्री श्रेयांस नाथ भगवान की पूर्व भव की देव आयु कितनी थी ?

उत्तर– श्री श्रेयांस नाथ भगवान की पूर्व भव की देव आयु 22 सागर थी।

प्रश्न 1633. श्री श्रेयांस नाथ भगवान के गर्भ कल्याणक की कौन सी तिथि थी ?

उत्तर– श्री श्रेयांस नाथ भगवान के गर्भ कल्याणक की तिथि ज्येष्ठ कृष्णा छट थी।

प्रश्न 1634. श्री श्रेयांस नाथ भगवान कौन से नक्षत्र में गर्भ में आये ?

उत्तर– श्री श्रेयांस नाथ भगवान श्रवण नक्षत्र में गर्भ में आये।

प्रश्न 1635. श्री श्रेयांस नाथ भगवान ने किस स्थान पर जन्म लिया था ?

उत्तर– श्री श्रेयांस नाथ भगवान ने सिंहपुर नगर में जन्म लिया था।

प्रश्न 1636. श्री श्रेयांस नाथ भगवान का जन्म कल्याणक किस तिथि को हुआ था ?

उत्तर– श्री श्रेयांस नाथ भगवान का जन्म कल्याणक फाल्गुन कृष्णा एकादशी को हुआ था।

प्रश्न 1637. श्री श्रेयांस नाथ भगवान ने कौन से नक्षत्र में जन्म लिया ?

उत्तर– श्री श्रेयांस नाथ भगवान ने श्रवण नक्षत्र में जन्म लिया।

प्रश्न 1638. श्री श्रेयांस नाथ भगवान ने कौन से वंश में जन्म लिया ?

उत्तर– श्री श्रेयांस नाथ भगवान ने इक्ष्वाकु वंश में जन्म लिया।

प्रश्न 1639. श्री श्रेयांस नाथ भगवान की जन्म राशि कौन सी थी ?

उत्तर– श्री श्रेयांस नाथ भगवान की जन्म राशि मकर थी।

प्रश्न 1640. श्री श्रेयांस नाथ भगवान की आयु कितनी थी ?

उत्तर– श्री श्रेयांस नाथ भगवान की आयु चौरासी लाख वर्ष की थी।

प्रश्न 1641. श्री श्रेयांस नाथ भगवान का कुमार काल कितने वर्ष का था।

उत्तर– श्री श्रेयांस नाथ भगवान का कुमार काल इक्कीस लाख वर्ष का था।

प्रश्न 1642. श्री श्रेयांस नाथ भगवान के शरीर की ऊँचाई कितनी थी ?

उत्तर– श्री श्रेयांस नाथ भगवान के शरीर की ऊँचाई अस्सी धनुष थी।

प्रश्न 1643. श्री श्रेयांस नाथ भगवान का वर्ण कैसा था ?

उत्तर– श्री श्रेयांस नाथ भगवान स्वर्ण वर्ण के थे।

प्रश्न 1644. श्री श्रेयांस नाथ भगवान का चिन्ह कौन सा है ?

उत्तर– श्री श्रेयांस नाथ भगवान का गैंडा चिन्ह है।

प्रश्न 1645. श्री शीतलनाथ भगवान के मोक्ष जाने के कितने समय बाद श्री श्रेयांस नाथ भगवान हुए ?

उत्तर— श्री शीतलनाथ भगवान के मोक्ष जाने के एक सौ एक सागर छयासठ लाख छब्बीस हजार वर्ष कम, वर्ष बीत जाने पर श्री श्रेयांस नाथ भगवान हुए।

प्रश्न 1646. श्री श्रेयांस नाथ भगवान के नाम की सार्थकता क्या हैं ?

उत्तर— श्री श्रेयांस नाथ भगवान की श्रेयो अर्थात् मोक्ष मार्ग को बतलाने वाले ऐसे ईश्वर श्रेयांस नाथ सार्थक हैं।

प्रश्न 1647. श्री श्रेयांस नाथ भगवान ने कितने समय तक राज्य किया ?

उत्तर— श्री श्रेयांस नाथ भगवान ने ब्यालिस लाख वर्ष तक राज्य किया।

प्रश्न 1648. श्री श्रेयांस नाथ भगवान को वैराग्य कैसे हुआ ?

उत्तर— श्री श्रेयांस नाथ भगवान को बसंत लक्ष्मी का नाश देखकर वैराग्य हुआ ?

प्रश्न 1649. श्री श्रेयांस नाथ भगवान ने दीक्षा कौन सी तिथि को ली ?

उत्तर— श्री श्रेयांस नाथ भगवान ने दीक्षा फाल्गुन कृष्णा एकादशी को ली।

प्रश्न 1650. श्री श्रेयांस नाथ भगवान ने दीक्षा कौन से नक्षत्र में ली ?

उत्तर— श्री श्रेयांस नाथ भगवान ने दीक्षा श्रवण नक्षत्र में ली।

प्रश्न 1651. श्री श्रेयांस नाथ भगवान की दीक्षा कौन से वन में हुई थी ?

उत्तर— श्री श्रेयांस नाथ भगवान की दीक्षा मनोहर वन में हुई थी।

प्रश्न 1652. श्री श्रेयांस नाथ भगवान की दीक्षा कौन से नगर में हुई थी ?

उत्तर— श्री श्रेयांस नाथ भगवान की दीक्षा सिंहपुर नगर में हुई थी।

प्रश्न 1653. श्री श्रेयांस नाथ भगवान के पुत्र का क्या नाम था ?

उत्तर— श्री श्रेयांस नाथ भगवान के पुत्र का नाम श्री श्रेयस्कर था।

प्रश्न 1654. श्री श्रेयांस नाथ भगवान की दीक्षा पालकी का क्या नाम था ?

उत्तर— श्री श्रेयांस नाथ भगवान की दीक्षा पालकी का नाम विमल प्रभा था।

प्रश्न 1655. श्री श्रेयांस नाथ भगवान ने कितने राजाओं के साथ दीक्षा ली ?

उत्तर— श्री श्रेयांस नाथ भगवान ने एक हजार राजाओं के साथ दीक्षा ली।

प्रश्न 1656. श्री श्रेयांस नाथ भगवान ने दीक्षा किस समय ली ?

उत्तर— श्री श्रेयांस नाथ भगवान ने दीक्षा पूर्वान्ह काल में ली।

प्रश्न 1657. श्री श्रेयांस नाथ भगवान ने किस वृक्ष के नीचे दीक्षा ली ?

उत्तर— श्री श्रेयांस नाथ भगवान ने तेंदू वृक्ष के नीचे दीक्षा ली।

प्रश्न 1658. श्री श्रेयांस नाथ भगवान ने दीक्षा के समय कितने उपवास किये ?

उत्तर– श्री श्रेयांस नाथ भगवान ने दीक्षा के समय दो उपवास किये।

प्रश्न 1659. श्री श्रेयांस नाथ भगवान ने कितने समय तक तप किया ?

उत्तर– श्री श्रेयांस नाथ भगवान ने दो वर्ष तक तप किया।

प्रश्न 1660. श्री श्रेयांस नाथ भगवान का प्रथम आहार किस नगर में हुआ था ?

उत्तर– श्री श्रेयांस नाथ भगवान का प्रथम आहार सिद्धार्थ नगर में हुआ था।

प्रश्न 1661. श्री श्रेयांस नाथ भगवान को प्रथम आहार किसने दिया था ?

उत्तर– श्री श्रेयांस नाथ भगवान को प्रथम आहार नंद राजा ने दिया था।

प्रश्न 1662. श्री श्रेयांस नाथ भगवान ने किस वस्तु का आहार लिया था ?

उत्तर– श्री श्रेयांस नाथ भगवान ने खीर का आहार लिया था।

प्रश्न 1663. श्री श्रेयांस नाथ भगवान को केवलज्ञान किस तिथि में हुआ था ?

उत्तर– श्री श्रेयांस नाथ भगवान को केवलज्ञान माघ कृष्णा अमावस को हुआ था।

प्रश्न 1664. श्री श्रेयांस नाथ भगवान को केवलज्ञान किस वन में हुआ था ?

उत्तर– श्री श्रेयांस नाथ भगवान को केवलज्ञान मनोहर वन में हुआ था।

प्रश्न 1665. श्री श्रेयांस नाथ भगवान को केवलज्ञान किस नक्षत्र में हुआ था ?

उत्तर– श्री श्रेयांस नाथ भगवान को केवलज्ञान श्रवण नक्षत्र में हुआ था।

प्रश्न 1666. श्री श्रेयांस नाथ भगवान को केवलज्ञान किस वृक्ष के नीचे हुआ था ?

उत्तर– श्री श्रेयांस नाथ भगवान को केवलज्ञान तेंदुवृक्ष के नीचे हुआ था।

प्रश्न 1667. श्री श्रेयांस नाथ भगवान का केवली काल कितने वर्ष का था।

उत्तर– श्री श्रेयांस नाथ भगवान का केवली काल बीस लाख निन्यानवे हजार नौ सौ अठानवे वर्ष का था।

प्रश्न 1668. श्री श्रेयांस नाथ भगवान का समोशरण कितना विस्तरित था ?

उत्तर– श्री श्रेयांस नाथ भगवान का समोशरण सात योजन का था।

प्रश्न 1669. श्री श्रेयांस नाथ भगवान के शासन यक्ष का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री श्रेयांस नाथ भगवान के शासन यक्ष का नाम कुमार यक्ष (ईश्वर यक्षराट) था।

प्रश्न 1670. श्री श्रेयांस नाथ भगवान की शासन देवी का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री श्रेयांस नाथ भगवान की शासन देवी का नाम गौरी देवी (महाकाली देवी) था।

प्रश्न 1671. श्री श्रेयांस नाथ भगवान के क्षेत्रपाल देवों के नाम क्या थे ?

उत्तर– श्री श्रेयांस नाथ भगवान के क्षेत्रपाल देवों के नाम – 1. श्री तीर्थरूचि, 2. भावरूचि, 3. श्री भव्यरूचि, 4. श्री शांतरूचि थे।

प्रश्न 1672. श्री श्रेयांस नाथ भगवान के समोशरण में कितने गणधर थे ?

उत्तर– श्री श्रेयांस नाथ भगवान के समोशरण में सत्तर गणधर थे।

प्रश्न 1673. श्री श्रेयांस नाथ भगवान के प्रमुख गणधर का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री श्रेयांस नाथ भगवान के प्रमुख गणधर का नाम धर्म था।

प्रश्न 1674. श्री श्रेयांस नाथ भगवान के समोशरण में कितने ऋषि थे ?

उत्तर– श्री श्रेयांस नाथ भगवान के समोशरण में चौरासी हजार ऋषि थे।

प्रश्न 1675. श्री श्रेयांस नाथ भगवान को केवलज्ञान किस नगर में हुआ था ?

उत्तर– श्री श्रेयांस नाथ भगवान को केवलज्ञान सिंहपुर नगर में हुआ था।

प्रश्न 1676. श्री श्रेयांस नाथ भगवान के समोशरण में कितने पूर्वधर मुनि थे ?

उत्तर– श्री श्रेयास नाथ भगवान में समोशरण में एक हजार तीन सौ पूर्वधर मुनि थे।

प्रश्न 1677. श्री श्रेयांस नाथ भगवान के समोशरण में कितने शिक्षक मुनि थे ?

उत्तर– श्री श्रेयांस नाथ भगवान के समोशरण में अड़तालिस हजार दो सौ शिक्षक मुनि थे।

प्रश्न 1678. श्री श्रेयांस नाथ भगवान के कितने अवधि ज्ञानी मुनि थे ?

उत्तर– श्री श्रेयास नाथ भगवान के छह हजार अवधि ज्ञानी मुनि थे।

प्रश्न 1679. श्री श्रेयांस नाथ भगवान के समोशरण में कितने केवली थे ?

उत्तर– श्री श्रेयांस नाथ भगवान के समोशरण में छह हजार पांच सौ केवली थे।

प्रश्न 1680. श्री श्रेयांस नाथ भगवान के समोशरण में कितने विक्रिया धारी मुनि थे ?

उत्तर– श्री श्रेयांस नाथ भगवान के समोशरण में ग्यारह हजार विक्रिया धारी मुनि थे।

प्रश्न 1681. श्री श्रेयांस नाथ भगवान के समोशरण में कितने विपुलमति ज्ञान के धारक मुनि थे ?

उत्तर– श्री श्रेयांस नाथ भगवान के समोशरण में छह हजार विपुल मति ज्ञान धारी मुनि थे।

प्रश्न 1682. श्री श्रेयांस नाथ भगवान के समोशरण में कितने वादी मुनि थे ?

उत्तर– श्री श्रेयांस नाथ भगवान के समोशरण में पांच हजार वादी मुनि थे।

प्रश्न 1683. श्री श्रेयांस नाथ भगवान के समोशरण में कितनी आर्यिकायें थीं ?

उत्तर– श्री श्रेयांस नाथ भगवान के समोशरण में एक लाख तीस हजार आर्यिकायें थीं।

प्रश्न 1684. श्री श्रेयांस नाथ भगवान के समोशरण में प्रमुख आर्यिका कौन थी ?

उत्तर– श्री श्रेयांस नाथ भगवान के समोशरण में प्रमुख आर्यिका चारणा नाम की थी।

प्रश्न 1685. श्री श्रेयांस नाथ भगवान के समोशरण में कितने श्रावक थे ?

उत्तर– श्री श्रेयांस नाथ भगवान के समोशरण में दो लाख श्रावक थे।

प्रश्न 1686. श्री श्रेयांस नाथ भगवान के समोशरण में कितनी श्राविका थीं ?

उत्तर– श्री श्रेयांस नाथ भगवान के समोशरण में चार लाख श्राविका थीं।

प्रश्न 1687. श्री श्रेयांस नाथ भगवान को मोक्ष कौन सी तिथि में हुआ था ?

उत्तर– श्री श्रेयांस नाथ भगवान को मोक्ष श्रावण शुक्ला पूर्णमासी को हुआ था।

प्रश्न 1688. श्री श्रेयांस नाथ भगवान को मोक्ष किस समय, किस आसन से हुआ था ?

उत्तर– श्री श्रेयांस नाथ भगवान को मोक्ष पूर्वान्हि काल में खड्गासन से हुआ था।

प्रश्न 1689. श्री श्रेयांस नाथ भगवान को मोक्ष कौन से नक्षत्र में हुआ था ?

उत्तर– श्री श्रेयांस नाथ भगवान को मोक्ष धनिष्ठा नक्षत्र में हुआ था।

प्रश्न 1690. श्री श्रेयांस नाथ भगवान को मोक्ष कौन से स्थान पर हुआ था ?

उत्तर– श्री श्रेयांस नाथ भगवान को मोक्ष श्री सम्मेद शिखर पर हुआ था।

प्रश्न 1691. श्री श्रेयांस नाथ भगवान को मोक्ष कौन से कूट से हुआ था ?

उत्तर– श्री श्रेयांस नाथ भगवान को मोक्ष संकुल कुट से हुआ था।

प्रश्न 1692. श्री श्रेयांस नाथ भगवान के शासन काल में चतुर्विध संघ को यात्रा कराने वाले संघ पति का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री श्रेयांस नाथ भगवान के शासन काल में चतुर्विध संघ को यात्रा कराने वाले संघ पति का नाम राजा श्री आनंद सेन था।

प्रश्न 1693. श्री श्रेयांस नाथ भगवान कितने मुनियों के साथ मोक्ष गये ?

उत्तर– श्री श्रेयांस नाथ भगवान एक हजार मुनियों के साथ मोक्ष गये।

प्रश्न 1694. श्री श्रेयांस नाथ भगवान का योग निवृत्ति काल कितना था ?

उत्तर– श्री श्रेयांस नाथ भगवान का योग निवृत्ति काल एक माह था।

प्रश्न 1695. श्री श्रेयांस नाथ भगवान के कितने अनुबद्ध केवली हुए ?

उत्तर– श्री श्रेयांस नाथ भगवान के बहात्तर अनुबद्ध केवली हुए।

प्रश्न 1696. श्री श्रेयांस नाथ भगवान के कितने शिष्यों ने अनुत्तर विमानों को प्राप्त किया ?

उत्तर– श्री श्रेयांस नाथ भगवान के ग्यारह हजार शिष्यों ने अनुत्तर विमानों को प्राप्त किया।

प्रश्न 1697. श्री श्रेयांस नाथ भगवान के कितने शिष्यों ने मोक्ष प्राप्त किया ?

उत्तर– श्री श्रेयांस नाथ भगवान के पैंसठ हजार छह सौ शिष्यों ने मोक्ष प्राप्त किया।

प्रश्न 1698. श्री श्रेयांस नाथ भगवान के कितने मुनि पहले स्वर्ग से ग्रैयेवयक तक गये ?

उत्तर– श्री श्रेयांस नाथ भगवान के सात हजार चार सौ शिष्य पहले स्वर्ग से ग्रैवेयक तक गये।

प्रश्न 1699. श्री श्रेयांस नाथ भगवान का तीर्थप्रवर्तन काल कितने वर्षों का था ?

उत्तर– श्री श्रेयांस नाथ भगवान का चौवन सागर इक्कीस लाख वर्षों में पौन पल्य कम वर्ष तक तीर्थ प्रवर्तन काल रहा।

प्रश्न 1700. पोन पल्य कम क्यों कहा ?

उत्तर– क्योंकि पोन पल्य काल में धर्म तीर्थ की व्युच्छित्ति रही।

प्रश्न 1701. श्री श्रेयांस नाथ भगवान के मोक्ष जाने के बाद कितने मुनि मोक्ष गये ?

उत्तर– श्री श्रेयांस नाथ भगवान के मोक्ष जाने के बाद 706006742 मुनि मोक्ष गये।

12

भगवान श्री वासुपूज्य जी

प्रश्न 1702. बारहवें तीर्थंकर का नाम क्या है ?

उत्तर– बारहवें तीर्थंकर का नाम श्री वासुपूज्य भगवान जी है।

प्रश्न 1703. श्री वासुपूज्य भगवान की क्या विशेषता है ?

उत्तर– ये पहले बालब्रह्मचारी तीर्थंकर हैं तथा इनके पांचों कल्याणक एक ही स्थान चंपापुर में हुए हैं।

प्रश्न 1704. श्री वासुपूज्य भगवान ने तीर्थंकर प्रकृति का बंध कौन सी पर्याय में किया ?

उत्तर– श्री वासुपूज्य भगवान ने तीर्थंकर प्रकृति का बंध पद्मोत्तर की पर्याय में किया।

प्रश्न 1705. श्री वासुपूज्य भगवान के पूर्व भव के पिता का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री वासुपूज्य भगवान के पूर्व भव के पिता का नाम बज्रदंत था।

प्रश्न 1706. श्री वासुपूज्य भगवान के पूर्व भव के दीक्षा गुरु कौन थे ?

उत्तर– श्री वासुपूज्य भगवान के पूर्व भव के दीक्षा गुरु बज्रनाभि थे।

प्रश्न 1707. श्री वासुपूज्य भगवान की पूर्व पर्याय का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री वासुपूज्य भगवान की पूर्व पर्याय का नाम राजा श्री पद्मोत्तर जी था।

प्रश्न 1708. राजा पद्मात्तर कौन से देश के राजा थे ?

उत्तर– राजा पद्मात्तर पूर्व पुष्करार्ध द्वीप में वत्सकावती देश के राजा थे।

प्रश्न 1709. श्री पद्मोत्तर किस नगर के राजा थे ?

उत्तर– श्री पद्मोत्तर रत्नपुर नगर के राजा थे।

प्रश्न 1710. श्री पद्मोत्तर राजा के पुत्र का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री पद्मोत्तर राजा के पुत्र का नाम श्री धनमित्र था।

प्रश्न 1711. श्री वासुपूज्य भगवान के पिता का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री वासुपूज्य भगवान के पिता का नाम राजा वसूपूज्य था।

प्रश्न 1712. श्री वासुपूज्य भगवान की माता का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री वासुपूज्य भगवान की माता का नाम जयावती (विजया) था।

प्रश्न 1713. श्री वासुपूज्य भगवान का गर्भकल्याणक कौन सी तिथि को हुआ था ?

उत्तर– श्री वासुपूज्य भगवान का गर्भकल्याणक अषाढ़ कृष्णा षष्ठी को हुआ था।

प्रश्न 1714. श्री वासुपूज्य भगवान कौन से नक्षत्र में गर्भ में आये ?

उत्तर– श्री वासुपूज्य भगवान शतभिषा नक्षत्र में गर्भ में आये।

प्रश्न 1715. श्री वासुपूज्य भगवान कहाँ से गर्भ में आये ?

उत्तर– श्री वासुपूज्य भगवान महाशुक्र स्वर्ग से गर्भ में आये।

प्रश्न 1716. श्री वासुपूज्य भगवान की पूर्व भव की देव आयु कितनी थी ?

उत्तर– श्री वासुपूज्य भगवान की पूर्व भव की देव आयु 16 सागर थी।

प्रश्न 1717. श्री वासुपूज्य भगवान का जन्म किस नगर में हुआ था ?

उत्तर– श्री वासुपूज्य भगवान का जन्म चम्पापुर नगर में हुआ था।

प्रश्न 1718. श्री वासुपूज्य भगवान का जन्म कौन सी तिथि को हुआ था ?

उत्तर– श्री वासुपूज्य भगवान का जन्म फाल्गुन कृष्णा चतुर्दशी को हुआ था।

प्रश्न 1719. श्री वासुपूज्य भगवान का जन्म कल्याणक कौन से नक्षत्र में हुआ था ?

उत्तर– श्री वासुपूज्य भगवान का जन्म कल्याणक विशाखा नक्षत्र में हुआ था।

प्रश्न 1720. श्री वासुपूज्य भगवान की जन्म राशि कौन-सी थी ?

उत्तर– श्री वासुपूज्य भगवान की जन्म राशि कुंभ थी।

प्रश्न 1721. श्री वासुपूज्य भगवान ने कौन से वंश में जन्म लिया था ?

उत्तर– श्री वासुपूज्य भगवान ने इक्ष्वाकु वंश में जन्म लिया था।

प्रश्न 1722. श्री वासुपूज्य भगवान को कौन से चिन्ह से जाना जाता है ?

उत्तर– श्री वासुपूज्य भगवान को भैंसा चिन्ह से जाना जाता है ?

प्रश्न 1723. श्री वासुपूज्य भगवान की आयु कितनी थी ?

उत्तर– श्री वासुपूज्य भगवान की आयु बहत्तर लाख वर्ष की थी।

प्रश्न 1724. श्री वासुपूज्य भगवान का कुमार काल कितने वर्ष का था ?

उत्तर– श्री वासुपूज्य भगवान का कुमार काल अठारह लाख वर्ष का था।

प्रश्न 1725. श्री वासुपूज्य भगवान के शरीर की ऊँचाई कितनी थी ?

उत्तर– श्री वासुपूज्य भगवान के शरीर की ऊँचाई सत्तर धनुष थी।

प्रश्न 1726. श्री वासुपूज्य भगवान के शरीर का रंग कैसा था ?

उत्तर– श्री वासुपूज्य भगवान के शरीर का रंग विद्रुम या (केशर के समान वर्ण) था।

प्रश्न 1727. श्री वासुपूज्य भगवान का राज्य काल कितने वर्ष का था ?

उत्तर– श्री वासुपूज्य भगवान ने राज्य नही किया था।

प्रश्न 1728. श्री श्रेयांसनाथ भगवान के मोक्ष जाने के कितने समय बाद श्री वासुपूज्य भगवान हुए ?

उत्तर– श्री श्रेयांसनाथ भगवान के मोक्ष जाने के बहत्तर लाख वर्ष कम चौवन सागर बीत जाने पर वासुपूज्य भगवान हुए।

प्रश्न 1729. श्री वासुपूज्य भगवान को वैराग्य कैसे हुआ ?

उत्तर– श्री वासुपूज्य भगवान को वैराग्य जाति स्मरण से हुआ।

प्रश्न 1730. श्री वासुपूज्य भगवान ने दीक्षा कौन सी तिथि में ली ?

उत्तर– श्री वासुपूज्य भगवान ने दीक्षा फाल्गुन कृष्णा चतुर्दशी को ली।

प्रश्न 1731. श्री वासुपूज्य भगवान ने दीक्षा कौन से नक्षत्र में ली ?

उत्तर– श्री वासुपूज्य भगवान ने दीक्षा विशाखा नक्षत्र में ली।

प्रश्न 1732. श्री वासुपूज्य भगवान ने दीक्षा कौन से नगर में ली ?

उत्तर– श्री वासुपूज्य भगवान ने दीक्षा चम्पापुर नगर में ली।

प्रश्न 1733. श्री वासुपूज्य भगवान के दीक्षा वृक्ष का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री वासुपूज्य भगवान का दीक्षा वृक्ष कदंब था।

प्रश्न 1734. श्री वासुपूज्य भगवान ने दीक्षा कौन से वन में ली ?

उत्तर– श्री वासुपूज्य भगवान ने दीक्षा मनोहर वन में ली।

प्रश्न 1735. श्री वासुपूज्य भगवान ने दीक्षा किस समय ली ?

उत्तर– श्री वासुपूज्य भगवान ने दीक्षा अपरान्ह काल में ली।

प्रश्न 1736. श्री वासुपूज्य भगवान ने दीक्षा के समय कितने उपवास किये ?

उत्तर– श्री वासुपूज्य भगवान ने दीक्षा के समय दो उपवास किये।

प्रश्न 1737. श्री वासुपूज्य भगवान की दीक्षा पालकी का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री वासुपूज्य भगवान की दीक्षा पालकी का नाम पुष्प आभा था।

प्रश्न 1738. श्री वासुपूज्य भगवान ने कितने राजाओं के साथ दीक्षा ली ?

उत्तर– श्री वासुपूज्य भगवान ने छह सौ छियत्तर राजाओं के साथ दीक्षा ली।

प्रश्न 1739. श्री वासुपूज्य भगवान ने कितने वर्षो तक तप किया ?

उत्तर– श्री वासुपूज्य भगवान ने 1 वर्ष तक तप किया।

प्रश्न 1740. श्री वासुपूज्य भगवान को केवलज्ञान किस तिथि को हुआ ?

उत्तर– श्री वासुपूज्य भगवान को केवलज्ञान माघ शुक्ला दूज को हुआ।

प्रश्न 1741. श्री वासुपूज्य भगवान को केवलज्ञान किस नक्षत्र में हुआ ?

उत्तर– श्री वासुपूज्य भगवान को केवलज्ञान विशाखा नक्षत्र में हुआ।

प्रश्न 1742. श्री वासुपूज्य भगवान ने किस वस्तु का आहार लिया था ?

उत्तर– श्री वासुपूज्य भगवान ने खीर का आहार लिया था।

प्रश्न 1743. श्री वासुपूज्य भगवान का प्रथम आहार कहाँ हुआ था ?

उत्तर– श्री वासुपूज्य भगवान का प्रथम आहार महानगर में हुआ था।

प्रश्न 1744. श्री वासुपूज्य भगवान को प्रथम आहार किसने दिया था ?

उत्तर– श्री वासुपूज्य भगवान को प्रथम आहार श्री सुन्दर नाम के राजा ने दिया था।

प्रश्न 1745. श्री वासुपूज्य भगवान को केवलज्ञान कौन से नगर में हुआ था ?

उत्तर– श्री वासुपूज्य भगवान को केवलज्ञान चम्पापुर नगर में हुआ था।

प्रश्न 1746. श्री वासुपूज्य भगवान को केवलज्ञान किस वन में हुआ ?

उत्तर– श्री वासुपूज्य भगवान को केवलज्ञान मनोहर वन में हुआ था।

प्रश्न 1747. श्री वासुपूज्य भगवान को केवलज्ञान किस वृक्ष के नीचे हुआ ?

उत्तर– श्री वासुपूज्य भगवान को केवलज्ञान पाटल वृक्ष के नीचे हुआ।

प्रश्न 1748. श्री वासुपूज्य भगवान को केवलज्ञान किस समय हुआ ?

उत्तर– श्री वासुपूज्य भगवान को केवलज्ञान अपरान्ह काल में हुआ था।

प्रश्न 1749. श्री वासुपूज्य भगवान का समोशरण कितना विस्तरित था ?

उत्तर– श्री वासुपूज्य भगवान का समोशरण साढ़े छह योजन विस्तरित था।

प्रश्न 1750. श्री वासुपूज्य भगवान के शासन यक्ष का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री वासुपूज्य भगवान के शासन यक्ष का नाम षण्णमुख यक्ष था।

प्रश्न 1751. श्री वासुपूज्य भगवान की शासन देवी का नाम क्या था?

उत्तर– श्री वासुपूज्य भगवान की शासन देवी का नाम गंधारी देवी था।

प्रश्न 1752. श्री वासुपूज्य भगवान के शासन देव क्षेत्रपालों के नाम क्या थे ?

उत्तर– श्री वासुपूज्य भगवान के शासन देव क्षेत्रपालों के नाम – 1. श्री लब्धि रुचि, 2. श्री तत्व रुचि, 3. सम्यकत्व रुचि, 4. श्री सूर्यवाद रुचि थे।

प्रश्न 1753. श्री वासुपूज्य भगवान का केवली काल कितने वर्ष का था ?

उत्तर– श्री वासुपूज्य भगवान का केवली काल त्रेपनलाख निन्यानवे हजार नौ सौ निन्यानवे वर्ष का था।

प्रश्न 1754. श्री वासुपूज्य भगवान के कितने गणधर थे ?

उत्तर– श्री वासुपूज्य भगवान के छियासठ गणधर थे।

प्रश्न 1755. श्री वासुपूज्य भगवान के प्रमुख गणधर कौन थे ?

उत्तर– श्री वासुपूज्य भगवान के प्रमुख गणधर धर्म नाम के गणधर थे।

प्रश्न 1756. श्री वासुपूज्य भगवान के समोशरण में प्रमुख श्रोता कौन थे ?

उत्तर– श्री वासुपूज्य भगवान के समोशरण में प्रमुख श्रोता श्री दिवपिष्ठ जी (स्वयंभू श्री जी) थे।

प्रश्न 1757. श्री वासुपूज्य भगवान के समोशरण में कितने ऋषि थे ?

उत्तर– श्री वासुपूज्य भगवान के समोशरण में बहत्तर हजार ऋषि थे।

प्रश्न 1758. श्री वासुपूज्य भगवान के समोशरण में कितने पूर्व धर मुनि थे ?

उत्तर– श्री वासुपूज्य भगवान के समोशरण में एक हजार दो सौ पूर्वधर मुनि थे।

प्रश्न 1759. श्री वासुपूज्य भगवान के समोशरण में कितने शिक्षक मुनि थे ?

उत्तर– श्री वासुपूज्य भगवान के समोशरण में उन्तालिस हजार दो सौ शिक्षक मुनि थे।

प्रश्न 1760. श्री वासुपूज्य भगवान के समोशरण में कितने अवधि ज्ञानी मुनि थे ?

उत्तर– श्री वासुपूज्य भगवान के समोशरण में पांच हजार चार सौ अवधि ज्ञानी मुनि थे।

प्रश्न 1761. श्री वासुपूज्य भगवान के समोशरण में कितने केवली थे ?

उत्तर– श्री वासुपूज्य भगवान के समोशरण में छह हजार केवली थे।

प्रश्न 1762. श्री वासुपूज्य भगवान के समोशरण में विक्रिया धारी मुनि कितने थे ?

उत्तर– श्री वासुपूज्य भगवान के समोशरण में दस हजार विक्रिया धारी मुनि थे।

प्रश्न 1763. श्री वासुपूज्य भगवान के समोशरण में विपुलमति ज्ञान के धारक कितने मुनि थे ?

उत्तर– श्री वासुपूज्य भगवान के समोशरण में छह हजार विपुलमति ज्ञान धारी मुनि थे।

प्रश्न 1764. श्री वासुपूज्य भगवान के समोशरण में वादी मुनियों की संख्या कितनी थी ?

उत्तर– श्री वासुपूज्य भगवान के समोशरण में चार हजार दो सौ वादी मुनि थे।

प्रश्न 1765. श्री वासुपूज्य भगवान के समोशरण में कितनी आर्यिकायें थीं ?

उत्तर– श्री वासुपूज्य भगवान के समोशरण में एक लाख छह हजार आर्यिकायें थीं।

प्रश्न 1766. श्री वासुपूज्य भगवान के समोशरण में प्रमुख आर्यिका कौन थीं ?

उत्तर– श्री वासुपूज्य भगवान के समोशरण में प्रमुख आर्यिका श्री वरसेना जी थीं।

प्रश्न 1767. श्री वासुपूज्य भगवान के समोशरण में कितने श्रावक थे ?

उत्तर– श्री वासुपूज्य भगवान के समोशरण में दो लाख श्रावक थे।

प्रश्न 1768. श्री वासुपूज्य भगवान के समोशरण में कितनी श्राविकायें थीं ?

उत्तर– श्री वासुपूज्य भगवान के समोशरण में चार लाख श्राविकायें थीं।

प्रश्न 1769. श्री वासुपूज्य भगवान ने मोक्ष किस नगर में प्राप्त किया ?

उत्तर– श्री वासुपूज्य भगवान ने मोक्ष चंपापुर नगर में प्राप्त किया।

प्रश्न 1770. श्री वासुपूज्य भगवान ने कहाँ मोक्ष प्राप्त किया ?

उत्तर– श्री वासुपूज्य भगवान ने चंपापुर में मंदारगिरि पर्वत से मोक्ष प्राप्त किया।

प्रश्न 1771. श्री वासुपूज्य भगवान ने मोक्ष किस तिथि में प्राप्त किया ?

उत्तर– श्री वासुपूज्य भगवान ने मोक्ष भादों शुक्ला चतुर्दशी को प्राप्त किया।

प्रश्न 1772. श्री वासुपूज्य भगवान ने मोक्ष किस समय प्राप्त किया ?

उत्तर– श्री वासुपूज्य भगवान ने मोक्ष अपरान्ह काल में प्राप्त किया।

प्रश्न 1773. श्री वासुपूज्य भगवान ने मोक्ष किस नक्षत्र में प्राप्त किया ?

उत्तर– श्री वासुपूज्य भगवान ने मोक्ष अश्वनी नक्षत्र में प्राप्त किया।

प्रश्न 1774. श्री वासुपूज्य भगवान ने मोक्ष कितने मुनियों के साथ प्राप्त किया ?

उत्तर– श्री वासुपूज्य भगवान ने मोक्ष छह सौ एक मुनियों के साथ प्राप्त किया।

प्रश्न 1775. श्री वासुपूज्य भगवान का योगनिवृत्ति काल कितना था ?

उत्तर– श्री वासुपूज्य भगवान का योगनिवृत्ति काल एक माह का था।

प्रश्न 1776. श्री वासुपूज्य भगवान के समोशरण में अनुबद्ध केवलियों की संख्या कितनी थी ?

उत्तर– श्री वासुपूज्य भगवान के समोशरण में चवालिस अनुबद्ध केवली थे।

प्रश्न 1777. श्री वासुपूज्य भगवान किस आसन से मोक्ष गये।

उत्तर– श्री वासुपूज्य भगवान पद्मासन से मोक्ष गये।

प्रश्न 1778. श्री वासुपूज्य भगवान के मोक्ष जाने के बाद कितने मुनि मोक्ष गये ?

उत्तर– श्री वासुपूज्य भगवान के मोक्ष जाने के बाद 96 कोड़ा-कोड़ी 70 करोड़ 70 हजार 700 मुनि मोक्ष गये।

प्रश्न 1779. श्री वासुपूज्य भगवान के कितने शिष्यों ने अनुत्तर विमानों को प्राप्त किया ?

उत्तर– श्री वासुपूज्य भगवान के ग्याहर हजार दिगम्बर मुनियों ने अनुत्तर विमानों को प्राप्त किया।

प्रश्न 1780. श्री वासुपूज्य भगवान के कितने शिष्यों ने मुक्ति को प्राप्त किया ?

उत्तर– श्री वासुपूज्य भगवान के चौवन हजार छह सौ मुनियों ने मुक्ति प्राप्त की।

प्रश्न 1781. श्री वासुपूज्य भगवान के कितने शिष्यों ने पहले स्वर्ग से ग्रैवेयक तक स्वर्गो को प्राप्त किया ?

उत्तर– श्री वासुपूज्य भगवान के चौसठ सौ शिष्यों ने पहले स्वर्ग से ग्रैवेयक तक के स्वर्गो को प्राप्त किया।

प्रश्न 1782. श्री वासुपूज्य भगवान का तीर्थ प्रर्वतन काल कितने वर्ष का था ?

उत्तर– श्री वासुपूज्य भगवान का तीर्थ प्रर्वतन काल तीस सागर चौवन लाख वर्ष में एक पल्य कम वर्ष तक का शासन काल रहा।

प्रश्न 1783. श्री वासुपूज्य भगवान के शासन काल में तीर्थ का विच्छेद कितने वर्ष तक रहा ?

उत्तर– श्री वासुपूज्य भगवान के शासन काल में तीर्थ का विच्छेद एक पल्य वर्ष तक रहा।

प्रश्न 1784. श्री वासुपूज्य भगवान के शासन में कौन से बलदेव राजा हुये ?

उत्तर– श्री वासुपूज्य भगवान के शासन में अचल नाम बलदेव हुए।

प्रश्न 1785. श्री वासुपूज्य भगवान के शासन काल में कौन से नारायण हुये ?

उत्तर– श्री वासुपूज्य भगवान के शासन काल में द्विपृष्ठ नाम के नारायण हुये।

प्रश्न 1786. श्री वासुपूज्य भगवान के शासन काल में कौन से प्रति नारायण हुए ?

उत्तर– श्री वासुपूज्य भगवान के शासन काल में तारक नाम के प्रतिनारायण हुए।

प्रश्न 1787. श्री वासुपूज्य भगवान के शासन काल में कौन से रुद्र हुए ?

उत्तर– श्री वासुपूज्य भगवान के शासन काल में अचल नामक रुद्र हुये।

13

भगवान श्री विमलनाथ जी

प्रश्न 1788. तेरहवें तीर्थंकर का नाम क्या है ?

उत्तर– तेरहवें तीर्थंकर का नाम श्री विमलनाथ भगवान है।

प्रश्न 1789. श्री विमलनाथ भगवान की पूर्व पर्याय का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री विमलनाथ भगवान का पूर्व पर्याय का नाम राजा श्री पद्मसेन था।

प्रश्न 1790. श्री विमलनाथ भगवान ने तीर्थंकर प्रकृति का बंध कौन सी पर्याय में किया ?

उत्तर– श्री विमलनाथ भगवान ने तीर्थंकर प्रकृति का बंध पद्मसेन की पर्याय में किया।

प्रश्न 1791. श्री विमलनाथ भगवान के पूर्व भव के पिता का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री विमलनाथ भगवान के पूर्व भव के पिता का नाम बज्रनाभि था।

प्रश्न 1792. श्री विमलनाथ भगवान के पूर्व भव के दीक्षा गुरु कौन थे ?

उत्तर– श्री विमलनाथ भगवान के पूर्व भव के दीक्षा गुरु स्वर्गगुप्त थे।

प्रश्न 1793. राजा श्री पद्मसेन किस देश के राजा थे ?

उत्तर– राजा श्री पद्मसेन महानगर के राजा थे।

प्रश्न 1794. राजा श्री पद्मसेन किस नगर के राजा थे ?

उत्तर– राजा श्री पद्मसेन महानगर के राजा थे।

प्रश्न 1795. राजा श्री पद्मसेन के पुत्र का क्या नाम था ?

उत्तर– राजा श्री पद्मसेन के पुत्र का नाम पद्म था।

प्रश्न 1796. श्री विमलनाथ भगवान के पिता का क्या नाम था ?

उत्तर– श्री विमलनाथ भगवान के पिता का नाम कृतवर्मा था।

प्रश्न 1797. श्री विमलनाथ भगवान की माता क्या नाम था ?

उत्तर– श्री विमलनाथ भगवान की माता श्रीमती जयश्यामा थी।

प्रश्न 1798. श्री विमलनाथ भगवान ने कहाँ जन्म लिया था ?

उत्तर– श्री विमलनाथ भगवान ने कम्पिला नगर में जन्म लिया था।

प्रश्न 1799. श्री विमलनाथ भगवान का वंश कौन सा था ?

उत्तर– श्री विमलनाथ भगवान का वंश इक्ष्वाकु था।

प्रश्न 1800. श्री विमलनाथ भगवान का गर्भ कल्याणक किस तिथि को हुआ था ?

उत्तर– श्री विमलनाथ भगवान का गर्भ कल्याणक ज्येष्ठ कृष्णा दशमी को हुआ था।

प्रश्न 1801. श्री विमलनाथ भगवान कहाँ से गर्भ में आये ?

उत्तर– श्री विमलनाथ भगवान शतार स्वर्ग से गर्भ में आये।

प्रश्न 1802. श्री विमलनाथ भगवान की पूर्व भव की देव आयु कितनी थी ?

उत्तर– श्री विमलनाथ भगवान की पूर्व भव की देव आयु 18 सागर थी।

प्रश्न 1803. श्री विमलनाथ भगवान का गर्भ कल्याणक किस नक्षत्र में हुआ था ?

उत्तर– श्री विमलनाथ भगवान का गर्भ कल्याणक भाद्रपद नक्षत्र में हुआ था।

प्रश्न 1804. श्री विमलनाथ भगवान का जन्म किस तिथि में हुआ था ?

उत्तर– श्री विमलनाथ भगवान का जन्म माघ शुक्ला चतुर्थी को हुआ था।

प्रश्न 1805. श्री विमलनाथ भगवान की जन्म राशि कौन सी थी ?

उत्तर– श्री विमलनाथ भगवान की जन्म राशि मीन थी।

प्रश्न 1806. श्री विमलनाथ भगवान का जन्म किस नक्षत्र में हुआ था ?

उत्तर– श्री विमलनाथ भगवान का जन्म पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में हुआ था।

प्रश्न 1807. श्री विमलनाथ भगवान की आयु कितनी थी ?

उत्तर– श्री विमलनाथ भगवान की आयु साठ लाख वर्ष की थी।

प्रश्न 1808. श्री विमलनाथ भगवान का कुमार काल कितने वर्ष का था ?

उत्तर– श्री विमलनाथ भगवान का कुमार काल पन्द्रह लाख वर्ष का था।

प्रश्न 1809. श्री विमलनाथ भगवान के शरीर की ऊँचाई कितनी थी ?

उत्तर– श्री विमलनाथ भगवान के शरीर की ऊँचाई साठ धनुष थी।

प्रश्न 1810. श्री विमलनाथ भगवान के शरीर का वर्ण कैसा था ?

उत्तर– श्री विमलनाथ भगवान के शरीर का वर्ण सुवर्ण वर्ण का था।

प्रश्न 1811. श्री विमलनाथ भगवान का राज्य काल कितने वर्ष का था ?

उत्तर– श्री विमलनाथ भगवान का राज्यकाल तीस लाख वर्ष का था।

प्रश्न 1812. श्री वासुपूज्य भगवान के कितने समय बाद श्री विमल नाथ भगवान हुये ?

उत्तर– श्री वासुपूज्य भगवान के तीस सागर वर्ष बाद श्री विमलनाथ भगवान हुये।

प्रश्न 1813. श्री विमलनाथ भगवान भगवान को किस चिन्ह से जाना जाता हैं ?

उत्तर– श्री विमलनाथ भगवान को शूकर चिन्ह से जाना जाता है।

प्रश्न 1814. श्री विमलनाथ भगवान को वैराग्य कैसे हुआ ?

उत्तर– श्री विमलनाथ भगवान को ओस के हिमकणों का नाश देख कर वैराग्य हुआ।

प्रश्न 1815. श्री विमलनाथ भगवान की दीक्षा तिथि क्या थी ?

उत्तर– श्री विमलनाथ भगवान की दीक्षा तिथि माघ शुक्ला चतुर्थी थी।

प्रश्न 1816. श्री विमलनाथ भगवान ने कौन से नक्षत्र में दीक्षा ली ?

उत्तर– श्री विमलनाथ भगवान ने उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र में दीक्षा ली।

प्रश्न 1817. श्री विमलनाथ भगवान ने किस नगर में दीक्षा ली ?

उत्तर– श्री विमलनाथ भगवान ने कम्पिल नगर में दीक्षा ली।

प्रश्न 1818. श्री विमलनाथ भगवान की दीक्षा किस वन में हुई ?

उत्तर– श्री विमलनाथ भगवान की दीक्षा सहेतुक वन में हुई।

प्रश्न 1819. श्री विमलनाथ भगवान ने दीक्षा किस समय ली ?

उत्तर– श्री विमलनाथ भगवान ने दीक्षा अपरान्ह काल में ली।

प्रश्न 1820. श्री विमलनाथ भगवान की दीक्षा पालकी का क्या नाम था ?

उत्तर– श्री विमलनाथ भगवान की दीक्षा पालकी का नाम देवदत्ता था।

प्रश्न 1821. श्री विमलनाथ भगवान के दीक्षा वृक्ष का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री विमलनाथ भगवान का दीक्षा वृक्ष जामुन था।

प्रश्न 1822. श्री विमलनाथ भगवान ने कितने दीक्षोपवास किये ?

उत्तर– श्री विमलनाथ भगवान ने दो उपवास किये।

प्रश्न 1823. श्री विमलनाथ भगवान ने कितने राजाओं के साथ दीक्षा ली ?

उत्तर– श्री विमलनाथ भगवान ने एक हजार राजाओं के साथ दीक्षा ली।

प्रश्न 1824. श्री विमलनाथ भगवान ने कितने वर्ष तक तप किया ?

उत्तर– श्री विमलनाथ भगवान ने तीन वर्ष तक तप किया।

प्रश्न 1825. श्री विमलनाथ भगवान का प्रथम आहार किस नगर में हुआ था ?

उत्तर– श्री विमलनाथ भगवान का प्रथम आहार नंदपुर नगर में हुआ था।

प्रश्न 1826. श्री विमलनाथ भगवान को प्रथम आहार देने वाले कौन थे ?

उत्तर– श्री विमलनाथ भगवान को प्रथम आहार देने वाले राजा श्री जय कुमार थे।

प्रश्न 1827. श्री विमलनाथ भगवान ने किस वस्तु का आहार लिया ?

उत्तर– श्री विमलनाथ भगवान ने खीर का आहार लिया।

प्रश्न 1828. श्री विमलनाथ भगवान को केवलज्ञान किस तिथि में हुआ था ?

उत्तर– श्री विमलनाथ भगवान को केवलज्ञान माघ शुक्ला षष्ठी को हुआ था।

प्रश्न 1829. श्री विमलनाथ भगवान को केवलज्ञान किस नक्षत्र में हुआ ?

उत्तर– श्री विमलनाथ भगवान को केवलज्ञान उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में हुआ था।

प्रश्न 1830. श्री विमलनाथ भगवान को केवलज्ञान किस समय हुआ ?

उत्तर– श्री विमलनाथ भगवान को केवलज्ञान अपरान्ह काल में हुआ था।

प्रश्न 1831. श्री विमलनाथ भगवान को केवलज्ञान किस स्थान पर हुआ ?

उत्तर– श्री विमलनाथ भगवान को केवलज्ञान सहेतुक वन में हुआ था।

प्रश्न 1832. श्री विमलनाथ भगवान को केवलज्ञान किस वृक्ष के नीचे हुआ था ?

उत्तर– श्री विमलनाथ भगवान को केवलज्ञान जामुन वृक्ष के नीचे हुआ।

प्रश्न 1833. श्री विमलनाथ भगवान को केवलज्ञान किस नगर में हुआ था ?

उत्तर– श्री विमलनाथ भगवान को केवलज्ञान कम्पिल नगर में हुआ था।

प्रश्न 1834. श्री विमलनाथ भगवान का केवली काल कितने वर्ष का था ?

उत्तर– श्री विमलनाथ भगवान का केवली काल चौदह लाख निन्यानवे हजार नौ सौ सन्तानवे वर्ष का था।

प्रश्न 1835. श्री विमलनाथ भगवान के शासन देव का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री विमलनाथ भगवान के शासन देव का नाम पाताल यक्ष था।

प्रश्न 1836. श्री विमलनाथ भगवान की शासन देवी का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री विमलनाथ भगवान की शासन देवी का नाम वैरोटी देवी था।

प्रश्न 1837. श्री विमलनाथ भगवान के शासन सम्बंधी क्षेत्रपालों के नाम क्या हैं ?

उत्तर– श्री विमलनाथ भगवान के शासन सम्बंधी क्षेत्रपालों के नाम – 1. श्री विमल भक्ति, 2. आराध्य रुचि, 3. बैध रुचि, 4. अव्यावाध रुचि हैं।

प्रश्न 1838. श्री विमलनाथ भगवान के समोशरण में कितने गणधर थे ?

उत्तर– श्री विमलनाथ भगवान के समोशरण में पचपन गणधर थे।

प्रश्न 1839. श्री विमलनाथ भगवान के समोशरण में प्रमुख गणधर कौन थे ?

उत्तर– श्री विमलनाथ भगवान के समोशरण में प्रमुख गणधर जय नाम के गणधर (मंदरार्य) थे।

प्रश्न 1840. श्री विमलनाथ भगवान के समोशरण में प्रमुख श्रोता कौन थे ?

उत्तर– श्री विमलनाथ भगवान के समोशरण में स्वयंभू नाम के प्रमुख श्रोता थे।

प्रश्न 1841. श्री विमलनाथ भगवान के समोशरण में ऋषियों की संख्या कितनी थी ?

उत्तर– श्री विमलनाथ भगवान के समोशरण में अड़सठ हजार ऋषि थे।

प्रश्न 1842. श्री विमलनाथ भगवान के समोशरण में पूर्वधर मुनि कितने थे ?

उत्तर– श्री विमलनाथ भगवान के समोशरण में ग्यारह सौ पूर्वधर मुनि थे।

प्रश्न 1843. श्री विमलनाथ भगवान के समोशरण में कितने शिक्षक मुनि थे ?

उत्तर– श्री विमलनाथ भगवान के समोशरण में अड़तीस हजार पांच सौ शिक्षक मुनी थे।

प्रश्न 1844. श्री विमलनाथ भगवान के समोशरण में कितने अवधि ज्ञानी मुनि थे ?

उत्तर– श्री विमलनाथ भगवान के समोशरण में चार हजार आठ सौ अवधि ज्ञानी मुनि थे।

प्रश्न 1845. श्री विमलनाथ भगवान के समोशरण में कितने केवली थे ?

उत्तर– श्री विमलनाथ भगवान के समोशरण में पांच हजार पांच सौ केवली थे।

प्रश्न 1846. श्री विमलनाथ भगवान के समोशरण में कितने विक्रियाधारी मुनि थे ?

उत्तर– श्री विमलनाथ भगवान के समोशरण में नौ हजार विक्रियाधारी मुनि थे।

प्रश्न 1847. श्री विमलनाथ भगवान के समोशरण में कितने विपुलमति ज्ञानधारी मुनि थे ?

उत्तर– श्री विमलनाथ भगवान के समोशरण में पांच हजार पांच सौ विपुलमति ज्ञानधारक मुनि थे।

प्रश्न 1848. श्री विमलनाथ भगवान के समोशरण में कितने वादी मुनि थे ?

उत्तर– श्री विमलनाथ भगवान के समोशरण में तीन हजार छह सौ वादी मुनि थे।

प्रश्न 1849. श्री विमलनाथ भगवान के समोशरण में कितनी आर्यिकायें थीं ?

उत्तर– श्री विमलनाथ भगवान के समोशरण में एक लाख तीन हजार आर्यिकायें थीं।

प्रश्न 1850. श्री विमलनाथ भगवान के समोशरण में प्रमुख आर्यिका कौन थीं ?

उत्तर– श्री विमलनाथ भगवान के समोशरण में गणिनी प्रमुख पद्मा नाम की आर्यिका थीं।

प्रश्न 1851. श्री विमलनाथ भगवान के समोशरण में कितने श्रावक थे ?

उत्तर– श्री विमलनाथ भगवान के समोशरण में दो लाख श्रावक थे।

प्रश्न 1852. श्री विमलनाथ भगवान के समोशरण में कितनी श्राविकायें थीं ?

उत्तर– श्री विमलनाथ भगवान के समोशरण में चार लाख श्राविकायें थीं।

प्रश्न 1853. श्री विमलनाथ भगवान का मोक्ष कल्याणक किस तिथि को हुआ ?

उत्तर– श्री विमलनाथ भगवान का मोक्ष कल्याणक आषाढ़ कृष्णा अष्टमी को हुआ।

प्रश्न 1854. श्री विमलनाथ भगवान को मोक्ष किस समय हुआ ?

उत्तर– श्री विमलनाथ भगवान को मोक्ष प्रदोष काल (अपरान्ह काल) में हुआ।

प्रश्न 1855. श्री विमलनाथ भगवान कौन से नक्षत्र में मोक्ष गये ?

उत्तर– श्री विमलनाथ भगवान पूर्व भाद्रपद नक्षत्र में मोक्ष गये।

प्रश्न 1856. श्री विमलनाथ भगवान कहाँ से मोक्ष गये ?

उत्तर– श्री विमलनाथ भगवान श्री सम्मेद शिखर जी से मोक्ष गये।

प्रश्न 1857. श्री विमलनाथ भगवान कितने मुनियों के साथ मोक्ष गये ?

उत्तर– श्री विमलनाथ भगवान छह सौ मुनियों के साथ मोक्ष गये।

प्रश्न 1858. श्री विमलनाथ भगवान का योग निवृत्ति काल कितना था ?

उत्तर– श्री विमलनाथ भगवान का योग निवृत्ति काल एक मास का था।

प्रश्न 1859. श्री विमलनाथ भगवान के कितने अनुबद्ध केवली थे ?

उत्तर– श्री विमलनाथ भगवान के चालीस अनुबद्ध केवली थे।

प्रश्न 1860. श्री विमलनाथ भगवान के कितने शिष्यों ने अनुत्तरों विमानों को प्राप्त किया ?

उत्तर– श्री विमलनाथ भगवान के ग्यारह हजार शिष्यों ने अनुत्तर विमानों को प्राप्त किया।

प्रश्न 1861. श्री विमलनाथ भगवान के कितने शिष्यों ने मोक्ष प्राप्त किया ?

उत्तर– श्री विमलनाथ भगवान के इक्यावन हजार तीन सौ शिष्यों ने मोक्ष को प्राप्त किया।

प्रश्न 1862. श्री विमलनाथ भगवान के कितने शिष्यों ने पहले स्वर्ग से नवग्रैवेयक तक के स्वर्गों को प्राप्त किया ?

उत्तर– श्री विमलनाथ भगवान ने पाँच हजार सात सौ मुनियों ने पहले स्वर्ग से नवग्रैवेयक तक के स्वर्गों को प्राप्त किया।

प्रश्न 1863. श्री विमलनाथ भगवान के शासन काल में चतुर्विध संघ की यात्रा कराने वाले संघ पति का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री विमलनाथ भगवान के शासन काल में चतुर्विध संघ की यात्रा कराने वाले संघ पति का नाम राजा सुप्रभ था।

प्रश्न 1864. श्री विमलनाथ भगवान ने कौन से कूट से मोक्ष प्राप्त किया ?

उत्तर– श्री विमलनाथ भगवान ने सुवीर कूट से मोक्ष प्राप्त किया।

प्रश्न 1865.* श्री विमलनाथ भगवान का तीर्थ प्रवर्तन काल कितने वर्ष का था ?

उत्तर– श्री विमलनाथ भगवान का तीर्थ प्रर्वतन काल पौन पल्य कम नौ सागर पन्द्रह लाख वर्ष का था।

प्रश्न 1866. श्री विमलनाथ भगवान के शासन में धर्म तीर्थ का विच्छेद कितने वर्ष तक रहा ?

उत्तर– श्री विमलनाथ भगवान के शासन में पौने पल्य काल धर्म तीर्थ का विच्छेद रहा।

प्रश्न 1867. श्री विमलनाथ भगवान किस आसन से मोक्ष गये ?

उत्तर– श्री विमलनाथ भगवान खड्गासन से मोक्ष गये।

प्रश्न 1868. श्री विमलनाथ भगवान के मोक्ष जाने के बाद कितने मुनि मोक्ष गये ?

उत्तर– श्री विमलनाथ भगवान के मोक्ष जाने के बाद 190909795 मुनि मोक्ष गये।

प्रश्न 1869. श्री विमलनाथ भगवान के शासन काल में कौन से बलदेव हुए ?

उत्तर– श्री विमलनाथ भगवान के शासन काल में धर्मनाम के बलदेव हुए।

प्रश्न 1870. श्री विमलनाथ भगवान के शासन में कौन से नारायण थे ?

उत्तर– श्री विमलनाथ भगवान के शासन में स्वयंभू नाम के नारायण थे।

प्रश्न 1871. श्री विमलनाथ भगवान के शासन काल में कौन से प्रतिनारायण थे ?

उत्तर– श्री विमलनाथ भगवान के शासन काल में मेरक नाम के प्रतिनारायण थे।

प्रश्न 1872. श्री विमलनाथ भगवान के शासन में कौन से रुद्र थे ?

उत्तर– श्री विमलनाथ भगवान के शासन काल में पुंडरीक नाम के रुद्र थे।

14

भगवान श्री अनंतनाथ जी

प्रश्न 1873. चौदहवें तीर्थंकर का नाम क्या है ?

उत्तर– चौदहवें तीर्थंकर का नाम श्री अनंतनाथ भगवान है।

प्रश्न 1874. श्री अनंतनाथ भगवान को किस चिन्ह से जाना जाता है।

उत्तर– श्री अनंतनाथ भगवान को सेही चिन्ह से जाना जाता है।

प्रश्न 1875. श्री अनंतनाथ भगवान की पूर्व पर्याय का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री अनंतनाथ भगवान की पूर्व पर्याय का नाम राजा पद्मरथ था।

प्रश्न 1876. राजा पद्मरथ किस नगर के राजा थे?

उत्तर– राजा पद्मरथ अरिष्ट पुरी नगरी के राजा थे।

प्रश्न 1877. भगवान श्री अनंतनाथ ने तीर्थंकर प्रकृति का बंध कौन सी पर्याय में किया ?

उत्तर– भगवान श्री अनंतनाथ ने तीर्थंकर प्रकृति का बंध पद्मरथ की पर्याय में किया था।

प्रश्न 1878. भगवान श्री अनंतनाथ के पूर्व भव के पिता का नाम क्या था ?

उत्तर– भगवान श्री अनंतनाथ के पूर्व भव के पिता का नाम सर्वगुप्त थे।

प्रश्न 1879. भगवान श्री अनंतनाथ के दीक्षा गुरू कौन थे।

उत्तर– भगवान श्री अनंतनाथ के दीक्षा गुरू त्रिगुप्त थे।

प्रश्न 1880. श्री अनंतनाथ भगवान कहाँ से गर्भ में आये ?

उत्तर– श्री अनंतनाथ भगवान अच्युत स्वर्ग के पुष्पोतर विमान से गर्भ में आये।

प्रश्न 1881. भगवान श्री अनन्तनाथ की पूर्व भव की देव आयु कितनी थी ?

उत्तर– भगवान श्री अनन्तनाथ की पूर्व भव की देव आयु 22 सागर थी।

प्रश्न 1882. श्री अनंतनाथ भगवान के पिता का क्या नाम है।

उत्तर– श्री अनंतनाथ भगवान के पिता राजा श्री सिंहसेन थे।

प्रश्न 1883. श्री अनंतनाथ भगवान की माता का क्या नाम है।

उत्तर– श्री अनंतनाथ भगवान की माता महारानी सर्वयशा थीं।

प्रश्न 1884. श्री अनंतनाथ भगवान का गर्भकल्याण कौन सी तिथि को हुआ था ?

उत्तर– श्री अनंतनाथ भगवान का गर्भकल्याण कार्तिक कृष्णा एकम् को हुआ था।

प्रश्न 1885. श्री अनंतनाथ भगवान का गर्भकल्याणक कौन से नक्षत्र में हुआ था ?

उत्तर– श्री अनंतनाथ भगवान का गर्भकल्याणक रेवती नक्षत्र में हुआ था।

प्रश्न 1886. श्री अनंतनाथ भगवान का जन्म कहाँ हुआ था ?

उत्तर– श्री अनंतनाथ भगवान का जन्म अयोध्या में हुआ था।

प्रश्न 1887. श्री अनंतनाथ भगवान का जन्म किस तिथि में हुआ था ?

उत्तर– श्री अनंतनाथ भगवान का जन्म ज्येष्ठ कृष्णा द्वादशी को हुआ था।

प्रश्न 1888. श्री अनंतनाथ भगवान का जन्म किस नक्षत्र में हुआ था ?

उत्तर– श्री अनंतनाथ भगवान का जन्म रेवती नक्षत्र में हुआ था।

प्रश्न 1889. श्री अनंतनाथ भगवान का जन्म किस वंश में हुआ ?

उत्तर– श्री अनंतनाथ भगवान का जन्म इक्ष्वाकु वंश में हुआ।

प्रश्न 1890. भगवान श्री अनंतनाथ की जन्म राशि कौन सी थी ?

उत्तर– भगवान श्री अनंतनाथ की जन्म राशि मीन थी।

प्रश्न 1891. श्री अनंतनाथ भगवान की आयु कितने वर्ष थी ?

उत्तर– श्री अनंतनाथ भगवान की आयु तीस लाख वर्ष थी।

प्रश्न 1892. श्री अनंतनाथ भगवान का कुमार काल कितने वर्ष का था ?

उत्तर– श्री अनंतनाथ भगवान का कुमार काल सात लाख पचास हजार वर्ष का था।

प्रश्न 1893. श्री अनंतनाथ भगवान के शरीर की ऊँचाई कितनी थी ?

उत्तर– श्री अनंतनाथ भगवान के शरीर की ऊँचाई पचास धनुष थी।

प्रश्न 1894. श्री अनंतनाथ भगवान के शरीर का वर्ण कैसा था ?

उत्तर– श्री अनंतनाथ भगवान सुवर्ण वर्ण के थे।

प्रश्न 1895. श्री अनंतनाथ भगवान का राज्य काल कितने वर्ष का था ?

उत्तर– श्री अनंतनाथ भगवान का राज्य काल एक लाख पचास हजार वर्ष का था।

प्रश्न 1896. श्री अनंतनाथ भगवान को वैराग्य किस कारण से हुआ था ?

उत्तर– श्री अनंतनाथ भगवान को वैराग्य बिजली गिरने से हुआ था।

प्रश्न 1897. श्री अनंतनाथ भगवान की दीक्षा कौन सी तिथि को हुई थी ?

उत्तर– श्री अनंतनाथ भगवान की दीक्षा ज्येष्ठ कृष्णा चतुर्दशी को हुई थी ?

प्रश्न 1898. श्री अनंतनाथ भगवान का दीक्षा नक्षत्र क्या था ?

उत्तर– श्री अनंतनाथ भगवान का दीक्षा नक्षत्र रेवती था।

प्रश्न 1899. श्री अनंतनाथ भगवान की दीक्षा कौन से नगर में हुई थी ?

उत्तर– श्री अनंतनाथ भगवान की दीक्षा अयोध्यानगर में हुई थी।

प्रश्न 1900. श्री अनंतनाथ भगवान की दीक्षा कौन से वन में हुई थी ?

उत्तर– श्री अनंतनाथ भगवान की दीक्षा सहेतुक वन में हुई थी।

प्रश्न 1901. श्री अनंतनाथ भगवान ने दीक्षा किस समय ली थी ?

उत्तर– श्री अनंतनाथ भगवान ने दीक्षा अपरान्ह काल में ली।

प्रश्न 1902. श्री अनंतनाथ भगवान ने दीक्षा से पूर्व कितने उपवास किये ?

उत्तर– श्री अनंतनाथ भगवान ने दीक्षा से पूर्व तीन उपवास किये।

प्रश्न 1903. श्री अनंतनाथ भगवान ने दीक्षा किस वृक्ष के नीचे ली ?

उत्तर– श्री अनंतनाथ भगवान ने दीक्षा अश्वस्थ वृक्ष के नीचे ली।

प्रश्न 1904. श्री अनंतनाथ भगवान की दीक्षा पालकी का क्या नाम था ?

उत्तर– श्री अनंतनाथ भगवान की दीक्षा पालकी का नाम सागर दत्ता था।

प्रश्न 1905. श्री अनंतनाथ भगवान ने कौन से पुत्र को राज्य दिया था ?

उत्तर– श्री अनंतनाथ भगवान ने अनंत विजय नामक पुत्र को राज्य दिया था।

प्रश्न 1906. श्री अनंतनाथ भगवान का प्रथम आहार किस नगर में हुआ था ?

उत्तर– श्री अनंतनाथ भगवान का प्रथम आहार साकेत नगर में हुआ था।

प्रश्न 1907. श्री अनंतनाथ भगवान को प्रथम आहार किसने दिया था ?

उत्तर– श्री अनंतनाथ भगवान को प्रथम आहार श्री विशाख ने दिया था।

प्रश्न 1908. श्री अनंतनाथ भगवान ने कितने राजाओं के साथ दीक्षा ली थी ?

उत्तर– श्री अनंतनाथ भगवान ने एक हजार राजाओं के साथ दीक्षा ली थी।

प्रश्न 1909. श्री अनंतनाथ भगवान ने किस वस्तु का आहार लिया था ?

उत्तर– श्री अनंतनाथ भगवान ने खीर का आहार लिया था।

प्रश्न 1910. श्री अनंतनाथ भगवान ने कितने वर्ष तक तप किया ?

उत्तर– श्री अनंतनाथ भगवान ने दो वर्ष तक तप किया।

प्रश्न 1911. श्री अनंतनाथ भगवान को केवलज्ञान किस तिथि में हुआ था ?

उत्तर– श्री अनंतनाथ भगवान को केवलज्ञान चैत्र कृष्णा अमावस को हुआ था।

प्रश्न 1912. श्री अनंतनाथ भगवान को केवलज्ञान किस नक्षत्र में हुआ था ?

उत्तर– श्री अनंतनाथ भगवान ने को केवलज्ञान रेवती नक्षत्र में हुआ था।

प्रश्न 1913. श्री अनंतनाथ भगवान को केवलज्ञान किस समय हुआ था ?

उत्तर– श्री अनंतनाथ भगवान को केवलज्ञान अपरान्ह काल में हुआ था।

प्रश्न 1914. श्री अनंतनाथ भगवान को केवलज्ञान किस वन में हुआ था ?

उत्तर– श्री अनंतनाथ भगवान ने को केवलज्ञान सहेतुक वन में हुआ था।

प्रश्न 1915. श्री अनंतनाथ भगवान को केवलज्ञान किस वृक्ष के नीचे हुआ था ?

उत्तर– श्री अनंतनाथ भगवान को केवलज्ञान पीपल वृक्ष के नीचे हुआ था।

प्रश्न 1916. श्री अनंतनाथ भगवान का समोशरण कितना विस्तरित था ?

उत्तर– श्री अनंतनाथ भगवान का समोशरण साढ़े पांच योजन विस्तरित था।

प्रश्न 1917. श्री अनंतनाथ भगवान की शासनदेवी का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री अनंतनाथ भगवान की शासनदेवी का नाम अनंतमती देवी था।

प्रश्न 1918. श्री अनंतनाथ भगवान के शासनदेव का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री अनंतनाथ भगवान के शासनदेव का नाम श्री किन्नर देव था।

प्रश्न 1919. श्री अनंतनाथ भगवान के शासनदेव क्षेत्रपालों के नाम क्या थे ?

उत्तर– श्री अनंतनाथ भगवान के शासनदेव क्षेत्रपालों के नाम 1. श्री स्वभाव नामा, 2. श्री परभाव नामा, 3. श्री अनुपम्य, 4. श्री सहजानंद थे।

प्रश्न 1920. श्री अनंतनाथ भगवान को केवलज्ञान किस नगर में हुआ ?

उत्तर– श्री अनंतनाथ भगवान को केवलज्ञान अयोध्या नगर में हुआ था।

प्रश्न 1921. श्री अनंतनाथ भगवान के समोशरण में कितने गणधर थे ?

उत्तर– श्री अनंतनाथ भगवान के समोशरण में पचास गणधर थे।

प्रश्न 1922. श्री अनंतनाथ भगवान के समोशरण में प्रमुख गणधर कौन थे ?

उत्तर– श्री अनंतनाथ भगवान के समोशरण में प्रमुख गणधर जयार्य (अरिष्ट) थे।

प्रश्न 1923. श्री अनंतनाथ भगवान के समोशरण में कितने ऋषि थे ?

उत्तर– श्री अनंतनाथ भगवान के समोशरण छियासठ हजार ऋषि थे।

प्रश्न 1924. श्री अनंतनाथ भगवान के समोशरण में कितने पूर्वधर मुनि थे ?

उत्तर– श्री अनंतनाथ भगवान के समोशरण में एक हजार पूर्वधर मुनि थे।

प्रश्न 1925. श्री अनंतनाथ भगवान के समोशरण में कितने शिक्षक मुनि थे।?

उत्तर– श्री अनंतनाथ भगवान के समोशरण में उन्तालिस हजार पांच सौ शिक्षक मुनि थे ?

प्रश्न 1926. श्री अनंतनाथ भगवान के समोशरण में कितने अवधि ज्ञानी मुनि थे ?

उत्तर– श्री अनंतनाथ भगवान के समोशरण में चार हजार तीन सौ अवधि ज्ञानी मुनि थे।

प्रश्न 1927. श्री अनंतनाथ भगवान के समोशरण में कितने केवली थे ?

उत्तर– श्री अनंतनाथ भगवान के समोशरण में पांच हजार केवली थे।

प्रश्न 1928. श्री अनंतनाथ भगवान के समोशरण में कितने विक्रियाधारी मुनि थे ?

उत्तर– श्री अनंतनाथ भगवान के समोशरण में आठ हजार विक्रियाधारी मुनि थे।

प्रश्न 1929. श्री अनंतनाथ भगवान के समोशरण में कितने मुनि विपुलमति ज्ञान के धारक थे ?

उत्तर– श्री अनंतनाथ भगवान के समोशरण में पांच हजार मुनि विपुलमति ज्ञान के धारक थे।

प्रश्न 1930. श्री अनंतनाथ भगवान के समोशरण में वादी मुनियों की संख्या कितनी थी ?

उत्तर– श्री अनंतनाथ भगवान के समोशरण में तीन हजार दो सौ वादी मुनि थे।

प्रश्न 1931. श्री अनंतनाथ भगवान के समोशरण में कितनी आर्यिकायें थी ?

उत्तर– श्री अनंतनाथ भगवान के समोशरण में एक लाख आठ हजार आर्यिकायें थीं।

प्रश्न 1932. श्री अनंतनाथ भगवान के समोशरण में प्रमुख आर्यिका कौन थीं ?

उत्तर– श्री अनंतनाथ भगवान के समोशरण में सर्व श्री नाम की आर्यिका प्रमुख थीं।

प्रश्न 1933. श्री अनंतनाथ भगवान के समोशरण में कितने श्रावक थे ?

उत्तर– श्री अनंतनाथ भगवान के समोशरण में दो लाख श्रावक थे।

प्रश्न 1934. श्री अनंतनाथ भगवान के समोशरण में कितने श्राविकायें थीं ?

उत्तर– श्री अनंतनाथ भगवान के समोशरण में चार लाख श्राविकायें थी।

प्रश्न 1935. श्री अनंतनाथ भगवान के समोशरण में प्रमुख श्रोता कौन थे ?

उत्तर– श्री अनंतनाथ भगवान के समोशरण में पुरुषोतम प्रमुख श्रोता थे।

प्रश्न 1936. श्री अनंतनाथ भगवान के शासन काल में चतुर्विध संघ को यात्रा कराने वाले कौन संघपति थे?

उत्तर– श्री अनंतनाथ भगवान के शासन काल में चतुर्विध संघ को यात्रा कराने वाले संघपति राजा श्री चारु सेन जी थे।

प्रश्न 1937. श्री अनंतनाथ भगवान को मोक्ष कौन सी तिथि को हुआ था ?

उत्तर– श्री अनंतनाथ भगवान को मोक्ष चैत्र कृष्णा अमावस्या को हुआ था।

प्रश्न 1938. श्री अनंतनाथ भगवान को मोक्ष किस नक्षत्र में हुआ था ?

उत्तर– श्री अनंतनाथ भगवान को मोक्ष रेवती नक्षत्र में हुआ था।

प्रश्न 1939. श्री अनंतनाथ भगवान किस वेला में मोक्ष गये?

उत्तर– श्री अनंतनाथ भगवान अपरान्ह काल के प्रदोष काल में मोक्ष गये।

प्रश्न 1940. श्री अनंतनाथ भगवान किस स्थान से मोक्ष गये?

उत्तर– श्री अनंतनाथ भगवान श्री सम्मेदशिखर जी से मोक्ष गये।

प्रश्न 1941. श्री अनंतनाथ भगवान ने किस कूट से मोक्ष प्राप्त किया ?

उत्तर– श्री अनंतनाथ भगवान ने स्वयंभू नामक कूट से मोक्ष प्राप्त किया।

प्रश्न 1942. श्री अनंतनाथ भगवान ने कितने मुनियों के साथ मोक्ष प्राप्त किया ?

उत्तर– श्री अनंतनाथ भगवान ने सात हजार मुनियों के साथ मोक्ष प्राप्त किया।

प्रश्न 1943. श्री अनंतनाथ भगवान का योग निवृत्ति काल कितना था ?

उत्तर– श्री अनंतनाथ भगवान का योग निवृत्ति काल 1 माह था।

प्रश्न 1944. श्री अनंतनाथ भगवान के कितने अनुबद्ध केवली हुये ?

उत्तर– श्री अनंतनाथ भगवान के छत्तिस अनुबद्ध केवली थे।

प्रश्न 1945. श्री अनंतनाथ भगवान के कितने शिष्यों ने अनुत्तर विमानों में जन्म लिया ?

उत्तर– श्री अनंतनाथ भगवान के दश हजार शिष्यों ने अनुत्तर विमानों में जन्म लिया।

प्रश्न 1946. श्री अनंतनाथ भगवान के कितने शिष्यों ने मुक्ति को प्राप्त किया ?

उत्तर– श्री अनंतनाथ भगवान के इक्यावन हजार मुनियों ने मुक्ति को प्राप्त किया।

प्रश्न 1947. श्री अनंतनाथ भगवान के कितने शिष्यों ने पहले स्वर्ग से ग्रेयवैक तक के स्वर्गों को प्राप्त किया ?

उत्तर– श्री अनंतनाथ भगवान के पांच हजार शिष्यों ने पहले स्वर्ग से ग्रैवेयक तक के स्वर्गो को प्राप्त किया।

प्रश्न 1948. श्री अनंतनाथ भगवान का तीर्थ प्रवर्तन काल कितने वर्ष का था ?

उत्तर– श्री अनंतनाथ भगवान का चार सागर सात लाख पचास हजार वर्ष में आधा पल्य कम वर्षो तक तीर्थ प्रर्वतन काल रहा।

प्रश्न 1949. श्री अनंतनाथ भगवान के शासन काल में धर्म तीर्थ का विच्छेद कितने समय तक रहा ?

उत्तर– श्री अनंतनाथ भगवान के शासन काल में धर्म तीर्थ का विच्छेद आधापल्य तक रहा।

प्रश्न 1950. श्री अनंतनाथ भगवान किस आसन से मोक्ष गये ?

उत्तर– श्री अनंतनाथ भगवान खड्गासन से मोक्ष गये।

प्रश्न 1951. भगवान श्री अनंतनाथ के मोक्ष जाने के बाद कितने मुनि मोक्ष गये ?

उत्तर– भगवान श्री अनंतनाथ के मोक्ष जाने के बाद 9 कोड़ा कोड़ी 9 लाख 999 मुनि मोक्ष गये।

प्रश्न 1952. श्री अनंतनाथ भगवान के तीर्थ में कौन से बलदेव हुये ?

उत्तर– श्री अनंतनाथ भगवान के तीर्थ में सुप्रभ नाम के बलदेव हुये।

प्रश्न 1953. भगवान श्री अनंतनाथ के तीर्थ में कौन से नारायण हुये ?

उत्तर– भगवान श्री अनंतनाथ के तीर्थं में पुरुषोत्तम नारायण हुये।

प्रश्न 1954. श्री अनंतनाथ भगवान के धर्म तीर्थं में कौन से प्रतिनारायण हुये ?

उत्तर– श्री अनंतनाथ भगवान मधु केतु नाम के प्रतिनारायण हुये।

प्रश्न 1955. श्री अनंतनाथ भगवान के धर्मतीर्थ में कौन से रुद्र हुए

उत्तर– श्री अनंतनाथ भगवान के धमतीर्थ में अजितवर नाम के रुद्र हुये।

15

भगवान श्री धर्मनाथ जी

प्रश्न 1956. पन्द्रहवें तीर्थंकर का नाम क्या है ?

उत्तर– पन्द्रहवें तीर्थंकर का नाम श्री धर्मनाथ भगवान है।

प्रश्न 1957. श्री धर्मनाथ भगवान को कौन से चिन्ह से जाना जाता है ?

उत्तर– श्री धर्मनाथ भगवान को वज्रदंड चिन्ह से जाना जाता है।

प्रश्न 1958. श्री धर्मनाथ भगवान की पूर्व पर्याय का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री धर्मनाथ भगवान की पूर्व पर्याय का नाम राजा श्री दशरथ था।

प्रश्न 1959. श्री धर्मनाथ भगवान ने तीर्थंकर प्रकृति का बंध कौन सी पर्याय में किया ?

उत्तर– श्री धर्मनाथ भगवान ने तीर्थंकर प्रकृति का बंध दशरथ की पर्याय में किया।

प्रश्न 1960. श्री धर्मनाथ भगवान के पूर्व भव के पिता का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री धर्मनाथ भगवान के पूर्व भव के पिता गुनमान थे।

प्रश्न 1961. श्री धर्मनाथ भगवान के पूर्व भव के दीक्षा गुरु कौन थे ?

उत्तर– श्री धर्मनाथ भगवान के पूर्व भव के दीक्षा गुरु चित्तारक्ष थे।

प्रश्न 1962. श्री दशरथ किस नगर के राजा थे ?

उत्तर– श्री दशरथ पूर्वीधातकी खंड में सुसीमा नगर के राजा थे।

प्रश्न 1963. श्री दशरथ के पुत्र का क्या नाम था ?

उत्तर– श्री दशरथ के पुत्र का नाम श्री महारथ था।

प्रश्न 1964. श्री धर्मनाथ भगवान की माता का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री धर्मनाथ भगवान की माता का नाम महादेवी श्रीमती सुव्रता था।

प्रश्न 1965. श्री धर्मनाथ भगवान के पिता का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री धर्मनाथ भगवान के पिता का नाम राजा श्री भानुराज था।

प्रश्न 1966. श्री धर्मनाथ भगवान के पूर्व भव की देव आयु कितनी थी ?

उत्तर– श्री धर्मनाथ भगवान के पूर्व भव की देव आयु 33 सागर थी।

प्रश्न 1967. श्री धर्मनाथ भगवान तीर्थंकर कहाँ से गर्भ में आये थे ?

उत्तर– श्री धर्मनाथ भगवान तीर्थंकर सर्वार्थसिद्धि नामक विमान से गर्भ में आये थे।

प्रश्न 1968. श्री धर्मनाथ भगवान का गर्भ कल्याणक कौन सी तिथि को हुआ था ?

उत्तर– श्री धर्मनाथ भगवान का गर्भ कल्याणक वैशाख शुक्ला त्रयोदशी को हुआ था।

प्रश्न 1969. श्री धर्मनाथ भगवान का गर्भ कल्याण किस नक्षत्र में हुआ था ?

उत्तर– श्री धर्मनाथ भगवान का गर्भ कल्याण रेवती नक्षत्र में हुआ था।

प्रश्न 1970. श्री धर्मनाथ भगवान का जन्म किस नगर में हुआ था।

उत्तर– श्री धर्मनाथ भगवान का जन्म रत्नपुरी में हुआ था।

प्रश्न 1971. श्री धर्मनाथ भगवान का जन्म किस तिथि में हुआ था ?

उत्तर– श्री धर्मनाथ भगवान का जन्म माघ शुक्ला त्रयोदशी को हुआ था।

प्रश्न 1972. श्री धर्मनाथ भगवान का जन्म किस नक्षत्र में हुआ था ?

उत्तर– श्री धर्मनाथ भगवान का जन्म पुष्य नक्षत्र में हुआ था।

प्रश्न 1973. श्री धर्मनाथ भगवान की जन्म राशि कौन सी थी ?

उत्तर– श्री धर्मनाथ भगवान का जन्म राशि कर्क थी।

प्रश्न 1974. श्री धर्मनाथ भगवान का जन्म किस वंश में हुआ था ?

उत्तर– श्री धर्मनाथ भगवान का जन्म कुरुवंश में हुआ था।

प्रश्न 1975. श्री धर्मनाथ भगवान की आयु कितने वर्ष थी ?

उत्तर– श्री धर्मनाथ भगवान की आयु दस लाख वर्ष की थी।

प्रश्न 1976. श्री धर्मनाथ भगवान का कुमार काल कितने वर्ष का था ?

उत्तर– श्री धर्मनाथ भगवान का कुमार काल पच्चीस हजार वर्ष का था।

प्रश्न 1977. श्री धर्मनाथ भगवान के शरीर की ऊँचाई कितनी थी ?

उत्तर– श्री धर्मनाथ भगवान के शरीर की ऊँचाई पैंतालीस धनुष थी।

प्रश्न 1978. श्री धर्मनाथ भगवान के शरीर का रंग कैसा था ?

उत्तर– श्री धर्मनाथ भगवान सुवर्ण वर्ण के थे।

प्रश्न 1979. श्री धर्मनाथ भगवान का राज्य काल कितने वर्ष का था ?

उत्तर– श्री धर्मनाथ भगवान का राज्य काल पचास हजार वर्ष का था।

प्रश्न 1980. श्री धर्मनाथ भगवान को वैराग्य कैसे हुआ था ?

उत्तर– श्री धर्मनाथ भगवान को वैराग्य उल्कापात से (बिजली गिरने से) हुआ था।

प्रश्न 1981. श्री धर्मनाथ भगवान की दीक्षा कौन-सी तिथि को हुई थी ?

उत्तर– श्री धर्मनाथ भगवान की दीक्षा माघ शुक्ला त्रयोदशी को हुई थी।

प्रश्न 1982. श्री धर्मनाथ भगवान की दीक्षा कौन से नक्षत्र में हुई ?

उत्तर– श्री धर्मनाथ भगवान की दीक्षा पुष्य नक्षत्र में हुई थी।

प्रश्न 1983. श्री धर्मनाथ भगवान की दीक्षा कौन से वन में हुई?

उत्तर– श्री धर्मनाथ भगवान की दीक्षा शालि वन में हुई थी।

प्रश्न 1984. श्री धर्मनाथ भगवान ने दीक्षा किस समय ली ?

उत्तर– श्री धर्मनाथ भगवान ने दीक्षा अपरान्ह काल में ली।

प्रश्न 1985. श्री धर्मनाथ भगवान की दीक्षा उपवासों की संख्या कितनी हैं?

उत्तर– श्री धर्मनाथ भगवान की दीक्षा के उपवासों की संख्या तीन है।

प्रश्न 1986. श्री धर्मनाथ भगवान के पुत्र का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री धर्मनाथ भगवान के पुत्र का नाम श्री सुधर्म जी था।

प्रश्न 1987. श्री धर्मनाथ भगवान की दीक्षापालकी का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री धर्मनाथ भगवान की दीक्षापालकी का नाम नागदत्ता था।

प्रश्न 1988. श्री धर्मनाथ भगवान ने कितने राजाओं के साथ दीक्षा ली ?

उत्तर– श्री धर्मनाथ भगवान ने एक हजार राजाओं के साथ दीक्षा ली।

प्रश्न 1989. श्री धर्मनाथ भगवान की दीक्षा किस वृक्ष के नीचे हुई थी ?

उत्तर– श्री धर्मनाथ भगवान की दीक्षा सप्तछद वृक्ष के नीचे हुई थी।

प्रश्न 1990. श्री धर्मनाथ भगवान की दीक्षा किस नगर में हुई ?

उत्तर– श्री धर्मनाथ भगवान की दीक्षा रत्नपुर नगर में हई थी।

प्रश्न 1991. श्री धर्मनाथ भगवान का प्रथम आहार किस नगर में हुआ था ?

उत्तर– श्री धर्मनाथ भगवान का प्रथम आहार पाटिलपुत्र (पटना) में हुआ था।

प्रश्न 1992. श्री धर्मनाथ भगवान को प्रथम आहार दान किसने दिया ?

उत्तर— श्री धर्मनाथ भगवान को प्रथम आहार दान राजा श्री धन्य सेन जी ने दिया।

प्रश्न 1993. श्री धर्मनाथ भगवान ने किस वस्तु का आहार लिया ?

उत्तर— श्री धर्मनाथ भगवान ने दूध की खीर का आहार लिया।

प्रश्न 1994. श्री धर्मनाथ भगवान ने कितने वर्षों तक तप किया?

उत्तर— श्री धर्मनाथ भगवान ने एक वर्ष तक तप किया।

प्रश्न 1995. श्री धर्मनाथ भगवान को केवलज्ञान किस तिथि को हुआ ?

उत्तर— श्री धर्मनाथ भगवान को केवलज्ञान पौष शुक्ला पूर्णिमा को हुआ था।

प्रश्न 1996. श्री धर्मनाथ भगवान को केवलज्ञान किस नक्षत्र में हुआ था ?

उत्तर— श्री धर्मनाथ भगवान को केवलज्ञान पुष्य नक्षत्र में हुआ था।

प्रश्न 1997. श्री धर्मनाथ भगवान को केवलज्ञान किस समय हुआ था ?

उत्तर— श्री धर्मनाथ भगवान को केवलज्ञान अपरान्ह काल में हुआ था।

प्रश्न 1998. श्री धर्मनाथ भगवान को केवलज्ञान किस वन में हुआ था ?

उत्तर— श्री धर्मनाथ भगवान को केवलज्ञान सहेतुक वन में हुआ था।

प्रश्न 1999. श्री धर्मनाथ भगवान को केवलज्ञान किस वृक्ष के नीचे हुआ था ?

उत्तर— श्री धर्मनाथ भगवान को केवलज्ञान दधिपर्ण वृक्ष के नीचे (सप्तच्छद) हुआ था।

प्रश्न 2000. श्री धर्मनाथ भगवान को केवलज्ञान किस नगर में हुआ था ?

उत्तर— श्री धर्मनाथ भगवान को केवलज्ञान रत्नपुरी नगरी में हुआ था।

प्रश्न 2001. श्री धर्मनाथ भगवान का केवली काल कितने वर्ष का था ?

उत्तर— श्री धर्मनाथ भगवान का केवली काल एक वर्ष कम पच्चीस हजार वर्ष का था।

प्रश्न 2002. श्री धर्मनाथ भगवान के समोशरण का विस्तार कितना था ?

उत्तर— श्री धर्मनाथ भगवान के समोशरण का विस्तार पांच योजन था।

प्रश्न 2003. श्री धर्मनाथ भगवान के शासन देव का नाम क्या था ?

उत्तर— श्री धर्मनाथ भगवान के शासन देव का नाम किंपुरुषदेव था।

प्रश्न 2004. श्री धर्मनाथ भगवान की शासन देवी का नाम क्या था ?

उत्तर— श्री धर्मनाथ भगवान की शासन देवी का नाम श्री मानसी देवी था।

प्रश्न 2005. श्री धर्मनाथ भगवान के शासन देव क्षेत्रपालों के नाम क्या हैं ?

उत्तर— श्री धर्मनाथ भगवान शासन देव क्षेत्रपालों के नाम 1. श्री धर्मकर, 2. श्री धर्मकारी, 3. श्री सातकर्मा, 4. श्री विनयनाम हैं।

प्रश्न 2006. श्री धर्मनाथ भगवान के समोशरण में कितने गणधर थे ?

उत्तर— श्री धर्मनाथ भगवान के समोशरण में तेतालिस गणधर थे।

प्रश्न 2007. श्री धर्मनाथ भगवान के समोशरण में प्रमुख गणधर कौन थे।

उत्तर— श्री धर्मनाथ भगवान के समोशरण में प्रमुख गणधर श्री अरिष्ट सेन जी थे।

प्रश्न 2008. श्री धर्मनाथ भगवान के समोशरण में कुल कितने ऋषि थे ?

उत्तर— श्री धर्मनाथ भगवान के समोशरण में चौसठ हजार ऋषि थे।

प्रश्न 2009. श्री धर्मनाथ भगवान के समोशरण में पूर्वधर मुनि कितने थे ?

उत्तर— श्री धर्मनाथ भगवान के समोशरण में नौ सौ पूर्वधर मुनि थे।

प्रश्न 2010. श्री धर्मनाथ भगवान के समोशरण में कितने शिक्षक मुनि थे ?

उत्तर— श्री धर्मनाथ भगवान के समोशरण में चालिस हजार सात सौ शिक्षक मुनि थे।

प्रश्न 2011. श्री धर्मनाथ भगवान के समोशरण में कितने अवधि ज्ञानी मुनि थे ?

उत्तर— श्री धर्मनाथ भगवान के समोशरण में तीस हजार छह सौ अवधिज्ञानी मुनि थे।

प्रश्न 2012. श्री धर्मनाथ भगवान के समोशरण में कितने केवली थे ?

उत्तर— श्री धर्मनाथ भगवान के समोशरण चार हजार पांच सौ केवली थे।

प्रश्न 2013. श्री धर्मनाथ भगवान के समोशरण में विक्रियाधारी मुनि कितने थे ?

उत्तर— श्री धर्मनाथ भगवान के समोशरण में सात हजार विक्रियाधारी मुनि थे।

प्रश्न 2014. श्री धर्मनाथ भगवान के समोशरण में कितने मुनि विपुलमति ज्ञान के धारक थे ?

उत्तर— श्री धर्मनाथ भगवान के समोशरण में चार हजार पांच सौ विपुलमति ज्ञान के धारक मुनि थे।

प्रश्न 2015. श्री धर्मनाथ भगवान के समोशरण में वादी मुनियों की संख्या कितनी थी ?

उत्तर— श्री धर्मनाथ भगवान के समोशरण में दो हजार आठ सै वादी मुनि थे।

प्रश्न 2016. श्री धर्मनाथ भगवान के समोशरण में कितनी आर्यिकायें थीं ?

उत्तर— श्री धर्मनाथ भगवान के समोशरण में बासठ हजार चार सौ आर्यिकायें थी।

प्रश्न 2017. श्री धर्मनाथ भगवान के समोशरण में प्रमुख आर्यिका कौन थीं ?

उत्तर— श्री धर्मनाथ भगवान के समोशरण में गणिनी आर्यिका श्री सुव्रता जी थीं।

प्रश्न 2018. श्री धर्मनाथ भगवान के समोशरण में कितने श्रावक थे?

उत्तर— श्री धर्मनाथ भगवान के समोशरण में दो लाख श्रावक थे।

प्रश्न 2019. श्री धर्मनाथ भगवान के समोशरण में कितनी श्राविकायें थीं ?

उत्तर— श्री धर्मनाथ भगवान के समोशरण में चार लाख श्राविकायें थीं।

प्रश्न 2020. श्री धर्मनाथ भगवान के तीर्थ में चतुर्विध संघ को यात्रा कराने वाले संघपति कौन थे ?

उत्तर— श्री धर्मनाथ भगवान के तीर्थ में चतुर्विध संघ को यात्रा कराने वाले संघपति राजा श्री विभवसेन जी थे।

प्रश्न 2021. श्री धर्मनाथ भगवान कौन सी तिथि में मोक्ष गये ?

उत्तर— श्री धर्मनाथ भगवान ज्येष्ठ शुक्ला चतुर्थी को मोक्ष गये थे।

प्रश्न 2022. श्री धर्मनाथ भगवान किस नक्षत्र में मोक्ष गये ?

उत्तर— श्री धर्मनाथ भगवान पुष्य नक्षत्र में मोक्ष गये।

प्रश्न 2023. श्री धर्मनाथ भगवान ने किस समय मोक्ष प्राप्त किया ?

उत्तर— श्री धर्मनाथ भगवान ने अपरान्ह काल की प्रत्यूष बेला में मोक्ष प्राप्त किया।

प्रश्न 2024. श्री धर्मनाथ भगवान किस स्थान से मोक्ष गये ?

उत्तर— श्री धर्मनाथ भगवान श्री सम्मेदशिखर से मोक्ष गये।

प्रश्न 2025. श्री धर्मनाथ भगवान ने कौन से कूट से मोक्ष प्राप्त किया ?

उत्तर— श्री धर्मनाथ भगवान ने सुदत्तवर कूट से मोक्ष प्राप्त किया।

प्रश्न 2026. श्री धर्मनाथ भगवान ने कितने मुनियों के साथ मोक्ष प्राप्त किया ?

उत्तर— श्री धर्मनाथ भगवान ने आठ सौ एक मुनियों के साथ मोक्ष प्राप्त किया।

प्रश्न 2027. श्री धर्मनाथ भगवान का योग निवृति काल कितना था ?

उत्तर– श्री धर्मनाथ भगवान का योग निवृत्ति काल एक माह था।

प्रश्न 2028. श्री धर्मनाथ भगवान के अनुबद्ध केवली कितने थे।

उत्तर– श्री धर्मनाथ भगवान के बत्तीस अनुबद्ध केवली थे।

प्रश्न 2029. श्री धर्मनाथ भगबान के कितने शिष्यों ने अनुत्तर विमानों में जन्म लिया ?

उत्तर– श्री धर्मनाथ भगवान के दस हजार शिष्यों ने तप कर अनुत्तर विमानों में जन्म लिया।

प्रश्न 2030. श्री धर्मनाथ भगवान के कितने शिष्यों ने मोक्ष प्राप्त किया ?

उत्तर– श्री धर्मनाथ भगवान के उन्नचास हजार सात सौ शिष्यों ने मोक्ष प्राप्त किया।

प्रश्न 2031. श्री धर्मनाथ भगवान के कितने शिष्यों ने पहले स्वर्ग से लेकर ग्रैवेयक तक के स्वर्गों को प्राप्त किया ?

उत्तर– श्री धर्मनाथ भगवान के चार हजार तीन सौ शिष्यों ने पहले स्वर्ग से लेकर ग्रैवेयक तक के स्वर्गों को प्राप्त किया।

प्रश्न 2032. श्री धर्मनाथ भगवान के समोशरण में प्रमुख श्रोता कौन थे।

उत्तर– श्री धर्मनाथ भगवान के समोशरण में प्रमुख श्रोता राजा श्री पुष्पवर जी थे।

प्रश्न 2033. श्री धर्मनाथ भगवान का तीर्थ प्रवर्तन काल कितने वर्ष का था ?

उत्तर– श्री धर्मनाथ भगवान का तीर्थ प्रवर्तन काल तीन सागर दो लाख पचास हजार वर्ष में एक पल्य कम वर्ष का था।

प्रश्न 2034. श्री धर्मनाथ भगवान के शासन में धर्मतीर्थ का विच्छेद कितने समय तक रहा ?

उत्तर– श्री धर्मनाथ भगवान के शासन में धर्मतीर्थ का विच्छेद एक पल्य तक रहा।

प्रश्न 2035. भगवान श्री धर्मनाथ के मोक्ष जाने के बाद कितने मुनि मोक्ष गये ?

उत्तर– भगवान श्री धर्मनाथ के मोक्ष जाने के बाद 96 कोड़ा कोड़ी 93,22,96,742 मुनि मोक्ष गये।

प्रश्न 2036. श्री धर्मनाथ भगवान ने कौन से आसन से मोक्ष प्राप्त किया ?

उत्तर– श्री धर्मनाथ भगवान ने खड्गासन से मोक्ष प्राप्त किया।

प्रश्न 2037. श्री धर्मनाथ भगवान के तीर्थ में कौन से चक्रवर्ती हुए ?

उत्तर– श्री धर्मनाथ भगवान के तीर्थ में दो चक्रवर्ती, मघवा एवं सनत्कुमार हुए।

प्रश्न 2038. श्री धर्मनाथ भगवान के शासन में कौन से बलदेव हुए ?

उत्तर– श्री धर्मनाथ भगवान के शासन में सुदर्शन नामक बलदेव हुए।

प्रश्न 2039. श्री धर्मनाथ भगवान के तीर्थ में कौन से नारायण हुए ?

उत्तर– श्री धर्मनाथ भगवान के तीर्थ पुरूष सिंह नाम के नारायण हुए।

प्रश्न 2040. श्री धर्मनाथ भगवान के तीर्थ में प्रतिनारायण कौन थे ?

उत्तर– श्री धर्मनाथ भगवान के तीर्थ में निशुम्भ नाम के प्रतिनारायण थे।

प्रश्न 2041. श्री धर्मनाथ भगवान के तीर्थ में कौन से रुद्र हुये ?

उत्तर– श्री धर्मनाथ भगवान के तीर्थ में अजितनाभि नाम के रूद्र हुये।

16

भगवान श्री शांतिनाथ जी

प्रश्न 2042. सोलहवें तीर्थंकर का नाम क्या है ?

उत्तर– सोलहवें तीर्थंकर का नाम श्री शांतिनाथ भगवान है।

प्रश्न 2043. श्री शांतिनाथ भगवान को किस चिन्ह से जाना जाता है ?

उत्तर– श्री शांतिनाथ भगवान को हिरण चिन्ह से जाना जाता है।

प्रश्न 2044. श्री शांतिनाथ भगवान की पूर्व पर्याय का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री शांतिनाथ भगवान की पूर्व पर्याय का नाम राजा श्री मेघरथ जी था।

प्रश्न 2045. श्री शांतिनाथ भगवान ने तीर्थंकर प्रकृति का बंध कौन सी पर्याय में किया ?

उत्तर– श्री शांतिनाथ भगवान ने तीर्थंकर प्रकृति का बंध मेघरथ की पर्याय में किया।

प्रश्न 2046. श्री शांतिनाथ भगवान के पूर्व भव के पिता का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री शांतिनाथ भगवान के पूर्व भव के पिता वितारक्ष थे।

प्रश्न 2047. श्री शांतिनाथ भगवान के पूर्व भव के दीक्षा गुरू कौन थे ?

उत्तर– श्री शांतिनाथ भगवान के पूर्व भव के दीक्षा गुरू विमलवाहन थे।

प्रश्न 2048. श्री मेघरथ जी किस देश के राजा थे ?

उत्तर– श्री मेघरथ जी पुष्पकलावती देश के राजा थे।

प्रश्न 2049. श्री मेघरथ किस नगर के राजा थे।

उत्तर– श्री मेघरथ पुंडरीकिणीपुरी नगरी के राजा थे।

प्रश्न 2050. श्री शांतिनाथ भगवान के पिता का क्या नाम था ?

उत्तर– श्री शांतिनाथ भगवान के पिता राजा श्री विश्वसेन जी थे।

प्रश्न 2051. श्री शांतिनाथ भगवान की माता का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री शांतिनाथ भगवान की माता का नाम ऐरादेवी था।

प्रश्न 2052. श्री शांतिनाथ भगवान कहाँ से गर्भ में आये थे ?

उत्तर– सर्वार्थसिद्धि नाम के विमान से गर्भ में आये थे।,

प्रश्न 2053. श्री शांतिनाथ भगवान की पूर्व भव की देव आयु कितनी थी ?

उत्तर– भगवान श्री शांतिनाथ भगवान की पूर्व भव की देव आयु 33 सागर थी।

प्रश्न 2054. श्री शांतिनाथ भगवान का गर्भ कल्याणक कौन-सी तिथि को हुआ था ?

उत्तर– श्री शांतिनाथ भगवान का गर्भ कल्याणक भादों कृष्णा सप्तमी को हुआ था।

प्रश्न 2055. श्री शांतिनाथ भगवान का गर्भ कल्याणक कौन-से नक्षत्र में हुआ था ?

उत्तर– श्री शांतिनाथ भगवान का गर्भ कल्याणक भरणी नक्षत्र में हुआ था।

प्रश्न 2056. श्री शांतिनाथ भगवान का जन्म किस प्रदेश में हुआ था ?

उत्तर– श्री शांतिनाथ भगवान का जनम कुरूजांगल प्रदेश में हुआ था।

प्रश्न 2057. श्री शांतिनाथ भगवान का जन्म किस नगर में हुआ था ?

उत्तर– श्री शांतिनाथ भगवान का जन्म हस्तिनापुर नगर में हुआ था।

प्रश्न 2058. श्री शांतिनाथ भगवान का जन्म कल्याणक कौन सी तिथि को हुआ ?

उत्तर– श्री शांतिनाथ भगवान का जन्म कल्याणक ज्येष्ठकृष्णा चतुर्दशी को हुआ था।

प्रश्न 2059. श्री शांतिनाथ भगवान का जन्म कल्याणक किस नक्षत्र में हुआ था ?

उत्तर– श्री शांतिनाथ भगवान का जन्म कल्याणक भरणी नक्षत्र में हुआ था।

प्रश्न 2060. श्री शांतिनाथ भगवान की जन्म राशि कौन सी थी ?

उत्तर– श्री शांतिनाथ भगवान की जन्म राशि मेष थी।

प्रश्न 2061. श्री शांतिनाथ भगवान का जन्म किस वंश में हुआ था ?

उत्तर– श्री शांतिनाथ भगवान का जन्म वंश इक्ष्वाकु वंश में हुआ था।

प्रश्न 2062. श्री शांतिनाथ भगवान की आयु कितने वर्ष थी ?

उत्तर– श्री शांतिनाथ भगवान की आयु एक लाख वर्ष की थी।

प्रश्न 2063. श्री शांतिनाथ भगवान का कुमार काल कितने वर्ष का था ?

उत्तर– श्री शांतिनाथ भगवान का कुमार काल पच्चीस हजार वर्ष का था।

प्रश्न 2064. श्री शांतिनाथ भगवान के शरीर की ऊँचाई कितनी थी

उत्तर– श्री शांतिनाथ भगवान के शरीर की ऊँचाई चालिस धनुष थी।

प्रश्न 2065. श्री शांतिनाथ भगवान के शरीर का रंग कैसा था।

उत्तर– श्री शांतिनाथ भगवान सुवर्ण वर्ण (तपाये हुये सौने जैसा) थे।

प्रश्न 2066. श्री शांतिनाथ भगवान ने कितने वर्ष तक राज्य किया ?

उत्तर– श्री शांतिनाथ भगवान ने पचास हजार वर्ष तक राज्य किया।

प्रश्न 2067. श्री शांतिनाथ भगवान किस प्रकार के राजा थे ?

उत्तर– श्री शांतिनाथ भगवान चक्रवर्ती राजा थे।

प्रश्न 2068. श्री शांतिनाथ भगवान कौन से चक्रवर्ती थे ?

उत्तर– श्री शांतिनाथ भगवान पांचवें चक्रवर्ती थे।

प्रश्न 2069. श्री शांतिनाथ भगवान कौन से कामदेव थे ?

उत्तर– श्री शांतिनाथ भगवान बारहवें कामदेव थे।

प्रश्न 2070. श्री शांतिनाथ भगवान को वैराग्य कैसे हुआ था ?

उत्तर– श्री शांतिनाथ भगवान को वैराग्य जातिस्मरण से हुआ था।

प्रश्न 2071. श्री शांतिनाथ भगवान के छोटे भाई का क्या नाम था ?

उत्तर– श्री शांतिनाथ भगवान के छोटे भाई चक्रायुध नाम के थे।

प्रश्न 2072. श्री शांतिनाथ भगवान ने किस तिथि में दीक्षा ली थी ?

उत्तर– श्री शांतिनाथ भगवान ने ज्येष्ठ कृष्णा चतुर्दशी को दीक्षा ली थी।

प्रश्न 2073. श्री शांतिनाथ भगवान ने किस नक्षत्र में दीक्षा धारण की

उत्तर– श्री शांतिनाथ भगवान ने भरणी नक्षत्र में दीक्षा धारण की।

प्रश्न 2074. श्री शांतिनाथ भगवान ने किस वन में दीक्षा ली।

उत्तर– श्री शांतिनाथ भगवान ने आम्रवन में दीक्षा ली।

प्रश्न 2075. श्री शांतिनाथ भगवान ने किस नगर में दीक्षा ली ?

उत्तर– श्री शांतिनाथ भगवान ने हस्तिनापुर नगर में दीक्षा ली।

प्रश्न 2076. श्री शांतिनाथ भगवान ने किस समय दीक्षा धारण की ?

उत्तर– श्री शांतिनाथ भगवान ने अपरान्ह काल में दीक्षा ली।

प्रश्न 2077. श्री शांतिनाथ भगवान के पुत्र का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री शांतिनाथ भगवान के पुत्र का नाम नारायण था।

प्रश्न 2078. श्री शांतिनाथ भगवान की दीक्षा पालकी का क्या नाम था ?

उत्तर– श्री शांतिनाथ भगवान की दीक्षा पालकी सर्वार्थसिद्धि नामकी थी।

प्रश्न 2079. श्री शांतिनाथ भगवान के साथ कितने राजाओं ने दीक्षा ली

उत्तर– श्री शांतिनाथ भगवान के एक हजार राजाओं ने दीक्षा ली।

प्रश्न 2080. श्री शांतिनाथ भगवान के दीक्षा उपवासों की संख्या कितनी थी ?

उत्तर– श्री शांतिनाथ भगवान के दीक्षा उपवासों की संख्या तीन थी।

प्रश्न 2081. श्री शांतिनाथ भगवान ने कौन से वृक्ष के नीचे दीक्षा ली ?

उत्तर– श्री शांतिनाथ भगवान ने नंद्यावर्त वृक्ष के नीचे दीक्षा ली।

प्रश्न 2082. श्री शांतिनाथ भगवान को प्रथम आहार किसने दिया था।

उत्तर– श्री शांतिनाथ भगवान को प्रथम आहार राजा सुमित्र ने दिया था।

प्रश्न 2083. श्री शांतिनाथ भगवान ने किस वस्तु का आहार लिया था ?

उत्तर– श्री शांतिनाथ भगवान ने खीर का आहार लिया था।

प्रश्न 2084. श्री शांतिनाथ भगवान ने कितने वर्ष तक तप किया ?

उत्तर– श्री शांतिनाथ भगवान ने सोलह वर्ष तक तप किया।

प्रश्न 2085. श्री शांतिनाथ भगवान को केवलज्ञान किस तिथि का हुआ ?

उत्तर– श्री शांतिनाथ भगवान को केवलज्ञान पौष शुक्ला दशमी को हुआ।

प्रश्न 2086. श्री शांतिनाथ भगवान को केवलज्ञान किस नक्षत्र में हुआ था ?

उत्तर– श्री शांतिनाथ भगवान को केवलज्ञान भरणी नक्षत्र में हुआ था।

प्रश्न 2087. श्री शांतिनाथ भगवान को केवलज्ञान किस वन में हुआ था ?

उत्तर– श्री शांतिनाथ भगवान को केवलज्ञान आम्रवन में हुआ था।

प्रश्न 2088. श्री शांतिनाथ भगवान का केवलाज्ञान किस नगर में हुआ था ?

उत्तर– श्री शांतिनाथ भगवान को केवलज्ञान हस्तिनापुर नगर में हुआ था।

प्रश्न 2089. श्री शांतिनाथ भगवान को केवलज्ञान किस समय हुआ था।

उत्तर– श्री शांतिनाथ भगवान को केवलज्ञान अपरान्ह काल में हुआ था।

प्रश्न 2090. श्री शांतिनाथ भगवान को केवलज्ञान किस वृक्ष के नीचे हुआ ?

उत्तर– श्री शांतिनाथ भगवान को केवलज्ञान नंदी वृक्ष के नीचे हुआ था।

प्रश्न 2091. श्री शांतिनाथ भगवान का केवली काल कितने वर्ष का था ?

उत्तर– श्री शांतिनाथ भगवान का केवलीकाल चौबीस हजार नौ सौ चौरासी वर्ष का था।

प्रश्न 2092. श्री शांतिनाथ भगवान की शासनदेवी का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री शांतिनाथ भगवान की शासनदेवी का नाम महामानसी देवी था।

प्रश्न 2093. श्री शांतिनाथ भगवान के शासन यक्ष कौन थे ?

उत्तर– श्री शांतिनाथ भगवान के शासन यक्ष गरूड़ देव थे।

प्रश्न 2094. श्री शांतिनाथ भगवान के शासनदेव क्षेत्रपालों के नाम क्या थे।

उत्तर– श्री शांतिनाथ भगवान के शासनदेव क्षेत्रपालों के नाम 1. श्री सिद्धसेन, 2. श्री महोसन, 3. श्री लोकसेन, 4. श्री विनयकेत थे।

प्रश्न 2095. श्री शांतिनाथ भगवान के समोशरण का कितना विस्तार था ?

उत्तर– श्री शांतिनाथ भगवान के समोशरण का विस्तार साढ़े चार योजन था।

प्रश्न 2096. श्री शांतिनाथ भगवान के समोशरण में कितने गणधर थे ?

उत्तर– श्री शांतिनाथ भगवान के समोशरण में छत्तिस गणधर थे।

प्रश्न 2097. श्री शांतिनाथ भगवान के प्रमुख गणधर कौन थे ?

उत्तर– श्री शांतिनाथ भगवान के प्रमुख गणधर श्री चक्रायुध थे।

प्रश्न 2098. श्री शांतिनाथ भगवान के समोशरण में कितने ऋषि थे?

उत्तर– श्री शांतिनाथ भगवान के समोशरण में बासठ हजार ऋषि थे।

प्रश्न 2099. श्री शांतिनाथ भगवान के समोशरण में शिक्षक मुनि कितने थे ?

उत्तर– श्री शांतिनाथ भगवान के समोशरण में इकतालीस हजार आठ सौ शिक्षक मुनि थे।

प्रश्न 2100. श्री शांतिनाथ भगवान के समोशरण में अधविज्ञानी मुनि कितने थे।

उत्तर– श्री शांतिनाथ भगवान के समोशरण में तीन हजार अधविज्ञानी मुनि थे।

प्रश्न 2101. श्री शांतिनाथ भगवान के समोशरण में कितने केवली थे ?

उत्तर– श्री शांतिनाथ भगवान के समोशरण में चार हजार केवली थे।

प्रश्न 2102. श्री शांतिनाथ भगवान के समोशरण में कितने मुनि विक्रिया धारी थे ?

उत्तर– श्री शांतिनाथ भगवान के समोशरण में छह हजार विक्रियाधारी मुनि थे।

प्रश्न 2103. श्री शांतिनाथ भगवान के समोशरण में कितने वादी मुनि थे ?

उत्तर– श्री शांतिनाथ भगवान के समोशरण में दो हजार चार सौ वादी मुनिराज थे।

प्रश्न 2104. श्री शांतिनाथ भगवान के समोशरण में कितनी आर्यिकायें थीं ?

उत्तर– श्री शांतिनाथ भगवान के समोशरण में साठ हजार तीन सौ आर्यिकायें थीं।

प्रश्न 2105. श्री शांतिनाथ भगवान के समोशरण में प्रमुख आर्यिका कौन थीं ?

उत्तर– श्री शांतिनाथ भगवान के समोशरण में प्रमुख आर्यिका हरिषेणा थीं।

प्रश्न 2106. श्री शांतिनाथ भगवान के समोशरण में कितने श्रावक थे ?

उत्तर– श्री शांतिनाथ भगवान के समोशरण में दो लाख श्रावक थे।

प्रश्न 2107. श्री शांतिनाथ भगवान के समोशरण में प्रमुख श्रावक कौन थे ?

उत्तर– श्री शांतिनाथ भगवान के समोशरण में प्रमुख श्रावक सुरकीर्ति जी थे।

प्रश्न 2108. श्री शांतिनाथ भगवान के समोशरण में कितनी श्राविकायें थीं ?

उत्तर– श्री शांतिनाथ भगवान के समोशरण में चार लाख श्राविकायें थीं।

प्रश्न 2109. श्री शांतिनाथ भगवान के समोशरण में प्रमुख श्राविका कौन थीं ?

उत्तर– श्री शांतिनाथ भगवान के समोशरण में अर्हदासी प्रमुख श्राविका थीं।

प्रश्न 2110. श्री शांतिनाथ भगवान के समोशरण में प्रमुख श्रोता कौन थे।

उत्तर– श्री शांतिनाथ भगवान के समोशरण में श्री पुंडरीक प्रमुख श्रोता थे।

प्रश्न 2111. श्री शांतिनाथ भगवान ने मोक्ष कौन सी तिथि को प्राप्त किया था ?

उत्तर– श्री शांतिनाथ भगवान ने मोक्ष ज्येष्ठ कृष्णा चतुर्दशी को प्राप्त किया था।

प्रश्न 2112. श्री शांतिनाथ भगवान को मोक्ष किस नक्षत्र में हुआ था ?

उत्तर– श्री शांतिनाथ भगवान को मोक्ष भरणी नक्षत्र में हुआ था।

प्रश्न 2113. श्री शांतिनाथ भगवान किस समय मोक्ष गये ?

उत्तर– श्री शांतिनाथ भगवान अपरान्ह काल के प्रदोष काल में मोक्ष गये।

प्रश्न 2114. श्री शांतिनाथ भगवान ने किस स्थान से मोक्ष प्राप्त किया?

उत्तर– श्री शांतिनाथ भगवान ने श्री सम्मेद शिखर जी से मोक्ष प्राप्त किया।

प्रश्न 2115. श्री शांतिनाथ भगवान ने कितने मुनियों के साथ मोक्ष प्राप्त किया ?

उत्तर– श्री शांतिनाथ भगवान ने नौ सौ मुनियों के साथ मोक्ष प्राप्त किया।

प्रश्न 2116. श्री शांतिनाथ भगवान का योग निवृत्ति काल कितना था ?

उत्तर– श्री शांतिनाथ भगवान का योग निवृत्ति काल एक माह था।

प्रश्न 2117. श्री शांतिनाथ भगवान ने किस कूट से मोक्ष प्राप्त किया ?

उत्तर– श्री शांतिनाथ भगवान कुंदप्रभ कूट से मोक्ष प्राप्त किया।

प्रश्न 2118. श्री शांतिनाथ भगवान के मोक्ष जाने के बाद कितने मुनि मोक्ष गये ?

उत्तर– श्री शांतिनाथ भगवान के मोक्ष जाने के बाद 99,99,99,000 मुनि मोक्ष गये।

प्रश्न 2119. श्री शांतिनाथ भगवान के तीर्थ में चतुर्विध संघ को शिखर जी की यात्रा कराने वाले कौन से राजा थे ?

उत्तर– श्री शांतिनाथ भगवान के तीर्थ में चतुर्विध संघ को शिखर जी की यात्रा कराने वाले राजा श्री सुदर्शन जी थे।

प्रश्न 2120. श्री शांतिनाथ भगवान के कितने अनुबद्ध केवली थे ?

उत्तर– श्री शांतिनाथ भगवान के अट्ठाइस अनुबद्ध केवली थे।

प्रश्न 2121. श्री शांतिनाथ भगवान के कितने शिष्यों ने अनुत्तर विमानों को प्राप्त किया ?

उत्तर– श्री शातिनाथ भगवान के दश हजार शिष्यों ने अनुत्तर विमानो को प्राप्त किया।

प्रश्न 2122. श्री शांतिनाथ भगवान के कितने शिष्यों ने मोक्ष प्राप्त किया ?

उत्तर– श्री शांतिनाथ भगवान के अड़तालीस हजार चार सौ शिष्यों ने मोक्ष प्राप्त किया।

प्रश्न 2123. श्री शांतिनाथ भगवान के कितने शिष्यों ने पहले स्वर्ग से ग्रैवेयक तक के स्वर्गो में जन्म लिया ?

उत्तर– श्री शातिनाथ भगवान के तीन हजार छह सौ शिष्यों ने पहले स्वर्ग से ग्रैवेयक तक के स्वर्गो में जन्म लिया ?

प्रश्न 2124. श्री शांतिनाथ भगवान कौन से आसन से मोक्ष गये ?

उत्तर– श्री शांतिनाथ भगवान खड्गासन से मोक्ष गये।

प्रश्न 2125. श्री शांतिनाथ भगवान के तीर्थ में कौन से चक्रवर्ती हुए हैं ?

उत्तर– श्री शांतिनाथ भगवान के तीर्थ में स्वयं श्रीशांतिनाथ जी चक्रवर्ती हुए हैं।

प्रश्न 2126. श्री शांतिनाथ भगवान के तीर्थ में कौन से कामदेव हुए ?

उत्तर– श्री शांतिनाथ भगवान के तीर्थ में स्वयं श्री शांतिनाथ जी कामदेव हुए।

प्रश्न 2127. श्री शांतिनाथ भगवान के तीर्थ में कौन रूद्र हुए ?

उत्तर– श्री शांतिनाथ भगवान के तीर्थ में श्रीपीठ नाम के रूद्र हुए।

प्रश्न 2128. श्री शांतिनाथ भगवान का तीर्थ प्रर्वतन काल कितने वर्ष का था ?

उत्तर– श्री शांतिनाथ भगवान का तीर्थं प्रवर्तन काल आधा पल्य तथा एक हजार दो सौ पचास वर्ष का था।

17

भगवान श्री कुंथुनाथ जी

प्रश्न 2129. सत्रहवें तीर्थंकर का नाम क्या है ?

उत्तर– सत्रहवें तीर्थंकर का नाम श्री कुंथुनाथ भगवान है।

प्रश्न 2130. श्री कुंथुनाथ भगवान को किस चिन्ह से जाना जाता है।

उत्तर– श्री कुंथुनाथ भगवान को बकरा चिन्ह से जाना जाता है।

प्रश्न 2131. श्री कुंथुनाथ भगवान के पूर्व पर्याय का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री कुंथुनाथ भगवान के पूर्व पर्याय का नाम राजा श्री सिंहरथ था।

प्रश्न 2132. श्री कुंथुनाथ भगवान ने तीर्थंकर प्रकृति का बंध कौन सी पर्याय में किया ?

उत्तर– श्री कुंथुनाथ भगवान ने तीर्थंकर प्रकृति का बंध सिंहरथ की पर्याय में किया।

प्रश्न 2133. श्री कुंथुनाथ भगवान के पूर्व भव के पिता का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री कुंथुनाथ भगवान के पूर्व भव के पिता विमलवाहन थे।

प्रश्न 2134. श्री कुंथुनाथ भगवान के पूर्व भव के दीक्षा गुरू कौन थे।

उत्तर– श्री कुंथुनाथ भगवान के पूर्व भव के दीक्षा गुरू धनरथ थे।

प्रश्न 2135. राजा सिंहरथ किस देश के राजा थे।

उत्तर– राजा सिंहरथ वत्सा देश के राजा थे।

प्रश्न 2136. वत्सा देश की राजधानी कौन सी नगरी थी ?

उत्तर– वत्सा देश की राजधानी सुसीमा नगरी थी।

प्रश्न 2137. श्री कुंथुनाथ भगवान के पिता का क्या नाम था ?

उत्तर– श्री कुंथुनाथ भगवान के पिता का नाम महाराज श्री शूरसेन था।

प्रश्न 2138. श्री कुंथुनाथ भगवान की माता का क्या नाम था ?

उत्तर– श्री कुंथुनाथ भगवान की माता का नाम महारानी श्रीकांता जी था।

प्रश्न 2139. श्री कुंथुनाथ भगवान का गर्भ कल्याणक किस नक्षत्र में हुआ था ?

उत्तर– श्री कुंथुनाथ भगवान का गर्भ कल्याणक कृतिका नक्षत्र में हुआ था।

प्रश्न 2140. श्री कुंथुनाथ भगवान कहाँ से गर्भ में आये थे ?

उत्तर– श्री कुंथुनाथ भगवान सर्वार्थ सिद्धि विमान से गर्भ में आये थे।

प्रश्न 2141. श्री कुंथुनाथ भगवान की पूर्व भव की देव आयु कितनी थी ?

उत्तर– श्री कुंथुनाथ भगवान की पूर्व भव की देव आयु 33 सागर थी।

प्रश्न 2142. श्री कुंथुनाथ भगवान ने किस नगरी में जन्म लिया था ?

उत्तर– श्री कुंथुनाथ भगवान ने हस्तिनापुर नगरी में जन्म लिया था।

प्रश्न 2143. श्री कुंथुनाथ भगवान की जन्म तिथि कौन सी है ?

उत्तर– श्री कुंथुनाथ भगवान की जन्म तिथि वैशाख शुक्ला एकम् है।

प्रश्न 2144. श्री कुंथुनाथ भगवान का जन्म नक्षत्र क्या था ?

उत्तर– श्री कुंथुनाथ भगवान का जन्म कृतिका नक्षत्र में हुआ था।

प्रश्न 2145. श्री कुंथुनाथ भगवान ने कौन से वंश में जन्म लिया था ?

उत्तर– श्री कुंथुनाथ भगवान ने कुरु वंश में जन्म लिया था।

प्रश्न 2146. श्री कुंथुनाथ भगवान की जन्म राशि कौन सी थी ?

उत्तर– श्री कुंथुनाथ भगवान की जन्म राशि वृषभ थी।

प्रश्न 2147. श्री कुंथुनाथ भगवान की आयु कितनी थी ?

उत्तर– श्री कुंथुनाथ भगवान की आयु पचानवे हजार वर्ष थी।

प्रश्न 2148. श्री कुंथुनाथ भगवान का कुमार काल कितने वर्ष था ?

उत्तर– श्री कुंथुनाथ भगवान का कुमार काल तेइस हजार सात सौ पचास वर्ष था।

प्रश्न 2149. श्री कुंथुनाथ भगवान के शरीर की ऊँचाई कितनी थी ?

उत्तर– श्री कुंथुनाथ भगवान के शरीर की ऊँचाई पैंतीस धनुष थी।

प्रश्न 2150. श्री कुंथुनाथ भगवान के शरीर का रंग कैसा था ?

उत्तर– श्री कुंथुनाथ भगवान का शरीर तपाये हुये स्वर्ण के समान था।

प्रश्न 2151. श्री कुंथुनाथ भगवान का राज्य काल कितने वर्ष था ?

उत्तर– श्री कुंथुनाथ भगवान का राज्य काल सैतालीस हजार पांच सौ वर्षों का था।

प्रश्न 2152. श्री कुंथुनाथ भगवान कौन से चक्रवर्ती राजा थे ?

उत्तर– श्री कुंथुनाथ भगवान छटवें चक्रवर्ती राजा थे।

प्रश्न 2153. श्री कुंथुनाथ भगवान कौन से पद से शोभित थे ?

उत्तर– श्री कुंथुनाथ भगवान कामदेव के पद से शोभित थे।

प्रश्न 2154. श्री कुंथुनाथ भगवान को वैराग्य किस कारण से हुआ था ?

उत्तर– श्री कुंथुनाथ भगवान को वैराग्य जातिस्मरण से हुआ था।

प्रश्न 2155. श्री कुंथुनाथ भगवान ने कौन सी तिथि में दीक्षा ली ?

उत्तर– श्री कुंथुनाथ भगवान ने वैशाख शुक्ला एकम् को दीक्षा ली।

प्रश्न 2156. श्री कुंथुनाथ भगवान ने कौन से नक्षत्र में दीक्षा ली ?

उत्तर– श्री कुंथुनाथ भगवान ने कृतिका नक्षत्र में दीक्षा ली।

प्रश्न 2157. श्री कुंथुनाथ भगवान ने दीक्षा किस समय ली ?

उत्तर– श्री कुंथुनाथ भगवान ने दीक्षा अपरान्ह काल में ली।

प्रश्न 2158. श्री कुंथुनाथ भगवान ने दीक्षा किस वन में ली ?

उत्तर– श्री कुंथुनाथ भगवान ने दीक्षा सहेतुक वन में ली।

प्रश्न 2159. श्री कुंथुनाथ भगवान ने दीक्षा किस नगर में ली थी ?

उत्तर– श्री कुंथुनाथ भगवान ने दीक्षा हस्तिनापुर नगर में ली थी।

प्रश्न 2160. श्री कुंथुनाथ भगवान की दीक्षा पालकी का क्या नाम था ?

उत्तर– श्री कुंथुनाथ भगवान की दीक्षा पालकी का विजया नाम था।

प्रश्न 2161. श्री कुंथुनाथ भगवान ने दीक्षा किस वृक्ष के नीचे ली ?

उत्तर– श्री कुंथुनाथ भगवान ने दीक्षा तिलक वृक्ष के नीचे ली।

प्रश्न 2162. श्री कुंथुनाथ भगवान ने दीक्षा के कितने उपवास किये ?

उत्तर– श्री कुंथुनाथ भगवान ने दीक्षा के तीन उपवास किये।

प्रश्न 2163. श्री कुंथुनाथ भगवान का प्रथम आहार कहाँ हुआ था ?

उत्तर– श्री कुंथुनाथ भगवान का प्रथम आहार हस्तिनापुर नगर में हुआ था।

प्रश्न 2164. श्री कुंथुनाथ भगवान के प्रथम आहार दान दाता कौन थे ?

उत्तर– श्री कुंथुनाथ भगवान के प्रथम आहार दान दाता धर्ममित्र जी थे।

प्रश्न 2165. श्री कुंथुनाथ भगवान ने किस वस्तु का आहार लिया ?

उत्तर– श्री कुंथुनाथ भगवान ने खीर का आहार लिया।

प्रश्न 2166. श्री कुंथुनाथ भगवान ने कितने राजाओं के साथ दीक्षा ली ?

उत्तर– श्री कुंथुनाथ भगवान ने एक हजार राजाओं के साथ दीक्षा ली।

प्रश्न 2167. श्री कुंथुनाथ भगवान ने कितने वर्ष तक तप किया ?

उत्तर– श्री कुंथुनाथ भगवान ने सोलह वर्ष तक तप किया।

प्रश्न 2168. श्री कुंथुनाथ भगवान को केवलज्ञान किस तिथि को हुआ था ?

उत्तर– श्री कुंथुनाथ भगवान को केवलज्ञान चैत्र शुक्ला तीज को हुआ था।

प्रश्न 2169. श्री कुंथुनाथ भगवान को केवलज्ञान किस नगर में हुआ था।

उत्तर– श्री कुंथुनाथ भगवान को केवलज्ञान हस्तिनापुर नगर में हुआ था।

प्रश्न 2170. श्री कुंथुनाथ भगवान को केवलज्ञान किस वन में हुआ था ?

उत्तर– श्री कुंथुनाथ भगवान को केवलज्ञान सहेतुक वन में हुआ था।

प्रश्न 2171. श्री कुंथुनाथ भगवान को केवलज्ञान किस समय हुआ था ?

उत्तर– श्री कुंथुनाथ भगवान को केवलज्ञान अपरान्ह काल में हुआ था।

प्रश्न 2172. श्री कुंथुनाथ भगवान को केवलज्ञान किस नक्षत्र में हुआ।

उत्तर– श्री कुंथुनाथ भगवान को केवलज्ञान कृतिका नक्षत्र में हुआ।

प्रश्न 2173. श्री कुंथुनाथ भगवान को केवलज्ञान किस वृक्ष के नीचे हुआ था ?

उत्तर– श्री कुंथुनाथ भगवान को केवलज्ञान तिलक वृक्ष के नीचे हुआ था।

प्रश्न 2174. श्री कुंथुनाथ भगवान के समोशरण का कितना विस्तार था ?

उत्तर– श्री कुंथुनाथ भगवान के समोशरण का चार योजन विस्तार था।

प्रश्न 2175. श्री कुंथुनाथ भगवान का केवली काल कितने वर्ष का था ?

उत्तर– श्री कुंथुनाथ भगवान का केवली काल तेईस हजार सात सौ चौंतीस वर्ष का था।

प्रश्न 2176. श्री कुंथुनाथ भगवान के शासन देव का क्या नाम था ?

उत्तर– श्री कुंथुनाथ भगवान के शासन देव का नाम श्री गंर्धव देव था।

प्रश्न 2177. श्री कुंथुनाथ भगवान की शासन देवी का क्या नाम था ?

उत्तर– श्री कुंथुनाथ भगवान की शासन देवी का नाम जयादेवी यक्षी था।

प्रश्न 2178. श्री कुंथुनाथ भगवान के शासन देव क्षेत्रपालों के नाम क्या थे ?

उत्तर– श्री कुंथुनाथ भगवान के शासन देव क्षेत्रपालों के नाम – 1. श्री यक्षनाथ, 2. श्री भूमिनाथ, 3. श्री देशनाथ, 4. श्री अवनिनाथ।

प्रश्न 2179. श्री कुंथुनाथ भगवान के समोशरण में कितने गणधर थे ?

उत्तर– श्री कुंथुनाथ भगवान के समोशरण में पैंतीस गणधर थे।

प्रश्न 2180. श्री कुंथुनाथ भगवान के समोशरण में प्रमुख गणधर कौन थे ?

उत्तर– श्री कुंथुनाथ भगवान के समोशरण में प्रमुख गणधर स्वयंभू नाथ थे।

प्रश्न 2181. श्री कुंथुनाथ भगवान के समोशरण में कितने ऋषि थे ?

उत्तर– श्री कुंथुनाथ भगवान के समोशरण में साठ हजार ऋषि थे।

प्रश्न 2182. श्री कुंथुनाथ भगवान के समोशरण में कितने पूर्वधर मुनि थे ?

उत्तर– *श्री कुंथुनाथ भगवान के समोशरण में सात सौ पूर्वधर मुनि थे।*

प्रश्न 2183. श्री कुंथुनाथ भगवान के समोशरण में कितने शिक्षक मुनि थे ?

उत्तर– श्री कुंथुनाथ भगवान के समोशरण में तेंतालीस हजार एक सौ पचास शिक्षक मुनि थे।

प्रश्न 2184. श्री कुंथुनाथ भगवान के समोशरण में कितने अवधिज्ञानी मुनि थे ?

उत्तर– श्री कुंथुनाथ भगवान के समोशरण में दो हजार पाँच सौ अवधिज्ञानी मुनि थे।

प्रश्न 2185. श्री कुंथुनाथ भगवान के समोशरण में कितने केवली थे ?

उत्तर– श्री कुंथुनाथ भगवान के समोशरण में तीन हजार दो सौ केवली थे।

प्रश्न 2186. श्री कुंथुनाथ भगवान के समोशरण में कितने विक्रियाधारी मुनि थे ?

उत्तर– श्री कुंथुनाथ भगवान के समोशरण में पाँच हजार एक सौ विक्रियीधारी मुनि थे।

प्रश्न 2187. श्री कुंथुनाथ भगवान के समोशरण में कितने विपुलमतिज्ञानधारी मुनि थे ?

उत्तर– श्री कुंथुनाथ भगवान के समोशरण में तीन हजार तीन सौ विपुलमतिज्ञानधारी मुनि थे।

प्रश्न 2188. श्री कुंथुनाथ भगवान के समोशरण में वादी मुनियों की संख्या कितनी थी ?

उत्तर– श्री कुंथुनाथ भगवान के समोशरण में दो हजार वादी मुनि थे।

प्रश्न 2189. श्री कुंथुनाथ भगवान के समोशरण में कितनी आर्यिकायें थीं ?

उत्तर– श्री कुंथुनाथ भगवान के समोशरण में साठ हजार तीन सौ पचास आर्यिकायें थीं।

प्रश्न 2190. श्री कुंथुनाथ भगवान के समोशरण में प्रमुख आर्यिका कौन थीं ?

उत्तर– श्री कुंथुनाथ भगवान के समोशरण में प्रमुख आर्यिका भाविता थीं।

प्रश्न 2191. श्री कुंथुनाथ भगवान के समोशरण में कितने श्रावक थे ?

उत्तर– श्री कुंथुनाथ भगवान के समोशरण में एक लाख श्रावक थे।

प्रश्न 2192. श्री कुंथुनाथ भगवान के समोशरण में कितनी श्राविकाएँ थीं ?

उत्तर– श्री कुंथुनाथ भगवान के समोशरण में तीन लाख श्राविकायें थीं।

प्रश्न 2193. श्री कुंथुनाथ भगवान के समोशरण में प्रमुख श्रोता कौन थे ?

उत्तर– श्री कुंथुनाथ भगवान के समोशरण में प्रमुख श्रोता श्रीदत्त (नारायण जी) थे।

प्रश्न 2194. श्री कुंथुनाथ भगवान को मोक्ष किस तिथि में हुआ था ?

उत्तर– श्री कुंथुनाथ भगवान को मोक्ष बैशाख शुक्ला एकम् को हुआ था।

प्रश्न 2195. श्री कुंथुनाथ भगवान को मोक्ष किस काल में हुआ था ?

उत्तर– श्री कुंथुनाथ भगवान को मोक्ष अपरान्ह काल के प्रदोष काल में हुआ था।

प्रश्न 2196. श्री कुंथुनाथ भगवान को मोक्ष किस नक्षत्र में हुआ था।

उत्तर– श्री कुंथुनाथ भगवान को मोक्ष कृतिका नक्षत्र में हुआ था।

प्रश्न 2197. श्री कुंथुनाथ भगवान को मोक्ष किस स्थान से हुआ था ?

उत्तर– श्री कुंथुनाथ भगवान को मोक्ष श्री सम्मेदशिखर जी से हुआ था।

प्रश्न 2198. श्री कुंथुनाथ भगवान किस कूट से मोक्ष गये ?

उत्तर– श्री कुंथुनाथ भगवान ज्ञानधर कूट से मोक्ष गये।

प्रश्न 2199. श्री कुंथुनाथ भगवान ने कितने मुनियों के साथ मोक्ष प्राप्त किया ?

उत्तर– श्री कुंथुनाथ भगवान ने एक हजार मुनियों के साथ मोक्ष प्राप्त किया।

प्रश्न 2200. श्री कुंथुनाथ भगवान का योग निवृत्ति काल कितना था ?

उत्तर– श्री कुंथुनाथ भगवान का योग निवृत्ति काल एक माह था।

प्रश्न 2201. श्री कुंथुनाथ भगवान के धर्मतीर्थ में चतुर्विध संघ को यात्रा कराने वाले संघपति का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री कुंथुनाथ भगवान के धर्मतीर्थ में चतुर्विध संघ को यात्रा कराने वाले संघपति राजा सोमधर थे।

प्रश्न 2202. श्री कुंथुनाथ भगवान के कितने अनुबद्ध केवली थे ?

उत्तर– श्री कुंथुनाथ भगवान के चौबीस अनुबद्ध केवली थे।

प्रश्न 2203. श्री कुंथुनाथ भगवान किस आसन से मोक्ष गये ?

उत्तर– श्री कुंथुनाथ भगवान खड्गासन से मोक्ष गये।

प्रश्न 2204. श्री कुंथुनाथ भगवान के कितने शिष्यों ने अनुत्तर विमानों में जन्म लिया ?

उत्तर– श्री कुंथुनाथ भगवान के शिष्य दस हजार मुनियों ने अनुत्तर विमानों में जन्म लिया।

प्रश्न 2205. श्री कुंथुनाथ भगवान के कितने शिष्यों ने मोक्ष को प्राप्त किया ?

उत्तर– श्री कुंथुनाथ भगवान के शिष्य छियालिस हजार आठ सौ मुनियों ने मोक्ष को प्राप्त किया।

प्रश्न 2206. श्री कुंथुनाथ भगवान के मोक्ष जाने के बाद कितने मुनि मोक्ष गये ?

उत्तर– श्री कुंथुनाथ भगवान के मोक्ष जाने के बाद 99 करोड़ मुनि मोक्ष गये।

प्रश्न 2207. श्री कुंथुनाथ भगवान के कितने शिष्य पहले स्वर्ग से नवग्रैवेयक तक जन्मे।

उत्तर– श्री कुंथुनाथ भगवान के तीन हजार दो सौ शिष्य पहले स्वर्ग से नवग्रैवेयक तक जन्मे।

प्रश्न 2208. श्री कुंथुनाथ भगवान का तीर्थ प्रवर्तन काल कितने वर्ष का था ?

उत्तर– श्री कुंथुनाथ भगवान का नौ सौ निन्यानवे करोड़ निन्यानवे लाख सत्तानवे हजार दो सौ पचास वर्ष कम पल्य के नौथे भाग तक तीर्थ प्रवर्तन काल रहा।

प्रश्न 2209. श्री कुंथुनाथ भगवान के शासनकाल में कौन-से चक्रवर्ती हुए ?

उत्तर– श्री कुंथुनाथ भगवान के शासनकाल में श्री कुंथुनाथ भगवान स्वयं चक्रवर्ती थे।

प्रश्न 2210. श्री कुंथुनाथ भगवान के तीर्थकाल में कौन-से कामदेव हुए ?

उत्तर– श्री कुंथुनाथ भगवान स्वयं काम देव थे।

18

भगवान श्री अरहनाथ जी

प्रश्न 2211. अठारहवें तीर्थंकर का नाम क्या है ?

उत्तर– अठारहवें तीर्थंकर का नाम श्री अरहनाथ जी है।

प्रश्न 2212. श्री अरहनाथ भगवान को किस चिन्ह से जाना जाता है।

उत्तर– श्री अरहनाथ भगवान को मछली चिन्ह से जाना जाता है।

प्रश्न 2213. श्री अरहनाथ भगवान की पूर्व पर्याय का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री अरहनाथ भगवान की पूर्व पर्याय का नाम राजा श्री धनपति था।

प्रश्न 2214. श्री अरहनाथ भगवान ने तीर्थंकर प्रकृति का बंध कौन सी पर्याय में किया ?

उत्तर– श्री अरहनाथ भगवान ने तीर्थंकर प्रकृति का बंध धनपति की पर्याय में किया।

प्रश्न 2215. श्री अरहनाथ भगवान के पूर्व भव के पिता का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री अरहनाथ भगवान के पूर्व भव के पिता धनरव थे।

प्रश्न 2216. श्री अरहनाथ भगवान के पूर्व भव के दीक्षा गुरू कौन थे।

उत्तर– श्री अरहनाथ भगवान के पूर्व भव के दीक्षा गुरू संवर थे।

प्रश्न 2217. श्री धनपति कहाँ के राजा थे।

उत्तर– श्री धनपति कच्छ देश के राजा थे।

प्रश्न 2218. राजा श्री धनपति किस नगर के राजा थे ?

उत्तर– राजा श्री धनपति क्षेमपुर नगर के राजा थे।

प्रश्न 2219. श्री अरहनाथ भगवान के पिता का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री अरहनाथ भगवान के पिता का नाम राजा श्री सुदर्शन जी था।

प्रश्न 2220. श्री अरहनाथ भगवान की माता का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री अरहनाथ भगवान की माता का नाम महारानी श्री मित्र सेना था।

प्रश्न 2221. श्री अरहनाथ भगवान कहाँ से गर्भ में आये ?

उत्तर– श्री अरहनाथ भगवान अपराजित स्वर्ग से गर्भ में आये।

प्रश्न 2222. श्री अरहनाथ भगवान की पूर्व भव की देव आयु कितनी थी ?

उत्तर– श्री अरहनाथ भगवान की पूर्व भव की देव आयु 32 से 33 सागर थी।

प्रश्न 2223. श्री अरहनाथ भगवान का गर्भ कल्याणक किस तिथि को हुआ ?

उत्तर– श्री अरहनाथ भगवान का गर्भ कल्याणक फाल्गुन शुक्ला तीज को हुआ।

प्रश्न 2224. श्री अरहनाथ भगवान का गर्भ कल्याणक किस नक्षत्र में हुआ था ?

उत्तर– श्री अरहनाथ भगवान का गर्भ कल्याणक रेवती नक्षत्र में हुआ था।

प्रश्न 2225. श्री अरहनाथ भगवान का जन्म कहाँ हुआ था ?

उत्तर– श्री अरहनाथ भगवान का जन्म हस्तिनापुर नगर में हुआ था।

प्रश्न 2226. श्री अरहनाथ भगवान का जन्म किस तिथि को हुआ था ?

उत्तर– श्री अरहनाथ भगवान का जन्म मगसिर शुक्ला चतुर्दशी को हुआ था।

प्रश्न 2227. श्री अरहनाथ भगवान का जन्म किस नक्षत्र में हुआ था ?

उत्तर– श्री अरहनाथ भगवान का जन्म रोहिणी नक्षत्र में हुआ था।

प्रश्न 2228. श्री अरहनाथ भगवान का जन्म किस वंश में हुआ था ?

उत्तर– श्री अरहनाथ भगवान का जन्म सोम वंश में हुआ था।

प्रश्न 2229. श्री अरहनाथ भगवान का क्या गोत्र था ?

उत्तर– श्री अरहनाथ भगवान का काश्यप गोत्र था।

प्रश्न 2230. श्री अरहनाथ भगवान की जन्म राशि कौन सी थी ?

उत्तर– श्री अरहनाथ भगवान की जन्म की राशि मीन थी।

प्रश्न 2231. श्री अरहनाथ भगवान की कितनी आयु थी ?

उत्तर– श्री अरहनाथ भगवान की आयु चौरासी हजार वर्ष थी।

प्रश्न 2232. श्री अरहनाथ भगवान का कुमार काल कितने वर्ष का था ?

उत्तर– श्री अरहनाथ भगवान का कुमार काल इक्कीस हजार वर्ष का था।

प्रश्न 2233. श्री अरहनाथ भगवान ने कितने वर्ष तक राज्य किया ?

उत्तर– श्री अरहनाथ भगवान ने ब्यालिस हजार वर्ष तक राज्य किया।

प्रश्न 2234. श्री अरहनाथ भगवान के शरीर की ऊँचाई कितनी थी ?

उत्तर– श्री अरहनाथ भगवान के शरीर की ऊँचाई तीस धनुष थी।

प्रश्न 2235. श्री अरहनाथ भगवान के शरीर का वर्ण कैसा था ?

उत्तर– श्री अरहनाथ भगवान का शरीर स्वर्ण वर्ण का था।

प्रश्न 2236. श्री कुंथुनाथ भगवान के मोक्ष जाने के कितने समय बाद अरहनाथ भगवान हुए ?

उत्तर– श्री कुंथुनाथ भगवान के मोक्ष जाने के एक हजार करोड़ वर्ष कम चौथाई पल्य बीत जाने पर श्री अरहनाथ भगवान हुए।

प्रश्न 2237. श्री अरहनाथ भगवान को वैराग्य कैसे हुआ ?

उत्तर– श्री अरहनाथ भगवान को वैराग्य शरद ऋतु के बादलों का नष्ट होना देखकर हुआ था।

प्रश्न 2238. श्री अरहनाथ भगवान का दीक्षा कल्याणक किस तिथि को हुआ ?

उत्तर– श्री अरहनाथ भगवान का दीक्षा कल्याणक मंगसिर कृष्णा दसवीं तिथि को हुआ।

प्रश्न 2239. श्री अरहनाथ भगवान का दीक्षा कल्याणक किस नक्षत्र को हुआ ?

उत्तर– श्री अरहनाथ भगवान का दीक्षा कल्याणक रेवती नक्षत्र में हुआ।

प्रश्न 2240. श्री अरहनाथ भगवान की दीक्षा किस वन में हुई थी ?

उत्तर– श्री अरहनाथ भगवान की दीक्षा सहेतुक वन में हुई थी।

प्रश्न 2241. श्री अरहनाथ भगवान ने दीक्षा किस नगर में ली ?

उत्तर– श्री अरहनाथ भगवान ने दीक्षा हस्तिनापुर नगर में ली।

प्रश्न 2242. श्री अरहनाथ भगवान की दीक्षा किस वृक्ष के नीचे हुई ?

उत्तर– श्री अरहनाथ भगवान की दीक्षा आम्र वृक्ष के नीचे हुई।

प्रश्न 2243. श्री अरहनाथ भगवान ने दीक्षा किस समय ली ?

उत्तर– श्री अरहनाथ भगवान ने दीक्षा अपरान्ह काल में ली।

प्रश्न 2244. श्री अरहनाथ भगवान की दीक्षा पालकी का क्या नाम था ?

उत्तर– श्री अरहनाथ भगवान की दीक्षा पालकी का नाम वैजयंती था।

प्रश्न 2245. श्री अरहनाथ भगवान के पुत्र का क्या नाम था ?

उत्तर– श्री अरहनाथ भगवान के पुत्र श्री अरविंद थे।

प्रश्न 2246. श्री अरहनाथ भगवान ने कितने दीक्षोपवास किये ?

उत्तर– श्री अरहनाथ भगवान ने तृतीय भक्त दीक्षोपवास किये।

प्रश्न 2247. श्री अरहनाथ भगवान ने कितने राजाओं के साथ दीक्षा ली थी ?

उत्तर– श्री अरहनाथ भगवान ने एक हजार राजाओं के साथ दीक्षा ली थी।

प्रश्न 2248. श्री अरहनाथ भगवान ने कितने समय तक तप किया ?

उत्तर– श्री अरहनाथ भगवान ने सोलह वर्ष तक तप किया।

प्रश्न 2249. श्री अरहनाथ भगवान का प्रथम आहार किस नगर में हुआ था ?

उत्तर– श्री अरहनाथ भगवान का प्रथम आहर चक्रपुर नगर में हुआ था।

प्रश्न 2250. श्री अरहनाथ भगवान को सर्व प्रथम आहार किसने दिया था।

उत्तर– श्री अरहनाथ भगवान को सर्व प्रथम आहार राजा अपराजित ने दिया था।

प्रश्न 2251. श्री अरहनाथ भगवान ने किस वस्तु का आहार लिया था ?

उत्तर– श्री अरहनाथ भगवान ने खीर का आहार लिया था।

प्रश्न 2252. श्री अरहनाथ भगवान को केवलज्ञान किस नगर में हुआ था ?

उत्तर– श्री अरहनाथ भगवान को केवलज्ञान हस्तिनापुर नगर में हुआ था।

प्रश्न 2253. श्री अरहनाथ भगवान को केवलज्ञान किस तिथि को हुआ था ?

उत्तर– श्री अरहनाथ भगवान को केवलज्ञान कार्तिक शुक्ला द्वादशी को हुआ था।

प्रश्न 2254. श्री अरहनाथ भगवान को केवलज्ञान किस नक्षत्र में हुआ था ?

उत्तर– श्री अरहनाथ भगवान को केवलज्ञान रेवती नक्षत्र में हुआ था।

प्रश्न 2255. श्री अरहनाथ भगवान को केवलज्ञान किस समय हुआ था ?

उत्तर– श्री अरहनाथ भगवान को केवलज्ञान अपरान्ह काल में हुआ था।

प्रश्न 2256. श्री अरहनाथ भगवान को केवलज्ञान कहाँ हुआ था ?

उत्तर– श्री अरहनाथ भगवान को केवलज्ञान सहेतुक वन में हुआ था।

प्रश्न 2257. श्री अरहनाथ भगवान को केवलज्ञान किस वृक्ष के नीचे हुआ था ?

उत्तर– श्री अरहनाथ भगवान को केवलज्ञान आम्र वृक्ष के नीचे हुआ था।

प्रश्न 2258. श्री अरहनाथ भगवान का समोशरण कितना विस्तरित था ?

उत्तर– श्री अरहनाथ भगवान का समोशरण साढ़े तीन योजन विस्तरित था।

प्रश्न 2259. श्री अरहनाथ भगवान का केवली काल कितने वर्ष का था ?

उत्तर– श्री अरहनाथ भगवान का केवली काल बीस हजार नौ सौ चौरासी वर्ष का था।

प्रश्न 2260. श्री अरहनाथ भगवान के शासन यक्ष का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री अरहनाथ भगवान के शासन यक्ष का नाम श्री महेन्द्र देव था।

प्रश्न 2261. श्री अरहनाथ भगवान की शासन देवी का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री अरहनाथ भगवान की शासन देवी का नाम विजया देवी यक्षी था।

प्रश्न 2262. श्री अरहनाथ भगवान के शासन देव क्षेत्रपालों के नाम क्या थे ?

उत्तर– श्री अरहनाथ भगवान के शासन देव क्षेत्रपालों के नाम – 1. श्री गिरिनाथ 2. श्री गर्भ हरनाथ, 3. श्री वरुणनाथ, 4. मैननाथ थे।

प्रश्न 2263. श्री अरहनाथ भगवान के कितने गणधर थे ?

उत्तर– श्री अरहनाथ भगवान के तीस गणधर थे।

प्रश्न 2264. श्री अरहनाथ भगवान के प्रमुख गणधर कौन थे ?

उत्तर– श्री अरहनाथ भगवान के प्रमुख गणधर कुंभ थे।

प्रश्न 2265. श्री अरहनाथ भगवान के समोशरण में कितने ऋषि थे ?

उत्तर– श्री अरहनाथ भगवान के समोशरण में पचास हजार ऋषि थे।

प्रश्न 2266. श्री अरहनाथ भगवान के समोशरण में कितने पूर्वधर मुनि थे ?

उत्तर– श्री अरहनाथ भगवान के समोशरण में छह सौ दस पूर्वधर मुनि थे।

प्रश्न 2267. श्री अरहनाथ भगवान के समोशरण में कितने शिक्षक मुनि थे ?

उत्तर– श्री अरहनाथ भगवान के समोशरण में पैंतीस हजार आठ सौ पैंतीस शिक्षक मुनि थे।

प्रश्न 2268. श्री अरहनाथ भगवान के समोशरण में कितने अवधिज्ञानी मुनि थे ?

उत्तर– श्री अरहनाथ भगवान के समोशरण में दो हजार आठ सौ अवधिज्ञानी मुनि थे।

प्रश्न 2269. श्री अरहनाथ भगवान के समोशरण में कितने केवली थे ?

उत्तर– श्री अरहनाथ भगवान के समोशरण में दो हजार आठ सौ केवली थे।

प्रश्न 2270. श्री अरहनाथ भगवान के समोशरण में कितने विक्रयाधारी मुनि थे ?

उत्तर– श्री अरहनाथ भगवान के समोशरण में चार हजार तीन सौ विक्रियाधारी मुनि थे।

प्रश्न 2271. श्री अरहनाथ भगवान के समोशरण में कितने विपुलमति ज्ञान के धारक थे।

उत्तर– श्री अरहनाथ भगवान के समोशरण में दो हजार पचपन विपुलमति ज्ञानी मुनि थे।

प्रश्न 2272. श्री अरहनाथ भगवान के समोशरण में वादी मुनियों की संख्या कितनी थी ?

उत्तर– श्री अरहनाथ भगवान के समोशरण में एक हजार छह सौ वादी मुनि थे।

प्रश्न 2273. श्री अरहनाथ भगवान के समोशरण में कितनी आर्यिकायें थीं ?

उत्तर– श्री अरहनाथ भगवान के समोशरण में साठ हजार आर्यिकायें थीं।

प्रश्न 2274. श्री अरहनाथ भगवान के समोशरण में प्रमुख अर्यिका कौन थीं ?

उत्तर– श्री अरहनाथ भगवान के समोशरण में गणिनी आर्यिका कुंथुसेना प्रमुख थी।

प्रश्न 2275. श्री अरहनाथ भगवान के समोशरण में कितने श्रावक थे ?

उत्तर– श्री अरहनाथ भगवान के समोशरण में एक लाख श्रावक थे।

प्रश्न 2276. श्री अरहनाथ भगवान के समोशरण में कितनी श्राविकायें थीं ?

उत्तर– श्री अरहनाथ भगवान के समोशरण में तीन लाख श्राविकायें थीं।

प्रश्न 2277. श्री अरहनाथ भगवान के समोशरण में प्रमुख श्रोता कौन थे ?

उत्तर– श्री अरहनाथ भगवान के समोशरण में कुनाल नाम के प्रमुख श्रोता थे।

प्रश्न 2278. श्री अरहनाथ भगवान का मोक्ष कल्याणक किस तिथि में हुआ था ?

उत्तर– श्री अरहनाथ भगवान का मोक्ष कल्याणक चैत्र कृष्णा अमावस को हुआ था।

प्रश्न 2279. श्री अरहनाथ भगवान को मोक्ष किस समय हुआ था ?

उत्तर– श्री अरहनाथ भगवान को मोक्ष प्रत्यूष बेला में हुआ था।

प्रश्न 2280. श्री अरहनाथ भगवान को मोक्ष किस नक्षत्र में हुआ था ?

उत्तर– श्री अरहनाथ भगवान को मोक्ष रोहिणी नक्षत्र में हुआ था।

प्रश्न 2281. श्री अरहनाथ भगवान को मोक्ष किस स्थान पर हुआ था ?

उत्तर– श्री अरहनाथ भगवान को मोक्ष सम्मेद शिखरजी से हुआ था।

प्रश्न 2282. श्री अरहनाथ भगवान ने मोक्ष किस कूट से प्राप्त किया ?

उत्तर– श्री अरहनाथ भगवान ने मोक्ष नाटक कूट से प्राप्त किया।

प्रश्न 2283. श्री अरहनाथ भगवान ने मोक्ष कितने मुनियों के साथ प्राप्त किया ?

उत्तर– श्री अरहनाथ भगवान ने मोक्ष एक हजार मुनियों के साथ प्राप्त किया।

प्रश्न 2284. श्री अरहनाथ भगवान का योगनिवृत्ति काल कितना था ?

उत्तर– श्री अरहनाथ भगवान का योगनिवृत्ति काल एक माह का था।

प्रश्न 2285. श्री अरहनाथ भगवान के अनुबद्ध केवली कितने थे।

उत्तर– श्री अरहनाथ भगवान के बीस अनुबद्ध केवली थे।

प्रश्न 2286. श्री अरहनाथ भगवान के कितने शिष्यों ने अनुत्तर विमानों को प्राप्त किया ?

उत्तर– श्री अरहनाथ भगवान के दस हजार शिष्यों ने अनुत्तर विमानों को प्राप्त किया।

प्रश्न 2287. श्री अरहनाथ भगवान के कितने शिष्यों ने मुक्तिपद को प्राप्त किया ?

उत्तर– श्री अरहनाथ भगवान के सैंतीस हजार दो सौ शिष्यों ने मुक्ति को प्राप्त किया।

प्रश्न 2288. श्री अरहनाथ भगवान के मोक्ष जाने के बाद कितने मुनि मोक्ष गये ?

उत्तर– श्री अरहनाथ भगवान के मोक्ष जाने के बाद 99 कोड़ा कोड़ी 97 करोड़ 9 लाख 999 मुनि मोक्ष गये।

प्रश्न 2289. श्री अरहनाथ भगवान के कितने शिष्यों ने पहले स्वर्ग से ग्रैवेयक तक के स्वर्गों को प्राप्त किया ?

उत्तर– श्री अरहनाथ भगवान के दो हजार आठ सौ शिष्यों ने पहले स्वर्ग से ग्रैवेयक तक के स्वर्गों को प्राप्त किया।

प्रश्न 2290. श्री अरहनाथ भगवान का तीर्थ प्रवर्तनकाल कितने वर्ष का रहा ?

उत्तर– श्री अरहनाथ भगवान का नौ अरब निन्यानवे करोड़ निन्यानवे लाख छियासठ हजार वर्ष तीर्थ प्रवर्तन काल रहा।

प्रश्न 2291. श्री अरहनाथ भगवान ने किस आसन से मोक्ष प्राप्त किया ?

उत्तर– श्री अरहनाथ भगवान ने खड्गासन से मोक्ष प्राप्त किया।

प्रश्न 2292. श्री अरहनाथ भगवान के तीर्थ में कौन से चक्रवर्ती हुए ?

उत्तर– श्री अरहनाथ भगवान के तीर्थ में स्वयं चक्रवर्ती श्री अरहनाथ जी एवं सुभौम चक्रवर्ती हुए।

प्रश्न 2293. श्री अरहनाथ भगवान के तीर्थ में कौन-से बलदेव हुए ?

उत्तर– श्री अरहनाथ भगवान के तीर्थ में नंदी नामक बलदेव हुए।

प्रश्न 2294. श्री अरहनाथ भगवान के धर्मतीर्थ में कौन से नारायण हुए ?

उत्तर– श्री अरहनाथ भगवान के धर्मतीर्थ में पुरुष पुंडरीक नाम के नारायण हुए।

प्रश्न 2295. श्री अरहनाथ भगवान के धर्मतीर्थ में कौन-से प्रतिनारायण हुए ?

उत्तर– श्री अरहनाथ भगवान के धर्मतीर्थ में श्री बली नाम के प्रतिनारायण हुए।

प्रश्न 2296. श्री अरहनाथ भगवान के धर्मतीर्थ में कौन से कामदेव हुए ?

उत्तर– श्री अरहनाथ भगवान स्वयं कामदेव थे।

19

भगवान श्री मल्लिनाथ जी

प्रश्न 2297. उन्नीसवें तीर्थंकर का नाम क्या है ?

उत्तर– उन्नीसवें तीर्थंकर का नाम श्री मल्लिनाथ जी है।

प्रश्न 2298. श्री मल्लिनाथ भगवान को किस चिन्ह से जाना जाता है।

उत्तर– श्री मल्लिनाथ भगवान को कलश चिन्ह से जाना जाता है।

प्रश्न 2299. श्री मल्लिनाथ भगवान के पूर्व पर्याय का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री मल्लिनाथ भगवान के पूर्व पर्याय का नाम राजा वैश्रवण था।

प्रश्न 2300. श्री मल्लिनाथ भगवान ने तीर्थंकर प्रकृति का बंध कौन सी पर्याय में किया ?

उत्तर– श्री मल्लिनाथ भगवान ने तीर्थकर प्रकृति का बंध वैश्रवण की पर्याय में किया।

प्रश्न 2301. श्री मल्लिनाथ भगवान के पूर्व भव के पिता का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री मल्लिनाथ भगवान के पूर्व भव के पिता धीर थे।

प्रश्न 2302. श्री मल्लिनाथ भगवान के पूर्व भव के दीक्षा गुरु कौन थे?

उत्तर– श्री मल्लिनाथ भगवान के पूर्व भव के दीक्षा गुरु वरधर्म थे।

प्रश्न 2303. श्री वैश्रवण किस देश के राजा थे ?

उत्तर– श्री वैश्रवण कच्छकावती देश के राजा थे।

प्रश्न 2304. श्री वैश्रवण किस नगर के राजा थे ?

उत्तर– श्री वैश्रवण वीतशोका नगरी के राजा थे।

प्रश्न 2305. कच्छकावती देश कहाँ है ?

उत्तर– कच्छकावती देश जम्बूद्वीप के पूर्व विदेह में है।

प्रश्न 2306. श्री मल्लिनाथ भगवान के पिता का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री मल्लिनाथ भगवान के पिता का नाम कुम्भराज था।

प्रश्न 2307. श्री मल्लिनाथ भगवान की माता का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री मल्लिनाथ भगवान की माता का नाम महादेवी (प्रभावती) था।

प्रश्न 2308. श्री मल्लिनाथ भगवान का गर्भ कल्याणक कौन सी तिथि में हुआ ?

उत्तर– श्री मल्लिनाथ भगवान का गर्भ कल्याणक चैत्र शुक्ला एकम् को हुआ।

प्रश्न 2309. श्री मल्लिनाथ भगवान का गर्भ कल्याणक किस नक्षत्र में हुआ ?

उत्तर– श्री मल्लिनाथ भगवान का गर्भ कल्याणक अश्वनी नक्षत्र में हुआ था।

प्रश्न 2310. श्री मल्लिनाथ भगवान कहाँ से गर्भ में आये।

उत्तर– श्री मल्लिनाथ भगवान अपराजित विमान से गर्भ में आये थे।

प्रश्न 2311. श्री मल्लिनाथ भगवान की पूर्व भव की देव आयु कितनी थी ?

उत्तर– श्री मल्लिनाथ भगवान की पूर्व भव की देव आयु 32 से 33 सागर थी।

प्रश्न 2312. श्री मल्लिनाथ भगवान का जन्म किस नगरी में हुआ था ?

उत्तर– श्री मल्लिनाथ भगवान का जन्म मिथिला नगरी में हुआ था।

प्रश्न 2313. श्री मल्लिनाथ भगवान का जन्म किस तिथि को हुआ था ?

उत्तर– श्री मल्लिनाथ भगवान का जन्म मंगसिर शुक्ला एकादशी को हुआ था।

प्रश्न 2314. श्री मल्लिनाथ भगवान का जन्म किस नक्षत्र में हुआ था ?

उत्तर– श्री मल्लिनाथ भगवान का जन्म अश्वनी नक्षत्र में हुआ था।

प्रश्न 2315. श्री मल्लिनाथ भगवान की जन्म राशि कौन सी थी ?

उत्तर– श्री मल्लिनाथ भगवान की जन्म राशि मेष थी।

प्रश्न 2316. श्री मल्लिनाथ भगवान ने किस वंश में जन्म लिया ?

उत्तर– श्री मल्लिनाथ भगवान ने इक्ष्वाकु वंश में जन्म लिया।

प्रश्न 2317. श्री मल्लिनाथ भगवान का कौन सा गोत्र था ?

उत्तर– श्री मल्लिनाथ भगवान का कश्यप गोत्र था।

प्रश्न 2318. श्री मल्लिनाथ भगवान की आयु कितनी थी ?

उत्तर– श्री मल्लिनाथ भगवान की आयु पचपन हजार वर्ष की थी।

प्रश्न 2319. श्री मल्लिनाथ भगवान का कुमार काल कितने वर्ष का था ?

उत्तर– श्री मल्लिनाथ भगवान का कुमार काल एक सौ वर्ष का था।

प्रश्न 2320. श्री मल्लिनाथ भगवान के शरीर की ऊँचाई कितनी थी ?

उत्तर– श्री मल्लिनाथ भगवान की ऊँचाई पच्चीस धनुष थी।

प्रश्न 2321. श्री मल्लिनाथ भगवान के शरीर का रंग कैसा था ?

उत्तर– श्री मल्लिनाथ भगवान के शरीर का स्वर्ण वर्ण था।

प्रश्न 2322. श्री मल्लिनाथ भगवान को वैराग्य किस कारण हुआ था ?

उत्तर– श्री मल्लिनाथ भगवान को वैराग्य अध्रुवादि भावनाओं के चिंतवन करने से हुआ था।

प्रश्न 2323. श्री मल्लिनाथ भगवान का दीक्षा कल्याण किस तिथि को हुआ था ?

उत्तर– श्री मल्लिनाथ भगवान का दीक्षा कल्याण मंगसिर शुक्ला एकादशी को हुआ था।

प्रश्न 2324. श्री मल्लिनाथ भगवान की दीक्षा किस नक्षत्र में हुई थी ?

उत्तर– श्री मल्लिनाथ भगवान की दीक्षा अश्वनी नक्षत्र में हुई थी।

प्रश्न 2325. श्री मल्लिनाथ भगवान की दीक्षा किस वन में हुई थी ?

उत्तर– श्री मल्लिनाथ भगवान की दीक्षा शालिवन में हुई थी।

प्रश्न 2326. श्री मल्लिनाथ भगवान की दीक्षा किस नगर में हुई थी ?

उत्तर– श्री मल्लिनाथ भगवान की दीक्षा मिथिलानगर में हुई थी।

प्रश्न 2327. श्री मल्लिनाथ भगवान की दीक्षा किस समय हुई थी ?

उत्तर– श्री मल्लिनाथ भगवान की दीक्षा पूर्वान्ह काल में हुई थी।

प्रश्न 2328. श्री मल्लिनाथ भगवान के दीक्षा उपवासों की संख्या कितनी है ?

उत्तर– श्री मल्लिनाथ भगवान के दीक्षा उपवासों की संख्या दो है।

प्रश्न 2329. श्री मल्लिनाथ भगवान ने कितने राजाओं के साथ दीक्षा ली ?

उत्तर– श्री मल्लिनाथ भगवान ने तीन सौ राजाओं के साथ दीक्षा ली।

प्रश्न 2330. श्री मल्लिनाथ भगवान की दीक्षा पालकी का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री मल्लिनाथ भगवान की दीक्षा पालकी का नाम जयंत था।

प्रश्न 2331. श्री मल्लिनाथ भगवान का प्रथम आहार किस नगर में हुआ था ?

उत्तर– श्री मल्लिनाथ भगवान का प्रथम आहार मिथला नगर में हुआ था।

प्रश्न 2332. श्री मल्लिनाथ भगवान को सर्वप्रथम आहार किसने दिया था ?

उत्तर– श्री मल्लिनाथ भगवान को सर्वप्रथम आहार श्री नंदिषेण ने दिया था।

प्रश्न 2333. श्री मल्लिनाथ भगवान ने किस वस्तु का आहार किया ?

उत्तर– श्री मल्लिनाथ भगवान ने खीर का आहार लिया।

प्रश्न 2334. श्री मल्लिनाथ भगवान ने कितने समय तक तप किया ?

उत्तर– श्री मल्लिनाथ भगवान ने छह दिन तक तप किया।

प्रश्न 2335. श्री मल्लिनाथ भगवान ने किस वृक्ष के नीचे दीक्षा ली थी ?

उत्तर– श्री मल्लिनाथ भगवान ने अशोक वृक्ष के नीचे दीक्षा ली थी।

प्रश्न 2336. श्री मल्लिनाथ भगवान को केवलज्ञान किस तिथि में हुआ था?

उत्तर– श्री मल्लिनाथ भगवान को केवलज्ञान पौष कृष्णा दोज को हुआ था।

प्रश्न 2337. श्री मल्लिनाथ भगवान को केवलज्ञान किस नक्षत्र में हुआ था ?

उत्तर– श्री मल्लिनाथ भगवान को केवलज्ञान अश्वनी नक्षत्र में हुआ था।

प्रश्न 2338. श्री मल्लिनाथ भगवान को केवलज्ञान किस समय हुआ था ?

उत्तर– श्री मल्लिनाथ भगवान को केवलज्ञान अपरान्ह काल में हुआ था।

प्रश्न 2339. श्री मल्लिनाथ भगवान को केवलज्ञान किस वन में हुआ था ?

उत्तर– श्री मल्लिनाथ भगवान को केवलज्ञान मनोहर वन में हुआ था।

प्रश्न 2340. श्री मल्लिनाथ भगवान को केवलज्ञान किस वृक्ष के नीचे हुआ ?

उत्तर– श्री मल्लिनाथ भगवान को केवलज्ञान अशोक वृक्ष के नीचे हुआ।

प्रश्न 2341. श्री मल्लिनाथ भगवान को केवलज्ञान किस नगर में हुआ था ?

उत्तर– श्री मल्लिनाथ भगवान को केवलज्ञान मिथिलानगर में हुआ था।

प्रश्न 2342. श्री मल्लिनाथ भगवान के समोशरण का कितना विस्तार था ?

उत्तर– श्री मल्लिनाथ भगवान के समोशरण का तीन योजन विस्तार था।

प्रश्न 2343. श्री मल्लिनाथ भगवान की शासन देवी का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री मल्लिनाथ भगवान की शासन देवी का नाम अपराजिता देवी था।

प्रश्न 2344. श्री मल्लिनाथ भगवान के शासन देव का नाम क्या था।

उत्तर– श्री मल्लिनाथ भगवान के शासन देव का नाम कुबेर यक्ष था।

प्रश्न 2345. श्री मल्लिनाथ भगवान के शासन देव क्षेत्रपालों के नाम क्या थे ?

उत्तर– श्री मल्लिनाथ भगवान के शासन देव क्षेत्रपालों के नाम – 1. श्री क्षितिप–जी, 2. श्री भवय जी, 3. श्री क्षाँतिय जी, 4. श्री क्षेत्रय जी थे।

प्रश्न 2346. श्री मल्लिनाथ भगवान का केवली काल कितने वर्ष का था ?

उत्तर– श्री मल्लिनाथ भगवान का चौव्वन हजार आठ सौ निन्यानवे वर्ष ग्यारह महीने 24 दिन का केवली काल था।

प्रश्न 2347. श्री मल्लिनाथ भगवान के समोशरण में कितने गणधर थे ?

उत्तर– श्री मल्लिनाथ भगवान के समोशरण में अट्ठाइस गणधर थे।

प्रश्न 2348. श्री मल्लिनाथ भगवान के समोशरण में कितने ऋषि थे ?

उत्तर– श्री मल्लिनाथ भगवान के समोशरण में चालीस हजार ऋषि थे।

प्रश्न 2349. श्री मल्लिनाथ भगवान के समोशरण में पूर्वधर मुनि कितने थे ?

उत्तर– श्री मल्लिनाथ भगवान के समोशरण में पाँच सौ पचास पूर्वधर मुनि थे।

प्रश्न 2350. श्री मल्लिनाथ भगवान के समोशरण में कितने शिक्षक मुनि थे ?

उत्तर– श्री मल्लिनाथ भगवान के समोशरण में उन्तीस हजार शिक्षक मुनि थे।

प्रश्न 2351. श्री मल्लिनाथ भगवान के समोशरण में कितने अवधिज्ञानी मुनि थे ?

उत्तर– श्री मल्लिनाथ भगवान के समोशरण में दो हजार दो सौ अवधिज्ञानी मुनि थे।

प्रश्न 2352. श्री मल्लिनाथ भगवान के समोशरण में कितने केवली थे ?

उत्तर– श्री मल्लिनाथ भगवान के समोशरण में दो हजार दो सौ केवली थे।

प्रश्न 2353. श्री मल्लिनाथ भगवान के समोशरण में विक्रियाधारी मुनि कितने थे ?

उत्तर– श्री मल्लिनाथ भगवान के समोशरण में दो हजार नौ सौ विक्रियाधारी मुनि थे।

प्रश्न 2354. श्री मल्लिनाथ भगवान के समोशरण में वादी मुनि कितने थे ?

उत्तर– श्री मल्लिनाथ भगवान के समोशरण में एक हजार चार सौ वादी मुनि थे।

प्रश्न 2355. श्री मल्लिनाथ भगवान के समोशरण में विपुलमति ज्ञान के धारक कितने मुनि थे ?

उत्तर– श्री मल्लिनाथ भगवान के समोशरण में एक हजार सात सौ पचास विपुलमति ज्ञानधारी मुनि थे।

प्रश्न 2356. श्री मल्लिनाथ भगवान के समोशरण में कितनी आर्यिकायें थीं ?

उत्तर– श्री मल्लिनाथ भगवान के समोशरण में पचपन हजार आर्यिकायें थीं।

प्रश्न 2357. श्री मल्लिनाथ भगवान के समोशरण में प्रमुख आर्यिका कौन थीं ?

उत्तर– श्री मल्लिनाथ भगवान के समोशरण में गणिनी प्रमुख मधु सेना आर्यिका थीं।

प्रश्न 2358. श्री मल्लिनाथ भगवान के समोशरण में कितने श्रावक थे ?

उत्तर– श्री मल्लिनाथ भगवान के समोशरण में एक लाख श्रावक थे।

प्रश्न 2359. श्री मल्लिनाथ भगवान के समोशरण में कितनी श्राविकायें थीं ?

उत्तर– श्री मल्लिनाथ भगवान के समोशरण में तीन लाख श्राविकायें थीं।

प्रश्न 2360. श्री मल्लिनाथ भगवान के समोशरण में प्रमुख श्रोता कौन थे ?

उत्तर– श्री मल्लिनाथ भगवान के समोशरण में प्रमुख श्रोता नारायण थे।

प्रश्न 2361. श्री मल्लिनाथ भगवान को मोक्ष किस तिथि में हुआ था ?

उत्तर– श्री मल्लिनाथ भगवान को मोक्ष चैत्र कृष्णा अमावस को हुआ।

प्रश्न 2362. श्री मल्लिनाथ भगवान को मोक्ष किस नक्षत्र में हुआ था ?

उत्तर– श्री मल्लिनाथ भगवान को मोक्ष भरणी नक्षत्र में हुआ।

प्रश्न 2363. श्री मल्लिनाथ भगवान को मोक्ष किस समय हुआ था ?

उत्तर– श्री मल्लिनाथ भगवान को मोक्ष प्रदोष काल में हुआ था।

प्रश्न 2364. श्री मल्लिनाथ भगवान ने मोक्ष किस स्थान से प्राप्त किया ?

उत्तर– श्री मल्लिनाथ भगवान ने मोक्ष श्री सम्मेद शिखर जी से प्राप्त किया।

प्रश्न 2365. श्री मल्लिनाथ भगवान ने मोक्ष किस कूट से प्राप्त किया था ?

उत्तर– श्री मल्लिनाथ भगवान ने मोक्ष सम्वल कूट से प्राप्त किया था।

प्रश्न 2366. श्री मल्लिनाथ भगवान ने मोक्ष कितने मुनियों के साथ प्राप्त किया ?

उत्तर– श्री मल्लिनाथ भगवान ने मोक्ष पाँच सौ मुनियों के साथ प्राप्त किया।

प्रश्न 2367. श्री मल्लिनाथ भगवान का योग निवृत्तिकाल कितना था ?

उत्तर– श्री मल्लिनाथ भगवान का योग निवृत्तिकाल एक माह था।

प्रश्न 2368. श्री मल्लिनाथ भगवान किस आसन से मोक्ष गये ?

उत्तर– श्री मल्लिनाथ भगवान को खड्गासन से मोक्ष प्राप्त हुआ।

प्रश्न 2369. श्री मल्लिनाथ भगवान के मोक्ष जाने के बाद कितने मुनि मोक्ष गये ?

उत्तर– श्री मल्लिनाथ भगवान के मोक्ष जाने के बाद 1014507942 मुनि मोक्ष गये।

प्रश्न 2370. श्री मल्लिनाथ भगवान के अनुबद्ध केवली कितने थे ?

उत्तर– श्री मल्लिनाथ भगवान के सोलह अनुबद्ध केवली थे।

प्रश्न 2371. श्री मल्लिनाथ भगवान के कितने शिष्यों ने तप करके अनुत्तर विमानों में जन्म लिया ?

उत्तर– श्री मल्लिनाथ भगवान के आठ हजार आठ सौ शिष्यों ने तप करके अनुत्तर विमानों में जन्म लिया।

प्रश्न 2372. श्री मल्लिनाथ भगवान के कितने शिष्यों ने मोक्ष प्राप्त किया ?

उत्तर– श्री मल्लिनाथ भगवान के अट्ठाइस हजार आठ सौ शिष्यों ने मोक्ष प्राप्त किया।

प्रश्न 2373. श्री मल्लिनाथ भगवान के कितने शिष्यों ने पहले स्वर्ग से लेकर नवग्रैवेयक तक जन्म लिया ?

उत्तर– श्री मल्लिनाथ भगवान दो हजार चार सौ शिष्यों ने पहले स्वर्ग से लेकर नवग्रैवेयक तक के स्वर्गो को प्राप्त किया।

प्रश्न 2374. श्री मल्लिनाथ भगवान का तीर्थ प्रवर्तन काल कितने वर्ष का था ?

उत्तर– श्री मल्लिनाथ भगवान का तीर्थ प्रवर्तन काल चौवन लाख सैतालीस हजार चार सौ वर्ष का था।

प्रश्न 2375. श्री मल्लिनाथ भगवान के धर्म तीर्थ में कौन से चक्रवर्ती राजा हुए ?

उत्तर– श्री मल्लिनाथ भगवान के धर्म तीर्थ में पद्म नाम के चक्रवर्ती राजा हुए।

प्रश्न 2376. श्री मल्लिनाथ भगवान के धर्म तीर्थ में कौन से बलभद्र हुए ?

उत्तर– श्री मल्लिनाथ भगवान के धर्म तीर्थ में बलभद्र श्री नंदी मित्र जी हुए।

प्रश्न 2377. श्री मल्लिनाथ भगवान के धर्म तीर्थ में कौन से नारायण हुए ?

उत्तर– श्री मल्लिनाथ भगवान के धर्म तीर्थ में पुष्पदन्त नाम के नारायण हुए।

प्रश्न 2378. श्री मल्लिनाथ भगवान के धर्म तीर्थ में कौन से प्रतिनारायण हुए ?

उत्तर– श्री मल्लिनाथ भगवान के धर्म तीर्थ में प्रहरण नाम के प्रतिनारायण हुए।

प्रश्न 2379. श्री मल्लिनाथ भगवान की विशेषता क्या थी ?

उत्तर– श्री मल्लिनाथ भगवान जी बालब्रह्मचारी तीर्थंकर थे।

प्रश्न 2380. श्री मल्लिनाथ भगवान के धर्म तीर्थ में संघ को यात्रा कराने वाले संघ पति का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री मल्लिनाथ भगवान के धर्म तीर्थ में संघ को यात्रा कराने वाले संघ पति का नाम राजा श्री सत्यसेन था।

20

भगवान श्री मुनिसुव्रतनाथ जी

प्रश्न 2381. बीसवें तीर्थंकर का नाम क्या है ?

उत्तर– बीसवें तीर्थंकर का नाम श्री मुनिसुव्रत नाथ जी है।

प्रश्न 2382. श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान को कौन से चिन्ह से जाना जाता है ?

उत्तर– श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान को कछुआ चिन्ह से जाना जाता है।

प्रश्न 2383. श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान की पूर्व पर्याय का क्या नाम था ?

उत्तर– श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान की पूर्व पर्याय का नाम राजा श्री हरिवर्मा था।

प्रश्न 2384. श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान ने तीर्थंकर प्रकृति का बंध कौन सी पर्याय में किया ?

उत्तर– श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान ने तीर्थंकर प्रकृति का बंध हरिवर्मा की पर्याय में किया।

प्रश्न 2385. श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान के पूर्व भव के पिता का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान के पूर्व भव के पिता संवर थे।

प्रश्न 2386. श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान के पूर्व भव के दीक्षा गुरू कौन थे ?

उत्तर– श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान के पूर्व भव के दीक्षा गुरु सुनंद थे।

प्रश्न 2387. श्री हरिवर्मा कहाँ के राजा थे ?

उत्तर– श्री हरिवर्मा चम्पापुर नगर के राजा थे।

प्रश्न 2388. श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान किस क्षेत्र के राजा थे ?

उत्तर– श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र के राजा थे।

प्रश्न 2389. श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान के पिता का क्या नाम था ?

उत्तर– श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान के पिता का नाम राजा श्री सुमित्र जी था।

प्रश्न 2390. श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान की माता का क्या नाम था ?

उत्तर– श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान की माता महारानी श्रीमति पद्मावती जी थी।

प्रश्न 2391. महारानी श्रीमति पद्मावती का दूसरा नाम क्या था

उत्तर– महारानी श्रीमति पद्मावती का दूसरा नाम महारानी सोमावती था।

प्रश्न 2392. श्री मुनिसुव्रत नाथ भगवान ने कहाँ जन्म लिया था ?

उत्तर– श्री मुनिसुव्रत नाथ भगवान ने राजग्रही नगर में जन्म लिया ।

प्रश्न 2393. श्री मुनिसुव्रत नाथ भगवान का गर्भ कल्याण कौन सी तिथि को हुआ था ?

उत्तर– श्री मुनिसुव्रत नाथ भगवान का गर्भ कल्याण श्रावण कृष्ण द्वितीया को हुआ था।

प्रश्न 2394. श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान का गर्भ कल्याणक कौन से नक्षत्र में हुआ था ?

उत्तर– श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान का गर्भ कल्याणक श्रवण नक्षत्र में हुआ था।

प्रश्न 2395. श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान कहाँ से गर्भ में आये थे ?

उत्तर– श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान आनत स्वर्ग से गर्भ में आये।

प्रश्न 2396. श्री मुनिसुव्रतनाथ की पूर्व भव की देव आयु कितनी थी ?

उत्तर– श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान का पूर्व भव की देव आयु 20 सागर थी।

प्रश्न 2397. श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान का जन्म कब हुआ था ?

उत्तर– श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान का जन्म बैशाख कृष्णा द्वादशी को हुआ था।

प्रश्न 2398. श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान का जन्म किस नक्षत्र में हुआ था ?

उत्तर– श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान का जन्म श्रवण नक्षत्र में हुआ था।

प्रश्न 2399. श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान की जन्म राशि कौन सी थी ?

उत्तर– श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान की जन्म राशि मकर थी।

प्रश्न 2400. श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान का जन्म किस वंश में हुआ था ?

उत्तर– श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान का जन्म हरि वंश में (यादव वंश) हुआ था।

प्रश्न 2401. श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान की आयु कितनी थी ?

उत्तर– श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान की आयु तीस हजार वर्ष की थी।

प्रश्न 2402. श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान का कुमार काल कितने वर्ष का था ?

उत्तर– श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान का कुमार काल सात हजार पाँच सौ वर्ष का था।

प्रश्न 2403. श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान के शरीर की ऊँचाई कितनी थी ?

उत्तर– श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान के शरीर की ऊँचाई बीस धनुष थी।

प्रश्न 2404. श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान के शरीर का रंग कैसा था ?

उत्तर– श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान के शरीर का नील वर्ण था।

प्रश्न 2405. श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान ने कितने वर्ष तक राज्य किया ?

उत्तर– श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान ने पन्द्रह हजार वर्ष तक राज्य किया।

प्रश्न 2406. श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान को वैराग्य किस कारण हुआ था ?

उत्तर– श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान को वैराग्य अपने प्रधान हाथी के जाति स्मरण को देखकर हुआ था।

प्रश्न 2407. श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान ने किस तिथि को दीक्षा ली थी ?

उत्तर– श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान ने वैशाख कृष्णा दसवीं को दीक्षा ली थी।

प्रश्न 2408. श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान ने किस नक्षत्र में दीक्षा ली थी।

उत्तर– श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान ने श्रवण नक्षत्र में दीक्षा ली थी।

प्रश्न 2409. श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान ने किस वन में दीक्ष ली थी ?

उत्तर– श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान ने नील वन में दीक्षा ली थी।

प्रश्न 2410. श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान की दीक्षा किस नगर में हुई थी ?

उत्तर– श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान की दीक्षा राजग्रही नगर में हुई थी।

प्रश्न 2411. श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान ने कितने राजाओं के साथ दीक्षा ली थी ?

उत्तर– श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान ने एक हजार राजाओं के साथ दीक्षा ली थी।

प्रश्न 2412. श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान ने कितने दीक्षा उपवास किये ?

उत्तर– श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान ने तेला (तीन दिन के) दीक्षा उपवास किये।

प्रश्न 2413. श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान ने दीक्षा किस समय ली थी ?

उत्तर– श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान ने अपरान्ह काल में ली थी।

प्रश्न 2414. श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान की दीक्षा पालकी का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान की दीक्षा पालकी का नाम अपराजिता था

प्रश्न 2415. श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान ने किस वृक्ष के नीचे दीक्षा ली थी ?

उत्तर– श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान ने चम्पक वृक्ष के नीचे दीक्षा ली थी।

प्रश्न 2416. श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान ने कितने वर्ष तक तप किया ?

उत्तर— श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान ने ग्यारह महीने तक तप किया

प्रश्न 2417. श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान का प्रथम आहार किस नगर में हुआ था ?

उत्तर— श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान का प्रथम आहार राजग्रही नगर में हुआ था।

प्रश्न 2418. श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान का प्रथम आहार किस वस्तु का हुआ था ?

उत्तर— श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान का प्रथम आहार खीर का हुआ था।

प्रश्न 2419. श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान को प्रथम आहार किसने दिया था ?

उत्तर— श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान को प्रथम आहार श्री वृषभ सेन ने दिया था।

प्रश्न 2420. श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान को केवलज्ञान किस तिथि को हुआ था

उत्तर— श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान को केवलज्ञान बैशाख कृष्णा नवमी को हुआ था।

प्रश्न 2421. श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान को केवलज्ञान किस नक्षत्र में हुआ था ?

उत्तर— श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान को केवलज्ञान श्रवण नक्षत्र में हुआ था।

प्रश्न 2422. श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान को केवलज्ञान किस नगर में हुआ था ?

उत्तर— श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान को केवलज्ञान राज नगर में हुआ था।

प्रश्न 2423. श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान को केवलज्ञान किस वन में हुआ था ?

उत्तर— श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान को केवलज्ञान नील वन में हुआ था।

प्रश्न 2424. श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान को केवलज्ञान किस समय हुआ था ?

उत्तर— श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान को केवलज्ञान पूर्वान्ह काल में हुआ था।

प्रश्न 2425. श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान को केवलज्ञान किस वृक्ष के नीचे हुआ था ?

उत्तर— श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान को केवलज्ञान चम्पक वृक्ष के नीचे हुआ था।

प्रश्न 2426. श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान का केवली काल कितने वर्ष का था ?

उत्तर— श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान का केवली काल सात हजार चार सौ निन्यानवे वर्ष एक महीने का था।

प्रश्न 2427. श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान के समोशरण का कितना विस्तार था ?

उत्तर— श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान के समोशरण का विस्तार ढाई योजन था।

प्रश्न 2428. श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान की शासन देवी का क्या नाम था ?

उत्तर— श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान की शासन देवी का नाम बहुरूपिणी यक्षी था।

प्रश्न 2429. श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान के शासन यक्ष का क्या नाम था ?

उत्तर— श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान के शासन यक्ष का नाम वरूण था।

प्रश्न 2430. श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान के शासन देव क्षेत्रपालों के नाम क्या थे ?

उत्तर— श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान के शासन देव क्षेत्रपालों के नाम 1. श्री तनदराज, 2. श्री गुणराज, 3. श्री कल्याण राज, 4. श्री भव्यराज थे।

प्रश्न 2431. श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान के समोशरण में कितने गणधर थे ?

उत्तर— श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान के समोशरण में अठारह गणधर थे।

प्रश्न 2432. श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान के समोशरण में प्रमुख गणधर कौन थे ?

उत्तर— श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान के समोशरण में प्रमुख मल्लिनाम के गणधर थे।

प्रश्न 2433. श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान के समोशरण में ऋषियों की संख्या कितनी थी ?

उत्तर— श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान के समोशरण में कुल तीस हजार ऋषि थे।

प्रश्न 2434. श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान के समोशरण में पूर्वधर मुनि कितने थे।

उत्तर— श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान के समोशरण में पांच सौ पूर्वधर मुनि थे।

प्रश्न 2435. श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान के समोशरण में शिक्षक मुनि कितने थे ?

उत्तर— श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान के समोशरण में इक्कीस हजार शिक्षक मुनि थे।

प्रश्न 2436. श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान के समोशरण में कितने अवधि ज्ञानी मुनि थे।

उत्तर— श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान के समोशरण में एक हजार आठ सौ अवधि ज्ञानी मुनि थे।

प्रश्न 2437. श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान के समोशरण में कितने केवली थे ?

उत्तर— श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान के समोशरण में एक हजार आठ सौ केवली थे।

प्रश्न 2438. श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान के समोशरण में कितने विक्रियाधारी मुनि थे ?

उत्तर— श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान के समोशरण में दो हजार दो सौ विक्रियाधारी मुनि थे।

प्रश्न 2439. श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान के समोशरण में कितने मुनि विपुलमति ज्ञानधारी थे ?

उत्तर— श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान के समोशरण में एक हजार पांच सौ विपुलमति ज्ञानधारक मुनि थे।

प्रश्न 2440. श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान के समोशरण में कितनी आर्यिकायें थीं ?

उत्तर— श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान के समोशरण में पचास हजार आर्यिकायें थीं।

प्रश्न 2441. श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान के समोशरण में प्रमुख आर्यिका कौन थीं ?

उत्तर— श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान के समोशरण में गणिनी आर्यिका प्रमुख पूर्वदत्ता थीं।

प्रश्न 2442. श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान के समोशरण में कितने श्रावक थे ?

उत्तर— श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान के समोशरण में एक लाख श्रावक थे।

प्रश्न 2443. श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान के समोशरण में कितनी श्राविकायें थीं ?

उत्तर— श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान के समोशरण में तीन लाख श्राविकायें थीं।

प्रश्न 2444. श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान के समोशरण के प्रमुख श्रोता कौन थे ?

उत्तर— श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान के समोशरण में श्री अजितंजय जी प्रमुख श्रोता थे।

प्रश्न 2445. श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान को मोक्ष किस तिथि में हुआ था ?

उत्तर— श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान को मोक्ष फाल्गुन कृष्ण द्वादसी को हुआ था।

प्रश्न 2446. श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान को मोक्ष किस समय हुआ ?

उत्तर— श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान को मोक्ष अपरान्ह काल के प्रदोष काल में हुआ।

प्रश्न 2447. श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान को मोक्ष किस नक्षत्र में हुआ था ?

उत्तर— श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान को मोक्ष श्रवण नक्षत्र में हुआ था।

प्रश्न 2448. श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान को मोक्ष किस स्थान से हुआ था ?

उत्तर— श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान को मोक्ष श्री सम्मेदशिखर जी से हुआ था।

प्रश्न 2449. श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान को मोक्ष किस कूट से हुआ था ?

उत्तर— श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान को मोक्ष निर्जर कूट से हुआ था।

प्रश्न 2450. श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान ने मोक्ष से कितने समय पूर्व योग निवृत्ति की ?

उत्तर— श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान ने मोक्ष से एक माह पूर्व योग निवृत्ति की।

प्रश्न 2451. श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान कितने मुनियों के साथ मुक्त हुए ?

उत्तर— श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान एक हजार मुनियों के साथ मुक्त हुए।

प्रश्न 2452. श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान के धर्म तीर्थ में चतुर्विधसंघ को सम्मेशिखर की यात्रा कराने वाले संघपति का नाम क्या था।

उत्तर— श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान के धर्म तीर्थ में चतुर्विधसंघ को सम्मेशिखर की यात्रा कराने वाले संघपति का नाम राजा श्री रामचन्द्र जी था।

प्रश्न 2453. श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान के अनुवद्धकेवली कितने थे ?

उत्तर— श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान के बारह अनुबद्ध केवली थे।

प्रश्न 2454. श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान के कितने शिष्यों ने मोक्ष प्राप्त किया ?

उत्तर— श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान के उन्नीस हजार नौ सौ शिष्यों ने मोक्ष प्राप्त किया

प्रश्न 2455. श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान के मोक्ष जाने के बाद कितने मुनि मोक्ष गये ?

उत्तर— श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान के मोक्ष जाने के बाद 108445742 मुनि मोक्ष गये।

प्रश्न 2456. श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान के कितने शिष्यों ने तप करके पहले स्वर्ग से नवग्रैवेयक तक के स्वर्गो को प्राप्त किया ?

उत्तर— श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान के दो हजार शिष्यों ने तप करके पहले स्वर्ग से नवग्रैवेयक तक के स्वर्गो को प्राप्त किया।

प्रश्न 2457. श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान का धर्म तीर्थ प्रर्वतन काल कितने वर्षों का था

उत्तर— श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान का धर्म तीर्थ प्रवर्तन काल छह लाख पांच हजार वर्ष का था।

प्रश्न 2458. श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान किस आसन से मोक्ष गये ?

उत्तर— श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान खड्गासन से मोक्ष गये।

प्रश्न 2459. श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान के धर्म तीर्थ में कौन से चक्रवर्ती हुए ?

उत्तर— श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान के धर्म तीर्थ में हरिसेन नाम के चक्रवर्ती हुए।

प्रश्न 2460. श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान के शासन काल में कौन से बलदेव हुए ?

उत्तर— श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान के शासन काल में मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी बलदेव हुए।

प्रश्न 2461. श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान के धर्म तीर्थ में कौन से नारायण हुए ?

उत्तर— श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान के धर्म तीर्थ में लक्ष्मण नाम के नारायण हुए।

प्रश्न 2462. श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान के धर्मतीर्थ में कौन से प्रतिनारायण हुए ?

उत्तर— श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान के धर्मतीर्थ में रावण नाम के प्रतिनारायण हुए।

21

भगवान श्री नमिनाथ जी

प्रश्न 2463. इक्कीसवें तीर्थंकर का नाम क्या है ?

उत्तर– इक्कीसवें तीर्थंकर का नाम श्री नमिनाथ जी है।

प्रश्न 2464. श्री नमिनाथ भगवान को किस चिन्ह से जाना जाता है ?

उत्तर– श्री नमिनाथ भगवान को नील कमल चिन्ह से जाना जाता है।

प्रश्न 2465. श्री नमिनाथ भगवान की पूर्वपर्याय का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री नमिनाथ भगवान की पूर्वपर्याय का नाम राजा श्री सिद्धार्थ जी था।

प्रश्न 2466. राजा श्री सिद्धार्थ कहाँ के राजा थे ?

उत्तर– राजा सिद्धार्थ जी कौशाम्बी नगर के राजा थे।

प्रश्न 2467. श्री सिद्धार्थ के पिता का क्या नाम था ?

उत्तर– श्री सिद्धार्थ के पिता का नाम पार्थिव था।

प्रश्न 2468. श्री नमिनाथ भगवान ने तीर्थंकर प्रकृति का बंध कौन सी पर्याय में किया ?

उत्तर– श्री नमिनाथ भगवान ने तीर्थंकर प्रकृति का बंध सिद्धार्थ की पर्याय में किया।

प्रश्न 2469. श्री नमिनाथ भगवान पूर्व भव में किस देश के राजा थे ?

उत्तर– श्री नमिनाथ भगवान पूर्व भव में वत्सा देश के राजा थे।

प्रश्न 2470. श्री नमिनाथ भगवान के पूर्व भव के दीक्षा गुरु कौन थे ?

उत्तर– श्री नमिनाथ भगवान के पूर्व भव के दीक्षा गुरु आनंद थे।

प्रश्न 2471. श्री नमिनाथ भगवान के पिता का क्या नाम था ?

उत्तर– श्री नमिनाथ भगवान के पिता का नाम राजा श्री विजय जी था।

प्रश्न 2472. श्री नमिनाथ भगवान की माता का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री नमिनाथ भगवान की माता महारानी वप्रिला देवी थीं।

प्रश्न 2473. श्री नमिनाथ भगवान का गर्भ कल्याणक कौन सी तिथि को हुआ था

उत्तर– श्री नमिनाथ भगवान का गर्भ कल्याणक आश्विन कृष्णा द्वितीया को हुआ था।

प्रश्न 2474. श्री नमिनाथ भगवान का गर्भ कल्याण कौन से नक्षत्र में हुआ था ?

उत्तर– श्री नमिनाथ भगवान का गर्भ कल्याणक आश्विन कृष्णा द्वितीया को हुआ था।

प्रश्न 2475. श्री नमिनाथ भगवान का गर्भ कल्याणक कौन से नक्षत्र में हुआ था ?

उत्तर– श्री नमिनाथ भगवान का गर्भ कल्याणक अश्वनी नक्षत्र में हुआ था।

प्रश्न 2476. श्री नमिनाथ भगवान का जन्म कौन से नगर में हुआ था ?

उत्तर– श्री नमिनाथ भगवान का जन्म मिथिला नगरी में हुआ था।

प्रश्न 2477. श्री नमिनाथ भगवान कहाँ से गर्भ में आये थे?

उत्तर– श्री नमिनाथ भगवान अपराजित नाम के स्वर्ग विमान से गर्भ में आये थे।

प्रश्न 2478. श्री नमिनाथ भगवान की पूर्व भव की देव आयु कितनी थी ?

उत्तर– श्री नमिनाथ भगवान की पूर्व भव की देव आयु 32 से 33 सागर थी।

प्रश्न 2479. श्री नमिनाथ भगवान का जन्म कल्याणक कौन से नक्षत्र में हुआ था ?

उत्तर– श्री नमिनाथ भगवान का जन्म कल्याणक अश्वनी नक्षत्र में हुआ था।

प्रश्न 2480. श्री नमिनाथ भगवान का जन्म कौन सी तिथि में हुआ था ?

उत्तर– श्री नमिनाथ भगवान का जन्म आषाढ़ कृष्णा दशमी को हुआ था।

प्रश्न 2481. श्री नमिनाथ भगवान की जन्म राशि कौन सी थी ?

उत्तर– श्री नमिनाथ भगवान का जन्म राशि मेष थी।

प्रश्न 2482. श्री नमिनाथ भगवान का जन्म किस वंश में हुआ था ?

उत्तर– श्री नमिनाथ भगवान का जन्म इक्ष्वाकु वंश में हुआ था।

प्रश्न 2483. श्री नमिनाथ भगवान की आयु कितनी थी ?

उत्तर– श्री नमिनाथ भगवान की आयु दस हजार वर्ष की थी।

प्रश्न 2484. श्री नमिनाथ भगवान का कुमार काल कितने बर्ष का था ?

उत्तर– श्री नमिनाथ भगवान का कुमार काल दो हजार पाँच सौ वर्ष का था।

प्रश्न 2485. श्री नमिनाथ भगवान के शरीर की ऊँचाई कितनी थी

उत्तर– श्री नमिनाथ भगवान के शरीर की ऊँचाई पन्द्रह धनुष थी।

प्रश्न 2486. श्री नमिनाथ भगवान के शरीर का वर्ण कैसा था ?

उत्तर— श्री नमिनाथ भगवान के शरीर का स्वर्ण वर्ण था।

प्रश्न 2487. श्री नमिनाथ भगवान का राज्य काल कितने वर्ष का था ?

उत्तर— श्री नमिनाथ भगवान का राज्य काल पाँच हजार वर्ष का था।

प्रश्न 2488. श्री नमिनाथ भगवान को वैराग्य कैसे हुआ था ?

उत्तर— श्री नमिनाथ भगवान को वैराग्य जातिस्मरण से हुआ था।

प्रश्न 2489. श्री नमिनाथ भगवान की दीक्षा कौन सी तिथि को हुई थी ?

उत्तर— श्री नमिनाथ भगवान की दीक्षा आषाढ़ कृष्णा दशमी को हुई थी।

प्रश्न 2490. श्री नमिनाथ भगवान की दीक्षा कौन से नक्षत्र में हुई ?

उत्तर— श्री नमिनाथ भगवान की दीक्षा अश्विनी नक्षत्र में हुई।

प्रश्न 2491. श्री नमिनाथ भगवान की दीक्षा कौन से वन में हुई ?

उत्तर— श्री नमिनाथ भगवान की दीक्षा चैत्र वन में हुई।

प्रश्न 2492. श्री नमिनाथ भगवान की दीक्षा कौन से नगर में हुई ?

उत्तर— श्री नमिनाथ भगवान की दीक्षा मिथिलानगर में हुई।

प्रश्न 2493. श्री नमिनाथ भगवान की दीक्षा पालकी का क्या नाम था ?

उत्तर— श्री नमिनाथ भगवान की दीक्षा पालकी उत्तरकुरु नाम की थी।

प्रश्न 2494. श्री नमिनाथ भगवान के दीक्षा उपवासों की संख्या कितनी थी ?

उत्तर— श्री नमिनाथ भगवान के दीक्षा उपवासों की संख्या दो थी।

प्रश्न 2495. श्री नमिनाथ भगवान की दीक्षा किस समय हुई ?

उत्तर— श्री नमिनाथ भगवान की दीक्षा संध्या समय हुई।

प्रश्न 2496. श्री नमिनाथ भगवान ने कितने राजाओं के साथ दीक्षा ली ?

उत्तर— श्री नमिनाथ भगवान ने एक हजार राजाओं के साथ दीक्षा ली।

प्रश्न 2497. श्री नमिनाथ भगवान की दीक्षा किस वृक्ष के नीचे हुई थी ?

उत्तर— श्री नमिनाथ भगवान की दीक्षा चम्पक वृक्ष के नीचे हुई थी।

प्रश्न 2498. श्री नमिनाथ भगवान के पुत्र का क्या नाम था ?

उत्तर— श्री नमिनाथ भगवान के पुत्र का नाम सुप्रभ जी था।

प्रश्न 2499. श्री नमिनाथ भगवान का आहार किस नगर में हुआ था ?

उत्तर— श्री नमिनाथ भगवान का प्रथम आहार वीरपुर नगर में हुआ था।

प्रश्न 2500. श्री नमिनाथ भगवान को आहार किस राजा ने दिया था।

उत्तर– श्री नमिनाथ भगवान को आहार दत्त नाम के राजा ने दिया था।

प्रश्न 2501. श्री नमिनाथ भगवान ने किस वस्तु का आहार लिया था ?

उत्तर– श्री नमिनाथ भगवान ने दूध की खीर का आहार लिया था।

प्रश्न 2502. श्री नमिनाथ भगवान ने कितने वर्ष तक तप किया ?

उत्तर– श्री नमिनाथ भगवान ने नौ वर्ष तक तप किया।

प्रश्न 2503. श्री नमिनाथ भगवान को केवलज्ञान किस तिथि को हुआ ?

उत्तर– श्री नमिनाथ भगवान को केवलज्ञान मंगसिर शुक्ला एकादशी को हुआ था।

प्रश्न 2504. श्री नमिनाथ भगवान को केवलज्ञान किस नक्षत्र में हुआ था

उत्तर– श्री नमिनाथ भगवान को केवलज्ञान अवश्नी नक्षत्र में हुआ था।

प्रश्न 2505. श्री नमिनाथ भगवान को केवलज्ञान किस समय हुआ था ?

उत्तर– श्री नमिनाथ भगवान को केवलज्ञान अपरान्ह काल में हुआ था।

प्रश्न 2506. श्री नमिनाथ भगवान को केवलज्ञान किस नगर में हुआ था ?

उत्तर– श्री नमिनाथ भगवान को केवलज्ञान मिथिला नगर में हुआ था।

प्रश्न 2507. श्री नमिनाथ भगवान को केवलज्ञान किस वन में हुआ था ?

उत्तर– श्री नमिनाथ भगवान को केवलज्ञान चैत्रवन में हुआ था।

प्रश्न 2508. श्री नमिनाथ भगवान को केवलज्ञान किस वृक्ष के नीचे हुआ ?

उत्तर– श्री नमिनाथ भगवान को केवलज्ञान मोलीश्री वृक्ष (वकुल) के नीचे हुआ।

प्रश्न 2509. श्री नमिनाथ भगवान के शासन देव का क्या नाम था ?

उत्तर– श्री नमिनाथ भगवान के शासन देव का नाम श्री विद्युत प्रभ यक्ष था।

प्रश्न 2510. श्री नमिनाथ भगवान की शासनदेवी का क्या नाम था ?

उत्तर– श्री नमिनाथ भगवान की शासनदेवी का नाम श्री चामुण्डी देवी यक्षी था।

प्रश्न 2511. श्री नमिनाथ भगवान के शासनदेव क्षेत्रपालों के नाम क्या थे ?

उत्तर– श्री नमिनाथ भगवान के शासनदेव क्षेत्रपालों के नाम 1. श्री कपिलजी, 2. श्री वटुकजी, 3. श्री भैरवजी, 4. श्री मल्काख्यजी थे।

प्रश्न 2512. श्री नमिनाथ भगवान का केवलीकाल कितने वर्ष का था ?

उत्तर– श्री नमिनाथ भगवान का केवलीकाल दो हजार चार सौ इक्यानवें वर्ष का था।

प्रश्न 2513. श्री नमिनाथ भगवान का समोशरण कितना विस्तरित था ?

उत्तर– श्री नमिनाथ भगवान का समोशरण दो योजन विस्तरित था।

प्रश्न 2514. श्री नमिनाथ भगवान के समोशरण में कितने गणधर थे ?

उत्तर– श्री नमिनाथ भगवान के समोशरण में सत्रह गणधर थे।

प्रश्न 2515. श्री नमिनाथ भगवान के समोशरण में प्रमुख गणधर कौन थे ?

उत्तर– श्री नमिनाथ भगवान के समोशरण में प्रमुख सुप्रभ नाम के गणधर थे।

प्रश्न 2516. श्री नमिनाथ भगवान के समोशरण में कितने ऋषि थे ?

उत्तर– श्री नमिनाथ भगवान के समोशरण में बीस हजार ऋषि थे।

प्रश्न 2517. श्री नमिनाथ भगवान के समोशरण में कितने पूर्वधर मुनि थे।

उत्तर– श्री नमिनाथ भगवान के समोशरण में चार सौ पचास पूर्वधर मुनि थे।

प्रश्न 2518. श्री नमिनाथ भगवान के समोशरण में कितने शिक्षक मुनि थे ?

उत्तर– श्री नमिनाथ भगवान के समोशरण में बारह हजार छह सौ शिक्षक मुनि थे।

प्रश्न 2519. श्री नमिनाथ भगवान के समोशरण में कितने अवधि ज्ञानी मुनि थे ?

उत्तर– श्री नमिनाथ भगवान के समोशरण में एक हजार छह सौ अवधि ज्ञानी मुनि थे।

प्रश्न 2520. श्री नमिनाथ भगवान के समोशरण में कितने विक्रिया धारी मुनि थे ?

उत्तर– श्री नमिनाथ भगवान के समोशरण में एक हजार पाँच सौ विक्रियाधारी मुनि थे।

प्रश्न 2521. श्री नमिनाथ भगवान के समोशरण में कितने विपुलमति ज्ञान के धारक मुनि थे ?

उत्तर– श्री नमिनाथ भगवान के समोशरण में एक हजार दो सौ पचास विपुलमुति ज्ञान धारक मुनि थे।

प्रश्न 2522. श्री नमिनाथ भगवान के समोशरण में वादी मुनि कितने थे ?

उत्तर– श्री नमिनाथ भगवान के समोशरण में एक हजार वादी मुनि थे।

प्रश्न 2523. श्री नमिनाथ भगवान के समोशरण में कितनी आर्यिकायें थीं ?

उत्तर– श्री नमिनाथ भगवान के समोशरण में पैतालीस हजार आर्यिकायें थीं।

प्रश्न 2524. श्री नमिनाथ भगवान के समोशरण में प्रमुख आर्यिका कौन थीं ?

उत्तर– श्री नमिनाथ भगवान के समोशरण में गणिनी प्रमुख मार्गिणी नाम की आर्यिका थी।

प्रश्न 2525. श्री नमिनाथ भगवान के समोशरण में कितने श्रावक थे?

उत्तर– श्री नमिनाथ भगवान के समोशरण में एक लाख श्रावक थे।

प्रश्न 2526. श्री नमिनाथ भगवान के समोशरण में कितनी श्राविकाएँ थीं ?

उत्तर– श्री नमिनाथ भगवान के समोशरण में तीन लाख श्राविकाएँ थी।

प्रश्न 2527. श्री नमिनाथ भगवान के समोशरण में प्रमुख श्रोता कौन थे ?

उत्तर– श्री नमिनाथ भगवान के समोशरण में श्री विजय नाम के प्रमुख श्रोता थे।

प्रश्न 2528. श्री नमिनाथ भगवान को मोक्ष किस तिथि में हुआ था ?

उत्तर– श्री नमिनाथ भगवान को मोक्ष वैशाख कृष्ण चतुर्दशी को हुआ था।

प्रश्न 2529. श्री नमिनाथ भगवान को मोक्ष किस समय हुआ था ?

उत्तर– श्री नमिनाथ भगवान को मोक्ष प्रत्यूष बेला में हुआ था।

प्रश्न 2530. श्री नमिनाथ भगवान को मोक्ष किस नक्षत्र में हुआ था ?

उत्तर– श्री नमिनाथ भगवान को मोक्ष अश्वनी नक्षत्र में हुआ था।

प्रश्न 2531. श्री नमिनाथ भगवान किस स्थान से मोक्ष गये थे ?

उत्तर– श्री नमिनाथ भगवान श्री सम्मेद शिखर से मोक्ष गये थे।

प्रश्न 2532. श्री नमिनाथ भगवान किस कूट से मोक्ष गये थे ?

उत्तर– श्री नमिनाथ भगवान श्री मित्रधर कूट से मोक्ष गये थे।

प्रश्न 2533. श्री नमिनाथ भगवान कितने मुनियों के साथ मोक्ष गये ?

उत्तर– श्री नमिनाथ भगवान एक हजार मुनियों के साथ मोक्ष गये।

प्रश्न 2534. श्री नमिनाथ भगवान ने मोक्ष जाने के कितने समय पूर्व योग निवृत्ति की ?

उत्तर– श्री नमिनाथ भगवान ने मोक्ष जाने के एक माह पूर्व योग निरोध किया।

प्रश्न 2535. श्री नमिनाथ भगवान के अनुबद्ध केवली कितने थे ?

उत्तर– श्री नमिनाथ भगवान के आठ अनुबद्ध केवली थे।

प्रश्न 2536. श्री नमिनाथ भगवान किस आसन से मोक्ष गये ?

उत्तर– श्री नमिनाथ भगवान खड्गासन से मोक्ष गये।

प्रश्न 2537. श्री नमिनाथ भगवान के कितने शिष्यों ने तप करके अनुत्तर विमानों में जन्म लिया ?

उत्तर– श्री नमिनाथ भगवान के आठ हजार आठ सौ शिष्यों ने तप करके अनुत्तर विमानों में जन्म लिया।

प्रश्न 2538. श्री नमिनाथ भगवान के कितने शिष्यों ने मोक्ष प्राप्त किया ?

उत्तर– श्री नमिनाथ भगवान के नौ हजार छह सौ शिष्यों ने मोक्ष प्राप्त किया।

प्रश्न 2539. श्री नमिनाथ भगवान के कितने शिष्यों ने तप करके पहले स्वर्ग से नवग्रैवेयक तक के स्वर्गों को प्राप्त किया ?

उत्तर– श्री नमिनाथ भगवान के एक हजार छह सौ शिष्यों ने तप करके पहले स्वर्ग से नवग्रैवेयक तक के स्वर्गों को प्राप्त किया।

प्रश्न 2540. श्री नमिनाथ भगवान का तीर्थ प्रवर्तन काल कितने वर्ष का था ?

उत्तर– श्री नमिनाथ भगवान का तीर्थ प्रवर्तन काल पाँच लाख एक हजार आठ सौ वर्ष का था।

प्रश्न 2541. श्री नमिनाथ भगवान के धर्म तीर्थ में चतुर्विध संघ को सम्मेद शिखर की यात्रा कराने वाले संघपति कौन थे ?

उत्तर– श्री नमिनाथ भगवान के धर्म तीर्थ में चतुर्विध संघ को सम्मेद शिखर की यात्रा कराने वाले संघपति राजा श्री मेघदत्त जी थे।

प्रश्न 2542. श्री नमिनाथ भगवान के शासनकाल में कौन से चक्रवर्ती हुए ?

उत्तर– श्री नमिनाथ भगवान के शासनकाल में श्री जयसेन नाम के चक्रवर्ती हुए।

22

भगवान श्री नेमिनाथ जी

प्रश्न 2543. बाइसवें तीर्थकर का नाम क्या है ?

उत्तर– बाइसवें तीर्थकर का नाम श्री नेमिनाथ जी है।

प्रश्न 2544. श्री नेमिनाथ भगवान को किस चिन्ह से जाना जाता है ?

उत्तर– श्री नेमिनाथ भगवान को शंख चिन्ह से जाना जाता है।

प्रश्न 2545. दसभव पूर्व भगवान श्री नेमिनाथ का जीव किस पर्याय में था ?

उत्तर– दसभव पूर्व भगवान श्री नेमिनाथ का जीव एक भील की पर्याय में था।

प्रश्न 2546. नौ भव पूर्व भगवान श्री नेमिनाथ का जीव कहाँ था ?

उत्तर– नौ भव पूर्व भगवान श्री नेमिनाथ का जीव श्री वृषभदत्त की पत्नी के इभ्यकेतु नाम का पुत्र था।

प्रश्न 2547. आठवें भव पूर्व श्री नेमिनाथ भगवान किस पर्याय में थे ?

उत्तर– आठवें भव पूर्व श्री नेमिनाथ भगवान सौधर्म स्वर्ग में देव थे।

प्रश्न 2548. सातवें भव पूर्व श्री नेमिनाथ भगवान किस पर्याय में थे ?

उत्तर– सातवें भव पूर्व श्री नेमिनाथ भगवान पुष्करार्धद्वीप में श्री सूरिप्रभ राजा के चिंतागति नामक पुत्र थे।

प्रश्न 2549. छटवें भव पूर्व श्री नेमिनाथ भगवान किस पर्याय में थे ?

उत्तर– छटवें भव पूर्व श्री नेमिनाथ भगवान चौथे स्वर्ग में देव थे।

प्रश्न 2550. पाँचवे भव पूर्व श्री नेमिनाथ भगवान किस पर्याय में थे ?

उत्तर– पाँचवे भव पूर्व श्री नेमिनाथ भगवान सिंहपुर नगर के राजा के अपराजित नाम के पुत्र थे।

प्रश्न 2551. चौथे भव पूर्व श्री नेमिनाथ भगवान किस पर्याय में थे ?

उत्तर– चौथे भव पूर्व श्री नेमिनाथ भगवान अच्युत स्वर्ग में इन्द्र थे।

प्रश्न 2552. तीसरे भव पूर्व श्री नेमिनाथ भगवान किस पर्याय में थे ?

उत्तर– तीसरे भव पूर्व श्री नेमिनाथ भगवान कुरु जांगल देश के राजा श्री चंद्र के सुप्रतिष्ठ नामक पुत्र थे।

प्रश्न 2553. दूसरे भव पूर्व श्री नेमिनाथ भगवान किस पर्याय में थे ?

उत्तर– दूसरे भव पूर्व श्री नेमिनाथ भगवान अनुत्तर स्वर्ग में अहमिन्द्र थे।

प्रश्न 2554. श्री नेमिनाथ भगवान ने तीर्थंकर प्रकृति का बंध कौन सी पर्याय में किया ?

उत्तर– श्री नेमिनाथ भगवान ने तीर्थंकर प्रकृति का बंध सुप्रतिष्ठ की पर्याय में किया।

प्रश्न 2555. श्री नेमिनाथ भगवान के पूर्व भव के दीक्षा गुरु कौन थे ?

उत्तर– श्री नेमिनाथ भगवान के पूर्व भव के दीक्षा गुरु वीतशोक थे।

प्रश्न 2556. श्री नेमिनाथ भगवान के पूर्व भव के पिता का क्या नाम था ?

उत्तर– श्री नेमिनाथ भगवान के पूर्व भव के पिता का नाम स्वनंद था।

प्रश्न 2557. श्री नेमिनाथ भगवान की पूर्व भव की देव आयु कितनी थी ?

उत्तर– श्री नेमिनाथ भगवान की पूर्व भव की देव आयु 32-33 सागर थी।

प्रश्न 2558. श्री नेमिनाथ भगवान के पिता का क्या नाम था ?

उत्तर– श्री नेमिनाथ भगवान के पिता का नाम समुद्र विजय था।

प्रश्न 2559. श्री नेमिनाथ भगवान की माता का क्या नाम था ?

उत्तर– श्री नेमिनाथ भगवान की माता का नाम महारानी शिवा देवी था।

प्रश्न 2560. श्री नेमिनाथ भगवान का गर्भ कल्याणक किस तिथि को हुआ था

उत्तर– श्री नेमिनाथ भगवान का गर्भ कल्याणक कार्तिक शुक्ला छट को हुआ था।

प्रश्न 2561. श्री नेमिनाथ भगवान का गर्भ कल्याणक कौन से नक्षत्र में हुआ था ?

उत्तर– श्री नेमिनाथ भगवान का गर्भ कल्याणक उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में हुआ था।

प्रश्न 2562. श्री नेमिनाथ भगवान का जन्म किस नगर में हुआ था ?

उत्तर– श्री नेमिनाथ भगवान का जन्म शौरीपुर में हुआ था।

प्रश्न 2563. श्री नेमिनाथ भगवान का जन्म कल्याणक किस तिथि में हुआ था ?

उत्तर– श्री नेमिनाथ भगवान का जन्म कल्याणक श्रावण शुक्ला षष्ठी को हुआ था।

प्रश्न 2564. श्री नेमिनाथ भगवान का जन्म कल्याणक किस नक्षत्र में हुआ था ?

उत्तर– श्री नेमिनाथ भगवान का जन्म कल्याणक चित्रा नक्षत्र में हुआ था।

प्रश्न 2565. श्री नेमिनाथ भगवान की जन्म राशि कौन सी थी ?

उत्तर– श्री नेमिनाथ भगवान की जन्म राशि कन्या थी।

प्रश्न 2566. श्री नेमिनाथ भगवान ने किस वंश में जन्म लिया था ?

उत्तर– श्री नेमिनाथ भगवान ने यादव वंश में जन्म लिया था

प्रश्न 2567. श्री नेमिनाथ भगवान की आयु कितनी थी ?

उत्तर– श्री नेमिनाथ भगवान की आयु एक हजार वर्ष की थी।

प्रश्न 2568. श्री नेमिनाथ भगवान के शरीर की ऊँचाई कितनी थी ?

उत्तर– श्री नेमिनाथ भगवान के शरीर की ऊँचाई दस धनुष थी।

प्रश्न 2569. श्री नेमिनाथ भगवान का कुमार काल कितने वर्ष का था ?

उत्तर– श्री नेमिनाथ भगवान का कुमार काल तीन सौ वर्ष का था।

प्रश्न 2570. श्री नेमिनाथ भगवान के शरीर का रंग कैसा था ?

उत्तर– श्री नेमिनाथ भगवान के शरीर का नील वर्ण था।

प्रश्न 2571. श्री नेमिनाथ भगवान ने कितने वर्ष तक राज्य किया ?

उत्तर– श्री नेमिनाथ भगवान ने राज्य नहीं किया।

प्रश्न 2572. श्री नमिनाथ भगवान के मोक्ष जाने के कितने समय बाद श्री नेमिनाथ भगवान हुए ?

उत्तर– श्री नमिनाथ भगवान के मोक्ष जाने के एक हजार कम पॉच लाख वर्ष बाद नेमिनाथ जी हुए।

प्रश्न 2573. श्री नेमिनाथ भगवान को वैराग्य किस कारण से हुआ था ?

उत्तर– श्री नेमिनाथ भगवान को वैराग्य कृष्ण के छल से बांधे हुए पशुओं को देखकर हुआ था।

प्रश्न 2574. श्री नेमिनाथ भगवान का दीक्षा कल्याणक किस तिथि में हुआ था ?

उत्तर– श्री नेमिनाथ भगवान का दीक्षा कल्याणक श्रावण कृष्णा षष्ठी को हुआ था।

प्रश्न 2575. श्री नेमिनाथ भगवान का दीक्षा कल्याणक किस नक्षत्र में हुआ था ?

उत्तर– श्री नेमिनाथ भगवान का दीक्षा कल्याणक चित्रा नक्षत्र में हुआ था।

प्रश्न 2576. श्री नेमिनाथ भगवान का दीक्षा कल्याणक किस वन में हुआ था ?

उत्तर– श्री नेमिनाथ भगवान का दीक्षा कल्याणक सहकार वन में हुआ था।

प्रश्न 2577. श्री नेमिनाथ भगवान ने कितने राजाओं के साथ दीक्षा ली ?

उत्तर– श्री नेमिनाथ भगवान ने एक हजार राजाओं के साथ दीक्षा ली।

प्रश्न 2578. श्री नेमिनाथ भगवान की शादी किससे तय हुई थी ?

उत्तर– श्री नेमिनाथ भगवान की शादी जूनागढ़ की राजकुमारी राजुल के साथ तय हुई थी।

प्रश्न 2579. श्री नेमिनाथ भगवान की दीक्षा पालकी का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री नेमिनाथ भगवान की दीक्षा पालकी का देवकुरु नाम था।

प्रश्न 2580. श्री नेमिनाथ भगवान की दीक्षा किस पर्वत पर हुई थी ?

उत्तर– श्री नेमिनाथ भगवान की दीक्षा गिरनार पर्वत पर हुई थी।

प्रश्न 2581. श्री नेमिनाथ भगवान की दीक्षा किस समय हुई थी।

उत्तर– श्री नेमिनाथ भगवान की दीक्षा अपरान्ह काल में हुई थी।

प्रश्न 2582. श्री नेमिनाथ भगवान की दीक्षा किस वृक्ष के नीचे हुई ?

उत्तर– श्री नेमिनाथ भगवान की दीक्षा बाँसवृक्ष के नीचे हुई थी।

प्रश्न 2583. श्री नेमिनाथ भगवान ने दीक्षा के समय कितने उपवास किये ?

उत्तर– श्री नेमिनाथ भगवान ने दीक्षा के समय तीन उपवास किये।

प्रश्न 2584. श्री नेमिनाथ भगवान ने कितने समय तक तप किया ?

उत्तर– श्री नेमिनाथ भगवान ने छप्पन दिन तक तप किया।

प्रश्न 2585. श्री नेमिनाथ भगवान का प्रथम आहार किस नगर में हुआ था ?

उत्तर– श्री नेमिनाथ भगवान का प्रथम आहार द्वारिका पुरी में हुआ था।

प्रश्न 2586. श्री नेमिनाथ भगवान को प्रथम आहार किसने दिया था ?

उत्तर– श्री नेमिनाथ भगवान को प्रथम आहार वरदत्त नाम के राजा ने दिया था।

प्रश्न 2587. श्री नेमिनाथ भगवान ने किस वस्तु का आहार लिया था ?

उत्तर– श्री नेमिनाथ भगवान ने दूध की खीर का आहार लिया था।

प्रश्न 2588. श्री नेमिनाथ भगवान को केवलज्ञान कौन सी तिथि में हुआ था ?

उत्तर– श्री नेमिनाथ भगवान को केवलज्ञान आश्विन शुक्ला एकम को हुआ था।

प्रश्न 2589. श्री नेमिनाथ भगवान को केवलज्ञान किस नक्षत्र में हुआ था ?

उत्तर– श्री नेमिनाथ भगवान को केवलज्ञान चित्रा नक्षत्र में हुआ था।

प्रश्न 2590. श्री नेमिनाथ भगवान को केवलज्ञान किस समय हुआ था ?

उत्तर— श्री नेमिनाथ भगवान को केवलज्ञान पूर्वान्ह काल में हुआ था।

प्रश्न 2591. श्री नेमिनाथ भगवान को केवलज्ञान कहाँ हुआ था ?

उत्तर— श्री नेमिनाथ भगवान को केवलज्ञान उर्जयन्त पर्वत पर हुआ था।

प्रश्न 2592. गिरनार पर्वत के अन्य नाम क्या हैं ?

उत्तर— उर्जयन्त पर्वत, गिरनार पर्वत, रैवतक पर्वत हैं।

प्रश्न 2593. श्री नेमिनाथ भगवान को केवलज्ञान कौन से वृक्ष के नीचे हुआ था ?

उत्तर— श्री नेमिनाथ भगवान को केवलज्ञान मेघश्रृंग वृक्ष के नीचे हुआ था।

प्रश्न 2594. श्री नेमिनाथ भगवान का समोशरण कितना विस्तरित था ?

उत्तर— श्री नेमिनाथ भगवान को समोशरण डेढ़ योजन विस्तरित था।

प्रश्न 2595. श्री नेमिनाथ भगवान का केवली काल कितने वर्ष का था ?

उत्तर— श्री नेमिनाथ भगवान का केवली काल छह सौ निन्यानवे वर्ष दस महीने चार दिन का था।

प्रश्न 2596. श्री नेमिनाथ भगवान भगवान की शासन देवी का नाम क्या था ?

उत्तर— श्री नेमिनाथ भगवान की शासन देवी का नाम श्री कुष्माँडनी देवी था।

प्रश्न 2597. श्री कुष्माँडनी देवी का दूसरा नाम क्या है ?

उत्तर— श्री कुष्माँडनी देवी का दूसरा नाम श्री अम्बिका देवी है।

प्रश्न 2598. श्री नेमिनाथ भगवान के शासन देव का नाम क्या है ?

उत्तर— श्री नेमिनाथ भगवान के शासन देव का नाम सर्वाण्हदेव यक्ष है।

प्रश्न 2599. श्री नेमिनाथ भगवान के शासन देव क्षेत्रपालों के नाम क्या हैं ?

उत्तर— श्री नेमिनाथ भगवान के शासन देव क्षेत्रपालों के नाम 1. श्री कोकल जी, 2. श्री खागनाम जी, 3. श्री त्रिनेत्र जी, 4. श्री कलिंग जी हैं।

प्रश्न 2600. श्री नेमिनाथ भगवान के समोशरण में कितने गणधर थे ?

उत्तर— श्री नेमिनाथ भगवान के समोशरण में ग्यारह गणधर थे।

प्रश्न 2601. श्री नेमिनाथ भगवान के समोशरण में प्रमुख गणधर कौन थे ?

उत्तर— श्री नेमिनाथ भगवान के समोशरण में प्रमुख गणधर श्री वरदत्त जी थे।

प्रश्न 2602. श्री नेमिनाथ भगवान के समोशरण में कितने ऋषि थे ?

उत्तर— श्री नेमिनाथ भगवान के समोशरण में अठारह हजार ऋषि थे।

प्रश्न 2603. श्री नेमिनाथ भगवान के समोशरण में कितने पूर्वधर मुनि थे ?

उत्तर– श्री नेमिनाथ भगवान के समोशरण में चार सौ पूर्वधर मुनि थे।

प्रश्न 2604. श्री नेमिनाथ भगवान के समोशरण में शिक्षक मुनि कितने थे

उत्तर– श्री नेमिनाथ भगवान के समोशरण में ग्यारह हजार आठ सौ शिक्षक मुनि थे।

प्रश्न 2605. श्री नेमिनाथ भगवान के समोशरण में अवधिज्ञानी मुनियों की संख्या कितनी थी ?

उत्तर– श्री नेमिनाथ भगवान के समोशरण में एक हजार पाँच सौ अवधिज्ञानी मुनि थे।

प्रश्न 2606. श्री नेमिनाथ भगवान के समोशरण में कितने केवली थे।

उत्तर– श्री नेमिनाथ भगवान के समोशरण में एक हजार पाँच सौ केवली थे।

प्रश्न 2607. श्री नेमिनाथ भगवान के समोशरण में विक्रिया धारी मुनि कितने थे ?

उत्तर– श्री नेमिनाथ भगवान के समोशरण में एक हजार एक सौ विक्रियाधारी मुनि थे।

प्रश्न 2608. श्री नेमिनाथ भगवान के समोशरण में विपुलमति ज्ञान के धारी मुनियों की संख्या कितनी थी ?

उत्तर– श्री नेमिनाथ भगवान के समोशरण में नौ सौ विपुलमति ज्ञान धारक मुनि थे।

प्रश्न 2609. श्री नेमिनाथ भगवान के समोशरण में वादी मुनियों की संख्या कितनी थी ?

उत्तर– श्री नेमिनाथ भगवान के समोशरण में आठ सौ वादी मुनि थे।

प्रश्न 2610. श्री नेमिनाथ भगवान के समोशरण में कितनी आर्यिकायें थीं ?

उत्तर– श्री नेमिनाथ भगवान के समोशरण में चालीस हजार आर्यिकायें थीं।

प्रश्न 2611. श्री नेमिनाथ भगवान के समोशरण में प्रमुख आर्यिका कौन थीं ?

उत्तर– श्री नेमिनाथ भगवान के समोशरण में प्रमुख आर्यिका राजुलमती जी थी।

प्रश्न 2612. श्री नेमिनाथ भगवान के समोशरण में कितने श्रावक थे ?

उत्तर– श्री नेमिनाथ भगवान के समोशरण में एक लाख श्रावक थे।

प्रश्न 2613. श्री नेमिनाथ भगवान के समोशरण में कितनी श्राविकायें थीं ?

उत्तर– श्री नेमिनाथ भगवान के समोशरण में तीन लाख श्राविकायें थीं।

प्रश्न 2614. श्री नेमिनाथ भगवान के समोशरण में प्रमुख श्रोता कौन थे ?

उत्तर– श्री नेमिनाथ भगवान के समोशरण में प्रमुख श्रोता श्री उग्रसेन जी थे।

प्रश्न 2615. श्री नेमिनाथ भगवान को मोक्ष किस तिथि में हुआ था ?

उत्तर– श्री नेमिनाथ भगवान को मोक्ष आषाढ़ शुक्ला सप्तमी को हुआ था।

प्रश्न 2616. श्री नेमिनाथ भगवान को मोक्ष किस नक्षत्र में हुआ था ?

उत्तर– श्री नेमिनाथ भगवान को मोक्ष चित्रा नक्षत्र में हुआ था।

प्रश्न 2617. श्री नेमिनाथ भगवान को मोक्ष किस समय किस आसन से हुआ था ?

उत्तर– श्री नेमिनाथ भगवान को मोक्ष प्रदोष काल में पद्मासन से हुआ था।

प्रश्न 2618. श्री नेमिनाथ भगवान ने मोक्ष कहाँ से प्राप्त किया था ?

उत्तर– श्री नेमिनाथ भगवान ने मोक्ष गिरनार पर्वत से प्राप्त किया था।

प्रश्न 2619. श्री नेमिनाथ भगवान ने मोक्ष किस टौंक से प्राप्त किया था?

उत्तर– श्री नेमिनाथ भगवान ने मोक्ष उर्जयन्त टौंक से प्राप्त किया था।

प्रश्न 2620. श्री नेमिनाथ भगवान कितने मुनियों के साथ मोक्ष गये ?

उत्तर– श्री नेमिनाथ भगवान पॉच सौ छत्तिस मुनियो के साथ मोक्ष गये।

प्रश्न 2621. श्री नेमिनाथ भगवान की योग निवृत्ति कब हुई थी ?

उत्तर– श्री नेमिनाथ भगवान की योग निवृत्ति मोक्ष से एक माह पूर्व हुई थी।

प्रश्न 2622. श्री नेमिनाथ भगवान के कितने अनुबद्ध केवली थे ?

उत्तर– श्री नेमिनाथ भगवान के चार अनुबद्ध केवली थे।

प्रश्न 2623. श्री नेमिनाथ भगवान के कितने शिष्य मुनियों ने अनुत्तरादि स्वर्गों में जन्म लिया ?

उत्तर– श्री नेमिनाथ भगवान के आठ हजार आठ सौ शिष्यों ने अनुत्तरादि स्वर्गो में जन्म लिया था।

प्रश्न 2624. श्री नेमिनाथ भगवान के कितने शिष्यों ने शिवधाम को प्राप्त किया ?

उत्तर– श्री नेमिनाथ भगवान के आठ हजार मुनियों ने शिवधाम को प्राप्त किया।

प्रश्न 2625. श्री नेमिनाथ भगवान के कितने शिष्यों ने पहले स्वर्ग से ग्रैवेयक तक के स्वर्गों को प्राप्त किया ?

उत्तर– श्री नेमिनाथ भगवान के एक हजार दो सौ मुनियों ने पहले स्वर्ग से ग्रैवेयक तक के स्वर्गों को प्राप्त किया।

प्रश्न 2626. श्री नेमिनाथ भगवान का तीर्थ प्रवर्तन काल कितने वर्ष का रहा ?

उत्तर– श्री नेमिनाथ भगवान का तीर्थ प्रवर्तन काल चौरासी हजार तीन सौ अस्सी वर्ष तक रहा।

23

भगवान श्री पार्श्वनाथ जी

प्रश्न 2627. तेइसवें तीर्थकर का नाम क्या है ?

उत्तर– तेइसवें तीर्थकर का नाम श्री पार्श्वनाथ जी है।

प्रश्न 2628. श्री पार्श्वनाथ भगवान को किस चिन्ह से जाना जाता है ?

उत्तर– श्री पार्श्वनाथ भगवान को सर्प चिन्ह से जाना जाता है।

प्रश्न 2629. श्री पार्श्वनाथ भगवान दसवें भव पूर्व किस पर्याय में थे ?

उत्तर– श्री पार्श्वनाथ भगवान दसवें भव पूर्व मरुभूति की पर्याय में थे

प्रश्न 2630. श्री पार्श्वनाथ भगवान नौवें भव पूर्व किस पर्याय में थे ?

उत्तर– श्री पार्श्वनाथ भगवान नौवें भव पूर्व बज्रघोष नाम के हाथी की पर्याय में थे।

प्रश्न 2631. श्री पार्श्वनाथ भगवान आठ भव पूर्व किस पर्याय में थे ?

उत्तर– श्री पार्श्वनाथ भगवान आठ भव पूर्व बारहवें सहस्रार स्वर्ग में सोलह सागर की आयु वाले देव थे।

प्रश्न 2632. श्री पार्श्वनाथ भगवान सात भव पूर्व किस पर्याय में थे ?

उत्तर– श्री पार्श्वनाथ भगवान सात भव पूर्व जम्बूद्वीप के पूर्व विदेह क्षेत्र के पुष्कलावती देश के त्रिलोकोत्तम नगर में विद्युद्रष्टि राजा तथा विद्युन्नमाला रानी के अग्निवेग नामक पुत्र थे।

प्रश्न 2633. श्री पार्श्वनाथ भगवान छठे भव पूर्व किस पर्याय में थे।

उत्तर– श्री पार्श्वनाथ भगवान छठे भव पूर्व सोलहवें अच्युत स्वर्ग के पुष्कर विमान में देव थे।

प्रश्न 2634. श्री पार्श्वनाथ भगवान पाँचवे भव में किस पर्याय में थे ?

उत्तर– श्री पार्श्वनाथ भगवान पाँचवे भव में जम्बूद्वीप के पश्चिम विदेह क्षेत्र के पद्मा देश के अश्वपुर नगर में राजा वज्रवीर्य तथा रानी विजया के पुत्र के रूप में वज्रनाभि चक्रवर्ती थे।

प्रश्न 2635. श्री पार्श्वनाथ भगवान चौथे भव में किस पर्याय में थे?

उत्तर– श्री पार्श्वनाथ भगवान चौथे भव में मध्यम ग्रैवेयक में अहमिन्द्र थे।

प्रश्न 2636. श्री पार्श्वनाथ भगवान तीसरे भव पूर्व किस पर्याय में थे ?

उत्तर– श्री पार्श्वनाथ भगवान तीसरे भव पूर्व जम्बूद्वीप भरत क्षेत्र की अयोध्या नगरी में महामंडलेश्वर राजा आनंद थे।

प्रश्न 2637. श्री पार्श्वनाथ भगवान ने तीर्थंकर प्रकृति का बंध किस पर्याय में किया ?

उत्तर– श्री पार्श्वनाथ भगवान ने तीर्थंकर प्रकृति का बंध आनंद राजा की पर्याय में किया।

प्रश्न 2638. श्री पार्श्वनाथ भगवान के पूर्व भव के पिता का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री पार्श्वनाथ भगवान के पूर्व भव के पिता बज्रवाहु थे।

प्रश्न 2639. श्री पार्श्वनाथ भगवान के पूर्व भव के दीक्षा गुरू कौन थे ?

उत्तर– श्री पार्श्वनाथ भगवान के पूर्व भव के दीक्षा गुरू दामर थे।

प्रश्न 2640. श्री पार्श्वनाथ भगवान पार्श्वनाथ से पूर्व दूसरे भव में किस पर्याय में थे।

उत्तर– श्री पार्श्वनाथ भगवान प्राणत नाम के विमान में देव थे।

प्रश्न 2641. श्री पार्श्वनाथ भगवान के पिता का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री पार्श्वनाथ भगवान के पिता का नाम महाराजा श्री अश्वसेन जी था।

प्रश्न 2642. श्री पार्श्वनाथ भगवान की माता का नाम क्या था।

उत्तर– श्री पार्श्वनाथ भगवान की माता का नाम महारानी वामा देवी था।

प्रश्न 2643. श्री पार्श्वनाथ भगवान का गर्भ कल्याणक किस तिथि में हुआ था ?

उत्तर– श्री पार्श्वनाथ भगवान का गर्भ कल्याणक बैशाख कृष्णा द्वितिया को हुआ था।

प्रश्न 2644. श्री पार्श्वनाथ भगवान का गर्भ कल्याणक किस नक्षत्र में हुआ था ?

उत्तर– श्री पार्श्वनाथ भगवान का गर्भ कल्याणक विशाखा नक्षत्र में हुआ था।

प्रश्न 2645. श्री पार्श्वनाथ भगवान कहाँ से गर्भ में आये थे ?

उत्तर– श्री पार्श्वनाथ भगवान प्राणत स्वर्ग से गर्भ में आये थे।

प्रश्न 2646. श्री पार्श्वनाथ भगवान का जन्म कल्याणक किस तिथि में हुआ था ?

उत्तर– श्री पार्श्वनाथ भगवान का जन्म कल्याणक पौष कृष्णा एकादशी को हुआ था।

प्रश्न 2647. श्री पार्श्वनाथ भगवान का जन्म कल्याणक किस नक्षत्र में हुआ था ?

उत्तर– श्री पार्श्वनाथ भगवान का जन्म कल्याणक विशाखा नक्षत्र में हुआ था।

प्रश्न 2648. श्री पार्श्वनाथ भगवान की जन्म राशि कौन-सी थी?

उत्तर– श्री पार्श्वनाथ भगवान की जन्म राशि कुंभ थी।

प्रश्न 2649. श्री पार्श्वनाथ भगवान का जन्म कहाँ हुआ था ?

उत्तर– श्री पार्श्वनाथ भगवान का जन्म बनारस नगर में हुआ था।

प्रश्न 2650. श्री पार्श्वनाथ भगवान का जन्म किस वंश में हुआ था ?

उत्तर– श्री पार्श्वनाथ भगवान का जन्म उग्र वंश में हुआ था।

प्रश्न 2651. श्री पार्श्वनाथ भगवान की आयु कितनी थी ?

उत्तर– श्री पार्श्वनाथ भगवान की आयु एक सौ वर्ष की थी।

प्रश्न 2652. श्री पार्श्वनाथ भगवान का कुमार काल कितने वर्ष का था ?

उत्तर– श्री पार्श्वनाथ भगवान का कुमार काल तीस वर्ष का था।

प्रश्न 2653. श्री पार्श्वनाथ भगवान के शरीर की ऊँचाई कितनी थी ?

उत्तर– श्री पार्श्वनाथ भगवान के शरीर की ऊँचाई नौ हाथ थी।

प्रश्न 2654. श्री पार्श्वनाथ भगवान के शरीर का वर्ण कैसा था ?

उत्तर– श्री पार्श्वनाथ भगवान के शरीर का हरित श्याम वर्ण था।

प्रश्न 2655. श्री पार्श्वनाथ भगवान का राज्य काल कितने वर्ष का था ?

उत्तर– श्री पार्श्वनाथ भगवान ने राज्य नहीं किया।

प्रश्न 2656. श्री नेमिनाथ भगवान के मोक्ष जाने के कितने समय बाद श्री पार्श्वनाथ भगवान हुए ?

उत्तर– श्री नेमिनाथ भगवान के मोक्ष जाने के तिरासी हजार छह सौ पचास वर्ष बीत जाने के बाद श्री पार्श्वनाथ भगवान हुए।

प्रश्न 2657. श्री पार्श्वनाथ भगवान को वैराग्य कैसे हुआ ?

उत्तर– श्री पार्श्वनाथ भगवान को वैराग्य जातिस्मरण से हुआ।

प्रश्न 2658. श्री पार्श्वनाथ भगवान का दीक्षा कल्याणक किस तिथि में हुआ था ?

उत्तर– श्री पार्श्वनाथ भगवान का दीक्षा कल्याणक पौष कृष्णा एकादशी को हुआ था।

प्रश्न 2659. श्री पार्श्वनाथ भगवान का दीक्षा कल्याणक कौन से नक्षत्र में हुआ था ?

उत्तर– श्री पार्श्वनाथ भगवान का दीक्षा कल्याणक विशाखा नक्षत्र में हुआ था।

प्रश्न 2660. श्री पार्श्वनाथ भगवान की दीक्षा कौन से वन में हुई थी ?

उत्तर– श्री पार्श्वनाथ भगवान की दीक्षा अश्वत्थ वन में हुई थी।

प्रश्न 2661. श्री पार्श्वनाथ भगवान ने दीक्षा कौन से वृक्ष के नीचे ली ?

उत्तर– श्री पार्श्वनाथ भगवान ने दीक्षा देवदारु वृक्ष के नीचे ली।

प्रश्न 2662. श्री पार्श्वनाथ भगवान ने दीक्षा किस समय ली ?

उत्तर– श्री पार्श्वनाथ भगवान ने दीक्षा पूर्वान्ह काल में ली थी।

प्रश्न 2663. श्री पार्श्वनाथ भगवान ने दीक्षा किस नगर में ली थी ?

उत्तर– श्री पार्श्वनाथ भगवान ने दीक्षा बनारस नगर में ली।

प्रश्न 2664. श्री पार्श्वनाथ भगवान की दीक्षा पालकी का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री पार्श्वनाथ भगवान का दीक्षा पालकी का नाम विमला था

प्रश्न 2665. श्री पार्श्वनाथ भगवान ने कितने राजाओं के साथ दीक्षा ली ?

उत्तर– श्री पार्श्वनाथ भगवान ने तीन सौ राजाओं के साथ दीक्षा ली।

प्रश्न 2666. श्री पार्श्वनाथ भगवान ने दीक्षा के समय कितने उपवास किये ?

उत्तर– श्री पार्श्वनाथ भगवान ने दीक्षा के समय तेला (तीन दिन के उपवास) किये।

प्रश्न 2667. श्री पार्श्वनाथ भगवान का प्रथम आहार किस नगर में हुआ था ?

उत्तर– श्री पार्श्वनाथ भगवान का प्रथम आहार गुलमसेटपुर नगर में हुआ थां

प्रश्न 2668. श्री पार्श्वनाथ भगवान का प्रथम आहार किसने दिया था ?

उत्तर– श्री पार्श्वनाथ भगवान का प्रथम आहार धन्यनामक राजा ने दिया था।

प्रश्न 2669. श्री पार्श्वनाथ भगवान का प्रथम आहार किस वस्तु का हुआ था ?

उत्तर– श्री पार्श्वनाथ भगवान का प्रथम आहार दूध की खीर का था।

प्रश्न 2670. श्री पार्श्वनाथ भगवान ने कितने वर्ष तक तप किया ?

उत्तर– श्री पार्श्वनाथ भगवान ने चार महीने तक तप किया।

प्रश्न 2671. श्री पार्श्वनाथ भगवान को केवलज्ञान किस तिथि को प्राप्त हुआ ?

उत्तर– श्री पार्श्वनाथ भगवान को केवलज्ञान चैत्र कृष्णा चतुर्थी को प्राप्त हुआ।

प्रश्न 2672. श्री पार्श्वनाथ भगवान को केवलज्ञान किस नक्षत्र में प्राप्त हुआ था ?

उत्तर– श्री पार्श्वनाथ भगवान को केवलज्ञान विशाखा नक्षत्र में प्राप्त हुआ था।

प्रश्न 2673. श्री पार्श्वनाथ भगवान को केवलज्ञान किस नगर में हुआ ?

उत्तर– श्री पार्श्वनाथ भगवान को केवलज्ञान शुक्रपुर नगर (अहिक्षेत्र नगर) में हुआ ?

प्रश्न 2674. श्री पार्श्वनाथ भगवान को केवलज्ञान किस वन में हुआ ?

उत्तर– श्री पार्श्वनाथ भगवान को केवलज्ञान अश्वत्थ वन में हुआ।

प्रश्न 2675. श्री पार्श्वनाथ भगवान को केवलज्ञान किस वृक्ष के नीचे हुआ था?

उत्तर– श्री पार्श्वनाथ भगवान को केवलज्ञान धव वृक्ष के नीचे हुआ था।

प्रश्न 2676. श्री पार्श्वनाथ भगवान के समोशरण का कितना विस्तार था ?

उत्तर– श्री पार्श्वनाथ भगवान का समोशरण सवा योजन विस्तारित था।

प्रश्न 2677. श्री पार्श्वनाथ भगवान के शासन देव का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री पार्श्वनाथ भगवान के शासनदेव का नाम श्री धरणेन्द्र यक्ष था।

प्रश्न 2678. श्री पार्श्वनाथ भगवान की शासन देवी का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री पार्श्वनाथ भगवान की शासन देवी का नाम देवी श्री पद्मावती था।

प्रश्न 2679. श्री पार्श्वनाथ भगवान का शासन देव क्षेत्रपालों के नाम क्या थे ?

उत्तर– श्री पार्श्वनाथ भगवान के शासन देव क्षेत्रपालों के नाम 1. श्री कीर्तिधर जी, 2. श्री स्मृतिधर जी, 3. श्री विनय धरजी, 4. श्री अब्जधरजी थे।

प्रश्न 2680. श्री पार्श्वनाथ भगवान का केवली काल कितने वर्ष का था।

उत्तर– श्री पार्श्वनाथ भगवान का केवली काल उन्नहत्तर वर्ष आठ महीने का था।

प्रश्न 2681. श्री पार्श्वनाथ भगवान के समोशरण में कितने गणधर थे ?

उत्तर– श्री पार्श्वनाथ भगवान के समोशरण में दस गणधर थे।

प्रश्न 2682. श्री पार्श्वनाथ भगवान के समोशरण में प्रमुख गणधर कौन थे ?

उत्तर– श्री पार्श्वनाथ भगवान के समोशरण में प्रमुख गणधर स्वयंभू थे।

प्रश्न 2683. श्री पार्श्वनाथ भगवान के समोशरण में कुल कितने मुनि थे ?

उत्तर– श्री पार्श्वनाथ भगवान के समोशरण में सोलह हजार मुनि थे।

प्रश्न 2684. श्री पार्श्वनाथ भगवान के समोशरण में पूर्वधर मुनि कितने थे ?

उत्तर– श्री पार्श्वनाथ भगवान के समोशरण में तीन सौ पचास पूर्वधर मुनि थे।

प्रश्न 2685. श्री पार्श्वनाथ भगवान के समोशरण में शिक्षक मुनि कितने थे ?

उत्तर– श्री पार्श्वनाथ भगवान के समोशरण में दस हजार नौ सौ शिक्षक मुनि थे।

प्रश्न 2686. श्री पार्श्वनाथ भगवान के समोशरण में अवधि ज्ञानी मुनि कितने थे ?

उत्तर– श्री पार्श्वनाथ भगवान के समोशरण में एक हजार चार सौ अवधि ज्ञानी मुनि थे।

प्रश्न 2687. श्री पार्श्वनाथ भगवान के समोशरण में कितने केवली थे ?

उत्तर– श्री पार्श्वनाथ भगवान के समोशरण में एक हजार केवली थे।

प्रश्न 2688. श्री पार्श्वनाथ भगवान के समोशरण मे कितने विक्रियाधारी मुनि थे ?

उत्तर– श्री पार्श्वनाथ भगवान के समोशरण में एक हजार विक्रियाधारी मुनि थे।

प्रश्न 2689. श्री पार्श्वनाथ भगवान के समोशरण में कितने मुनि विपुलमति ज्ञान के धारक थे ?

उत्तर– श्री पार्श्वनाथ भगवान के समोशरण में सात सौ पचास विपुलमति ज्ञान धारक मुनि थे।

प्रश्न 2690. श्री पार्श्वनाथ भगवान के समोशरण में कितने वादी मुनि थे ?

उत्तर– श्री पार्श्वनाथ भगवान के समोशरण में छह सौ वादी मुनि थे।

प्रश्न 2691. श्री पार्श्वनाथ भगवान के समोशरण में कितनी आर्यिकायें थीं ?

उत्तर– श्री पार्श्वनाथ भगवान के समोशरण में अड़तीस हजार आर्यिकायें थीं।

प्रश्न 2692. श्री पार्श्वनाथ भगवान के समोशरण में प्रमुख आर्यिका कौन थीं ?

उत्तर– श्री पार्श्वनाथ भगवान के समोशरण में प्रमुख आर्यिका सुलोचना जी थीं।

प्रश्न 2693. श्री पार्श्वनाथ भगवान के समोशरण में कितने श्रावक थे ?

उत्तर– श्री पार्श्वनाथ भगवान के समोशरण में एक लाख श्रावक थे।

प्रश्न 2694. श्री पार्श्वनाथ भगवान के समोशरण में कितनी श्राविकायें थीं ?

उत्तर– श्री पार्श्वनाथ भगवान के समोशरण में तीन लाख श्राविकायें थीं।

प्रश्न 2695. श्री पार्श्वनाथ भगवान के समोशरण में प्रमुख श्रोता कौन थे ?

उत्तर– श्री पार्श्वनाथ भगवान के समोशरण में प्रमुख श्रोता अजित (महासेन) थे।

प्रश्न 2696. श्री पार्श्वनाथ भगवान को मोक्ष किस तिथि में हुआ था ?

उत्तर– श्री पार्श्वनाथ भगवान को मोक्ष श्रावण शुक्ला सप्तमी को हुआ था।

प्रश्न 2697. श्री पार्श्वनाथ भगवान को मोक्ष किस समय प्राप्त हुआ ?

उत्तर– श्री पार्श्वनाथ भगवान को मोक्ष अपरान्ह काल में हुआ।

प्रश्न 2698. श्री पार्श्वनाथ भगवान को मोक्ष किस नक्षत्र में हुआ था ?

उत्तर– श्री पार्श्वनाथ भगवान को मोक्ष विशाखा नक्षत्र में हुआ था।

प्रश्न 2699. श्री पार्श्वनाथ भगवान को मोक्ष कहाँ से किस आसन से हुआ था ?

उत्तर– श्री पार्श्वनाथ भगवान को मोक्ष श्री सम्मेद शिखर जी से खड्गासन से हुआ था।

प्रश्न 2700. श्री पार्श्वनाथ भगवान को मोक्ष किस कूट से हुआ था ?

उत्तर– श्री पार्श्वनाथ भगवान को मोक्ष स्वर्णभद्र कूट से हुआ था।

प्रश्न 2701. श्री पार्श्वनाथ भगवान कितने मुनियों के साथ मोक्ष गये ?

उत्तर– श्री पार्श्वनाथ भगवान छत्तिस मुनियों के साथ मोक्ष गये।

प्रश्न 2702. श्री पार्श्वनाथ भगवान का योग निवृत्ति काल कब हुआ ?

उत्तर– श्री पार्श्वनाथ भगवान का योग निवृत्ति काल एक माह पूर्व हुआ।

प्रश्न 2703. श्री पार्श्वनाथ भगवान के कितने अनुबद्ध केवली थे?

उत्तर– श्री पार्श्वनाथ भगवान के तीन अनुबद्ध केवली थे।

प्रश्न 2704. श्री पार्श्वनाथ भगवान के कितने मुनि शिष्यों ने तप करके अनुत्तर विमानों को प्राप्त किया ?

उत्तर– श्री पार्श्वनाथ भगवान के आठ हजार आठ सौ मुनियों ने तप करके अनुत्तर विमानों को प्राप्त किया।

प्रश्न 2705. श्री पार्श्वनाथ भगवान के कितने शिष्य मुनियों ने मोक्ष प्राप्त किया ?

उत्तर– श्री पार्श्वनाथ भगवान के छह हजार दो सौ शिष्य मुनियों ने मोक्ष प्राप्त किया।

प्रश्न 2706. श्री पार्श्वनाथ भगवान के कितने मुनि शिष्यों ने तप करके पहले स्वर्ग से ग्रैवेयक तक के स्वर्गों को प्राप्त किया ?

उत्तर– श्री पार्श्वनाथ भगवान के एक हजार शिष्यों ने तप करके पहले स्वर्ग से ग्रैवेयक तक के स्वर्गों को प्राप्त किया।

प्रश्न 2707. श्री पार्श्वनाथ भगवान का तीर्थ प्रवर्तन काल कितने वर्ष का था

उत्तर– श्री पार्श्वनाथ भगवान का तीर्थ प्रवर्तन काल दो सौ अठहत्तर वर्ष का था।

प्रश्न 2708. श्री पार्श्वनाथ भगवान के धर्म तीर्थ में चतुर्विध संघ को श्री सम्मेदशिखर की यात्रा कराने वाले संघपति का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री पार्श्वनाथ भगवान के धर्म तीर्थ में चतुर्विध संघ को श्री सम्मेदशिखर की यात्रा कराने वाले संघपति का नाम राजा श्री सुप्रभाव सेन था।

प्रश्न 2709. कालसंवर देव की पर्याय से दस भव पूर्व कमठ का जीव किस पर्याय में था ?

उत्तर– कालसंवर देव की पर्याय से दस भव पूर्व कमठ का जीव कमठ की पर्याय में था।

प्रश्न 2710. नौ भव पूर्व कालसंवर देव का जीव किस पर्याय में था ?

उत्तर– नौ भव पूर्व कालसंवर देव का जीव कुक्कुट जाति की सर्प की पर्याय में था।

प्रश्न 2711. आठ भव पूर्व कालसंवर देव का जीव किस पर्याय में था ?

उत्तर– आठ भव पूर्व कालसंवर देव का जीव धूमप्रभा नामक पाचवें नरक में नारकी था।

प्रश्न 2712. सात भव पूर्व कालसंवर देव का जीव किस पर्याय में था ?

उत्तर– सात भव पूर्व कालसंवर देव का जीव भयंकर अजगर था।

प्रश्न 2713. छह भव पूर्व कालसंवर देव का जीव किस पर्याय में था ?

उत्तर– छह भव पूर्व कालसंवर देव का जीव छठें नरक में नारकी था।

प्रश्न 2714. पांच भव पूर्व कालसंवर देव का जीव किस पर्याय में था ?

उत्तर– पांच भव पूर्व कालसंवर देव का जीव कुरंग नामक भील था।

प्रश्न 2715. चौथे भव पूर्व कालसंवर का जीव किस पर्याय में था ?

उत्तर– चौथे भव पूर्व कालसंवर का जीव सातवें नरक में नारकी था।

प्रश्न 2716. तीसरे भव पूर्व कालसंवर का जीव किस पर्याय में था ?

उत्तर– तीसरे भव पूर्व कालसंवर का जीव क्षीर नामक वन में सिंह था।

प्रश्न 2717. दूसरे भव पूर्व कालसंवर का जीव किस पर्याय में था ?

उत्तर– दूसरे भव पूर्व कालसंवर का जीव नरक में नारकी था।

प्रश्न 2718. श्री पार्श्वनाथ भगवान ने किस पर्याय में सूर्य का विमान बनवाकर उसमें जिन मन्दिर बनवाया ?

उत्तर– श्री पार्श्वनाथ भगवान ने राजा आनन्द की पर्याय में सूर्य का विमान बनावाकर उसमें जिन मंदिर बनवाया।

प्रश्न 2719. कौन से तीर्थंकर वज्रनाभि नाम के चक्रवर्ती हुए ?

उत्तर– श्री पार्श्वनाथ भगवान वज्रनाभि नाम के चक्रवर्ती हुए।

प्रश्न 2720. पंचाग्नि तपने वाले साधु का क्या नाम था ?

उत्तर– पंचाग्नि तपने वाले साधु का नाम महिपाल था।

प्रश्न 2721. महिपाल कौन था ?

उत्तर– पार्श्वनाथ भगवान का मातामह (नाना) था।

प्रश्न 2722. श्री पार्श्वनाथ भगवान की क्या विशेषता थी ?

उत्तर– श्री पार्श्वनाथ भगवान बालब्रह्मचारी तीर्थंकर थे।

24

श्री महावीर भगवान जी

प्रश्न 2723. चौबीसवें तीर्थंकर का नाम क्या है ?

उत्तर— चौबीसवें तीर्थंकर का नाम श्री महावीर भगवान जी है।

प्रश्न 2724. श्री महावीर भगवान को कौन से चिन्ह से जाना जाता है ?

उत्तर— श्री महावीर भगवान को सिंह चिन्ह से जाना जाता है।

प्रश्न 2725. श्री महावीर भगवान के पिता का नाम क्या था ?

उत्तर— श्री महावीर भगवान के पिता राजा सिद्धार्थ थे।

प्रश्न 2726. श्री महावीर भगवान की माता का नाम क्या था ?

उत्तर— श्री महावीर भगवान की माता का नाम महारानी त्रिशला था।

प्रश्न 2727. श्री त्रिशला देवी का दूसरा नाम क्या था ?

उत्तर— श्री त्रिशला देवी का दूसरा नाम महारानी प्रियकारिणी देवी था।

प्रश्न 2728. श्री महावीर भगवान का गर्भ कल्याणक किस तिथि को हुआ था ?

उत्तर— श्री महावीर भगवान का गर्भ कल्याणक आषाढ़ शुक्ला षष्ठी को हुआ था।

प्रश्न 2729. श्री महावीर भगवान का गर्भ कल्याणक किस नक्षत्र में हुआ था ?

उत्तर— श्री महावीर भगवान का गर्भ कल्याणक उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में हुआ था।

प्रश्न 2730. श्री महावीर भगवान कहाँ से गर्भ में आये थे ?

उत्तर— श्री महावीर भगवान पुष्पोत्तर विमान से गर्भ में आये।

प्रश्न 2731. श्री महावीर भगवान का जन्म किस तिथि में हुआ था ?

उत्तर— श्री महावीर भगवान का जन्म चैत्र शुक्ला त्रयोदशी को हुआ था।

प्रश्न 2732. श्री महावीर भगवान ने तीर्थंकर प्रकृति का बंध कौन सी पर्याय में किया ?

उत्तर— श्री महावीर भगवान ने तीर्थंकर प्रकृति का बंध महाराज नंद की पर्याय में किया।

प्रश्न 2733. श्री महावीर भगवान के पूर्व भव के पिता का नाम क्या था ?

उत्तर— श्री महावीर भगवान के पूर्व भव के पिता प्रोष्टिल थे।

प्रश्न 2734. श्री महावीर भगवान के पूर्व भव के दीक्षा गुरु कौन थे ?

उत्तर— श्री महावीर भगवान के पूर्व भव दीक्षा गुरु प्रोष्टिल थे।

प्रश्न 2735. श्री महावीर भगवान की पूर्व भव की देव आयु कितनी थी ?

उत्तर— श्री महावीर भगवान की पूर्व भव की देव आयु 22 सागर थी।

प्रश्न 2736. श्री महावीर भगवान का जन्म किस नक्षत्र में हुआ था ?

उत्तर— श्री महावीर भगवान का जन्म उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में हुआ था।

प्रश्न 2737. श्री महावीर भगवान का जन्म किस नगर में हुआ था ?

उत्तर— श्री महावीर भगवान का जन्म कुण्डलपुर नगर में हुआ था।

प्रश्न 2738. श्री महावीर भगवान का जन्म किस वंश में हुआ था ?

उत्तर— श्री महावीर भगवान का जन्म नाथ वंश में हुआ था।

प्रश्न 2739. श्री महावीर भगवान का जन्म किस कुल में हुआ था ?

उत्तर— श्री महावीर भगवान का जन्म कश्यप कुल में हुआ था।

प्रश्न 2740. श्री महावीर भगवान की जन्म राशि कौन सी थी ?

उत्तर— श्री महावीर भगवान की जन्म राशि कन्या थी।

प्रश्न 2741. श्री महावीर भगवान की आयु कितनी थी ?

उत्तर— श्री महावीर भगवान की आयु बहत्तर वर्ष की थी।

प्रश्न 2742. श्री महावीर भगवान का कुमार काल कितने वर्ष का था ?

उत्तर— श्री महावीर भगवान का कुमार काल तीस वर्ष का था।

प्रश्न 2743. श्री महावीर भगवान के शरीर की ऊँचाई कितनी थी ?

उत्तर— श्री महावीर भगवान के शरीर की ऊँचाई सात हाथ थी।

प्रश्न 2744. श्री महावीर भगवान के शरीर का रंग कैसा था ?

उत्तर— श्री महावीर भगवान के शरीर का स्वर्ण वर्ण था।

प्रश्न 2745. श्री महावीर भगवान को कैसे वैराग्य हुआ ?

उत्तर— श्री महावीर भगवान को वैराग्य जाति स्मरण से हुआ।

प्रश्न 2746. श्री महावीर भगवान की दीक्षा किस तिथि को हुई थी ?

उत्तर— श्री महावीर भगवान की दीक्षा मंगसिर कृष्णा दशमी को हुई थी।

प्रश्न 2747. श्री महावीर भगवान की दीक्षा किस नक्षत्र में हुई थी ?

उत्तर— श्री महावीर भगवान की दीक्षा उत्तरा नक्षत्र में हुई थी।

प्रश्न 2748. श्री महावीर भगवान की दीक्षा किस वन में हुई थी ?

उत्तर— श्री महावीर भगवान की दीक्षा षण्डवन में हुई थी।

प्रश्न 2749. श्री महावीर भगवान की दीक्षा किस नगर में हुई थी ?

उत्तर— श्री महावीर भगवान की दीक्षा कुण्डलपुर नगर में (कुण्डलग्राम में) हुई थी।

प्रश्न 2750. श्री महावीर भगवान की दीक्षा किस वृक्ष के नीचे हुई थी ?

उत्तर— श्री महावीर भगवान की दीक्षा शाल वृक्ष के नीचे हुई थी।

प्रश्न 2751. श्री महावीर भगवान की दीक्षा पालकी का क्या नाम था ?

उत्तर— श्री महावीर भगवान की दीक्षा पालकी चन्द्रप्रभा थी।

प्रश्न 2752. श्री महावीर भगवान की दीक्षा किस समय हुई ?

उत्तर— श्री महावीर भगवान की दीक्षा अपरान्ह काल में हुई थी।

प्रश्न 2753. श्री महावीर भगवान ने कितने राजाओं के साथ दीक्षा ली ?

उत्तर— श्री महावीर भगवान ने अकेले ही दीक्षा ली।

प्रश्न 2754. श्री महावीर भगवान ने दीक्षा समय कितने उपवास किये।

उत्तर— श्री महावीर भगवान ने दीक्षा समय तृतीय भक्त उपवास किये।

प्रश्न 2755. श्री महावीर भगवान ने कितने वर्ष तक तप किया ?

उत्तर— श्री महावीर भगवान ने बारह वर्ष तक तप किया।

प्रश्न 2756. श्री महावीर भगवान का प्रथम आहार कहाँ हुआ था ?

उत्तर— श्री महावीर भगवान का प्रथम आहार कुल ग्राम नगर में हुआ था।

प्रश्न 2757. श्री महावीर भगवान को प्रथम आहार किसने दिया था ?

उत्तर— श्री महावीर भगवान को प्रथम आहार राजा कूल ने दिया था।

प्रश्न 2758. श्री महावीर भगवान का प्रथम आहार किस वस्तु का हुआ था ?

उत्तर— श्री महावीर भगवान का प्रथम आहार दूध की खीर का हुआ था।

प्रश्न 2759. श्री महावीर भगवान को केवलज्ञान किस तिथि को हुआ था ?

उत्तर— श्री महावीर भगवान को केवलज्ञान बैशाख शुक्ला दशमी को हुआ था।

प्रश्न 2760. श्री महावीर भगवान को केवलज्ञान किस नक्षत्र में हुआ था ?

उत्तर— श्री महावीर भगवान को केवलज्ञान मघा नक्षत्र में हुआ था।

प्रश्न 2761. श्री महावीर भगवान को केवलज्ञान किस समय में हुआ था ?

उत्तर— श्री महावीर भगवान को केवलज्ञान पूर्वान्ह काल में हुआ था।

प्रश्न 2762. श्री महावीर भगवान को केवलज्ञान किस वृक्ष के नीचे हुआ था ?

उत्तर— श्री महावीर भगवान को केवलज्ञान शाल वृक्ष के नीचे हुआ था।

प्रश्न 2763. श्री महावीर भगवान का समोशरण का कितना विस्तरित था ?

उत्तर— श्री महावीर भगवान का समोशरण का एक योजन विस्तरित था।

प्रश्न 2764. श्री महावीर भगवान का केवली काल कितने वर्ष का था ?

उत्तर— श्री महावीर भगवान का केवली काल तीस वर्ष का था।

प्रश्न 2765. श्री महावीर भगवान की शासन देवी का नाम क्या था ?

उत्तर— श्री महावीर भगवान की शासन देवी का नाम सिद्धायनी देवी था।

प्रश्न 2766. श्री महावीर भगवान के शासन देव का नाम क्या था ?

उत्तर— श्री महावीर भगवान के शासन देव ग्रह्यक देव (मातंगयक्ष) थे।

प्रश्न 2767. श्री महावीर भगवान के शासन देव क्षेत्रपालों के नाम क्या थे ?

उत्तर— श्री महावीर भगवान के शासन देव क्षेत्रपालों के नाम 1. श्री कुमुद, 2. श्री अंजन, 3. श्री चामर, 4. श्री पुष्पदन्त थे।

प्रश्न 2768. श्री महावीर भगवान के कितने गणधर थे ?

उत्तर— श्री महावीर भगवान के ग्यारह गणधर थे।

प्रश्न 2769. श्री महावीर भगवान के प्रमुख गणधर कौन थे ?

उत्तर— श्री महावीर भगवान के प्रमुख गणधर श्री गौतम स्वामी थे।

प्रश्न 2770. श्री महावीर भगवान के समोशरण में कुल कितने मुनि थे ?

उत्तर— श्री महावीर भगवान के समोशरण में कुल चौदह हजार मुनि थे।

प्रश्न 2771. श्री महावीर भगवान के समोशरण में पूर्वधर मुनि कितने थे।

उत्तर— श्री महावीर भगवान के समोशरण में तीन सौ पूर्वधर मुनि थे।

प्रश्न 2772. श्री महावीर भगवान के समोशरण में शिक्षक मुनि कितने थे ?

उत्तर— श्री महावीर भगवान के समोशरण में नौ हजार नौ सौ शिक्षक मुनि थे।

प्रश्न 2773. श्री महावीर भगवान के समोशरण में कितने अवधिज्ञानी मुनि थे।

उत्तर– श्री महावीर भगवान के समोशरण में एक हजार तीन सौ अवधिज्ञानी मुनि थे।

प्रश्न 2774. श्री महावीर भगवान के समोशरण में कितने केवली थे ?

उत्तर– श्री महावीर भगवान के समोशरण में सात सौ केवली थे।

प्रश्न 2775. श्री महावीर भगवान के समोशरण में कितने विक्रियाधारी मुनि थे ?

उत्तर– श्री महावीर भगवान के समोशरण में नौ सौ विक्रियाधारी मुनि थे।

प्रश्न 2776. श्री महावीर भगवान के समोशरण मे कितने मुनि विपुलमति ज्ञानधारी थे ?

उत्तर– श्री महावीर भगवान के समोशरण में पांच सौ विपुलमति ज्ञानधारक मुनि थे।

प्रश्न 2777. श्री महावीर भगवान के समोशरण में कितने वादी मुनि थे ?

उत्तर– श्री महावीर भगवान के समोशरण में चार सौ वादी मुनि थे।

प्रश्न 2778. श्री महावीर भगवान के समोशरण में कितनी आर्यिकायें थीं ?

उत्तर– श्री महावीर भगवान के समोशरण में छत्तीस हजार आर्यिकायें थीं।

प्रश्न 2779. श्री महावीर भगवान के समोशरण में प्रमुख आर्यिका कौन थीं?

उत्तर– श्री महावीर भगवान के समोशरण में गणिनी प्रमुख आर्यिका श्री चंदना जी थीं।

प्रश्न 2780. श्री महावीर भगवान के समोशरण में कितने श्रावक थे ?

उत्तर– श्री महावीर भगवान के समोशरण में एक लाख श्रावक थे।

प्रश्न 2781. श्री महावीर भगवान के समोशरण में कितनी श्राविकायें थीं ?

उत्तर– श्री महावीर भगवान के समोशरण में तीन लाख श्राविकायें थीं।

प्रश्न 2782. श्री महावीर भगवान को मोक्ष किस तिथि में हुआ था ?

उत्तर– श्री महावीर भगवान को मोक्ष कार्तिक कृष्णा अमावस्या को हुआ था।

प्रश्न 2783. श्री महावीर भगवान को मोक्ष किस काल में हुआ था ?

उत्तर– श्री महावीर भगवान को मोक्ष प्रत्यूष काल प्रातःकाल की बेला में हुआ था।

प्रश्न 2784. श्री महावीर भगवान को मोक्ष किस नक्षत्र में हुआ था ?

उत्तर– श्री महावीर भगवान को मोक्ष स्वाति नक्षत्र में हुआ था।

प्रश्न 2785. श्री महावीर भगवान किस स्थान से मोक्ष को गये थे ?

उत्तर– श्री महावीर भगवान पावापुरी से मोक्ष गये थे।

प्रश्न 2786. श्री महावीर भगवान कितने मुनियों के साथ मोक्ष को गये थे ?

उत्तर– श्री महावीर भगवान अकेले मोक्ष गये थे।

प्रश्न 2787. श्री महावीर भगवान ने मोक्ष जाने से कितने समय पूर्व योग निवृत्ति की ?

उत्तर– श्री महावीर भगवान ने मोक्ष जाने से दो दिन पूर्व योग निवृत्ति की।

प्रश्न 2788. श्री महावीर भगवान के कितने अनुबद्ध केवली थे।

उत्तर– श्री महावीर भगवान के तीन अनुबद्ध केवली थे।

प्रश्न 2789. श्री महावीर भगवान के कितने मुनि शिष्यों ने तप करके अनुत्तर विमानों को प्राप्त किया ?

उत्तर– श्री महावीर भगवान के आठ हजार आठ सौ मुनि शिष्यों ने तप करके अनुत्तर विमानों को प्राप्त किया।

प्रश्न 2790. श्री महावीर भगवान के कितने शिष्य मुनियों ने मुक्ति को प्राप्त किया।

उत्तर– श्री महावीर भगवान के चार हजार चार सौ शिष्य मुनियों ने मुक्ति को प्राप्त किया।

प्रश्न 2791. श्री महावीर भगवान के कितने मुनि शिष्यों ने तप करके पहले स्वर्ग से ग्रैवेयक तक के स्वर्गों को प्राप्त किया ?

उत्तर– श्री महावीर भगवान के आठ सौ शिष्य मुनियों ने तप करके पहले स्वर्ग से ग्रैवेयक तक के स्वर्गों को प्राप्त किया।

प्रश्न 2792. श्री महावीर भगवान का तीर्थ प्रवर्तन काल कितने वर्ष का है ?

उत्तर– श्री महावीर भगवान का तीर्थ प्रवर्तन काल इक्कीस हजार व्यालिस वर्ष तक वीर का शासन रहेगा।

विशेष प्रकरण

प्रश्न 2793. श्री महावीर भगवान के अन्य कौन-कौन से नाम है ?

उत्तर– अन्य पांच नाम हैं – 1. वीर 2. अतिवीर, 3. सन्मति 4. महावीर 5. एवं वर्धमान।

प्रश्न 2794. श्री महावीर भगवान के बचपन में कौन-कौन से नाम थे ?

उत्तर– श्री महावीर भगवान के बचपन में वीर एवं वधर्मान नाम थे।

प्रश्न 2795. श्री महावीर भगवान का सन्मति नाम कैसे पड़ा?

उत्तर– एक समय जब महावीर भगवान पालने में झूल रहे थे संजय विजय चारण ऋषियों को तत्वों में कुछ शंका थी भगवान के दर्शन करते ही उनकी शंका दूर हो गई अतः उन्होंने उनका नाम सन्मति रखा।

प्रश्न 2796. श्री महावीर भगवान के बचपन का नाम वर्धमान कैसे पड़ा ?

उत्तर– श्री महावीर भगवान को बचपन में शुक्ल पक्ष के चन्द्रमा के समान बढ़ते हुए देखकर इन्द्र ने उनका नाम वर्धमान रखा।

प्रश्न 2797. श्री महावीर भगवान का नाम महावीर कैसे पड़ा ?

उत्तर– एक समय जब महावीर भगवान बच्चों के साथ खेल रहे थे संगम नामक देव नाग का रूप बनाकर पेड़ से लिपट गया सारे बच्चे भाग गये लेकिन महावीर भगवान ने उसके फन पर चढ़ कर क्रीड़ा की। भक्तिवश उस देव ने प्रकट होकर उनका नाम महावीर रखा।

प्रश्न 2798. श्री महावीर भगवान का अतिवीर नाम कैसे पड़ा ?

उत्तर– राजा श्री सिद्धार्थ के पागल हाथी को वश में करने से उनका नाम अतिवीर पड़ा।

प्रश्न 2799. श्री महावीर भगवान का महतिवीर नाम कैसे पड़ा?

उत्तर– राजा श्री सिद्धार्थ के पागल हाथी को वश में करने से उनका नाम अतिवीर पड़ा।

प्रश्न 2800. श्री महावीर भगवान का महतिवीर नाम कैसे पड़ा ?

उत्तर– भगवान श्री महावीर उज्जैयनी नगरी के अतिमुक्तक नामक शमशान में प्रतिमायोग से विराजमान थे महादेव नामक रूद्र ने उपसर्ग करके परीक्षा

की भगवान अपने ध्यान से चलायमान नहीं हुए तब उसने उनका मह-तिवीर नाम रखा।

प्रश्न 2801. श्री महावीर भगवान के जीवन का कथन कहाँ से प्रारम्भ होता है ?

उत्तर— श्री महावीर भगवान के जीवन का कथन पुरुरवा नामक भील की पर्याय से प्रारम्भ होता है।

प्रश्न 2802. पुरुरवा भील कौन था और उसने क्या किया?

उत्तर— पुष्कलावती देश की पुंडरीकिणी नगरी में भीलों का राजा था उसने सागर सेन मुनिराज से मद्यमांस मधु का त्याग व्रत लिया था जिसे जीवन पर्यंत पालन किया।

प्रश्न 2803. श्री महावीर भगवान का जीव पुरुरवा भील की पर्याय से कहाँ गया ?

उत्तर— पहले सौधर्म स्वर्ग में एक सागर की आयु वाला देव हुआ।

प्रश्न 2804. पहले स्वर्ग के बाद श्री महावीर भगवान का जीव किस पर्याय में गया ?

उत्तर— भरत चक्रवर्ती की रानी अनंतमती से मारीचि नामक ज्येष्ठ पुत्र हुआ।

प्रश्न 2805. मारीचि की पर्याय से महावीर भगवान का जीव किस पर्याय में गया ?

उत्तर— मारीचि की पर्याय से महावीर भगवान का जीव ब्रह्म स्वर्ग में देव हुआ।

प्रश्न 2806. ब्रह्म के बाद श्री महावीर भगवान का जीव किस पर्याय में गया ?

उत्तर— ब्रह्म स्वर्ग के बाद श्री महावीर भगवान का जीव अयोध्या नगरी मे कपिल ब्राह्मण की काली स्त्री से जटिल नाम का पुत्र हुआ।

प्रश्न 2807. जटिल की पर्याय से श्री महावीर भगवान का जीव किस पर्याय में गया ?

उत्तर— जटिल की पर्याय से श्री महावीर भगवान का जीव सौधर्म स्वर्ग में एक सागर की आयु वाला देव हुआ।

प्रश्न 2808. सौधर्म स्वर्ग से निकलकर श्री महावीर भगवान का जीव किस पर्याय में गया ?

उत्तर— इसी भरत क्षेत्र मे सूतिका नामक गाँव में अग्निभूत ब्राह्मण की गौतम स्त्री से अग्निसह नामक पुत्र।

प्रश्न 2809. अग्निसह की पर्याय से श्री महावीर भगवान का जीव कहाँ गया ?

उत्तर— अग्निसह की पर्याय से श्री महावीर भगवान का जीव स्वर्ग में गया।

प्रश्न 2810. स्वर्ग की पर्याय से श्री महावीर भगवान का जीव किस पर्याय में गया ?

उत्तर– भरत क्षेत्र के मन्दिर नामक ग्राम में गौतम ब्राह्मण की कौशिकी पत्नी से अग्निमित्र नाम का पुत्र हुआ।

प्रश्न 2811. अग्निमित्र की पर्याय से श्री महावीर भगवान का जीव कहाँ गया।

उत्तर– अग्निमित्र की पर्याय से श्री महावीर भगवान का जीव माहेन्द्र स्वर्ग में गया।

प्रश्न 2812. माहेन्द्र स्वर्ग से श्री महावीर भगवान का जीव कहाँ गया ?

उत्तर– मंदिर नगर में शालकाय ब्राह्मण की पत्नी से भारद्वाज नामका पुत्र हुआ।

प्रश्न 2813. भारद्वाज की पर्याय से महावीर भगवान का जीव कहाँ गया ?

उत्तर– भारद्वाज की पर्याय से महावीर भगवान का जीव माहेन्द्र स्वर्ग में देव हुआ।

प्रश्न 2814. माहेन्द्र स्वर्ग से महावीर भगवान का जीव कहाँ गया ?

उत्तर– इतर निगोद में एक सागर की आयु वाला निगोदिया जीव हुआ।

प्रश्न 2815. निगोद से निकल कर श्री महावीर भगवान का जीव कहाँ गया ?

उत्तर– निगोद से निकल कर श्री महावीर भगवान के जीव ने अनेकों भव धारण किये जो इस प्रकार है–

एक हजार आक वृक्ष के भव, अस्सी हजार सीप के भव, बीज हजार नीम वृक्ष के भव, नब्बे हजार बार केलि वृक्ष के भव, तीन हजार बार चंदन वृक्ष के भव, पांच करोड़ बार कनेर वृक्ष के भव, साठ हजार वार वेश्या के भव, पांच करोड़ बार शिकारी के भव, बीस करोड़ बार हाथी के भव, साठ करोड़ बार गधे के भव, तीस करोड़ बार कुत्ते के भव, साठ करोड बार नपुसंक के भव, बीस करोड़ बार स्त्री के भव, नब्बे लाख बार धोबी के भव आठ करोड़ बार घोड़े के भव, बीस करोड़ बार बिल्ली के भव, साठ लाख बार गर्भ पात से मरण, अस्सी लाख बार देव पर्याय को प्राप्त किया।

प्रश्न 2816. उपरोक्त भवों को प्राप्त करने के बाद श्री महावीर भगवान ने किस पर्याय को प्राप्त किया ?

उत्तर– उपरोक्त भवों को प्राप्त करने के बाद श्री महावीर भगवान के जीव ने राजग्रह नगर से स्थावर नाम का ब्राह्मण हुआ।

प्रश्न 2817. स्थावर की पर्याय से श्री महावीर भगवान का जीव कहाँ गया ?

उत्तर– स्थावर की पर्याय से श्री महावीर भगवान का जीव माहेन्द्र स्वर्ग में सात सागर की आयु वाला देव हुआ।

प्रश्न 2818. माहेन्द्र स्वर्ग से महावीर भगवान का जीव कहाँ गया ?

उत्तर– माहेंन्द्र स्वर्ग से महावीर भगवान का जीव राजग्रह में विश्वभूति राजा की जैनी रानी से विश्वनंदी नाम का पुत्र हो गया।

प्रश्न 2819. विश्वनंदी की पर्याय से निकलकर श्री महावीर भगवान का जीव कहाँ गया ?

उत्तर– विश्वनंदी की पर्याय से निकलकर श्री महावीर भगवान का जीव महाशुक्र स्वर्ग में देव हुआ।

प्रश्न 2820. महाशुक्र स्वर्ग से निकल कर महावीर भगवान का जीव कहाँ गया ?

उत्तर– महाशुक्र स्वर्ग से निकल कर महावीर भगवान का जीव त्रिपृष्ठ नामक नारायण हुआ।

प्रश्न 2821. त्रिपृष्ठ नारायण से श्री महावीर भगवान का जीव कहाँ गया ?

उत्तर– त्रिपृष्ठ नारायण से श्री महावीर भगवान का जीव सातवें नरक में गया।

प्रश्न 2822. सातवें नरक से श्री महावीर भगवान का जीव कहाँ गया ?

उत्तर– सिंहगिरि पर्वत पर सिंह हुआ पुनः प्रथम नरक में गया।

प्रश्न 2823. प्रथम नरक से निकल कर श्री भगवान महावीर का जीव कहाँ गया ?

उत्तर– प्रथम नरक से निकल कर श्री भगवान महावीर का जीव हिमवान पर्वत शिखर पर सिंह हुआ। यहाँ पर उसे अजितंजय एवं अमित गुण नामक मुनिराज ने संबोधित किया।

प्रश्न 2824. सिंह की पर्याय से निकलकर श्री भगवान महावीर का जीव किस पर्याय में गया ?

उत्तर– सिंह की पर्याय से निकलकर श्री भगवान महावीर का जीव सौधर्म स्वर्ग में सिंह केतु नाम का देव हुआ।

प्रश्न 2825. सिंह केतू का जीव किस पर्याय में गया ?

उत्तर– कनक प्रभ नगर में राजा नकपुंख विद्याधर और रानी कनकमाला से कन्कोज्वल नाम का पुत्र हुआ।

प्रश्न 2826. कनकोज्वल आगे किस पर्याय में गया ?

उत्तर– कनकोज्वल आगे सांतवे स्वर्ग में देव हुआ।

प्रश्न 2827. सातवें स्वर्ग से श्री भगवान महावीर का जीव कहाँ गया ?

उत्तर– सातवें स्वर्ग से श्री भगवान महावीर का जीव अयोध्या नगरी में राजा वज्रसेन की शीलवती रानी से हरिषेण नाम का पुत्र हुआ।

प्रश्न 2828. हरिषेण का जीव आगे किस पर्याय में गया ?

उत्तर– हरिषेण का जीव महाशुक्र स्वर्ग में देव हुआ।

प्रश्न 2829. महाशुक्र स्वर्ग से श्री महावीर भगवान का जीव कहाँ गया ?

उत्तर– महाशुक्र स्वर्ग से श्री महावीर भगवान का जीव धातकी खंड की पूर्व विदेह की पुष्कलावती देश की पुंडरीकिणी नगरी में राजा सुमित्र और रानी मनोरमा से प्रिय मित्र नाम का चक्रवर्ती हुआ।

प्रश्न 2830. प्रिय मित्र नाम का चक्रवर्ती आगे किस पर्याय में गया ?

उत्तर– प्रिय मित्र नाम का चक्रवर्ती सहस्रार स्वर्ग में देव हुआ।

प्रश्न 2831. सहस्रार स्वर्ग से श्री महावीर भगवान का जीव किस पर्याय में गया ?

उत्तर– सहस्रार स्वर्ग से श्री महावीर भगवान का जीव जम्बूद्वीप के छत्रपुर नगर में नंदीवर्धन राजा की वीरमति रानी से नंद नाम का पुत्र हुआ।

प्रश्न 2832. नंद का जीव आगे किस पर्याय में गया ?

उत्तर– नंद का जीव पुष्पोत्तर विमान में देव हुआ तदंनतर 24 वें तीर्थकर श्री महावीर भगवान हुए।

प्रश्न 2833. श्री महावीर भगवान के जीव मारीचि ने कितने पाखंडमत चलाये ?

उत्तर– श्री महावीर भगवान के जीव मारीचि ने तीन सौ तेरसठ पाखंड मत चलाये।

कुलकर, त्रेसठ शलाका पुरुष तथा अन्य पुण्य पुरुष

प्रश्न 2834. त्रेसठ शलाका के पुरुष कौन से काल में होते है?

उत्तर– त्रेसठ शलाका के पुरुष चतुर्थ काल में होते हैं।

प्रश्न 2835. चतुर्थ काल में प्रवर्तन कहाँ कहाँ होता है।

उत्तर– ढाई द्वीप की 170 कर्मभूमियों में से 160 विदेह क्षेत्र में सदा चतुर्थ काल रहता है। पाँच भरत पाँच ऐरावत क्षेत्रों में प्रथम से छठे काल के क्रम से चतुर्थ काल आता है।

प्रश्न 2836. चौदह कुलकारों के नाम क्या थे ?

उत्तर– 1. श्री प्रतिश्रुति, 2. सन्मति, 3. क्षेमंकर, 4. क्षेमंधर, 5. सीमंकर, 6. सीमंधर, 7. विमल वाहन, 8. चक्षुमान, 9. यशस्वी, 10. अभिचन्द्र, 11. चन्द्राप्रभ, 12. मरुदेव, 13 प्रसेनजित 14 नाभिराजा।

प्रश्न 2837. कुलकरों की पत्नियों के नाम क्या थे ?

उत्तर– 1. स्वयंप्रभा, 2. यशस्वी, 3. सुनंदा, 4. विमला, 5. मनोहरी, 6. यशोधरा, 7. सुमति, 8. धारिणी, 9. कांतमाला, 10. श्री मती, 11. प्रभावती, 12. सत्या 13. अभितमति, 14. महादेवी।

प्रश्न 2838. किस कुलकर ने प्रजा के लिए क्या किया ?

उत्तर–
1. पहले कुलकर ने सूर्य चन्द्रोदय से भय मिटाया।
2. दूसरे कुलकर ने अंधकार तथा तारागण से भय मिटाया।
3. तीसरे कुलकर ने हिंसक जन्तुओं की संगति त्याग करने का उपदेश दिया।
4. चौथे कुलकर ने हिंसक जन्तुओं से रक्षण के उपाय बताये।
5. पांचवें कुलकर ने कल्पवृक्ष की सीमायें बताई।
6. सातवें कुलकर ने गुच्छादि चिन्हित सीमायें बताई।
7. सातवें कुलकर ने हाथी आदि की सवारी का उपदेश दिया।
8. आठवें कुलकर ने बालक के मुखदर्शन का उपदेश दिया।

9. नौवें कुलकर ने बालक के नामकरण करने का उपदेश दिया।

10. दसवें कुलकर ने शिशु रोदन निवारण चन्द्रादि दर्शन का उपदेश दिया।

11. ग्यारवें कुलकर ने शीत आदि से रक्षा के उपाय बताये।

12. बारहवें कुलकर ने नाव आदि द्वारा गमन करने का उपदेश दिया।

13. तेरहवें कुलकर ने जरायुपटल को हटाने का उपदेश दिया।

14. चौदहवें कुलकर ने नाभिनाल कर्तन का उपदेश दिया।

प्रश्न 2839. क्या कुलकर 63 शलाका के पुरुषों में आते हैं?

उत्तर– कुलकर त्रेषठ शलाका के पुरूषों में नहीं आते हैं।

प्रश्न 2840. कुलकरों की उत्पत्ति कब होती है ?

उत्तर– तीसरा काल सुखमा-दुखमा नाम से आता है उसके समाप्त होने में जब पल्य का आठवा भाग शेष रह जाता है तब कुलकरों की उत्पात्ति प्रारम्भ होती है।

प्रश्न 2841. क्या कुलकर मोक्ष जाते हैं ?

उत्तर– नहीं कोई कुलकर मोक्ष नहीं जाते हैं।

प्रश्न 2842. कुलकर मोक्ष क्यों नहीं जाते हैं ?

उत्तर– क्योंकि कुलकर के समय में युगलिया जीव उत्पन्न होते हैं और विवाह पद्धति नहीं होती हैं इसलिए कुलकर मोक्ष नहीं जाते हैं।

प्रश्न 2843. त्रेसठ शलाका के पुरुषों में कौन-कोन से जीव आते हैं?

उत्तर– 24. तीर्थंकर 12. चक्रवर्ती, 9. नारायण, 9. प्रतिनारायण, 9. बलभद्र ये 63 शलाका के पुरुष होते हैं।

प्रश्न 2844. जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र के वर्तमान काल के 12 चक्रवर्तियों का नाम क्या था ?

उत्तर– जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र के वर्तमान काल के 12 चक्रवर्तियों के नाम निम्न प्रकार हैं–1. भरत 2. सगर, 3. मघवा, 4. सनत्कुमार, 5. शांतिनाथ, 6. कुंथुनाथ, 7. अरहनाथ, 8. सुभौम, 9. पद्म, 10. हरिषेण, 11. जय सेन, 12. ब्रह्मदत्त।

प्रश्न 2845. 9 नारायण के नाम क्या थे ?

उत्तर– 1. त्रिपृष्ठ, 2. द्वयपृष्ठ, 3. स्वयंभू, 4. पुरुषोत्तम, 5. पुरुष-सिंह, 6. पुरुष पुंडरीक, 7. दत्त, 8. नारायण, 9. श्री कृष्ण। ये 9 नारायण थे।

प्रश्न 2846. 9 प्रतिनारायण के नाम क्या थे ?

उत्तर– प्रतिनारायण के नाम 1. अश्वग्रीव, 2. तारक, 3. मेरक, 4. मधुकैटभ, 5. निसुम्भ, 6. बलि, 7. प्रहरण, 8. रावण, 9. जरासंघ थे।

प्रश्न 2847. बारह चक्रवर्तियों में कितने चक्रवर्ती हस्तिनापुर में हुए हैं?

उत्तर– बारह चक्रवर्तियों में पांच चक्रवर्ती हस्तिनापुर में हुए हैं।

प्रश्न 2848. हस्तिनापुर में हुए पाँच चक्रवर्तियों के नाम क्या थे ?

उत्तर– हस्तिनापुर में हुए पाँच चक्रवर्तियों के नाम सनत्कुमार, शांतिनाथ, कुंथुनाथ, अरहनाथ, एवं सुभौम चक्रवर्ती थे।

प्रश्न 2849. कौन-कौन से चक्रवर्ती कौन से नरक में गये हैं?

उत्तर– सुभौम तथा ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती सातवें नरक में गये हैं।

प्रश्न 2850. कौन से चक्रवर्ती स्वर्गों में गये हैं?

उत्तर– मधवा तथा सानत्कुमार चक्रवर्ती कल्पवासी स्वर्गो में गये है।

प्रश्न 2851. कितने चक्रवर्ती मोक्ष गये हैं ?

उत्तर– आठ चक्रवर्ती मोक्ष गये हैं।

प्रश्न 2852. कौन-कौन से चक्रवर्ती मोक्ष गये हैं ?

उत्तर– भरत, सागर, शांतिनाथ, कुंथुनाथ, अरहनाथ, पद्म, हरिषेण व जयसेन ये चक्रवर्ती मोक्ष गये हैं।

प्रश्न 2853. कौन से चक्रवर्ती के साठ हजार पुत्र थे ?

उत्तर– सगर चक्रवर्ती के साठ हजार पुत्र थे।

प्रश्न 2854. सगर चक्रवर्ती के साठ हजार पुत्र एक साथ क्यों जल गये थे ?

उत्तर– सगर चक्रवर्ती के साठ हजार पुत्र मुनि निंदा कर कर्म उदय में आ जाने के कारण से एक साथ जल गये थे।

प्रश्न 2855. ढाई द्वीपों में होने वाले त्रेसठ शलाका के पुरुषों की संख्या कितनी है ?

उत्तर– ढाई द्वीपों में 170 कर्मभूमियों में 63 शलाका के पुरूष होते हैं। अतः उनकी संख्या 63 × 170 = 10710 पुरुष

प्रश्न 2856. चौदह कुलकर ढाई द्वीप में कहाँ-कहाँ होते हैं ?

उत्तर– पाँच भरत, पाँच ऐरावत क्षेत्रों में तृतीय काल के अंत में कुलकर होते हैं।

प्रश्न 2857. जम्बूद्वीप, धातकी खंड तथा पुष्करवर द्वीप के हेमवत तथा हैरण्यवत क्षेत्रों में तृतीय काल रहता है वहाँ कुलकर क्यों नहीं होते हैं ?

उत्तर– क्योंकि वहाँ काल परिवर्तन नहीं होते हैं और तीर्थंकर भी नहीं होते इसलिए कुलकर भी नहीं होते क्योंकि कुलकर के बाद ही तीर्थंकर होते हैं।

प्रश्न 2858. नारायण का दूसरा नाम क्या है ?

उत्तर– नारायण का दूसरा नाम विष्णु है।

प्रश्न 2859. प्रतिनारायण का दूसरा नाम क्या हैं ?

उत्तर– प्रतिनारायण को प्रतिविष्णु भी कहते हैं तथा इनहें त्रिखंडी भी कहते हैं।

प्रश्न 2860. प्रति नारायण कौन होते हैं ?

उत्तर– जो कर्मभूमि के विजयार्थ के नीचे के तीन खंडों–1. आर्यखंड, 2. मलेच्छ खंडों को जीतते हैं वे त्रिखंडी, प्रतिनारायण या प्रतिविष्णु कहलाते हैं।

प्रश्न 2861. नारायण कौन होते हैं ?

उत्तर– जो त्रिखंडी प्रतिनारायण को जीतते हैं तथा प्रतिनारायण के चक्र से उन्हीं को मार देते है। वे नारायण या विष्णु कहलाते हैं।

प्रश्न 2862. नारायण व प्रतिनाराण का नियोग क्या है ?

उत्तर– पहले प्रतिनारायण अपने चक्र रत्न से तीनों खंडों का जीतता है। पुनः नारायण से उसका युद्ध होता है, युद्ध में प्रतिनारायण नारायण के ऊपर अपना चक्र चलाते हैं, वह चक्र नारायण की परिक्रमा करके उनके हाथ मे आ जाता है। उसी चक्ररत्न को नारायण प्रतिनारायण के ऊपर चला देते हैं। जिससे प्रतिनारायण का घात हो जाता है तथा प्रतिनारायण मर कर नरक में चले जाते हैं।

प्रश्न 2863. नारायण मरकर कहाँ उत्पन्न होते हैं?

उत्तर– नारायण मर कर नरक में उत्पन्न होते हैं।

प्रश्न 2864. श्री मुनिसुव्रत स्वामी के शासन में होने वाले नारायण एवं प्रति नारायण का नाम क्या था ?

उत्तर– श्री मुनिसुव्रत स्वामी के शासन काल में रावण नाम के प्रतिनारायण एवं लक्ष्मण नाम के नारायण हुए थे?

प्रश्न 2865. रावण का वध किसने किया था ?

उत्तर— रावण का वध लक्ष्मण ने किया था।

प्रश्न 2866. श्री नेमिनाथ भगवान के शासन काल में कौन से नारायण तथा कौन से प्रतिनारायण हुए ?

उत्तर— श्री नेमिनाथ भगवान के शासनकाल में श्री कृष्ण नाम के नारायण, जरासंध नाम के प्रतिनारायण हुए हैं।

प्रश्न 2867. बलभद्र कौन होते हैं ?

उत्तर— नारायण के बड़े भाई बलभद्र होते हैं।

प्रश्न 2868. बलभद्र मरकर कहाँ उत्पन्न होते हैं ?

उत्तर— बलभद्र मोक्ष और स्वर्ग में जाते हैं।

प्रश्न 2869. नौ बलभद्रों के नाम क्या थे ?

उत्तर— 1. विजय, 2. अचल, 3. धर्म, 4. सुप्रभ, 5. सुदर्शन, 6. नंदी, 7. नदिंमित्र, 8. राम और 9. बलभद्र।

प्रश्न 2870. श्री मुनसुव्रत नाथ भगवान एवं नेमिनाथ तीर्थकर के शासन काल में कौन से बलभद्र हुए हैं ?

उत्तर— श्री मुनिसुव्रतनाथ एवं नेमिनाथ भगवान के शासन काल मे राम एवं पद्म बलभद्र हुए।

प्रश्न 2871. रुद्र कितने होते हैं ?

उत्तर— रुद्र ग्यारह होते हैं।

प्रश्न 2872. ग्यारह रुद्रों के नाम क्या थे ?

उत्तर— 1. भीमावली, 2. जितशत्रु, 3. वैश्रवानर 4. सुप्रतिष्ठ, 6. अचल, 7. पुंडरीक, 8. अजितधर, 9. अजितनाभि, 10. पीठ, 11. सात्यिक पुत्र।

प्रश्न 2873. कौन से रुद्र, कौन से तीर्थकर के काल में हुए हैं ?

उत्तर— इस प्रश्न का उत्तर निम्न प्रकार हैं—

तीर्थकर	रुद
श्री आदिनाथ जी	भीमावली
श्री अजितनाथ जी	जितशत्रु
श्री पुष्पदत जी	रुद्र

श्री शीतल नाथ जी	वैश्वानर
श्री श्रेयांसनाथ जी	सुप्रतिष्ठ
श्री वासुपूज्य जी	अचल
श्री विमलानाथ जी	पुंडरीक
श्री अनंतनाथ जी	अजितधर
श्री धर्मनाथ जी	अजितनाभि
श्री शान्तिनाथ जी	पीठ
श्री महावीर जी	सात्यिकी पुत्र

प्रश्न 2874. रूद्रों की क्या गति होती है ?

उत्तर– सब रूद्र दसवें पूर्व का अध्ययन करते समय विषयों के निमित्त से तप से भ्रष्ट होकर मिथयात्व को धारण करते हुए नरकों में चले जाते हैं।

प्रश्न 2875. नारद कितने होते हैं ?

उत्तर– नारद नौ होते हैं

प्रश्न 2876. नौ नारदों के नाम क्या थे ?

उत्तर– 1. भीम, 2. महाभीम, 3. रुद्र, 4. महारुद्र, 5. काल, 6. महाकाल, 7. दुर्मुख, 8. नरमुख, 9. अधोमुख।

प्रश्न 2877. नारदों की क्या गति होती है ?

उत्तर– सभी नारद अति रुद्र होते हुये दूसरों को रुलाया करते हैं, वे पाप के निधान कलह प्रिय युद्ध प्रिय होने से नरक जाते हैं।

प्रश्न 2878. कामदेव किन्हें कहते हैं ?

उत्तर– उस समय के मनुष्यों में जो सबसे सुन्दर आकृति के धारक होते हैं। वे कामदेव कहलाते हैं।

प्रश्न 2879. कामदेव कितने होते हैं?

उत्तर– कामदेव चौबीस होते हैं।

प्रश्न 2880. चौबीस कामदेवों के नाम क्या हैं ?

उत्तर– 1. श्री बाहुबली, 2. अमित तेज, 3. श्री धर, 4. यशोभद्र, 5. प्रसेनजित, 6. चन्द्रवर्ण, 7. अग्निमुक्त 8. सनत्कुमार, 9. वत्सराज, 10. कनकप्रभ, 11. सिद्धवर्ण, 12 शांतिनाथ, 13. कुंथुनाथ, 14. अरहनाथ, 15. विजयराज,

16. श्रीचन्द्र, 17. राजानल, 18. हनुमान, 19. बलगंज, 20. वसुदेव, 21. प्रद्युम्न, 22. नागकुमार, 23. श्रीपाल, 24. जम्बूस्वामी।

प्रश्न 2881. महापुरुषों के मोक्ष जाने के विषय में क्या नियम है ?

उत्तर– तीर्थंकर, उनके माता-पिता, चक्रवर्ती, बलदेव, नारायण, रूद्र नारद कामदेव कुलकर ये सभी भव्य होते हुए नियम से सिद्ध होते हैं तीर्थंकर तो उसी भव से सिद्ध होते हैं। अन्यों के लिए उसी भव का नियम नहीं है।

प्रश्न 2882. उपरोक्त महापुरुष कुल कितने है ?

उत्तर– **इसका उत्तर निम्न प्रकार है–**

तीर्थंकर	24
तीर्थंकर की माता	24
तीर्थंकर के पिता	24
चक्रवर्ती	12
बलदेव	9
नारायण	9
प्रतिनारायण	9
रुद्र	11
नारद	9
कामदेव	24
कुलकर	14
	169 कुल

धर्म

प्रश्न 2883. धर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर– वस्तु के स्वभाव को धर्म कहते हैं। रत्नत्रय को धर्म कहते हैं, उत्तम क्षमादि दस प्रकार के आत्मा के स्वभाव को धर्म कहते हैं। जीवों की रक्षा करने को धर्म कहते हैं, जिसे धारण किया जाय वह धर्म है।

प्रश्न 2884. वस्तु स्वभाव क्या है ?

उत्तर– जिसके बिना वस्तु नहीं रह सकती वह वस्तु स्वभाव है। जैसे–अग्नि का स्वभाव उष्णपना, जल का स्वभाव शीतलपना, पुद्गल का स्वभाव पूरण गलन, जीव का स्वभाव दर्शन, ज्ञान, चेतना।

प्रश्न 2885. रत्नत्रय किये कहते हैं ?

उत्तर– सम्यग्दर्शन ज्ञान और चारित्र को रत्नत्रय कहते हैं।

प्रश्न 2886. दस प्रकार के धर्म कौन-कौन से हैं ?

उत्तर– 1. उत्तम क्षमा, 2. उत्तम मार्दव, 3. उत्तम आर्जव, 4. उत्तम सत्य, 5. उत्तम शौच, 6. उत्तम संयम, 7. उत्तम तप, 8. उत्तम त्याग 9. उत्तम आकिंचन्य, 10 उत्तम ब्रह्मचर्य।

प्रश्न 2887. क्या उपरोक्त दश धर्म अलग-अलग हैं ?

उत्तर– नहीं, उपरोक्त धर्म एक आत्म स्वभाव के दस लक्षण हैं।

प्रश्न 2888. उत्तम क्षमा किसे कहते हैं ?

उत्तर– आत्मा में क्रोध की उत्पत्ति न होने को उत्तम क्षमा कहते हैं।

प्रश्न 2889. उत्तम मार्दव किसे कहते हैं ?

उत्तर– आत्मा में मान कषाय की उत्पत्ति न होने को उत्तम मार्दव कहते हैं।

प्रश्न 2890. उत्तम आर्जव किसे कहते हैं ?

उत्तर– आत्मा में कुटिल परिणाम उत्पन्न न होने को उत्तम आर्जव कहते हैं।

प्रश्न 2891. उत्तम सत्य किसे कहते हैं ?

उत्तर– असत्य भाषण का त्याग करना सत्य है।

प्रश्न 2892. उत्तम शौच क्या है ?

उत्तर– आत्मा में लोभ भाव की उत्पत्ति न होना ही उत्तम शौच है।

प्रश्न 2893. उत्तम संयम किसे कहते हैं

उत्तर– छह काय के जीवों की रक्षा करना, इंद्रियों व मन को वश में रखना उत्तम संयम है।

प्रश्न 2894. उत्तम तप किसे कहते हैं ?

उत्तर– सांसारिक विषयों की इच्छाओं को रोकना उत्तम तप है।

प्रश्न 2895. उत्तम त्याग क्या है ?

उत्तर– विषयों की आशाओं का तथा बाह्य-अभ्यंतर परिग्रह को छोड़ना उत्तम त्याग है।

प्रश्न 2896. उत्तम आकिंचन्य क्या है ?

उत्तर– आत्मा में किंचित् मात्र भी अन्य पदार्थ नहीं है ऐसा भाव आकिंचन्य कहलाता है।

प्रश्न 2897. उत्तम ब्रह्मचर्य क्या है?

उत्तर– ब्रह्मचर्य आत्मा का स्वभाव है, आत्मा में चर्या (स्थिर रहना) ब्रह्मचर्य है। बाह्य में स्त्री पुरुषों का एक दूसरे से रमण करने का भाव नहीं होना ब्रह्मचर्य है।

प्रश्न 2898. दश धर्मो का पालन कौन करता है ?

उत्तर– उत्तम रूप से दश धर्मो का पालन मुनिराज करते हैं मध्य रूप से एवं जघन्य रूप से पालन श्रावक करते हैं।

प्रश्न 2899. जीवों की रक्षा करने को धर्म कहते हैं, इसका क्या अभिप्राय है ?

उत्तर– इसका अभिप्राय यह है कि अहिंसा परम धर्म है।

प्रश्न 2900. अहिंसा किसे कहते हैं ?

उत्तर– प्रमाद के योग से अपने या दूसरे के प्राणों का घात करना, अलग कर देना, वियोग करना हिंसा है और हिंसा न करना ही अहिंसा है।

प्रश्न 2901. हिंसा मूल रूप से कितने प्रकार की होती है ?

उत्तर– हिंसा मूल रूप से दो प्रकार की होती है द्रव्य हिंसा और भाव हिंसा।

प्रश्न 2902. द्रव्य हिंसा किसे कहते हैं ?

उत्तर– जो हिंसा शस्त्रादि द्वारा की जाती है वह द्रव्य हिंसा है।

प्रश्न 2903. भाव हिंसा किसे कहते हैं ?

उत्तर– आत्मा में हिंसा करने के भाव (विचार) होना, भाव हिंसा है।

प्रश्न 2904. द्रव्य हिंसा व भाव हिंसा में क्या संबंध है ?

उत्तर– द्रव्य हिंसा व भाव हिंसा में घनिष्ट संबंध है। जहां द्रव्य हिंसा होती है वहां भाव हिंसा अवश्य होती है। जहां भाव हिंसा हो वहां आवश्यक नहीं है कि द्रव्य हिंसा भी हो।

प्रश्न 2905. हिंसा के कितने और कौन-कौन से भेद हैं ?

उत्तर– हिंसा चार प्रकार की होती है। आरम्भी, विरोधनी, संकल्पी और उद्यमी।

प्रश्न 2906. आरम्भी हिंसा किसे कहते हैं ?

उत्तर– जो हिंसा घर के कार्यों, पंच सूना आदि से होती है वह आरम्भी हिंसा है।

प्रश्न 2907. पंच सूना क्या है ?

उत्तर– चूल्हा, चक्की झाड़ू, ओखली एवं जलगालनादि ये पांच कार्य हिंसा कारक होते हैं।

प्रश्न 2908. विरोधनी हिंसा किसे कहते हैं ?

उत्तर– जो हिंसा किसी भी परस्पर विरोध के कारण होती है वह विरोधनी हिंसा कहलाती है, जैसे– आपस में मारपीट होना, दो सेनाओं का लड़ना, आदि।

प्रश्न 2909. संकल्पी हिंसा किसे कहते है ?

उत्तर– जो हिंसा संकल्पपूर्वक (मैं इसे मारूँगा ऐसे संकल्प पूर्वक) की जाती है वह संकल्पी हिंसा है।

प्रश्न 2910. उद्यमी हिंसा क्या है ?

उत्तर– जो हिंसा कृषि, व्यापार आदि में होती है वह उद्यमी या उद्योगी हिंसा कहलाती है।

प्रश्न 2911. कौन सी हिंसा को सबसे अधिक खतरनाक माना गया है?

उत्तर– संकल्पी हिंसा को।

प्रश्न 2912. वे हिंसा कौन-कौन सी हैं जिनसे बचा नहीं जा सकता ?

उत्तर– गृहस्थ केवल संकल्पी हिंसा से बच सकता है। आरम्भी, उद्योगी एवं विरोधनी हिंसा से गृहस्थ बच नहीं सकता। अतः संकल्पपूर्वक किसी प्राणी की हिंसा नहीं करनी चाहिए।

प्रश्न 2913. धर्म कितने रूपों में पाया जाता है ?

उत्तर— धर्म दो रूपों में पाया जाता है। महाव्रत रूप मुनि धर्म एवं अणुव्रत रूप श्रावक धर्म।

प्रश्न 2914. मुनिव्रत रूप धर्म किस में मिलता है ?

उत्तर— मुनिव्रत रूप धर्म अरिहंतादि पंच परमेष्ठियों के 143 मूलगुणों के रूप में मिलता है।

प्रश्न 2915. श्रावक किस कहते हैं ?

उत्तर— जिसमें श्रद्धा, विवेक एवं क्रिया ये तीन गुण पाए जाते हैं, श्रावक कहलाते हैं।

प्रश्न 2916. श्रावकों के उपरोक्त गुणों को क्या कहते हैं ?

उत्तर— श्रावकों के उपरोक्त गुणों को सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान तथा सम्यग्चारित्र भी कहते हैं।

प्रश्न 2917. श्रावकों की क्या पहिचान है ?

उत्तर— जिस प्रकार मुनि की पहिचान पीछी और कमण्डल से होती है उसी प्रकार श्रावकों की पहिचान रत्नत्रय स्वरूप यज्ञोपवीत (जनेऊ) धारण करने से होती है।

प्रश्न 2918. यज्ञोपवीत धारण करने के लिए कौन-कौन से नियमों का पालन करना होता है ?

उत्तर— यज्ञोपवीत धारण करने के लिए तीन नियमों का पालन करना होता है।

1. छना हुआ पानी पीना।
2. रात्रि में भोजन का त्याग करना।
3. देव दर्शन करना।

प्रश्न 2919. श्रावकों के कितने भेद होते हैं ?

उत्तर— श्रावकों के तीन भेद होते हैं।

1. पाक्षिक, 2. नैष्ठिक एवं 3. साधक।

प्रश्न 2920. पाक्षिक श्रावक किसे कहते हैं ?

उत्तर— जिसे हिंसादिक पांचों पापों का त्याग रूप व्रत है, जो अभ्यास रूप से श्रावक धर्म का पालन करता है, धर्म का पक्ष रखने से उसे पाक्षिक, प्रारब्ध या देश संयमी कहते हैं।

प्रश्न 2921. नैष्ठिक श्रावक किसे कहते हैं ?

उत्तर– जो निरतिचार रूप प्रतिमारूप से श्रावक धर्म का पालन करता है वह घटमान देशसयंमी या नैष्ठिक श्रावक है।

प्रश्न 2922. साधक कौन है ?

उत्तर– जिसका देशसंयम पूर्ण हो चुका है, जो आत्मध्यान में लीन होकर समाधिमरण करता है उसको साधक या निष्पन्न देशसंयमी कहते हैं।

प्रश्न 2923. श्रावक के कितने और कौन-कौन से मूल गुण होते हैं ?

उत्तर– श्रावक के आठ मूल गुण होते हैं। पांच उदम्बर फलों का त्याग करना तथा 3 मकारों का त्याग करना।

प्रश्न 2924. पांच उदम्बर फल कौन-कौन से है ?

उत्तर– 1. बड़फल, 2. पीपल फल, 3. पाकर फल, 4. उमर फल एवं 5. कठूमर फल।

प्रश्न 2925. उदम्बर फल किसे कहते हैं तथा इनके खाने में क्या हानि है ?

उत्तर– जिन फलों के अन्दर पेट में असंख्यात त्रस जीव होते हैं उन्हें उदम्बर फल कहते हैं। इन फलों के खाने से इनके अन्दर रहने वाले असंख्यात त्रस जीवों का घात होता है।

प्रश्न 2926. तीन मकार कौन-कौन से हैं ?

उत्तर– मद्य, मांस और मधु (शहद)।

प्रश्न 2927. मद्य किसे कहते हैं ? इसके पीने से क्या हानि है ?

उत्तर– मद्य शराब को कहते हैं। यह फलों, रसों आदि को सड़ाकर बनाई जाती है। इसकी प्रत्येक बूंद में असंख्यात त्रस जीव रहते हैं। इसके सेवन से उन जीवों का घात होता है तथा शराब शरीर और आत्मा दोनों का नाश (बरबाद) करती है।

प्रश्न 2928. मांस किसे कहते हैं और इसके सेवन से क्या हानि है ?

उत्तर– दो इन्द्रिय से पंचेन्द्रिय प्राणियों के शरीर के कलेवर को मांस कहते हैं। कच्चे, पके, किसी भी तरह के मांस के सेवन से असंख्यात त्रस जीवों का घात होता है क्योंकि किसी भी तरह के मांस में प्रत्येक समय उसी जाति के सम्पूर्च्छन जीव पैदा होते रहते हैं।

प्रश्न 2929. मांस की प्राप्ति कैसे होती है ?

उत्तर– मांस की प्राप्ति बिना जीव हिंसा के नहीं हो सकती है।

प्रश्न 2930. क्या अंडे मांस सेवन में नही आते हैं ?

उत्तर– अंडा मुर्गी के बच्चे अर्थात् पंचेन्द्रिय जीव का शरीर कलेवर है। अंडे के खाने से पंचेन्द्रिय का घात होता है, इसलिए अंडा खाने से मांस सेवन का ही दोष लगता है।

प्रश्न 2931. क्या अंडा शाकाहार है ?

उत्तर– नहीं, अंडा शाकाहार नहीं पूर्णतया मांसाहार ही है।

प्रश्न 2932. शहद क्या है ? इसके खाने में क्या दोष है ?

उत्तर– शहद मधुमक्खियों का वमन है, इसमें उनके अंडे (बच्चे) भी मिले रहते हैं। शहद खाने से उनका घात होता है तथा 1 बूंद शहद खाने से सात गांव जलाने का पाप लगता है।

प्रश्न 2933. दूसरे प्रकार से अष्ट मूल गुण कौन-कौन से हैं ?

उत्तर– 1. मद्य त्याग, 2. मांस त्याग, 3. मधु त्याग, 4. पंच उदम्बर फलों का त्याग, 5. पानी छान कर पीना, 6. रात्रि में भोजन का त्याग, 7. जीव दया का पालन करना तथा 8. नित्य देव दर्शन करना।

प्रश्न 2934. पानी कैसे छाना जाता है ?

उत्तर– पानी कुयें से लेकर मोटे गाड़े छलने से छाना जाता है। विलछन की जिवानी की जाती है।

प्रश्न 2935. जिवानी किसे कहते हैं ?

उत्तर– पानी छानने के बाद कपड़े के ऊपर जो विलछन बचती है उसे सुरक्षित पानी के स्थान तक पहुंचाने की क्रिया को जिवानी कहते हैं।

प्रश्न 2936. पानी छानने की क्रिया को क्या कहते हैं ?

उत्तर– जलगालन क्रिया कहते हैं।

प्रश्न 2937. जल क्यों छाना जाता है ?

उत्तर– पानी में जो सूक्ष्म जीव होते हैं बिना छने पानी को पीने से उनका घात होता है। पानी छानने से ये जीव ऊपर रह जाते हैं।

प्रश्न 2938. जैनाचार्यों के अनुसार पानी की एक बूंद में कितने जीव होते हैं ?

उत्तर– जैनाचर्यों के अनुसार पानी की एक बूंद में असंख्यात जीव होते हैं।

प्रश्न 2939. वैज्ञानिकों के अनुसार पानी की एक बूंद में कितने जीव होते हैं ?

उत्तर– वैज्ञानिकों के अनुसार पानी की एक बूंद में 36450 जीव होते हैं।

प्रश्न 2940. पानी प्रासुक कैसे किया जाता है ?

उत्तर– पानी प्रासुक दो प्रकार से किया जाता है।

1. छने पानी में लौंग इलायची आदि मिलाने से पानी का स्वाद बदल जाने से पानी प्रासुक हो जाता है।
2. छने हुए पानी को उबालने से पानी प्रासुक हो जाता है।

प्रश्न 2941. छने हुए पानी की मर्यादा कितनी होती है ?

उत्तर– अड़तालीस मिनट–1 मुहूर्त की।

प्रश्न 2942. प्रासुक पानी की मर्यादा कितनी है ?

उत्तर– प्रासुक पानी की मर्यादा छह घंटे की होती है।

प्रश्न 2943. पानी की मर्यादा समाप्त होने पर क्या करना चाहिए ?

उत्तर– छने हुए पानी की मर्यादा समाप्त होने पर पानी को पुनः छानना चाहिए। प्रासुक पानी तथा उबले हुए पानी के लिए यह नियम नहीं है।

प्रश्न 2944. उबले हुए पानी की मर्यादा कितनी होती है ?

उत्तर– उबले हुए पानी की मर्यादा 24 घण्टे होती है।

प्रश्न 2945. उबले हुए पानी की मर्यादा समाप्त होने पर शेष पानी को क्या दोबारा काम में लेना चाहिए या उसे दोबारा छानकर प्रासुक कर सकते हैं ?

उत्तर– उबले हुए पानी की मर्यादा समाप्त होने पर उसे न दुबारा प्रासुक कर सकते हैं न काम में ले सकते हैं। 24 घंटे बाद वह अभक्ष्य हो जाता है।

प्रश्न 2946. रात्रि भोजन त्याग क्यों करना चाहिए ?

उत्तर– दिन में सूर्य के प्रकाश में सम्मूर्च्छन जीवों की उत्पत्ति नहीं होती है। वहीं अनंतानंत सम्मूर्च्छन जीवों की उत्पत्ति रात्रि में सूर्य के प्रकाश के बिना निरंतर होती रहती है। वे सम्मूर्च्छन जीवन रात्रि में भोजन करने पर भोजन में मिलते रहते हैं तथा दिखाई नहीं देते। उनका घात होता रहता है इसलिए रात्रि भोजन नहीं करना चाहिए, वैज्ञानिक भी यही कहते हैं।

प्रश्न 2947. यदि दिन में भोजन बना कर रात्रि में कर लें या रात्रि में बनाकर दिन में कर लें तो क्या हानि है ?

उत्तर– दिन में भोजन बनाकर रात्रि में करने से एक तो विशेष राग रहेगा दूसरे

सम्मूर्च्छन जीव तो फिर भी भोजन करते समय भोजन में मिलकर पेट में जाने से उनका घात होगा।

यदि भोजन रात्रि में बनाकर दिन में करेंगे तो रात्रि में भोजन बनाते समय सम्मूर्च्छन जीव उसमें मिलकर स्वयं मर जायेंगे तब भी हिंसा अवश्य होगी, इसलिए न रात्रि में भोजन करना चाहिए, न रात्रि में बना हुआ भोजन दिन में करना चाहिए और न दिन में बना भोजन रात्रि में करना चाहिए।

प्रश्न 2948. भोजन कितने प्रकार का होता है ?

उत्तर– भोजन चार प्रकार का होता है। खाद्य, स्वाद्य, लेह्य और पेय।

प्रश्न 2949. खाद्य में कौन-कौन सी वस्तुएं आती हैं ?

उत्तर– जिसे सामान्यता दांतों से चबाकर खाया जाता है वह खाद्य कहलाता है। जैसे – रोटी, परांठा, पूड़ी, कचौड़ी आदि।

प्रश्न 2950. स्वाद्य में कौन-कौन सी वस्तुएं आती हैं ?

उत्तर– जो वस्तुयें स्वादिष्ट होती हैं वे स्वाद्य कहलाती हैं जैसे–चटनी, पापड़, गुलाब जामुन, बरफी, पेड़ा आदि।

प्रश्न 2951. लेह्य में कौन सी वस्तुएं आती हैं तथा लेह्य क्या है ?

उत्तर– खाने वाले जो पदार्थ लेही की तरह गाड़े होते हैं वे लेह्य कहलाते हैं। जैसे– रबड़ी, हलुआ, खिचड़ी, खीर आदि।

प्रश्न 2952. पेय क्या है तथा इनमें कौन-कौन सी वस्तुएं आती हैं ?

उत्तर– जो पदार्थ पीने के काम में आते हैं वे पेय कहलाते हैं जैसे–दूध, चाय, काफी, मट्ठा, लस्सी, उकाली आदि।

प्रश्न 2953. रात्रि भोजन त्याग किसने किया था ? उसे क्या फल प्राप्त हुआ ?

उत्तर– सागरसेन मुनिराज से एक सियार ने रात्रि भोजन त्याग का नियम लिया था। नियम का पालन करते हुए वह मरा। मर कर प्रीतिंकर कुमार हो गया। दीक्षा लेकर मुनि बन गया तथा समस्त कर्मो से छूट गया तथा मुक्त हो गया।

प्रश्न 2954. रात्रि भोजन का निषेध कहाँ-कहाँ किया गया है ?

उत्तर– रात्रि भोजन का निषेध आयुर्वेद के शास्त्रों में तथा वैदिक ग्रंथों में भी किया गया है।

प्रश्न 2955. रात्रि भोजन न करने से क्या लाभ है ?

उत्तर– 1. रात्रि भोजन न करने से जीवों का घात नहीं होता है।

2. स्वास्थ्य ठीक रहता है, बीमारियां दूर रहती हैं।

3. स्वास्थ्य ठीक रहने से मन भी ठीक रहता है। कहा भी है–

जैसा खावे अन्न, वैसा होवे मन।

जैसा पीवे पानी, वैसी होवे वानी।।

प्रश्न 2956. रात्रि भोजन से क्या हानि है ?

उत्तर– रात्रि भोजन में मिले हुए अनेक जीव दिखाई नहीं देते हैं उनमें से कितने ही जीव विषैले होते हैं, जिनके पेट में चले जाने से अनेक रोग हो जाते हैं, जैसे –

1. भोजन के साथ यदि मक्खी पेट में चली जाये तो उल्टी हो जाती है।
2. यदि छोटी छिपकली या कंसारी चली जाये तो कोढ़ रोग हो जाता है।
3. यदि चींटी चली जाए तो बुद्धि बिगड़ जाती है।
4. यदि पत्थर का टुकड़ा मुंह में चला जाये तो दाँत टूटने की संभावना रहती है।
5. यदि पेट में जूं चली जाये तो जलोदर हो जाता है।
6. यदि बाल खाने में जाये तो स्वर भंग हो जाता है।
7. कांटा खाने में आ जाये तो कंठ पीड़ा हो जाती है।
8. बिच्छु खाने में आ जाये तो तालु भंग हो जाता है।

प्रश्न 2957. धार्मिक दृष्टिकोण से रात्रि भोजन त्याग का क्या फल है ?

उत्तर– जो बुद्धिमान रात्रि में सब प्रकार के आहार का त्याग कर देते हैं उन्हें 1 महीने में 15 दिन तथा 1 वर्ष में 6 महीने के उपवास का फल मिलता है।

प्रश्न 2958. रात्रि भोजन करने वालों को आगम में क्या कहा गया है ?

उत्तर– आगम में रात्रि में भोजन करने वालों को बिना सींग और पूंछ के पशु कहा गया है।

प्रश्न 2959. दिन में भोजन किस समय करना चाहिए ?

उत्तर– दिन में प्रातः की दो घड़ी बाद तथा सूर्यास्त से दो घड़ी पहले ही भोजन करना चाहिए।

प्रश्न 2960. रात्रि भोजन करने वालों को कौन-सी पर्यायें प्राप्त होती हैं ?

उत्तर– रात्रि भोजन करने वालों को उल्लू, कौआ, बिल्ली, गीध, भेड़िया, सुअर, सर्प, बिच्छु और गोह आदि नीच पर्यायें प्राप्त होती हैं।

प्रश्न 2961. जीव दया का क्या महत्व है ?

उत्तर– अहिंसा का दूसरा नाम दया है और धर्म का मूल दया है। दया के बिना धर्म का पालन नहीं हो सकता। जहाँ-जहाँ दया है वहाँ-वहाँ धर्म है। दया के अनेक भेद हैं।

1. स्वदया, 2. परदया, 3. निश्चय दया, 4. व्यवहार दया, 5. द्रव्य दया, 6. भाव दया।

प्रश्न 2962. धर्म का उत्तम रूप से पालन कौन करता है ?

उत्तर– धर्म का उत्तम रूप से पालन मुनि करते हैं।

प्रश्न 2963. धर्म का मध्यम रूप से पालन कौन करते हैं ?

उत्तर– देशव्रती श्रावक।

प्रश्न 2964. धर्म का जघन्य रूप से पालन कौन करते हैं ?

उत्तर– अव्रती सम्यक दृष्टि श्रावकादि।

प्रश्न 2965. श्रावक की कितनी आवश्यक क्रियायें होती हैं ?

उत्तर– श्रावक की छह आवश्यक क्रियायें होती है।

प्रश्न 2966. श्रावक की आवश्यक क्रियायें कौन-कौन सी हैं ?

उत्तर– 1. देव पूजा, 2. गुरुपास्ति, 3. स्वाध्याय, 4. संयम, 5. तप, 6. दान।

प्रश्न 2967. श्रावक के श्रद्धा गुण को क्या कहते हैं ?

उत्तर– श्रावक के श्रद्धा गुण को साम्यग्दर्शन कहते हैं।

प्रश्न 2968. श्रावक के विवेक गुण को क्या कहते हैं ?

उत्तर– श्रावक के विवेक गुण को सम्यग्ज्ञान कहते हैं।

प्रश्न 2969. श्रावक के क्रिया गुण को क्या कहते हैं ?

उत्तर– श्रावक के क्रिया गुण को सम्यग्चारित्र कहते हैं।

प्रश्न 2970. श्रावक यज्ञोपवीत धारण क्यों करते हैं ?

उत्तर– सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्र के प्रतीक के रूप में यज्ञोपवीत धारण किया जाता है।

प्रश्न 2971. यज्ञोपवीत संस्कार कब किया जाता है ?

उत्तर– आठ वर्ष की आयु में यज्ञोपवीत संस्कार किया जाता है।

प्रश्न 2972. आठ वर्ष की आयु में ही जनेऊ धारण क्यों कराया जाता है ?

उत्तर– आगम के अनुसार आठ वर्ष के बालक को केवलज्ञान प्राप्ति योग्यता मानी है। इसलिये आठ वर्ष की आयु में ही यज्ञोपवीत धारण कराया जाता है तथा आठ वर्ष के बालक को ही भगवान का अभिषेक तथा मुनि को आहार देने की योग्यता होती है।

प्रश्न 2973. सम्यग्दर्शन ज्ञान चरित्र की प्राप्ति कहाँ-कहाँ से होती है ?

उत्तर– सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्र की प्राप्ति देव शास्त्र गुरुओं से होती है। सच्चे देव से सम्यग्दर्शन की, सच्चे शास्त्र से सम्यग्ज्ञान की तथा सच्चे गुरुओं के सानिध्य से सम्यग्चारित्र की प्राप्ति होती है।